

प्रतिक्रमण सूत्र

सह विवेचन

भाग - २ [हिन्दी - अंग्रेजी]

Pratikramaṇa Sūtra

With Explanation

Part - 2 [Hindī - English]

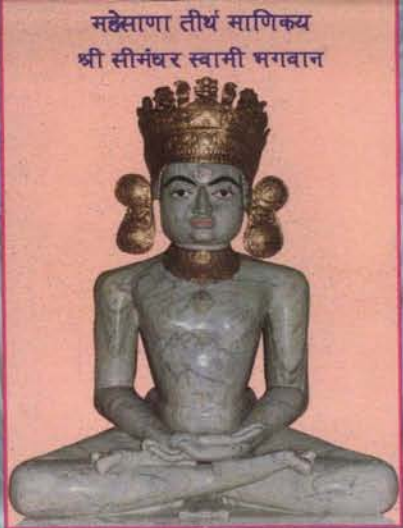


निर्वाण सागर

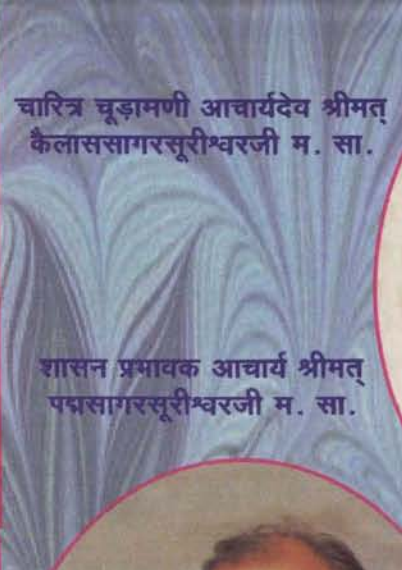
Nirvāṇa Sāgara



योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद्
बुद्धिसागरसूरीश्वरजी म. सा.



मूढेसाणा तीर्थ साणिकय
श्री सीमंघर स्वामी भगवान



चारित्र चूडामणी आचार्यदेव श्रीमत्
कैलाससागरसूरीश्वरजी म. सा.



शासन प्रभावक आचार्य श्रीमत्
पदसागरसूरीश्वरजी म. सा.



सम्यग्दृष्टि तीर्थरक्षक देव
श्री छंटाकर्ण सहावीर



परमात्म भक्ति रसिक आचार्य श्री
कल्याणसागरसूरीश्वरजी म. सा.



श्री सीमंघर जिन सेविका
श्री पंचांगली देवी



तपागच्छ अधिप्टायक देव
श्री माणिमद्रवीर

प्रतिक्रमण सूत्र

सह विवेचन

भाग - २ [हिन्दी - अंग्रेजी]

श्री सीमंधराय नमः

निर्वाण सागर

Pratikramaṇa Sūtra

With Explanation

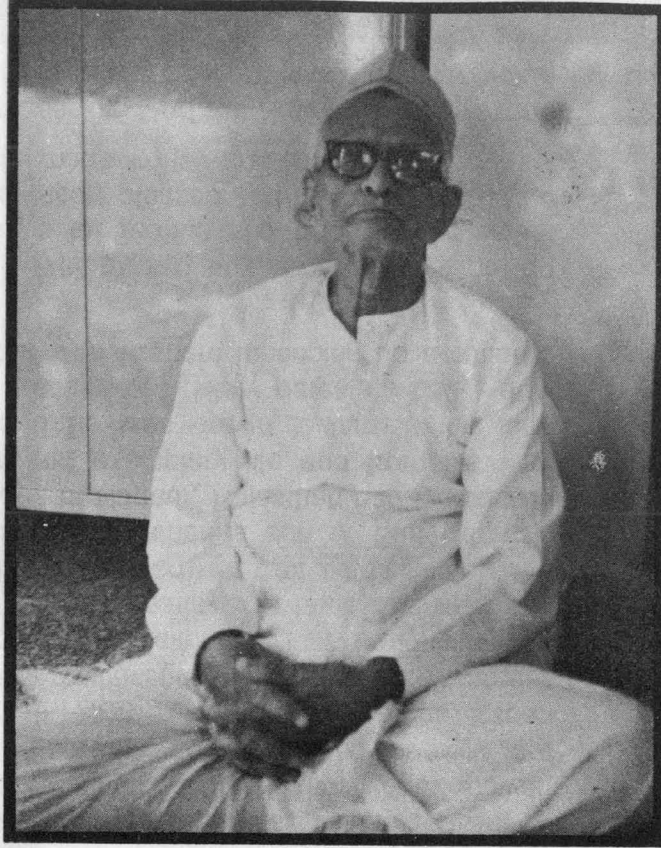
Part - 2 [Hindī - English]

śrī sīmandharāya namaḥ

Nirvāṇa Sāgara

सूत्र, अर्थ आदि को
गुरु मुख से ग्रहण कर
शास्त्र आज्ञानुसार ही
अभ्यास करें.

Learn
the sūtra, meaning etc.
only after grasping
from the guru
as prescribed in scriptures.



स्व. चेतनदासजी नाहटा

प्रस्तुत प्रकाशन के विशेष सहयोगी

शासन प्रभावक, ज्योतिर्विद् गणिवर्य श्री अरुणोदयससागरजी म.के
संयमी जीवन के २५ वर्ष की पूर्णता के उपलक्ष में

मुलतान (देरागाजीखान-पाकीस्तान) निवासी
वर्तमान में बंबईस्थित
स्व. चेतनदासजी नाहटा की
पुण्यस्मृति में

श्री तिलोकचंदजी, अनील एवं कमल नाहटा परिवार

OM ARHAM NAMAH

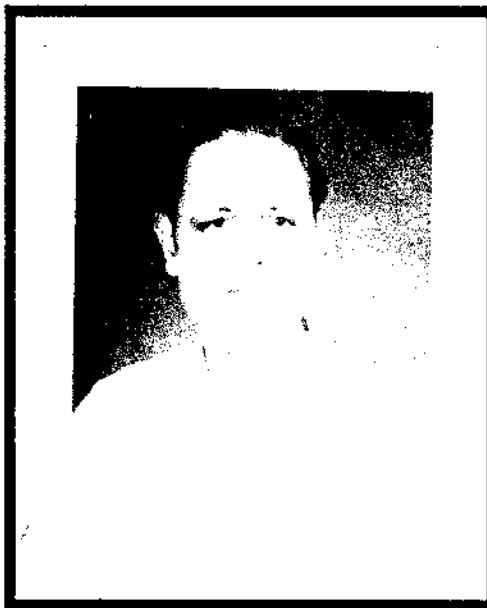
INTRODUCTION OF

SHRI PRAKASHCHAND SAMDARIYA

Human life is the most valuable asset of fortunate beings. Infinite knowledge, power, riches, supreme godliness and humility are within the reach of man and man alone. If man practises selflessness, altruism and progress towards selfrealization, besides working for the upliftment of humanity, his fame and glory are bound to spread in all directions. Shri Prakashchand samdaria son of Shri Kanmalji Samdaria of Nagaur, Rajasthan had led such a simple and exemplary life and from his very childhood he was drawn towards noble and pious activities. His parents had duly contributed their share in bringing up a cultured Child.

He never missed any opportunity of paying reverence to Sadhus and Sadhis and would be immensely pleased and his hearts would be overwhelmed with joy and bliss.

Compassion and love for Godliness and goodliness are indeed of much greater value than riches and degrees Shri Prakashchand Samdaria was a philanthropist in the true sense of the term. Besides inspiring people to establish themselves in pious deeds, during his



श्री प्रकाशचंदजी समदडिया

SHRI PRAKASHCHAND SAMDARIYA

life time he himself carried out innumerable religious and social activities and had great respect for all those who served the Jinashasana and worked for the welfare of all groups of people.

Though a prestigious personality in the society, he was never proud of his wealth, richness

and status. With immense devotion and unparalleled dedication he whole heartedly donated for the reconstruction of Jain temples, constructed and established by great, devoted Shrimants and Acharyas of olden times. To materialize splendid projects of the construction of Jain temples and others, he gave valuable services in many places of India in cash and kind and in true terms led a glorious life.

Similarly his valuable contribution in the publication of almanacs (Panchanga) by Shri Arunodaya foundation deserve a special mention and he shall be remembered for his constructive and generous contribution, as long as such noble deeds are undertaken by pious people.

His wife Smt. Kamalkanwar devi has succeeded him in all respects and has kept the lamp of goodness and charity burning. She has given financial assistance for publication of this book. Thus he served the Jinashasana elegantly and it is our turn now to pray for his soul to rest in peace and hope that his family follows his foot steps with courage and conviction and serve the mighty Jinashasana.

श्री विजयचंदजी समदडिया परिवार, मद्रास

SHRI VIJAYCHAND SAMDARIYA FAMILY, MADRAS

प्रतिक्रमण सूत्र

सह विवेचन

भाग - २ [हिन्दी - अंग्रेजी]

श्री सीमंधराय नमः

निर्वाण सागर

Pratikramaṇa Sūtra

With Explanation

Part - 2 [Hindī - English]

śrī sīmandharāya namaḥ

Nirvāṇa Sāgara

■ शीर्षक	- प्रतिक्रमण सूत्र सह विवेचन - भाग - २ [हिन्दी-अंग्रेजी]	■ Title	- Pratikramaṇa Sūtra With Explanation - Part - 2 [Hindī-English]
■ लिप्यंतरक, अनुवादक - मुनि निर्वाण सागर विवेचक और संग्राहक		■ Transliterator, Translator Explainer and Compiler	- Muni Nirvāṇa Sāgara
■ प्रथम आवृत्ति	- वी. सं. २५२४, वि. सं. २०५४, इ. सं. १९९७	■ First Edition	- Vīra Sam. 2524, Vikram Sam. 2054, 1997 A.D.
■ प्रति	- ३,०००	■ Copies	- 3,000
■ कम्पोजर्स	- आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा	■ Composers	- ācārya śrī kailāśasāgara sūri jñāna mandira, śrī mahāvīra jaina ārāadhanā kendra, kobā
■ फोटोग्राफर	- अनंत बि. भावसार, मंगलम् स्टुडियो सेक्टर - १६, गांधीनगर	■ Photographer	- Anant B. Bhavsar, mangalam studio, sector 16, Gandhinagar
■ मुद्रक	- एलाइड ऑफसेट प्रिन्टर्स, अहमदाबाद	■ Printers	- Allied Offset Printers, Ahmedabad
■ प्रकाशक, वितरक	- श्री अरुणोदय फाउण्डेशन, कोबा जि. गांधीनगर - ३८२००९ [गुजरात, भारत] - C/o चंद्रकांतभाई जे. शाह [फो. ६५६५३२९] ५/ए/३, अर्जुन कोम्प्लेक्स, जय शेफाली रो हाऊस के सामने, सैटेलाइट रोड अहमदाबाद - ३८००१५ [गुजरात, भारत]	■ Publishers and distributors	- Shree Arunoday Foundation, Koba, Dist. - Gandhinagar 382009 [Gujarat, INDIA] - C/o Chandrakantbhai J. Shah [Ph. 6565329] 5/A/3, Arjun Complex Opp. Jay Shefali Row House, Satellite Road Ahmedabad - 380015 [Gujarat, INDIA]
■ मूल्य	- १२५ रु. भाग - १, २	■ Cost	- Rs. 125 Part - 1, 2
© सर्वाधिकार लिप्यंतरक के अधीन.		© All rights reserved by the transliterator.	

दो शब्द

❖ अर्हम् नमः ❖

श्री पंच प्रतिक्रमण सूत्र जो कि श्रमण प्रधान जैन संस्कृति में आत्म शुद्धि का परम साधन है, उसका विशेष रूप से परिचय साधक आत्माओं को मिले, सूत्र के अर्थ-भावार्थ से वे परिचित बनें जिससे उनमें क्रिया रुचि एवं सद्भाव उत्पन्न हो, इसी भावना से प्रेरित होकर विद्वान् मुनि श्री निर्वाणसागरजी म. ने इस पुस्तक के विवेचन को लिखकर अपने श्रम को सफल बनाया है.

उनकी यह सम्यक् श्रुत की आराधना अन्य आत्माओं के लिये उपयोगी बनेगी ऐसा मेरा विश्वास है.

प्रतिक्रमण सूत्र की आराधना के द्वारा अपनी आत्मा को निष्पाप बनाने की प्रक्रिया में व्यक्ति सफल बनें – यही मंगल कामना करता हूं.

भवदीय
पद्मसागरसूरि

A few words

❖ Arham namaḥ ❖

śrī pañca pratikramaṇa sūtra is an absolute mean for self-purification in jain culture guided by śramaṇa [sādhū]. Endeavouring souls may have special acquaintance with these sūtras, they may become familiar with literal meaning and specific meaning of the sūtras by which liking and goodwill is created in them, inspired with this feeling, learned muni śrī nirvāṇasāgarajī ma. has succeed his labour by writing explanation of this book.

It is my confidence that his adoration of this samyak śruta [śruta jñāna] will be useful to other souls.

Person shall be successful in the process of making his soul sinless [pure] by adoration of pratikramaṇa sūtra. I wish this auspicious desire.

Ever yours
Padmasagar Suri

प्रस्तावना

जिन शासन का एक बहु प्रचलित एवं गंभीर अर्थ वाला शब्द है : **प्रतिक्रमण**. इसका अर्थ है वापस लौटना. इसे समझने से पूर्व **आक्रमण** शब्द को समझ लेना ज्यादा उचित होगा. **आक्रमण** का अर्थ है हमला. जीवन के व्यवहार में हम सदा आक्रमणशील बने रहते हैं. यह आक्रमण दो तरह से होता है- १. मन का बाह्य भावों के प्रति आक्रमण और २. बाह्य भावों का आत्मा के प्रति आक्रमण.

मानव ने भौतिक पदार्थों में ही पूर्ण सुख की कल्पना कर रखी है, परिणामतः वह अपनी आत्मा के वास्तविक सुख से कहीं दूर हट गया है और वह भटक गया है काल्पनिक सुखों के जंगल में. बाह्य सुखों के प्रति मानव के इस आक्रमणशील स्वभाव के कारण उसकी आत्मा के उपर **कर्मों** का भारी बोझ दिन प्रति दिन बढ़ता रहता है और आत्मा जब इन **कर्मों** के भार के नीचे दब जाती है तो उसे बाहर निकालने वाला कोई नहीं मिलता.

इस बाहरी आक्रमण से मानव को अपनी आत्मा में पुनः लौटाने वाली क्रिया है **प्रतिक्रमण**. आप देखते होंगे, शाम ढलते ढलते ही पंछी अपने घोंसले में पुनः लौट आते हैं. दिन भर वे भटकते हैं, किन्तु शाम को

Preface

A most common and profound meant word in Jainism is **pratikramana**. Its meaning is returning back. It will be much better to understand the word **ākramaṇa** before understanding it. The meaning of **ākramaṇa** is to attack. In our daily life we are always aggressive. This attack is made in two ways -- 1. attack of mind towards exterior objects and 2. attack of exterior emotions towards the soul.

Man has imagined complete happiness in physical materials only, as a result he has gone far away from real happiness of his soul and he has gone astray in the forest of imaginary happiness. Due to this aggressive human nature towards exterior happiness, a huge burden of **karmas** is increasing over the soul day by day and when the soul is suppressed under the force of these **karmas**, then no one is found to remove him out.

pratikramana is the rite taking back the man into his soul from these outer attacks. You will be noticing the birds returning back to their nests as the evening declines. Whole day they wander, but they will surely return back in the evening.

वे लौटेंगे ही. दिन भर खेलने वाले बच्चे शाम ढलते ढलते अपने घर को वापस लौटकर माँ की शीतल गोद में आराम से सो जाते हैं. इसी प्रकार मानव को आत्मा में लौटना होगा. इसी को कहा जाएगा **प्रतिक्रमण**. आक्रमण से ठीक विपरीत होगा **प्रतिक्रमण**. आक्रमण का मतलब होगा व्यक्ति का आत्मा में से संसार में गमन और **प्रतिक्रमण** का मतलब होगा व्यक्ति का संसार में से आत्मा में **पुनरागमन**.

प्रतिक्रमण की क्रिया शास्त्रीय परिभाषा में **आवश्यक क्रिया** के अंतर्गत आती है. **आवश्यक क्रिया** यानी अवश्यमेव करने योग्य क्रिया. श्वास लेना शरीर के लिए जितना आवश्यक है उससे ज्यादा आवश्यक है आत्मा के लिए **प्रतिक्रमण**. इस आवश्यक क्रिया को छः विभागों में विभक्त किया गया है – १. सामायिक [सामाईय], २. चतुर्विंशति-स्तव [चऊवीस-थय / चऊवीस-त्थो], ३. वंदन [वंदणय], ४. प्रतिक्रमण [पडिक्कमण], ५. कायोत्सर्ग [काउस्सग] एवं ६. प्रत्याख्यान [पच्चक्खाण]. इस छोटी सी प्रस्तावना में छः आवश्यकों का स्वरूप ठीक से समझाना संभव नहीं है, फिर भी संक्षेप में इसे समझेंगे.

सामायिक – सर्व प्रथम आवश्यक है **सामायिक**. **सामायिक** यानी समत्व भाव की साधना. जब तक समत्व भाव की उपलब्धि नहीं होगी वहाँ तक सभी धर्म क्रियाएँ अपूर्ण बनी रहेंगी. इसी लिए जैन धर्म में समत्व भाव की साधना पर सबसे ज्यादा बल दिया गया है क्योंकि आत्मा

A child playing whole day sleeps soundly in the smooth lap of his mother after returning back to the house as the evening declines. Similarly a man has to return back into the soul. It is called **pratikramaṇa**. **pratikramaṇa** is quite opposite to **ākramaṇa**. Meaning of **ākramaṇa** is **gamana** [going out] of a man from the soul into the world and meaning of **pratikramaṇa** is **punarāgamana** [returning back] of a man from the world into the soul.

The rite of **pratikramaṇa** comes within **āvaśyaka kriyā** [necessary rite] in scriptural definition. **āvaśyaka kriyā** means the rite that should be done certainly. As much as breathing is necessary for the body, more than that **pratikramaṇa** is necessary for the soul. This necessary rite is divided into six parts : 1. **sāmāyika** [sāmāiya], 2. **caturvīṣati-stava** [caūvīsa-thaya / caūvīsa-ttho], 3. **vandana** [vandanaya], 4. **pratikramaṇa** [paḍikkamaṇa], 5. **kāyotsarga** [kāussagga] and 6. **pratyākhyāna** [paccakkhāṇa]. Though explanation of these six necessary rites is impossible in this small preface, even then it will be understood in short.

sāmāyika – The foremost necessity is **sāmāyika**. **sāmāyika** means efforts for emotional equanimity. As long as equanimity is not obtained, all religious rites will be incomplete. Hence importance is given more for attainment of equanimity in Jainism because real **dharma** of soul itself is starting from equanimity. The soul

के वास्तविक धर्म का प्रारंभ ही समत्व भाव से होता है. समत्व भाव के अभाव में आत्मा क्रोधादि कषायों के पल्ले पड़ जाने के कारण अवनति के पथ पर गतिमान बन जाती है. परिणाम स्वरूप उसे जन्म जन्मांतर तक पुनः उन्नति का कोई रास्ता नहीं मिलता. इसीलिए आत्मोन्नति का श्रेष्ठ उपाय सामायिक माना गया है.

चतुर्विंशति स्तव - दूसरा आवश्यक है चौबीस जिनेश्वरों के गुणों का कीर्तन. प्रायः मानव का यह स्वभाव होता है कि वह निन्दा किसी भी व्यक्ति की सरलता से कर सकता है, उस में उसे कोई संकोच नहीं होता. किन्तु यदि किसी के वास्तविक गुणों का दूसरों को परिचय देना होगा तो उसके लिए वह जरूर हिचकिचायेगा. स्व प्रशंसा व्यक्ति जरूर करेगा, किन्तु पर प्रशंसा वह कभी नहीं कर सकेगा. वह दूसरों के गुणों की निन्दा तो कर सकता है, किन्तु अपने अवगुणों की भी निन्दा वह नहीं कर सकता. परिणामतः वह अपने आत्म विकास में आगे नहीं बढ़ सकता. जब व्यक्ति गुणवान के गुणों की प्रशंसा करना आरंभ करता है तब वह अपने आत्म विकास की नींव रखता है.

संसार के सर्वोच्च गुणवान व्यक्ति हैं तीर्थंकर परमात्मा; जिन्होंने राग और द्वेष पर विजय प्राप्त करके वीतरागता प्राप्त की है. उनके गुणों का कीर्तन करने से आत्मगुण शीघ्र ही विकसित होते हैं. इसी लिए चतुर्विंशति स्तव को आवश्यक क्रिया में समाविष्ट किया गया है.

moves in the directions of down fall due to lack of equanimity because of being in possession of ill-wills like anger. As a result any path of progress would not be found again till births and rebirths. Therefore **sāmāyika** is believed to be a best path for spiritual progress.

caturvinśati stava - The second necessity is the eulogy of virtues of twenty for **jineśvaras**. More or less it is the nature of man that he can censure any person easily. There will be no hesitation to him in it. But if introduction of real virtues of any one is to be given to others, then he will surely hesitate. He will surely do self praising, but he can never praise others. He can censure the virtues of others, but can't censure his own demerits. As a result he can't proceed further in his own self-uplift. When man starts praising the merits of meritorious persons, then he lays foundation of his spiritual progress.

The supreme meritorious persons of the world are **tīrthaṅkara paramātmās** who have attained passionlessness by getting victory over passion and malice. Virtues of the soul develop soon by praising their virtues. Hence **caturvinśati stava** [eulogization of twenty four **tīrthaṅkaras**] has been included in **āvaśyaka kriyā**.

वन्दन - नम्रता का प्रतीक है **वन्दन**. **वन्दन** यानी नम जाना. जीवन में अगर नम्रता नहीं होगी तो ज्ञान भी नहीं होगा. आत्मा को ज्ञान के प्रकाश की उपलब्धि में अगर कोई बाधा है तो वह है अहंकार की दिवाल. अहंकार की इस दिवाल को हटाये बिना आत्मा में ज्ञान सूर्य की किरणें नहीं आ सकतीं. व्यक्ति जब तक अहंकार के रोग से ग्रस्त होता है, वहाँ तक उसे आत्मा के आरोग्य की प्राप्ति नहीं होती. व्यक्ति चाहे कितना भी विद्वान और चारित्रवान साधक हो, किन्तु अगर वह अभिमानी हो तो उसकी सारी साधना विफल हो जाएगी. अहंकार को बिना दूर किये वह कभी अपना उद्धार नहीं कर सकेगा. अहंकार की विद्यमानता में व्यक्ति के शेष सद्गुण भी निरर्थक हो जाते हैं. इस अहं को विसर्जन करने की क्रिया है **वन्दन**. बिना अहंकार को दूर किये वंदन नहीं हो सकता और बिना वंदन के व्यक्ति आत्म विकास में आगे बढ़ नहीं सकता.

प्रतिक्रमण - यह अपनी आत्मा द्वारा किये गये अपराधों एवं पापों के स्वीकार करने एवं पुनः अपनी मर्यादाओं में लौट आने की क्रिया है. व्यक्ति **श्रावक धर्म** संबंधी आचारों का स्वयं के आत्म विकास के लिये पालन करता है. किन्तु कई बार अपूर्ण व्यक्ति जाने अनजाने में मन, वचन और काया से स्वयं करने, दूसरों से कराने और कई बार अनुमोदन द्वारा आचार / मर्यादाओं का भंग कर देता है. इन मर्यादाओं का उल्लंघन चार प्रकार से होता है - १. अतिक्रम, २. व्यतिक्रम, ३. अतिचार एवं

vandana - vandana [obeisance] is a symbol of modesty. **vandana** means to bow. If there is no modesty in life then there will be no knowledge also. If there is any obstacle in achieving the light of knowledge in the soul, then it is the wall of self-conceit. Without removing this wall, sun rays of knowledge can not enter the soul. As long as the man is diseased with self conceit, so long he can not gain health of the soul. However much a man may be learned and characteristic devotee of spiritual achievement, all his efforts will fail if he is self conceited. He can never uplift himself without removing self conceit. Even other virtues of person becomes worthless in presence of self conceit. The rite of disposing off this self conceit is **vandana**. Without disposing self conceit, obeisance can not be done and without obeisancing, man can not proceed further in self elevation.

pratikramaṇa - It is the rite of confessing offenses and sins committed by his soul and returning back into self-restrictions. A person observes ethical conduct concerning **śrāvaka dharma** for his own spiritual uplift. But many times an incomplete man breaks above self-restrictions knowingly or unknowingly by mind, speech and body by doing himself, by causing others to do and by seconding. Breaching of these restrictions is caused in four ways -- 1. **atikrama**, 2. **vyatikrama**, 3. **aticāra** and 4. **anācāra**. Origin of any type of ill-

४. **अनाचार**. मन में किसी प्रकार का दुर्विचार उत्पन्न होना **अतिक्रम** है; उसकी पूर्ति के लिये प्रवृत्त होना **व्यतिक्रम** है; आंशिक रूप में वह कार्य कर लेना **अतिचार** है और उस कार्य को संपूर्ण रूप में करना **अनाचार** है. उपरोक्त चार परिस्थितियों में से प्रथम तीन परिस्थितियों में से तो दुष्कृत्यों के प्रति आलोचना, निंदा, गर्हा और दुर्गच्छा द्वारा मन, वचन और काया से पुनः अपनी मर्यादाओं में लौटा जा सकता है. लौटने की यह क्रिया ही **प्रतिक्रमण** है.

जहाँ तक व्यक्ति अपूर्ण है, वहाँ तक उससे जानते या अजानते पाप होंगे ही. अपूर्ण व्यक्ति अगर कहता है कि मेरे से कभी भूल नहीं होती तो यह उसकी सबसे बड़ी भूल है. अपराधों का स्वीकार, पश्चात्ताप और पुनः अपराध न करने का संकल्प— ये तीन गुण जब तक व्यक्ति में नहीं आते, तब तक वह **प्रतिक्रमण** की पावन क्रिया में प्रविष्ट नहीं हो सकता. जब इन तीनों गुणों का व्यक्ति में विकास होगा, तभी व्यक्ति सही अर्थ में **प्रतिक्रमण** कर सकेगा. **प्रतिक्रमण** के विषय में यहाँ तक कहा गया है कि व्यक्ति के जीवन में चाहे कितने ही पापों का ढेर एकत्रित हुआ हो, किन्तु अगर वह हार्दिक भाव से **प्रतिक्रमण** कर लेता है तो वह शीघ्र ही अपने उन पापों से मुक्त हो जाता है.

प्रतिक्रमण द्वारा अपने हर अपराध की अंतःकरण पूर्वक क्षमा मांगी जाती है और जीव मात्र से मैत्री पूर्ण संबंध स्थापित किये जाते हैं एवं

will in the mind is **atikrama**. To become ready for carrying out that work is **vyatikrama**. To do that work partially is **aticāra**. To do that work completely is **anācāra**. One can return back by thought, speech and physically by criticizing, censuring, condemning and strongly disliking towards the evil deed from first three states out of aforesaid four states. This act of returning is **pratikramaṇa**.

As long as a man is incomplete [non-omniscience], so long he would commit sins knowingly or unknowingly. It itself will be his great fault if an incomplete man says that faults are never committed by him. As long as three virtues -- confession of faults, repentance and determination for not repeating faults again, do not come in man, so long he can not enter the sacred rite of **pratikramaṇa**. When these three virtues develop in man, then only man can perform **pratikramaṇa** in real terms. It is told so far regarding **pratikramaṇa** that however much the heap of sin might have been accumulated in the life of a man, but if he performs **pratikramaṇa** heartily, he soon frees himself from those sins.

Pardon is begged heartily for every fault by means of **pratikramaṇa** and friendly relations are established and are made firm with each and every living

दृढ किये जाते हैं.

कायोत्सर्ग – कायोत्सर्ग यानी शरीर के ममत्व को छोड़ देना. जहाँ तक व्यक्ति शरीर की चिन्ता में होता है वहाँ तक वह आत्म चिन्तन नहीं कर सकता. व्यक्ति के जीवन का अधिकतर समय खास करके शरीर की साज-सज्जा और खान-पान आदि द्वारा शरीर पोषण में ही व्यतीत हो जाता है. ऐसे में वह अपनी आत्मा को याद करने का समय ही नहीं निकाल पाता. उसे यह ख्याल ही नहीं रहता कि इस शरीर की कितनी भी चिन्ता की जाए और कितना भी पोषण किया जाए, किन्तु एक दिन तो वह अवश्य नष्ट होकर ही रहेगा. आत्म चिन्तन अगर करना है तो शरीर को भूल जाना नितान्त आवश्यक है और उसी पावन क्रिया का नाम है **कायोत्सर्ग**. **कायोत्सर्ग** का मतलब है शरीरी को अशरीरी बनाने की क्रिया; कषायात्मा को परमात्मा बनाने की क्रिया.

प्रत्याख्यान – प्रत्याख्यान का मतलब है आत्मा का अहित करने वाली चीजों का त्याग और हित करने वाली चीजों का स्वीकार. भौतिक पदार्थों का भोग और उपभोग एवं उन पदार्थों के प्रति आसक्ति आत्मा के लिए अनर्थकारी एवं अहितकारी हैं. उन चीजों का जितना त्याग किया जाता है उतना ही वह आत्मा के लिए उपकारी बन जाता है. आत्मा में जब किसी पदार्थ के प्रति आसक्ति बनी रहती है तब वह आत्मा के लिए बंधन बन जाती है और आसक्ति जब तक दूर नहीं की जाती तब

being.

kāyotsarga – kāyotsarga means to abandon attachment of the body. As long as a man is busy in worry of the body, so long he can not do self-contemplation. Most of the time in life passes away mostly in the maintenance of body and nourishment of body with eating and drinking it self. In such he can not find time for thinking of his won soul. He would not mind it however much he may worry and however much he may nourish his body, it will perish one day definitely. If self-contemplation is to be done, he must forget his body and the name of that sacred rite is **kāyotsarga**. The meaning of **kāyotsarga** is act of making corporeal to incorporeal; act of making **kaṣāyātmā** [soul with ill-wills like anger etc.] into a supreme soul.

pratyākhyāna – pratyākhyāna means abandonment of things harmful to the soul and acceptance of things beneficial to the soul. Use and reuse of physical materials and attachment towards those materials is calamitous and harmful to the soul. As much as those things are abandoned, so much it becomes beneficial to the soul. When attachment for any substance exists in the soul then it becomes bondage for the soul. And as long as this attachment is not removed, man can't acquire his spiritual freedom. The rite freeing soul from this attachment is

तक व्यक्ति अपनी आत्मिक स्वतंत्रता को उपलब्ध नहीं हो सकता. उस आसक्ति से आत्मा को छुड़ाने वाली क्रिया है : **प्रत्याख्यान**. **प्रत्याख्यान** की पावन क्रिया उस औषध का काम करती है जो आत्मा के परतंत्रता रूपी रोग को मिटाकर उसकी स्वतंत्रता को उपलब्ध कराता है.

ये छहों **आवश्यक** जब एकत्रित होते हैं तभी व्यक्ति पूर्ण आत्मदशा को शीघ्रता से उपलब्ध होता है. अतीत में व्यक्ति के लिए **प्रतिक्रमण** जितना जरूरी था उससे कहीं ज्यादा जरूरी आज बन गया है क्यों कि आज व्यक्ति की आध्यात्मिक चेतना बाहरी आक्रमणों के कारण मूर्छित हो चली है. बाहरी कल्पनाओं में भटकी हुई चेतना को आत्मा में पुनः स्थापित करना जरूरी हो गया है. चेतना के इस पुनः स्थापन और पुनर्जागरण के लिए **प्रतिक्रमण** एक सक्षम माध्यम है. **प्रतिक्रमण** की क्रिया यह अमृत है जो आत्मा को अजरत्व और अमरत्व प्रदान करने का दायित्व निभाती है. यह क्रिया व्यक्ति को अपूर्णता में से पूर्णता की ओर आगे बढ़ने का संदेश देती है, इतना ही नहीं, इस पावन क्रिया के माध्यम से व्यक्ति पर-दर्शन से दूर हटकर स्व-दर्शन को उपलब्ध होकर क्रमशः आत्म विकास में तेज गति से सफलता प्राप्त करता है. यह पावन क्रिया अगर ठीक से की जाती है तो आत्मा अपने शाश्वत सुख को कुछ समय में ही उपार्जन कर लेती है.

पूर्वाचार्यों ने इस पावन क्रिया को **सूत्रबद्ध** किया है. अतः इसका

pratyākhyāna. The sacred rite of **pratyākhyāna** does the work of that medicine which causes the soul to achieve its freedom erasing from the disease present in form of slavery.

A man can achieve complete self-elevation only then when all these six **āvaśyakas** gather together. As much as **pratikramaṇa** was necessary to the man in past, more than that it is necessary today because spiritual awareness of man has gone out of consciousness due to external attacks. It is necessary to re-establish the conscious wandering in outer imaginations back into the soul. **pratikramaṇa** is a capable medium for re-establishment and realertness of conscious. The rite of **pratikramaṇa** is that nectar which performs responsibility of donating ever non old age [youngness] and immortality to the soul. This rite gives message to the man for moving forward to completeness from incompleteness and the man attains prompt success in self-uplift by moving away from viewing towards others and attains self-viewing by means of this sacred rite. If this sacred rite is performed properly then the soul would acquire eternal happiness in short period.

Past preceptors have composed this sacred rite in the form of **sūtras**

पाण्डव, पान्दव, पाम्दव इत्यादि.

संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं में उच्चारण शुद्धि पर सबसे ज्यादा जोर दिया गया है. उच्चारण अगर गलत है तो अर्थ बदल जाने की पूरी संभावना रहती है. उदाहरण के रूप में संस्कृत भाषा में एक शब्द है सूरि. इसका अर्थ है आचार्य. अगर सही उच्चारण न करते हुए इसको सुरी के रूप में उच्चारण किया जाए तो इसका अर्थ हो जाएगा देवी. कितना भारी अर्थ परिवर्तन! इस से समझ में आएगा कि उच्चारण शुद्धि का कितना महत्त्व है. अब pandava शब्द का सही उच्चारण करना है तो क्या किया जाए? इसके लिए कुछ संकेत बनाने पड़ेंगे. ये संकेत आपको यहाँ देखने को मिलेंगे, जैसे कि ङ के लिए ṅ, अ और आ के लिए a और ā एवं ट वर्गीय अनुस्वार [ं] के लिए ṁ लिखा गया है. इन संकेतों की सहायता से पांडव शब्द pāṇḍava के रूप में लिखा जाएगा.

नागरी लिपि में कुछ वर्ण ऐसे हैं जिनके लिए अंग्रेजी वर्णमाला में स्वतंत्र रूप से कोई वर्ण नहीं है. ऐसा भी होता है कि नागरी लिपि के दो भिन्न वर्णों के लिए अंग्रेजी में एक ही वर्ण का प्रयोग होता है जैसे कि त और ट के लिए अंग्रेजी में t ही लिखा जाएगा; अइ और ऐ के लिए अंग्रेजी में ai ही लिखा जाता है. इस स्थिति में पाठक शुद्ध उच्चारण के लिए कुछ निर्णय नहीं कर सकता. इन सभी संभावित आपत्तियों को

More emphasis is given to correctness of pronunciation in languages like **sanskṛta**, **prākṛta**. If pronunciation is wrong, then there will be complete possibility of change in meaning. For example सूरि [sūri] is a word in **sanskṛta** language. Its meaning is ācārya [preceptor]. If it is wrongly pronounced as सुरी [suri], then its meaning becomes devī [goddess]. How much change in meaning! By this it is understood how much importance is for correctness of pronunciation. What should be done if the word **pandava** is to be pronounced correctly. For this, some symbols should be used. These symbols [diacritic marks] are seen here. As like ḍ for ङ; a and ā for अ and आ and ṁ for ं [nasal sound of ट [ṭa] group are used here. With the help of these symbols, the word पांडव would be written as **pāṇḍava**.

There are some letters in **nāgarī** script for which there are no independent letters in **English** alphabet. It so happens that only one letter is used in **English** for two different letters of **nāgarī** script; such as for त् and ट् only t is written in **English**, for अइ and ऐ only ai is written in **English**. In this state, reader cannot decide anything for correct pronunciation. To avoid all these possible unevenness, all attempts are made here. By using the symbols [diacritic marks] given below,

ढालने के लिए यहाँ पूर्ण प्रयास किया गया है. यहाँ नीचे दिये गये संकेतों का उपयोग करने पर सभी कठिनाइयाँ दूर हो जाएंगी.

यहाँ दिये गये लिप्यंतरण में क्रमशः अ - आ, इ - ई, उ - ऊ के लिए a - ā, i - ī, u - ū; अइ - ऐ, अउ - औ के लिए ai - ai, au - au; र - ऋ - ॠ, ल [व्यंजन] - लृ - लृ [स्वर] के लिए r - r, l - l [व्यंजन] - l - l [स्वर]; म - ँ - ञ [अनुस्वार] एवं ह - ः [विसर्ग] के लिए m - m, h - h और त - ट, द - ड के लिए t - t, d - d; न - ङ - ञ के लिए n - n, ṅ - ṅ एवं स - श - ष के लिए s - s, ś - ś का उपयोग किया गया है.

शब्दों के बीच में आनेवाले अनुस्वारों [ं] को उनके बाद में आनेवाले व्यंजनों के वर्ग के अनुसार विभाजित किया गया है, जैसे कि क, च, ट, त, प वर्ग के व्यंजनों के पूर्व आनेवाले अनुस्वारों [ं] के लिए क्रमशः ṁ - ṁ, ṅ - ṅ, ṇ - ṇ, ṁ - ṁ; य, र, ल, व, श, ष, स और ह के पूर्व अनुस्वार [ं] होने पर उसका उच्चारण प्रायः न के रूप में होता है और कुछ शब्दों में उसका उच्चारण पृथक् पृथक् रूप में भी होता है. नागरी लिपि के शब्दों में कही कहीं अनुस्वारों [ं] का उच्चारण काफी अस्पष्ट होता है. ऐसे अनुस्वारों [ं] के लिए अलग संकेत [ं] का उपयोग किया गया है उदाहरणार्थ, वंदु शब्द में दु के उपर का ँ [अनुस्वार] अस्पष्ट होने

all objections are averted.

a - ā, i - ī, u - ū for अ - आ, इ - ई, उ - ऊ; ai - ai, au - au for अइ - ऐ, अउ - औ; r - r, l [consonant] - l [vowel] for र - ऋ - ॠ, ल [consonant] - लृ - लृ [vowel]; m - m - ṁ and h - h for म - ँ - ञ [nasal sound] and ह - ः [soft aspirant sound]; t - t, d - d for त - ट, द - ड; n - n - ṅ - ṅ for न - ङ - ञ and s - s - ś for स - श - ष respectively are used in transliteration here.

The nasal sign [ं] coming in between the words are classified according to the groups of consonants coming after them; such as ṁ - ṁ, ṅ - ṅ, ṇ - ṇ, ṁ - ṁ for the nasal sign [ं] coming before the consonants of the groups ka, ca, ṭa, ta, pa respectively; if the nasal sign [ं] is present before y, r, l, v, s, ś, ṣ and h then its pronunciation will be mostly like n and in some words its pronunciation will be in different form also. Some times pronunciation of nasal sign [ं] in the words of nāgarī script will be unclear. For such nasal sign [ं] a separate symbol [ं] is used. For example the word वंदु will be written as vanduṁ in English as the ० [nasal sign] over दु is unclear.

से अंग्रेजी में **vandu** के रूप में लिखा जाएगा।

फ़ारसी [पश्यन] वर्ण क, ख, ग, ज, फ़, ड और ढ के लीप्यंतरण के लीये क्रमशः **k, kh, g, j, d, dh** and **ph** का प्रयोग किया गया है।

उपर्युक्त चिहनों को प्रयोग कर इस पुस्तक में लिप्यंतरण को सर्वांग संपूर्ण शुद्ध बनाने का पूरा प्रयास किया गया है।

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा एवं अष्ट मंगल फाउण्डेशन, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित एवं मेरे द्वारा संपादित हिन्दी-अंग्रेजी में प्रतिक्रमण सूत्रों की पुस्तकों की पिछली दो आवृत्तियों में [प्रतिक्रमण सूत्र [हिन्दी-अंग्रेजी] - प्रथम आवृत्ति, पंच प्रतिक्रमण सूत्र [हिन्दी-अंग्रेजी] - द्वितीय आवृत्ति एवं देवसिअ-राइअ प्रतिक्रमण सूत्र [हिन्दी-अंग्रेजी] - प्रथम व द्वितीय आवृत्तियों में] अस्पष्ट उच्चार वाले अनुस्वार [ं] के लिये ~ चिह्न का उपयोग किया गया था। लेकिन कम्प्यूटर द्वारा इस चिह्न को इच्छित रूप में प्रयोग न हो सकने के कारण, इस पुस्तक में [ं] चिह्न का उपयोग किया गया है, जिसका पाठक गण विशेष ध्यान रखें। इस एक परिवर्तन के सिवाय, लिप्यंतरण में शेष सभी चिह्न पूर्ववत् रखे गये हैं।

For the transliteration of **Persian** characters क, ख, ग, ज, ड और ढ **k, kh, g, j, d, dh** and **ph** are used respectively.

All efforts are being made to make the transliteration completely correct in all ways by using the above mentioned symbols [diacritic marks] in this book.

Symbol of ~ was used for unclear [silent] pronunciation of nasal sound [ं] in two previous editions of **Pratikramaṇa Sūtra** books in Hindi - English -- [**Pratikramaṇa Sūtra [Hindī-English]** First edition, **Pañca Pratikramaṇa Sūtra [Hindī-English]** Second edition and **Devasia-rāia Pratikramaṇa Sūtra [Hindī-English]** First and Second editions published by **Shree Mahavir Jain Aradhana Kendra, Koba** and **Ashtmangal Foundation, Ahmedabad** and edited by me. But the symbol of [ं] is used in this book as the symbol of [~] could not be used as desired through computer of which the readers shall take a special note. Excluding this one change all other symbols [diacritic marks] are kept as before in transliteration.

लिप्यंतरण में अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में कंपोजिंग असुविधाजनक होने से इस पुस्तक में संपूर्ण लिप्यंतरण अंग्रेजी के छोटे अक्षरों में किया गया है. लिप्यंतरण में व्यक्ति वाचक संज्ञा के लिये भी अंग्रेजी के छोटे अक्षरों का ही उपयोग किया गया है.

इन संकेतों की संपूर्ण जानकारी के लिए अलग से वर्णमाला के कोष्ठक दिये गये हैं. साथ ही अंग्रेजी और भारतीय उच्चारण के अनुसार नागरी लिपि के अक्षरों का उच्चारण बताने के लिए कुछ अंग्रेजी शब्दों के कोष्ठक भी दिये गये हैं. उसे आप अच्छी तरह पढ़कर और ठीक से समझकर अगर सूत्र पढ़ेंगे तो आप परिपूर्ण रूप से सर्वोत्तम शुद्ध उच्चारण कर सकेंगे. यहाँ एक बात ध्यान में रखें कि जो कोई भी सूत्र आपको पढ़ना है, उसे उसके पूर्ण जानकार व्यक्ति के मुँह से अच्छी तरह ग्रहण कर लेना चाहिए और बाद में ही सूत्र पढ़ने और याद करने का प्रयास करना चाहिए, ताकि सूत्र में किसी भी प्रकार की अशुद्धि न रह जाए.

सभी सूत्रादि का अंग्रेजी में लिप्यंतरण हिन्दी भाषा के साथ दिया गया है. सभी सूत्रों के शब्दार्थ, गायार्थ, विशेषार्थ व सूत्र परिचय हिन्दी के साथ साथ अंग्रेजी भाषा में दिये गये हैं. अंग्रेजी भाषा में जैन शब्दावली अत्यंत सीमित होने के कारण योग्य शब्द का चयन समस्या पूर्ण रहा

As composing of transliteration in English capital letters was inconvenient, complete transliteration is being done in small letters of english in this book. English small letters are being used even for proper nouns in transliteration.

For the complete knowledge of these symbols, separate charts of complete alphabet are given. In addition to this, charts are also given with English words showing the pronunciation of letters of nāgarī script according to British and Indian type of pronunciation. You will be able to pronounce completely correct in all ways, if you begin to read sūtras after reading carefully and understand it carefully. Here keep in mind that if any sūtra which is to be learnt, should be learnt and memorized only after grasping it well from person having complete knowledge of it so that no error of any type would remain in the sūtra.

Transliteration in English of all sūtras etc. is given along with Hindi language. Literal meaning [meaning of the words], stanzaic meaning, specific meaning and introduction of the sūtra for all the sūtras are given in English along with Hindi language. Due to very limited Jain terminology in English language,

है और बहुत से जैन पारिभाषिक शब्दों को पूरा न्याय नहीं मिल पाया है। कई जगह जैन पारिभाषिक शब्दों का अंग्रेजी में मूल रूप में ही उपयोग किया गया है। ऐसे शब्दों का अर्थ विशेषार्थ में अलग से दिया गया है। सूत्र संबंधी अन्य उपयोगी जानकारी को भी विशेषार्थ में समाविष्ट किया गया है।

एक ही सूत्र में एक ही शब्द दूसरी बार समान अर्थ में आया हो तो वह शब्द फिर से नहीं दिया है। अर्थ फेर या शब्द में कुछ फेर हो तो वह शब्द दूसरी बार दिया है।

एक ही सूत्र में कहीं कहीं हिन्दी में दो अलग अलग शब्दों का अर्थ अंग्रेजी में एक ही शब्द के रूप में अथवा अंग्रेजी में दो अलग अलग शब्दों का अर्थ हिन्दी में एक ही शब्द के रूप में दिया है; कारण ऐसे स्थानों में एक भाषा के अर्थ में शब्द विभाजित नहीं हो सकता है, जब कि दूसरी भाषा के अर्थ में वही शब्द विभाजित हो सकता है।

कहीं कहीं एक ही सूत्र में एक ही शब्द का अर्थ दूसरी बार एक भाषा में समान होता है लेकिन दूसरी भाषा में कुछ बदलता है, तो ऐसी जगह में जिस भाषा में अर्थ बदलता है, उसी भाषा में उस शब्द का अर्थ दूसरी बार दिया है और जिस भाषा में अर्थ समान रहता है वहां वह शब्द फिर से नहीं दिया है।

शब्दार्थ में शब्द के साथ दी हुई संख्या सूत्र के गाथा की संख्या

selection of proper words was a problem and many Jain terminological words could not get proper justice. In many places, typical Jain words are used as it is in English. Meaning of such words are given in specific meaning separately. Other useful knowledge about the **sūtra** is also included in specific meaning.

If a word has come for second time in the same **sūtra** in similar meaning, that word is not given again. If there is some difference in meaning or word, then that word is given for second time.

In the same **sūtra** in some places, meaning of two separate words in Hindi is given as a single word in English or meaning of two separate words in English is given as a single word in Hindi; because in such cases, the word can't be divided for meaning in one language where as the same word can be divided for meaning in other language.

In some cases for second time, the meaning of one word in same **sūtra** remains same in one language but changes in other language, then in such cases, the meaning of that word is given for second time only in that language in which the meaning changes; and that word is not given again in the language in which the meaning remains same.

Number given along with the word in **Literal meaning** indicates the stanza

को दर्शाती है, जैसे सूत्र नं. २ के शब्दार्थ में १. पंचिदिय संवरणो शब्द में १. संख्या गाथा की संख्या को दर्शाती है, इसी तरह विशेषार्थ में भी मुख्य शब्द के साथ दी हुई संख्या सूत्र के गाथा की संख्या को दर्शाती है, जैसे सूत्र नं. ३५ के विशेषार्थ में '३. दो प्रकार के परिग्रह :-' और '४. अप्रशस्त =' शब्दों में ३. और ४. संख्या गाथा की संख्याओं को दर्शाती है.

प्रतिक्रमणादि धर्म क्रिया की विधियों का विस्तृत सरल अंग्रेजी भाषांतर हिंदी भाषा के साथ साथ दिया गया है. हिन्दी-अंग्रेजी भाषा में विस्तृत-सरल परिचय के साथ प्रतिक्रमणादि में उपयोगी विविध मुद्राओं के चित्र भी दिये गये हैं. इस तरह यह संपूर्ण पुस्तक द्विभाषा - हिन्दी एवं अंग्रेजी में होने से दोनों में से किसी भी भाषी के लिए उपयोगी होगी.

प्रतिक्रमण सूत्र सह विवेचन नामक इस पुस्तक को पाठकों की सुविधा के लिये दो भागों में छपायी गई है. प्रथम भाग में सामायिक, गुरु वंदन, चैत्य वंदन व देव वंदन संबंधी नवकार महामंत्र से देवावच्छ-गराण तक के १ से २५ सूत्रों का समावेश किया गया है. दूसरे भाग में देवसिअ-राइअ प्रतिक्रमण संबंधी शेष भगवान्हं आदि वंदन से सकलतीर्थ तक के २५ से ५१ सूत्रों का समावेश किया गया है.

number of the **sūtra**. As in the word 1. **pañcidiya samvarāṇo** in **Literal meaning** of the **sūtra no. 2**, the number 1. indicates the stanza number. Similarly number given along with main word in **Specific meaning** indicates stanza number of the **sūtra**. As in the words '3. **Two types of possessiveness :-**' and '4. **aprasāsta =**' of **Specific meaning** in **sūtra no. 35**, the numbers 3. and 4. indicates stanza number.

A detailed and easy English translation of the procedures of religious rites like **pratikramaṇa** is given together with Hindi language. Pictures of various poses useful in **pratikramaṇa** etc. are given along with detailed and easy introduction in Hindi and English language. In this way this book is very useful for people knowing any of both the languages as the complete book is prepared in two languages Hindi and English.

For the convenience of the readers, this book, namely **pratikramaṇa sūtra** with explanation, is printed in two parts. In first part, **namaskāra mahā mantra** to **veyāvacca-garāṇam**, 1 to 25 **sūtras** relating to **sāmāyika**, **guru vandana**, **caitya vandana** and **deva vandana** are being included. In second part, **bhagavānham ādi vandana** to **sakalatīrtha**, 25 to 51, the rest of **sūtras** relating to **devasia** and **rāia pratikramaṇa** are being included.

प्रत्येक भाग में संबंधित विधियाँ, आवश्यक दोहे, चैत्य वंदन आदि विविध काव्यों को सम्मिलित किया गया है। प्रथम / द्वितीय भाग की यह पुस्तक जिज्ञासु पाठक और आराधकों को खूब उपयोगी बने और वे इस पुस्तक के माध्यम से प्रतिक्रमण आदि की पावन क्रिया का लाभ लें, यह मेरी शुभ कामना है।

प्रतिक्रमण सूत्र के अर्थ आदि को अंग्रेजी में तैयार करने का यह मेरा प्रथम प्रयास है। पुस्तक के संपादन-भाषांतर आदि में पूर्ण रूप से ध्यान रखने पर भी प्रमादवश, कम्प्यूटर दोष या दृष्टि दोष से यदि कोई त्रुटि/अशुद्धि रह गई हो एवं जिनाज्ञा के विरुद्ध कुछ भी लिखने में आया हो उसके लिए अंतःकरण से मिच्छा मि दुक्कडं, साथ ही पाठकों से निवेदन है कि वे अशुद्धि को सुधारकर पढ़ें एवं हमें अशुद्धि से अवगत कराएँ।

परम उपकारी स्वर्गीय गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री कैलाससागर सूरीश्वरजी महाराज साहेब ने इस कार्य में सफलता के लिए आशीर्वाद प्रदान कर प्रोत्साहित किया था। उसके लिए मैं उनका सदा ऋणी रहूँगा।

परम उपकारी आचार्यदेव श्री कल्याणसागर सूरीश्वरजी महाराज साहेब ने भी इस कार्य में आशीर्वाद प्रदान किया है।

In every part, relating procedures, various necessary **kāvyas** like couplets, **caitya vandana** are being included. It is my only good wish that this book of part -1 / part - 2 be very useful to all curious learners and adorers and they shall take full advantage of the sacred rite of **pratikramaṇa** etc. through this book.

This is my first effort to prepare the meanings etc. of **pratikramaṇa sūtras**. Though full attention is kept on editing-translation etc.; if any short coming/error has remained by computer mistake or by over-sight due to negligence; and if any thing is written against **jinājñā**, for that heartily **micchā mi dukkaḍam**. Besides readers are requested to read correction the errors if any and also to inform us of those errors.

Most benevolent late **gacchādhīpati ācāryadeva śrī kailāsasāgara sūrīśvarājī mahārāja sāheba** had encouraged me by bestowing the blessings for success of this book. For that I will be always indebted to him.

Most benevolent **ācāryadeva śrī kalyāṇasāgara sūrīśvarājī mahārāja sāheba** has also bestowed the blessings.

परम पूज्य सम्मेत शिखर तीर्थोद्धारक, प्रवचन प्रभावक आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब की कृपा दृष्टि से यह पुस्तक तैयार हो सकी है. इनका भी मैं सदा ऋणी रहूँगा.

मैं अपने विद्वान गुरुदेव परम पूज्य उपाध्याय श्री धरणेंद्रसागरजी महाराज साहेब को भी नहीं भूल सकता हूँ.

प. पू. स्वर्गस्थ पन्थास प्रवर श्री सूर्यसागरजी गणि महाराज साहेब के विद्वान शिष्यरत्न मुनिराज श्री मित्रानंद सागरजी महाराज साहेब का भी आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के हिंदी भाग का प्रूफ-रिडिंग कर इस कार्य में पूर्ण सहयोग दिया है.

इस पुस्तक के अंग्रेजी विभाग की भाषा और व्याकरण शुद्धि हेतु स्व. प्रो. श्री रमणभाई जे. मझमुदार के सहयोग के लिये मैं उनका आभारी हूँ.

प्रस्तुत पुस्तक संबंधी भिन्न-भिन्न समुदायवर्ति पूज्य आचार्य भगवंत आदि के अभिप्राय व आशीर्वाद प्राप्त हुए हैं. तदर्थ उन सबका मैं ऋणी हूँ.

प्रस्तुत पुस्तक में प्रतिक्रमण के सूत्र, उनके शब्दार्थ, गायार्थ, विशेषार्थ एवं सूत्र परिचय को तैयार करने में मुख्यतः पू. पन्थास श्री भद्रंकर विजयजी गणि एवं मुनि श्री कल्याणप्रभ विजयजी द्वारा संपादित जैन साहित्य विकास मंडल, मुंबई द्वारा प्रकाशित श्री

This book could be finished only with the grace of most reverent **Sammeta Sikhara tīrtha** saviour, impressive discourser **ācāryadeva śrī padmasāgara sūrīśvarajī mahārāja sāheba** I will be indebted to him also.

I can not forget my learned **Gurudeva upādhyāya śrī dhaṛṇendra sāgarajī mahārāja sāheba**

I am also grateful to most reverent learned **munirāja śrī mitrānanda sāgarajī mahārāja sāheba**, a desciple of late **pannyāsa pravara śrī sūry sāgarajī gaṇi mahārāja sāheba** who has given me full co-operation in proof-reading of Hindi print of this book.

I am grateful to **late Prof. Sri Ramanbhai J. Majmudar** for his co-operation in making linguistic and grammatical corrections of English part of this book.

Opinions and blessings regarding the present book are received from **venerable ācārya bhagavantas** etc. of various groups. For that, I am greatful to all of them.

sūtras of the **pratikramaṇa**, their **literal meanings**, **stanzaic meanings**, **specific meanings** and **introduction of the sūtras** are prepared mainly on the basis of **śrī pratikramaṇa sūtra prabodha ṭīkā**, Part – 1, 2 edited by venerable **pannyāsa śrī bhadraṅkara vijayajī gaṇi** and muni **śrī kalyāṇaprabha vijayajī**

प्रतिक्रमण सूत्र प्रबोध टीका, भाग- १,२ का आधार लिया गया है।

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा स्थित आचार्यश्री कैलास सागरसूरि ज्ञान मंदिर के कम्प्यूटर विभाग में प. पू. विद्वान मुनिराज श्रीअजय सागरजी महाराज साहेब एवं प. पू. विद्वान मुनिराज श्रीअरविंद सागरजी महाराज साहेब के मार्गदर्शन व प्रयासों से एवं कर्मचारी गण— प्रोग्रामर श्री प्रीतेनकुमार शाह, कंपोजर - श्री अमीतकुमार शाह, जिज्ञेशकुमार शाह एवं केतनकुमार शाह के विशेष प्रयासों से इस पुस्तक का संपूर्ण कंपोजिंग कार्य कम्प्यूटर द्वारा संभव हो सका है।

अंत में इस पुस्तक को तैयार करने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग देनेवालों का भी मैं आभारी हूँ।

पंडित श्री वीरविजयजी जैन उपाश्रय,
भट्टी की बारी, गांधी रोड पुल के नीचे,
अहमदाबाद

निर्वाणसागर.
सं. २०५३ का. शु. ५
दि. १५-११-१९९६

published by Jain Sahitya Vikas Mandal, Mumbai.

Under the guidance and with the efforts of learned munirāja śrī ajaya sāgarajī mahārāja sāheba and learned munirāja śrī aravinda sāgarajī mahārāja sāheba and with the special efforts of programmer śrī pritenakumāra śāha, Composers śrī amitakumāra śāha, jijñeśakumāra śāha and ketanakumāra śāha, the staff members of computer section of ācārya śrī kailāsa sāgara sūri jñāna mandira situated at śrī mahāvīra jaina ārādhana kendra, kobā, composing of this complete book was possible through computer.

Finally I am grateful to all those who have directly or indirectly assisted me in publishing this book.

Pandit Sri Virvijayji Jain Upashrya,
Bhatti ki bari, Below Gandhi road bridge,
Ahmedabad.

nirvāṇa sāgara.
• Sam. 2053, Kartik Shukla 5
Dt. 15-11-1996

१. स्थापनाचार्यजी को स्थापन करने की मुद्रा [चि. १].

मुद्राओं का परिचय

३. प्रतिक्रमण में बैठने की मुद्रा [चि. ३].

1. Pose of consecrating the sthāpanācāryajī [Pic. 1].

Introduction of postures

3. Posture of sitting in pratikramaṇa [Pic. 3].

चि. १

Pic.1



२. स्थापनाचार्यजी को उत्थापन करने की मुद्रा [चि. २].

2. Pose of deconsecrating the sthāpanācāryajī [Pic. 2].

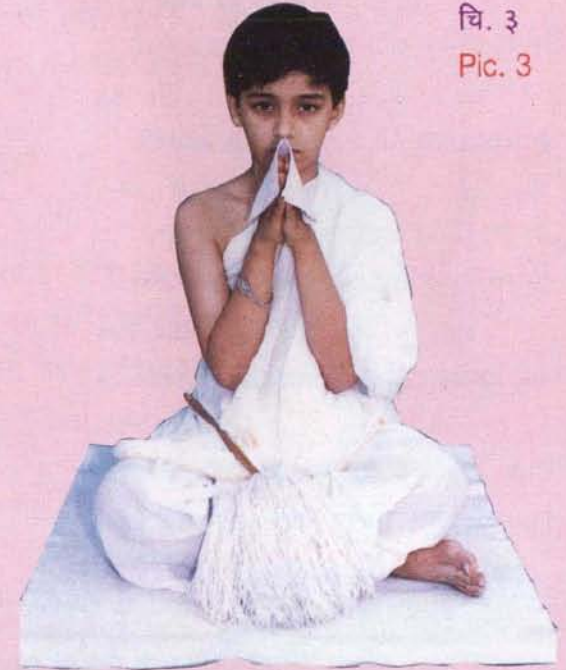
चि. २

Pic. 2



चि. ३

Pic. 3



चि. ४

Pic. 4



४. प्रतिक्रमण में खड़े रहने की मुद्रा [चि. ४].

4. Posture of standing in pratikramaṇa [Pic. 4].

५. खमासमण [पंचांग प्रणिपात] मुद्रा

5. Posture of khamāsamaṇa [pañcāṅga praṇipāta]

चि. ५

Pic. 5



[पांच अंग = दो हाथ, दो घुटने एवं मस्तक.]
[Five limbs = 2 hands, 2 knees and head.]

१. इच्छामि खमासमणो ! से निसीहियाए तक खड़े होकर बोलें [चि. ४].

1. Recite **icchāmi khamāsamaṇo!** to **nisīhiyāe** in standing pose [Pic. 4].

२. मत्थएण वंदामि कहते हुए खमासमण दें [चि. ५].

2. Reciting **matthaena vandāmi**, give **khamāsamaṇa** [Pic. 5].

६. अब्भुट्ठिओमि खमाने की मुद्रा

6. Posture of bowing abbhutthiomi

चि. ६
Pic. 6



१. इच्छाकारेण से खामेमि देवसिअं तक खड़े होकर कहें [चि. ४].

1. Recite icchākāreṇa to khāmemi devasiam in standing pose [Pic. 4].

२. जं किंचि से मिच्छा मि दुक्कडं तक खमाते हुए कहें [चि. ६].

2. Bowing, recite jam kiñci to micchā mi dukkaḍam [Pic. 6].

७. काउस्सग्ग / कायोत्सर्ग / जिन मुद्रा

7. kāussagga / kāyotsarga / jina mudrā

अप्पाणं वोसिरामि कहने के बाद, नासिका के अग्र भाग पर दृष्टि स्थिर करते हुए, पैर के दोनों अंगुलों के बीच चार अंगुल का एवं एड़ियों के बीच कुछ कम [तीन अंगुल से कुछ ज्यादा] अंतर रखकर, शरीर को स्थिर रखें [चि. ७].

After saying appāṇam vosirāmi, making the sight unwavering on the tip of the nose, keeping the space of four fingers in between the toes and little less [little more than three fingers] in between the heels of the legs, keep the body firm [Pic. 7].



चि. ७
Pic. 7

८. योग मुद्रा

8. yoga mudrā

चैत्य वंदन, जं किंचि, नमुत्थु णं, नमोर्हत्, उवसग्ग-हरं एवं स्तवन बोलने की मुद्रा [चि. ८,९,१०].

Posture of reciting caitya vandana, jam kiñci, namutthu ñam, namorhat, uvassagga-haram and stavana [Pic. 8,9,10].

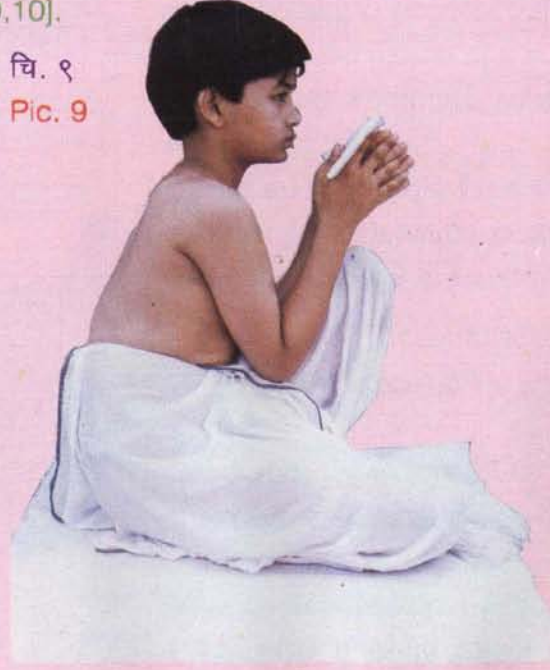
चि. ८

Pic. 8



चि. ९

Pic. 9



चि. १०

Pic. 10



१. मुक्ता-शुक्ति मुद्रा

9. muktā-śukti mudrā

चि. ११

Pic. 11



१. जावंति चेइयाइं, जावंत के वि एवं जय वीयराय [आभवमखंडा तक] बोलने की मुद्रा [चि. ११,१२,१३].

1. Posture of reciting jāvaṁti ceiyāim, jāvaṁta ke vi and jaya vīyarāya [upto ābhavamakhaṇḍā] [Pic. 11,12,13].

२. वारिज्जइ जइ वि से जैनं जयति शासनम् तक योग मुद्रा में बोलें [चि. ८,९,१०].

2. Utter vārijjai jai vi to jainam jayati śāsanam in yoga mudrā [Pic. 8,9,10].

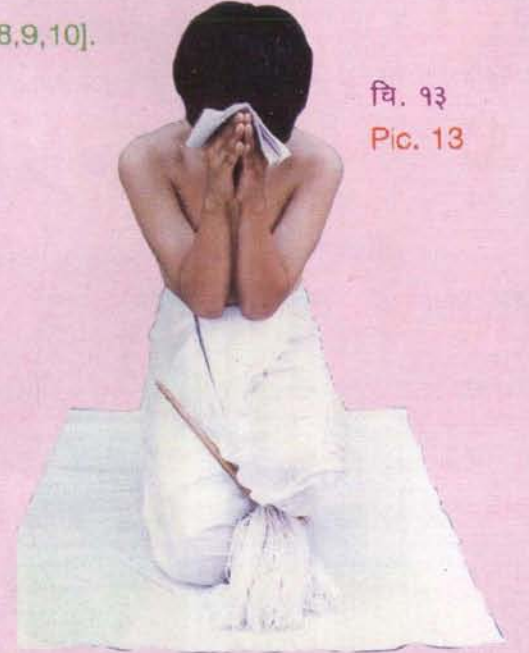
चि. १२

Pic. 12



चि. १३

Pic. 13



चि. १४
Pic. 14

चि. १५
Pic. 15

१०. वीरासन

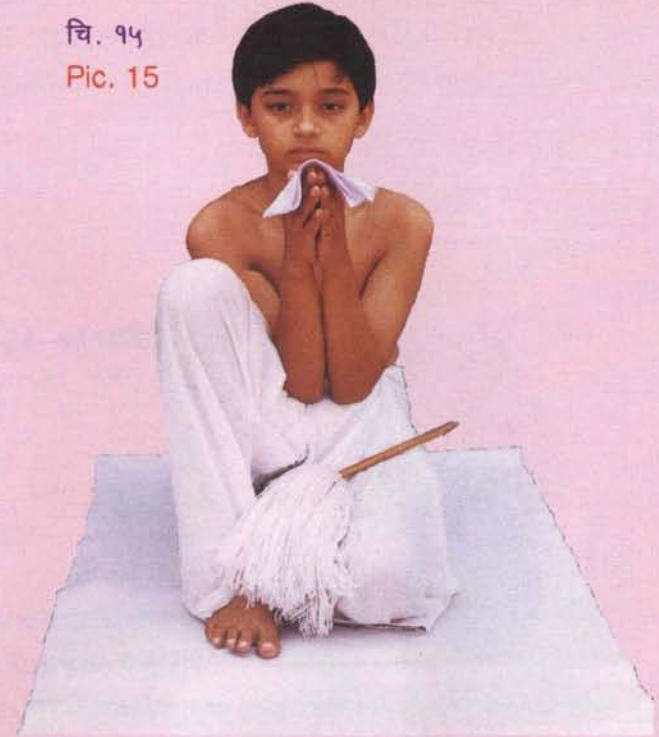
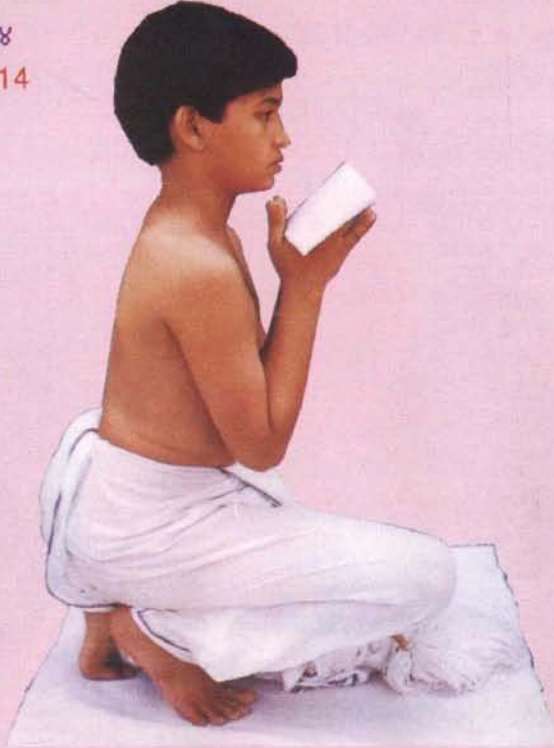
10. vīrāsana

१. वंदितु सूत्र [गाथा ४३ तक]
बोलने की मुद्रा [चि. १४, १५].

1. Posture of uttering
vandittu sūtra [upto
stanza 43] [Pic. 14, 15].

२. शेष सूत्र खड़े होकर बोलें
[चि. ३].

2. Recite rest of the
sūtra in standing pose
[Pic. 3].



चि. १८

Pic. 18



११. वंदना [द्वादशावर्त वंदन] की मुद्राएँ

11. Posture of vandana [dvādaśāvarta vandana]

हो यं य भे णि भे

←-----

ho yam ya bhe ṇi bhe

↑ ↑ ↑ ↑ ↑ ↑
 | | | | | |
 ↑ ↑ ↑ ↑ ↑ ↑
 ↑ ↑ ↑ ता व च

चि. १६

Pic. 16



| | | ----->

↑ ↑ ↑ ttā va ca

↑ ↑ ↑ ↑ ↑ ↑
 | | | | | |
 ↑ ↑ ↑ ↑ ↑ ↑

अ का का ज ज ज्जं

←-----

a kā kā ja ja jjañ



चि. १७

Pic. 17

१. इच्छामि खमासमणो से मे मिउग्गहं तक खड़े होकर बोलें [चि. ३].

1. Recite icchāmi khamāsamaṇo to me miuggaham in standing pose [Pic. 3].

२. निसीहि कहते हुए प्रमार्जन कर, कुछ आगे बढ़कर एवं पाँवों पर बैठकर

↑ हो यं य भे णि भे ↑
 | ता व च |
 ↑ अ का का ज ज ज्जं ↑

इन शब्दों का उच्चारण करते समय हाथ की विविध मुद्राएँ [चि. १६, १७, १८].

2. Various poses of hands while uttering the words--

↑ ho yam ya bhe ṇi bhe ↑
 | ttā va ca |
 ↑ a kā kā ja ja jjañ ↑

after saying nisihi, moving a little farward, doing the pramārjana and sitting on the legs [Pic. 16, 17, 18].

३. संफासं शब्द कहते हुए चरवले पर हाथ रखकर, खमणिज्जो और

खामेमि शब्द बोलते हुए शरीर को झुकाकर, यथाजात मुद्रा में नमन करें [चि. १९].

3. Keeping the hands over **caravalā** while uttering the word **samphāsam**, bow in **yathājāta mudrā** bending the body while saying the words **khamañijjo** and **khāmemi** [Pic. 19].

चि. १९

Pic. 19



१२. मुहपति का पडिलेहण

12. **paḍilehaṇa of the muhapatti**

चि. २०

Pic. 20



पडिलेहण के बोलों को बोलते हुए चित्रों में दर्शाये अनुसार मुहपति एवं शरीर का पडिलेहण [प्रतिलेखन] करें [चि. २० से ४०].

Perform the **paḍilehaṇa [pratilekhana]** of the **muhapatti** and the body uttering the words of **paḍilehaṇa** as shown in the pictures [Pic. 20 to 40].

१. मुहपति खोलकर, दोनों हाथ में पकड़ते हुए, दृष्टि पडिलेहण कर, सूत्र शब्द बोलें [चि. २०].

1. Opening the **muhapatti**, holding in both the hands, performing the **paḍilehaṇa** by sight, say the word **sūtra** [Pic. 20].

फिर मुहपति को दूसरी ओर पलटकर, दृष्टि पडिलेहण कर, अर्थ शब्द बोलें [चि. २०].

Then turning over the **muhapatti** to other side, performing the **paḍilehaṇa** by sight, say the word **artha** [Pic. 20].

फिर तीसरी बार मुहपति को पलटकर, दृष्टि पडिलेहण कर,

तत्त्व करी सदहुं पद कहें [चि. २०].

Turning over the **muhapatti** to the other side third time again, performing the **paḍilehaṇa** by sight, say the phrase **tattva karī saddhuḥ** [Pic. 20].

२. फिर सम्यक्त्व-मोहनीय, मिश्र-मोहनीय, मिथ्यात्व-मोहनीय परिहरुं कहते हुए मुहपति के एक किनारे को हिलायें [चि. २०].

2. Then shake one corner of the **muhapatti** saying **samyaktva-mohaniya, miśra-mohaniya, mithyātva-mohaniya pariharū** [Pic. 20].

इसी तरह मुहपति के दूसरे किनारे को हिलाते हुए काम-राग, स्नेह-राग, दृष्टि-राग, परिहरुं कहें [चि. २०].

Similarly say **kāma-rāga, sneha-rāga, dr̥ṣṭi-rāga, pariharū** shaking the other corner of the **muhapatti** [Pic. 20].

३. फिर मुहपति को बायें हाथ पर रखकर [चि. २१] –

3. Then keeping the **muhapatti** on left hand [Pic. 21] --,

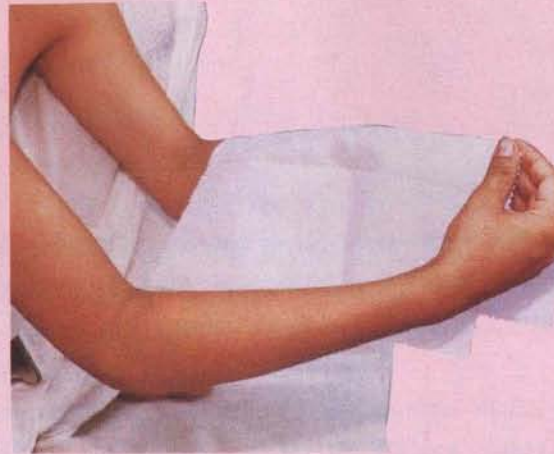
४. मुहपति को दाहिने हाथ की अंगुलियों के बीच पकड़कर, मुहपति को बायें हाथ की हथेली पर से कोहनी की ओर ले जाते हुए [मुहपति को हाथ पर स्पर्श कराये बिना] सुदेव, सुगुरु, सुधर्म आदरुं कहें [चि. २२].

4. Holding **muhapatti** in between the fingers of

right hand, moving the **muhapatti** over from the palm towards elbow of left hand [without touching **muhapatti** over the hand], say **sudeva, suguru, sudharma ādaruḥ** [Pic. 22].

चि. २१

Pic. 21



चि. २२

Pic. 22



५. फिर मुहपत्ति को कोहनी से हथेली की ओर लाते हुए [मुहपत्ति को हाथ का स्पर्श कराते हुए] कुदेव, कुगुरु, कुधर्म परिहरं कहें [चि. २३].

5. Then moving the muhapatti from the elbow towards the palm [touching muhapatti to the hand], say kudeva, kuguru, kudharma pariharū [Pic. 23]. इसी तरह ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदरं; ज्ञान-विराधना, दर्शन-

विराधना, चारित्र-विराधना परिहरं एवं मन-गुप्ति, वचन-गुप्ति, काय-गुप्ति आदरं; मन-दंड, वचन-दंड, काय-दंड परिहरं कहें [चि. २२, २३].

Similarly say jñāna, darśana, cāritra ādarū; jñāna-virādhana, darśana-virādhana, cāritra-virādhana pariharū; and mana-gupti, vacana-

gupti, kāya-gupti ādarū; mana-dāṇḍa, vacana-dāṇḍa, kāya-dāṇḍa pariharū [Pic. 22, 23].

६. फिर बायीं हथेली के पिछले भाग पर मुहपत्ति फिराते हुए हास्य, रति, अरति परिहरं कहें [चि. २४, २५].

6. Then moving the muhapatti on back side of left palm, say hāsyā, rati, arati pariharū [Pic. 24, 25].



चि. २३
Pic. 23



चि. २४
Pic. 24



चि. २५
Pic. 25

चि. २६

Pic. 26



७. इसी तरह मुहपति को बायें हाथ की अंगुलियों में पकड़कर, दाहिनी हथेली के पिछले भाग पर मुहपति फिराते हुए भय, शोक, जुगुप्सा परिहरुं कहें [चि. २६, २७].

7. Similarly holding the **muhapatti** in between the fingers of left hand, moving the **muhapatti** on back side of right palm, say **bhaya**, **śoka**, **jugupsā pariharū** [Pic. 26, 27].

चि. २७

Pic. 27



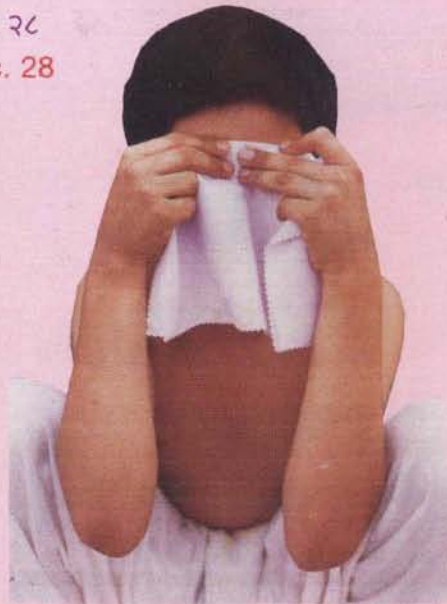
८. फिर मुहपत्ति के दोनों किनारों को दोनों हाथ में पकड़कर, ललाट का पडिलेहण कृष्ण-लेश्या कहते हुए बीचमें, नील-लेश्या कहते हुए दाहिनी तरफ एवं कापोत-लेश्या परिहरुं

कहते हुए बायीं तरफ करें [चि. २८,२९,३०].

8. Holding two corners of muhapatti in both the hands, perform padilehāṇa of fore-head in the

centre saying kṛṣṇa-leśyā, in right side saying nīla-leśyā, and in left side saying kapota-leśyā pariharū [Pic. 28,29,30].

चि. २८
Pic. 28



चि. २९
Pic. 29



चि. ३०
Pic. 30



९. फिर मुहपत्ति के दोनों किनारों को दोनों हाथ में पकड़कर, ओठ का पडिलेहण रस-गारव कहते हुए बीचमें, रिद्धि-गारव कहते हुए दाहिनी तरफ एवं शाता-गारव परिहरुं कहते हुए

बायीं तरफ करें [चि. ३१,३२,३३].

9. Holding two corners of the muhapatti in both hands, perform the padilehana of lips in the

centre saying **rasa-gāraṇa**, in right side saying **riddhi-gāraṇa**, and in left side saying **śātā-gāraṇa parihaṇu** [Pic. 31,32,33].

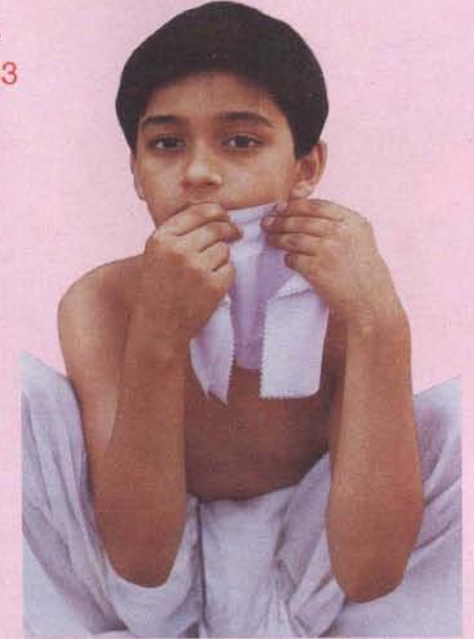
चि. ३१
Pic. 31



चि. ३२
Pic. 32



चि. ३३
Pic. 33



१०. फिर मुहपत्ति के दोनों किनारों को दोनों हाथ में पकड़कर, छाती का पडिलेहण माया-शल्य कहते हुए बीचमें, नियाण-शल्य कहते हुए दाहिनी तरफ एवं मिथ्यात्व-शल्य परिहरुं कहते

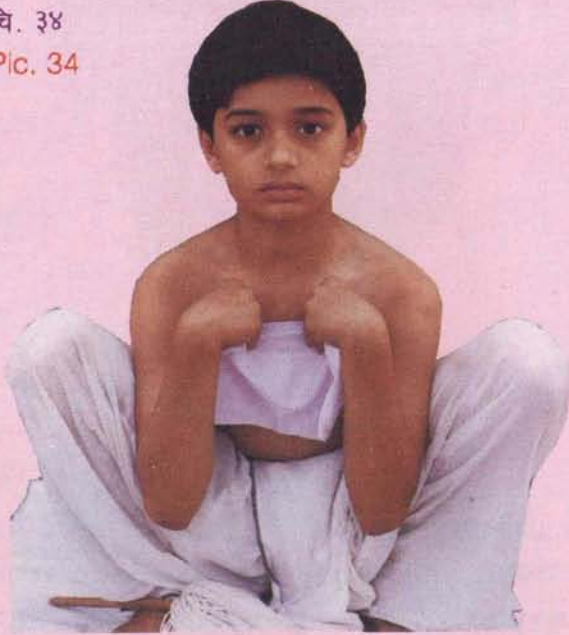
हुए बायीं तरफ करें [चि. ३४,३५,३६].

10. Holding two corners of the muhapatti in both hands, perform the padilehāṇa of chest in the

centre saying māyā śalya, in right side saying niyāṇa śalya, and in left side saying mithyātva śalya pariharū [Pic. 34,35,36].

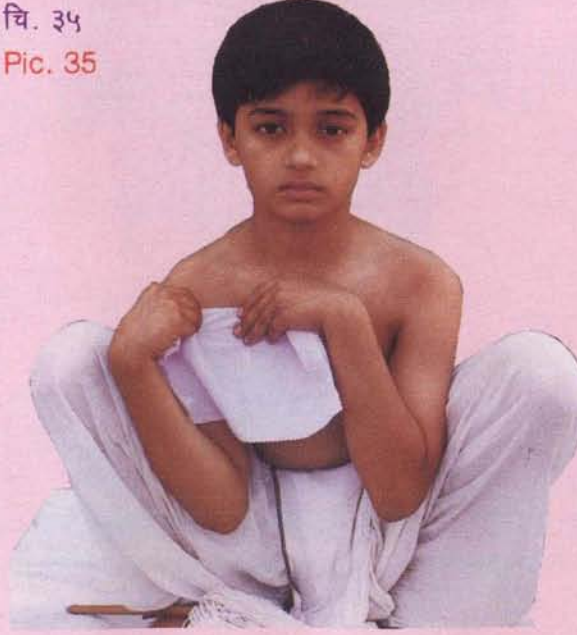
चि. ३४

Pic. 34



चि. ३५

Pic. 35



चि. ३६

Pic. 36



चि. ३७

Pic. 37



११. फिर क्रोध, मान परिहरुं
कहते हुए दाहिने कंधे का
पडिलेहण करें [चि. ३७].

11. Then perform the
paḍilehāṇa of right
shoulder saying **krodha,**
māna pariharuṃ
[Pic. 37].

१२. फिर माया, लोभ परिहरुं
कहते हुए बायें कंधे का पडिलेहण
करें [चि. ३८].

12. Then perform the
paḍilehāṇa of left
shoulder saying **māyā,**
lobha pariharuṃ [Pic. 38].

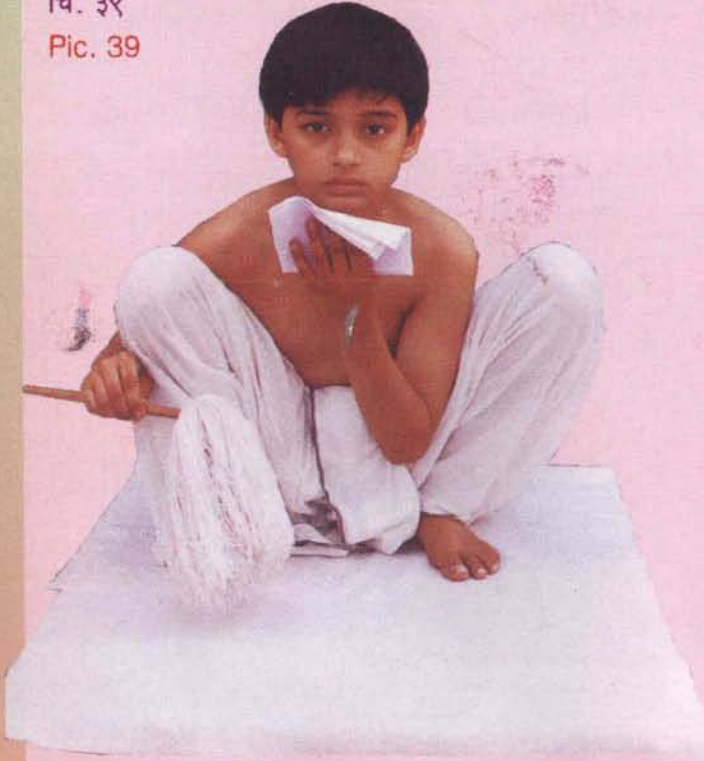
चि. ३८

Pic. 38



चि. ३९

Pic. 39



१३. पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय की रक्षा करुं कहते हुए दायें पांव का पडिलेहण चरवले से करे [चि. ३९].

13. Then perform the **padilehana** of right leg saying **prthvikāya, apkāya, teukāya ki rakṣā karu** with **caravalā** [Pic. 39].

१४. फिर वाउकाय, वनस्पति-काय, त्रसकाय की जयणा करुं कहते हुए बायें पांव का पडिलेहण चरवले से करे [चि. ४०].

14. Then perform the **padilehana** of left leg saying **vāukāya, vanaspati-kāya, trasakāya ki rakṣā karu** with **caravalā** [Pic. 40].

[सूचना :- पडिलेहण एवं चित्रों की विशेष जानकारी गुरु द्वारा प्राप्त करें.]

[NOTE :-- Have specific knowledge of **padilehana** and pictures from the preceptor.]

चि. ४०

Pic. 40



वर्णमाला का लिप्यंतरण

Transliteration of alphabet

[स्वर व उनके चिह्न / Vowels and their signs]

ा	ि	ी	ु	ू	ृ	ॄ	ॵ
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
a	ā	i	ī	u	ū	r	ṛ

[संध्याक्षर / Joint vowels]

े	ै	ो	ौ
ए	ऐ	ओ	औ
e	ai	o	au

[अनुस्वार / Nasal sounds] [ं]

ं	ं	ं	ं	ं	ं	ं
अं	ं	ं	ं	ं	ं	ं
am	n̄	ñ̄	n̄	n̄	m̄	ṁ

[व्यंजन / Consonants]

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण
ka	kha	ga	gha	ṅa	ca	cha	ja	jha	ña	ṭa	ṭha	ḍa	ḍha	ṇa

ँ	ँ
m̄	om̄

[Soft aspirant sound /

त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व
ta	tha	da	dha	na	pa	pha	ba	bha	ma	ya	ra	la	va

[स्वर / Vowels] विसर्ग]

[जोड़ाक्षर / Joint letters]

श	ष	स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ
śa	ṣa	sa	ha	kṣa	tra	jña

[फ़ारसी वर्ण / Persian letters]

क़	ख़	ग़	ज़	फ़	ड़	ढ़
kā	kha	gā	jā	pha	ḍa	ḍha

व	व
लृ	लृ
!	!

ः
अः
aḥ

वर्णमाला का लिप्यंतरण														Transliteration of alphabet													
स्वर Vowels	→	अ a	आ ā	इ i	ई ī	उ u	ऊ ū	ऋ ṛ	ए e	ऐ ai	ओ o	औ au	अं am	अः aḥ													
स्वर के चिह्न Signs of vowels	→	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ	ं	ः														
व्यंजन Consonants	↓																										
क(क्) k	क ka	का kā	कि ki	की kī	कु ku	कू kū	कृ kr	के ke	कै kai	को ko	कौ kau	कं kam	कः kaḥ														
ख(ख) kh	ख kha	खा khā	खि khi	खी khī	खु khu	खू khū	खृ khṛ	खे khe	खै khai	खो kho	खौ khau	खं kham	खः khaḥ														
ग(ग) g	ग ga	गा gā	गि gi	गी gī	गु gu	गू gū	गृ gr	गे ge	गै gai	गो go	गौ gau	गं gam	गः gaḥ														
घ(घ) gh	घ gha	घा ghā	घि ghi	घी ghī	घु ghu	घू ghū	घृ ghṛ	घे ghe	घै ghai	घो gho	घौ ghau	घं gham	घः ghaḥ														
ङ ण	ङ ṇa	ङा ṇā	ङि ṇi	ङी ṇī	ङु ṇu	ङू ṇū	ङृ ṇṛ	ङे ṇe	ङै ṇai	ङो ṇo	ङौ ṇau	ङं ṇam	ङः ṇaḥ														
च(च) c	च ca	चा cā	चि ci	ची cī	चु cu	चू cū	चृ cṛ	चे ce	चै cai	चो co	चौ cau	चं cam	चः caḥ														
छ ch	छ cha	छा chā	छि chi	छी chī	छु chu	छू chū	छृ chṛ	छे che	छै chai	छो cho	छौ chau	छं cham	छः chaḥ														
ज(ज) j	ज ja	जा jā	जि ji	जी jī	जु ju	जू jū	जृ jr	जे je	जै jai	जो jo	जौ jau	जं jam	जः jaḥ														
झ(झ) jh	झ jha	झा jhā	झि jhi	झी jhī	झु jhu	झू jhū	झृ jhṛ	झे jhe	झै jhai	झो jho	झौ jhau	झं jham	झः jhaḥ														

अ(अ) ā	अ āa	आ āā	अि āi	अी āī	अु āu	अू āū	अृ ār	अे āe	अै āai	अो āo	औ āau	अं āam	अः āah
इ !	इ ta	टा tā	टि ti	टी ti	टु tu	टू tū	टृ tr	टे te	टै tai	टो to	टौ tau	टं tam	टः tah
उ th	उ tha	ठा thā	ठि thi	ठी thi	ठु thu	ठू thū	ठृ thr	ठे the	ठै thai	ठो tho	ठौ thau	ठं tham	ठः thah
ड d	ड da	डा dā	डि di	डी di	डु du	डू dū	डृ dr	डे de	डै dai	डो do	डौ dau	डं dam	डः dah
ढ dh	ढ dha	ढा dhā	ढि dhi	ढी dhi	ढु dhu	ढू dhū	ढृ dhr	ढे dhe	ढै dhai	ढो dho	ढौ dhau	ढं dham	ढः dhaḥ
ण(ण) ṇ	ण ṇa	णा ṇā	णि ṇi	णी ṇī	णु ṇu	णू ṇū	णृ ṇr	णे ṇe	णै ṇai	णो ṇo	णौ ṇau	णं ṇam	णः ṇah
त(त) t	त ta	ता tā	ति ti	ती ti	तु tu	तू tū	तृ tr	ते te	तै tai	तो to	तौ tau	तं tam	तः tah
थ(थ) th	थ tha	था thā	थि thi	थी thi	थु thu	थू thū	थृ thr	थे the	थै thai	थो tho	थौ thau	थं tham	थः thah
द d	द da	दा dā	दि di	दी di	दु du	दू dū	दृ dr	दे de	दै dai	दो do	दौ dau	दं dam	दः dah
ध(ध) dh	ध dha	धा dhā	धि dhi	धी dhi	धु dhu	धू dhū	धृ dhr	धे dhe	धै dhai	धो dho	धौ dhau	धं dham	धः dhaḥ
न(न) n	न na	ना nā	नि ni	नी nī	नु nu	नू nū	नृ nr	ने ne	नै nai	नो no	नौ nau	नं nam	नः nah
प(प) p	प pa	पा pā	पि pi	पी pi	पु pu	पू pū	पृ pr	पे pe	पै pai	पो po	पौ pau	पं pam	पः pah
फ(फ) ph	फ pha	फा phā	फि phi	फी phi	फु phu	फू phū	फृ phr	फे phe	फै phai	फो pho	फौ phau	फं pham	फः phaḥ

ब(६) b	ब ba	बा bā	बि bi	बी bī	बु bu	बू bū	बृ br	बे be	बै bai	बो bo	बौ bau	बं bam	बः baḥ
भ(२) bh	भ bha	भा bhā	भि bhi	मी bhī	भु bhu	भू bhū	भृ bhr	भे bhe	भै bhai	भो bho	भौ bhau	भं bham	भः bhaḥ
म(२) m	म ma	मा mā	मि mi	मी mī	मु mu	मू mū	मृ mr	मे me	मै mai	मो mo	मौ mau	मं mam	मः maḥ
य(२) y	य ya	या yā	यि yi	यी yī	यु yu	यू yū	यृ yr	ये ye	यै yai	यो yo	यौ yau	यं yam	यः yaḥ
र r	र ra	रा rā	रि ri	री rī	रु ru	रू rū	रृ rr	रे re	रै rai	रो ro	रौ rau	रं ram	रः raḥ
ल(ल) l	ल la	ला lā	लि li	ली lī	लु lu	लू lū	लृ lr	ले le	लै lai	लो lo	लौ lau	लं lam	लः laḥ
व(६) v	व va	वा vā	वि vi	वी vī	वु vu	वू vū	वृ vr	वे ve	वै vai	वो vo	वौ vau	वं vam	वः vaḥ
श(३) ś	श śa	शा śā	शि śi	शी śī	शु śu	शू śū	शृ śr	शे śe	शै śai	शो śo	शौ śau	शं śam	शः śaḥ
ष(६) ṣ	ष ṣa	षा ṣā	षि ṣi	षी ṣī	षु ṣu	षू ṣū	षृ ṣr	षे ṣe	षै ṣai	षो ṣo	षौ ṣau	षं ṣam	षः ṣaḥ
स(२) s	स sa	सा sā	सि si	सी sī	सु su	सू sū	सृ sr	से se	सै sai	सो so	सौ sau	सं sam	सः saḥ
ह h	ह ha	हा hā	हि hi	ही hī	हु hu	हू hū	हृ hr	हे he	है hai	हो ho	हौ hau	हं ham	हः haḥ

क्ष = kṣa ; त्र = tra ; ज्ञ = jña ; ॐ = om̐ ; ँ/ँ = ṁ/ñ/n/n̄/m/ṁ ; लृ = l̥, लू = l̄ ; ॠ = अस्पष्ट उच्चारण वाले अनुस्वार (ं/ँ) का चिन्ह.

फारसी [पश्यन्] वर्ण क ख ग ज ङ ढ ढ = Persian letters k̄ kh̄ ḡ j̄ ṇ̄ ḍ̄ ḍ̄ ; ॡ = Mark for unclear pronunciation of the nasal sound.

*अंग्रेजी उच्चारण के अनुसार नागरी लिपि के अक्षरों का उच्चारण बताने वाले अंग्रेजी शब्द :

*English words showing the pronunciation of nāgarī script according to British pronunciation :

nāgarī Letter	English alphabet	English Word	nāgarī Letter	English alphabet	English Word	nāgarī Letter	English alphabet	English Word	nāgarī Letter	English alphabet	English Word
अ	a	mica	आ	ā	father (fāther)	ण्	ṇ	none (ṇone)	थ्	th	nuthook (more dental)
इ	i	fill	ई	ī	police (polīce)	त्	t	water (as in Ireland)	ध्	dh	adhere (more dental)
उ	u	full	ऊ	ū	rude (rūde)	दन्	d	this (dis)	फ्	ph	uphill
ऋ	r	merrily (merrīly)	ऐ	ai	aisle (aisle)	ब्	b	not	भ्	bh	abhor
ए	e	there	औ	au	haus (haus as in German)	प्	p	put			
ओ	o	go	ख्	kh	inkhorn	य्	y	yet	र्	r	red
क	k	kill	घ्	gh	loghut	ल्	l	lead	व्	v	ivy (but like w after consonants)
ग	g	dog	छ्	ch	Churchhill (churchill)	श्	ś	sure (śure)	ष्	ṣ	bush (buṣ)
ङ	ṅ	king (kiṅg)	झ्	jh	hedgehog (hejhog)	स्	s	sin	ह्	h	hit
च	c	dolce (in music)	ट्	ṭh	anthill (anṭhill)						
ज	j	jet	ड्	ḍh	redhaired (redḥaired)						
झ	ñ	singe (siñj)									
ट	t	true (ṭrue)									
ड	ḍ	drum (ḍrum)									

* संस्कृत-इंग्लीश डिक्शनरी, आक्सफर्ड में से साधार उद्धृत.

* Excepted from a sanskrit-English dictionary of Oxford with gratitude.

भारतीय उच्चारण के अनुसार नागरी लिपि के अक्षरों का उच्चारण बताने वाले अंग्रेजी शब्द :

English words showing the pronunciation of nāgarī script according to Indian pronunciation :

nāgarī Letter	English alphabet	English Word	nāgarī Letter	English alphabet	English Word	nāgarī Letter	English alphabet	English Word	nāgarī Letter	English alphabet	English Word
अ	a	ago	आ	ā	far (fār)	ड	d	wood (wood)	ढ	dh	adhesive
इ	i	ring	ई	ī	police (polīce)	ण	n	hunt (hunṭ)			(adhesive)
उ	u	bull	ऊ	ū	rule (rūle)	त्	t	tirupati	थ	th	path
ऋ	r	rid (rd)				द्	d	father (fader)	ध	dh	Gandhiji
ए	e	pen	ऐ	ai	Jain (jain)	न्	n	run			
ओ	o	rote	औ	au	mouse (mause)	प्	p	pump	फ	ph	graph
क	k	pink	ख	kh	khan	ब्	b	tub	भ	bh	bhopal
ग	g	king	घ	gh	ghat	म्	m	pump			
ङ	ṅ	ring (riṅg)				य	y	yes	र्	r	war
च	c	touch (touc)	छ	ch	chest	ल्	l	halt	व	v	vacancy
ज	j	jump	झ	jh	immajehouse	श्	ś	sure (śure)	ष्	ṣ	shut (ṣut)
ञ	ñ	lunch (luñch)			(immajhouse)	स्	s	risk	ह	h	harm
ट	t	put (put)	ठ	th	authill (auṭhill)						

प्रकाशकीयम्...

Publisher's note

आनंदकीयम्...

ज्ञान-क्रियाभ्यां मोक्षः

दस पूर्वधर श्रुतकेवलि श्री उमास्वाति महाराजा का यह वचन - 'ज्ञान एवं क्रियां से मोक्ष कि प्राप्ति होती है' भव्य जीवों को ज्ञानयोग एवं क्रियायोग में विशेष प्रकार से उद्यम करने के लिए प्रेरित करता है!

अकेले ज्ञान से या अकेली क्रिया से संसार का संक्षय नहीं होता; किन्तु ज्ञान एवं क्रिया के संयोजन से ही परम पद मिलता है। पंचाचार के सम्यक् परिपालन के लिए सम्यग् ज्ञान एवं सम्यक् क्रिया की यथार्थ जानकारी आवश्यक है।

शासन प्रभावक परमोपकारी पूज्यपाद आचार्य प्रवर श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा. के शिष्यरत्न स्वाध्यायमग्न उपाध्याय श्री धरणेन्द्रसागरजी म. सा. के शिष्यरत्न श्रुतोपासक मुनिराज श्री निर्वाणसागरजी म. सा. ने 'प्रतिक्रमण सूत्र सह विवेचन' ग्रंथ हिन्दी एवं अंग्रेजी में अथक परिश्रम पूर्वक तैयार किया है!

'प्रतिक्रमण सूत्र' की अनेक पुस्तकें भिन्न-भिन्न प्रकाशकों ने प्रकाशित की हैं, मगर यह प्रकाशन अपने आप में इसलिए विशिष्ट है कि अंग्रेजी में शब्दार्थ, गार्थार्थ, विशेषार्थ एवं भावार्थ के साथ प्रकाशित होने वाला यह सर्व प्रथम प्रकाशन है!!!

वर्तमान युग में बहोत से जैन बालकों का शैक्षणिक अभ्यास अंग्रेजी माध्यम से हो

रहा है। इस माहौल को देखते हुए धार्मिक संस्कार की सुरक्षा एवं संवर्धन के लिए अंग्रेजी भाषा को अनिवार्य रूप में स्वीकार करना ही रहा! विद्वान मुनिराज श्री निर्वाणसागरजी म. सा. ने अत्यंत परिश्रम पूर्वक तैयार की हुई इस सामग्री को प्रकाशित करने का हमें अवसर दिया, अतः हम मुनिश्री के हार्दिक आभारी हैं! श्री अरुणोदय फाउण्डेशन से 'श्री प्रतिक्रमण सूत्र सह विवेचन' भाग - १ एवं भाग - २ के रूप में प्रकाशित हो रहा है यह हमारे लिए गौरव की बात है।

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र - कोबा के भी हम आभारी हैं जिन्होंने इस संपूर्ण ग्रंथ का कष्टसाध्य कंपोज आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञान मंदिर के कंप्यूटर विभाग में करवा कर हार्दिक सहयोग दिया है।

प्रस्तुत प्रकाशन में आर्थिक सहयोगी सभी दाताओं के भी हम हार्दिक आभारी हैं। श्री प्रवीणभाई (धीरज स्टेशनर्स - अहमदाबाद), श्री नगीनभाई (मेहता ब्रदर्स - मुंबई) एवं श्री जयेशभाई (दुंदुभी प्रीन्टर्स) के भी हम आभारी हैं जिन्होंने इस प्रकाशन में सुंदर सहयोग दिया है।

अंत में, इस पुस्तक के माध्यम से मुमुक्षु आत्माएँ सम्यग् ज्ञान एवं सम्यक् क्रिया में सविशेष विकास करें यही मंगल भावना।

श्री अरुणोदय फाउण्डेशन, कोबा
ट्रस्टी गण.

અભિપ્રાય

Opinions

શાહીબાગ

તા. ૨-૧૧-૮૬

પૂ. આ. શ્રી ગુણશીલસૂ. મ. સા. તરફથી
વિદ્વદ્વર્થ મુનિરજા શ્રી નિર્વાણસાગરજી મ.

યોગ - સાદર અનુવંદના સુખશાતા.

તમારા પત્રની સાથે બે પ્રતિક્રમણ (સૂત્ર, વિવેચન સાથે) હિંદી, અંગ્રેજીમાં શબ્દાર્થ, ગાથાર્થ, વિશેષાર્થ, ભાવાર્થની સાથે તૈયાર કરવામાં તમે જે શ્રુતોપાસના કરી છે તે અત્યંત અનુમોદનીય છે.

પૂર્વે પણ તમારા દ્વારા સંપાદિત થયેલ પંચપ્રતિક્રમણસૂત્ર (ઇંગ્લીશ) પણ ખૂબ જ ઉપયોગિ બનેલ.

સૌથી સુંદર તો વિવિધ મુદ્દાઓ સાથેના રંગીન ચિત્રોનો પણ સમાવેશ કરવાના છો એ જાણી આનંદ.

શ્રુતોપાસનામાં રત બની સ્વ-પર કલ્યાણને સાધો એજ એક અભિલાષા.

ખાસ :- પુસ્તકો તૈયાર થયેથી મોકલવા યોગ્ય કરશો.



આચાર્ય યશોવિજયસૂરિ

જૈન ઉપાશ્રય

મું. ઝીંજુવાડા - ૩૮૨ ૭૫૫

વાયા, વિરમગામ, (ગુજરાત)

૪/૧૧/૮૬

વિદ્વદ્વર્થ મુનિપ્રવરશ્રી!

સાદર અનુવંદના

પત્ર તથા બે પ્રતિક્રમણ સૂત્ર - સવિવેચન - નો ખરડો જોયો.

હિંદી ભાષી અને અંગ્રેજી ભાષી વાચકો માટે નિસ્સંદેહ એક અનુપમ ભેટ આપની આ હશે.

શીઘ્ર પ્રકાશન થાય તેવી કામના સાથે.

યશોવિજયસૂરિ



નમો નમઃ શ્રી ગુરુનેમિસૂરેય

ભાવનગર

૫-૧૧-૮૬

જ્ઞાનાદિગુણ સંપન્ન મુનિરાજ શ્રી નિર્વાણસાગરજી મ.

સરનેહ અનુવંદના વંદના શાતા પૃચ્છા.

પત્ર મળ્યો. સાથે નવકાર મહામંત્રના અનુવાદનો નમૂનો પણ મળ્યો. ઘણી પ્રસન્નતા થઈ.

આશીર્વાદ તો વડીલ પૂજ્યો જ આપી શકે. હું તો નાનો છું. પરંતુ યોગ્ય સમયે યોગ્ય દિશાનો તમારો સરસ પ્રયત્ન છે, અને અનેકાનેક જીવોને ઉપકારક પ્રયત્ન પુરવાર થશે તેવી મને શ્રદ્ધા છે. ઉત્સાહ અને સ્વ-પર હિતની ઉત્તમ ભાવ સાથે આ કાર્ય ચાલુ રાખશો અને સમગ્ર પાંચ પ્રતિક્રમણ સાનુવાદ - સચિત્ર ક્રમે ક્રમે આપશો તેવી આશા વ્યક્ત કરું છું. ધન્યવાદ...

કામ-કાજ લખશો. સ્વાધ્યાય આરાધના તેમજ ગુરુજનો પ્રત્યેનો સદ્ભાવ વધારશો.

શીલચંદ્રસૂરિ



કા. સુ. ૫
સેટેલાઈટ

લી. આ. વિ. ઇન્દ્રસેનસૂરિની અનુવંદના.

વિનયવંત મુનિરાજશ્રી નિર્વાણસાગરજી

અમો શાતામાં છીએ તમો પણ તેમજ હશો.

આજે જ્ઞાનપંથમીનો દિવસ છે અને તે જ જ્ઞાનની વાત છે. તમો બે પ્રતિક્રમણસૂત્ર - શબ્દાર્થ થી લઈને ભાવાર્થ સુધી વિવેચન કરી સુંદર પૂરૂષાર્થ કર્યો છે તે આ યુગના જીવોને ઘણો જ ઉપકારક થઈ રહેશે.

અમો આ અંગે ભૂરિ ભૂરિ અનુમોદના કરીએ છીએ.



અમદાવાદ તા. ૯-૧૧-૮૬ શની

ગુર્વાજ્ઞાથી

શાંતમૂર્તિ મુનિરાજ શ્રી નિર્વાણસાગરજી મ. સા. આદિ

અનેકશઃ વંદના

સૂત્રાર્થની પ્રેસ કૉપી મલી. જોઈ આનંદ, મહેનત દાદ માંગે તેવી છે.

એજ લી.

આચાર્ય ભ. પુણ્યાનંદસૂરીશ્વરજીના ચરણરજ
સંયમસેનની વંદના.



કૃષ્ણનગર

કા. સુ. ૧૪

પૂજ્ય આચાર્ય વિજય હેમચંદ્રસૂરિ તરફથી

વિનયાદિગુણોપેત મુનિશ્રી નિર્વાણસાગરજી મ.

અનુવંદના સુખશાતા.

સૌ શાતામાં છે.

સ્વાસ્થ્ય સારૂ છે.

તમે કુશળ હશો?

પત્ર મળ્યો, વિગત જાણી.

બે પ્રતિક્રમણ સૂત્ર — સૂત્રાર્થ, ગાથાર્થ, વિશેષાર્થ તથા ભાવાર્થ સહિત તમે પ્રકાશિત કરી રહ્યા છો તે ખૂબ જ અનુમોદનીય છે.

ભાષા અંગ્રેજી-હિંદી બંને રાખી છે એટલે વિશેષ ઉપયોગી બનશે.

તમારું આ કાર્ય, તેના માટેનો પ્રયત્ન જૈન શાસન માટે ખૂબ જ લાભદાયી થશે.

સાથે પ્રાસંગિક ચિત્રો પણ પ્રકાશનની આકર્ષકતામાં ઉમેરો કરશે અને આરાધકોને-બાળજીવોને સાચી ક્રિયા વિધિનું જ્ઞાન કરાવશે.

તમારા આ પ્રશસ્ત કાર્ય માટે અમારા અંતરના આશીર્વાદ છે.

ભવિષ્યમાં પણ આગળ પાંચ પ્રતિક્રમણ આદિ ઉચ્ચ ગ્રંથોના આ રીતે તમારા દ્વારા પ્રકાશન થાય એવી શુભ કામના...

દ. કલ્યાણબોધિવિ. ની વંદના.

આચાર્ય મુક્તિપ્રભસૂરિ તરફથી

વિનયાદિ ગુણયુત મુનિરાજ શ્રી નિર્વાણસાગરજી

યોગ અનુવંદના સુખશાતા.

પૂજ્યોની કૃપાથી આનંદ છે.

તમારો પત્ર મલ્યો.

વિ. સં. ૨૦૫૨ આસો વદ ૧૪

સતલાસણ

તમારા સંપાદન નીચે ‘બે પ્રતિક્રમણસૂત્ર’ હિન્દી-અંગ્રેજી વિવેચન સાથે પ્રકાશિત થઈ રહ્યું છે તે જાણ્યું. તેનો એક ફર્મો જેમાં માત્ર શ્રી નવકાર મહામંત્ર વિવેચન સાથે જોવા મલ્યો. માત્ર એક ફર્મો જોતા એમ લાગે છે કે પુસ્તકનું કાર્ય સારું થશે.

આ પુસ્તક આજના વિદ્યાર્થીઓ અને જિજ્ઞાસુઓ માટે આશીર્વાદ રૂપ બની શકશે. આરાધનામાં યાદ કરશો.

તમે તમારી શક્તિનો શાસ્ત્ર સાપેક્ષ રીતે સદુપયોગ કરી સ્વ-પર ઉભયનું કલ્યાણ સાધતા સાધતા અંતે સિદ્ધિસુખના સ્વામી બનો એજ શુભાભિલાષા.

મુક્તિપ્રભસૂરિ

ૐ નમઃ શ્રી વીતરાગાય

છબીલદાસ કે. સંઘવી

ગોપીપુરા, કાજીનું મૈદાન

સુરત

કાર્તિકી પૂર્ણિમા તા. ૨૫-૧૧-૮૬

પરમ વાત્સલ્યવારિધિ, પરમારાધ્યપાદ શ્રી નિર્વાણસાગરજી મ. સા. આદિ

પ. પૂ. વર્યોની પરમ પુનિત સેવામાં.

વિ. વિ. સહ આપ પ. પૂ. વર્યોના પુણ્યદેહે સુખશાતા ચાહતા અમો શ્રી દેવ-ગુરુ-

ધર્મ પસાયે કુશલ છીએ.

આપનો પત્ર, ગ્રંથ પરિપત્ર મળ્યું. અતિ સુંદર, સ્પષ્ટતા બહુજ સુંદર રીતે થઇ છે. બાલભોગ્ય પણ છે અને વિદ્વદ્ભોગ્ય પણ છે. જેની આજ સુધી ત્રુટિ જણાતી હતી તે આપશ્રી દ્વારા પૂર્તિ થાય છે તે બહુજ અનુમોદનીય છે.

મારા યોગ્ય કામસેવા જણાવશો. પ્રત્યુત્તર પાઠવી આભારી કરશોજી.

ભવદીય

છબીલની ૧૦૦૮ વંદના.



જૈન સોસાયટી, અહમદાબાદ - ૬.

૨૧-૧૦-૯૬

મુનિરાજ શ્રી નિર્વાણસાગરજી યોગ

અનુવંદના.

નમસ્કાર મહામંત્ર કા હિન્દી-English વિવેચન મિલા. આપને બહુત પરિશ્રમ કિયા હૈ. વિદેશ વાસીયોં કો ઇસસે બહુત લાભ હોગા. પ્રભુ કી કૃપા સે આપકા કાર્ય સુંદર રુપ સે સિદ્ધ હો યહી પ્રભુ સે પ્રાર્થના.

દ. : જંબૂવિ. કી અનુવંદના.



ડીસા

૮-૧૧-૯૬

પ. પૂ. યુવકજાગૃતિ પ્રેરક

આચાર્યદેવ શ્રી ગુણરત્નસૂરીશ્વરજી મ. સા. કી ઓર સે

વિનયાદિ ગુણોપેત મુનિશ્રી નિર્વાણસાગરજી મ. સા.

જોગ અનુવંદના સુખશાતા.

અત્રે સુખશાતા વર્તે છે.

આપકે દ્વારા પ્રેષિત દો પ્રતિક્રમણસૂત્ર સહ વિવેચન (હિન્દી-અંગ્રેજી) કી પુસ્તક છપ રહી હૈ ઉસકા મેટર મિલા. આપકા પ્રયાસ અનુમોદનીય હૈ. જ્ઞાન ભક્તિ કરકે કેવલજ્ઞાન કી પ્રાપ્તિ કરે યહી શુભેચ્છા.

આરાધના મેં ઉદ્યમશીલ રહે.

રવિરત્નવિજય કી અનુવંદના સુખશાતા.



प्रस्तुत प्रकाशन के उदारमना दाताएँ

श्री तिलोकचंदजी नाहटा

मुंबई

श्री लालचंदजी हीराचंदजी गुज्जर

बल्लारी

श्री हस्तीमलजी देवीचंदजी मूठलिया

मुंबई

श्री सोहनलालजी लालचंदजी चौधरी

अहमदाबाद

श्री खीमराजजी मूलचंदजी बर्लोटा

बेंगलोर

श्री केवलचंदजी मूलचंदजी बर्लोटा

बेंगलोर

श्री प्रकाशचंदजी, विनोदकुमार बर्लोटा

बेंगलोर

श्री सज्जनराजजी जुगराजजी गादिया

बेंगलोर

श्री चाणक्यभाई वाडीलाल शाह

मुंबई

श्री महेशकुमार प्रेमसिंह जैन

मुंबई

कु. रूपल तथा कु. मानसीना आत्मश्रेयार्थे थराद निवासी
विजयाबेन मणिलाल प्रेमचंदभाई मोरखीया परिवार

मुंबई

आपके सहयोग के हम हार्दिक आभारी हैं.
आपके सुकृत की हम भूरिशः अनुमोदना करते हैं!

अनुक्रमणिका	Index	P. No.	पंचाचार के अतिचार	pañcācāra ke aticāra	164
दो शब्द	A few words	3	सुगुरु वन्दना सूत्र	suguru vandanā sūtra	176
प्रस्तावना	Preface	4	देवसिअं आलोउं? सूत्र	devasiam ālou_? sūtra	186
मुद्राओं का परिचय	Introduction of postures	21	सात लाख	sāta lākha	190
वर्णमाला का लिप्यंतरण	Transliteration of alphabet	37	अठारह पापस्थान	athāraha pāpasthāna	197
वर्णमाला का उच्चारण	Pronunciation of alphabet	41	सव्वस्स वि सूत्र	savvassa vi sūtra	203
प्रकाशकीय	Publisher's note	43	इच्छामि पडिक्कमिउं? सूत्र	icchāmi paḍikkamiu_? sūtra	205
अभिप्राय	Opinion	44	वंदित्तु सूत्र	vandittu sūtra	209
दाताओं की नामावली	Doner's name	48	अब्भुट्ठिओमि सूत्र	abbhutthiomi sūtra	258
अनुक्रमणिका	Index	49	आयरिय-उवज्झाए सूत्र	āyariya-uvajjhāe sūtra	262
सूत्र विभाग	sūtra part		सुअ-देवया स्तुति	sua-devayā stuti	266
भगवान्हं आदि वन्दन सूत्र	bhagavānham ādi vandana sūtra	154	कमल-दल स्तुति	kamala-dala stuti	268
देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं? सूत्र	devasia paḍikkamaṇe thāu_? sūtra	155	जीसे खित्ते स्तुति	jīse khitte stuti	270
इच्छामि ठामि सूत्र	icchāmi thāmi sūtra	158	यस्याः क्षेत्रं स्तुति	yasyāḥ kṣetram stuti	272
			ज्ञानादि-गुण स्तुति	jñānādi-guṇa stuti	274
			नमोस्तु वर्द्धमानाय स्तुति	namostu varddhamānāya stuti	276
			विशाल-लोचन स्तुति	visāla-locana stuti	281
			वर-कनक स्तुति	vara-kanaka stuti	286

अड्ढाइज्जेसु सूत्र	aḍḍhāijjesu sūtra	289	जल पूजा के दोहे	Couplets of worship with water	11
लघु-शान्ति स्तव	laghu-śānti stava	293	चंदन पूजा का दोहा	Couplets of worship with sandal	12
चउक्कसाय सूत्र	caukkasāya sūtra	314	नवांग पूजा के दोहे	Couplets of worship of navāṅga	
मन्नह जिणाणं सज्झाय	mannaha jīṇaṇam sajjhāya	318		[nine organs]	12
भरहेसर सज्झाय	bharaheṣara sajjhāya	325	पुष्प पूजा का दोहा	Couplets of worship with flowers	14
सकल तीर्थ वन्दना	sakala tīrtha vandanā	337	धूप पूजा का दोहा	Couplets of worship with incense	14
			दीपक पूजा का दोहा	Couplets of worship with lamp	15
			चामर वींझने का दोहा	Couplets of swinging cāmara	15
			दर्पण पूजा का दोहा	Couplet of worship with mirror	16
			अक्षत पूजा का दोहा	Couplets of worship with akṣata	
				[whole rice grain]	16
			स्वस्तिक [साथिये] के दोहे	Couplets of swastik	16
			नैवेद्य पूजा का दोहा	Couplets of worship with naivedya	17
			फल पूजा का दोहा	Couplets of worship with fruits	17
			चैत्यवन्दनादि का संग्रह	Collection of caityavandana etc.	18
			सकल-कुशल-वल्ली	sakala-kuśala-vallī	18
			सामान्य जिन चैत्यवन्दन	sāmānya jina caityavandana	18
			चौवीस जिन वर्ण चैत्यवन्दन	cauṁvīsa jina varṇa	19
काव्य विभाग	kāvya part				
वर्तमान काल के २४ तीर्थकरों के नामादि	Names etc. of the 24 tīrthaṅkaras of present era	1			
२० विहरमान जिनेश्वरों के नाम	Names of 20 viharāmāna jineśvaras	2			
नवपद के नाम तथा वर्ण	Names and colours of navapada	4			
दोहा संग्रह	Collection of dohā [couplets]	5			
प्रदिक्षणा के दोहे	Couplets of pradikṣaṇā				
	[circumambulation]	5			
प्रभु दर्शन के समय बोलने के दोहे	Couplets to be uttered while viewing the lord	6			
अष्ट प्रकारी पूजा के दोहे	Couplets of eight types of worship	11			

सीमंधर जिन दोहे	caityavandana	19	ऋषभ जिन स्तवन	ṛṣabha jina stavana	33
सीमंधर जिन चैत्यवंदन	Couplets of sīmandhara jina	19	ऋषभ जिन स्तुति	ṛṣabha jina stuti	34
सीमंधर जिन चैत्यवंदन	sīmandhara jina caityavandana	20	भक्तामर पादपूर्ति ऋषभ	bhaktāmara pādapūrti ṛṣabha	
सीमंधर जिन स्तवन	sīmandhara jina caityavandana	21	जिन स्तुति	jina stuti	35
सीमंधर जिन स्तवन	sīmandhara jina stavana	21	शांति जिन चैत्यवंदन	śānti jina caityavandana	36
सीमंधर जिन स्तवन	sīmandhara jina stavana	22	शांति जिन स्तवन	śānti jina stavana	36
सीमंधर जिन स्तुति	sīmandhara jina stuti	24	पार्श्व जिन चैत्यवंदन	pārśva jina caityavandana	37
सीमंधर जिन स्तुति	sīmandhara jina stuti	24	पार्श्व जिन स्तवन	pārśva jina stavana	38
सिद्धाचल तीर्थ के दोहे	Couplets of siddhācala tīrtha	25	श्रेयः श्रियां मंगल पादपूर्ति पार्श्व	śreyah śriyām maṅgala pādapūrti	
पुंडरीक स्वामि चैत्यवंदन	puṇḍarīka svāmi caityavandana	26	जिन स्तुति	pārśva jina stuti	39
सिद्धाचल तीर्थ चैत्यवंदन	siddhācala tīrtha caityavandana	27	वीर जिन तप चैत्यवंदन	vīra jina tapa caityavandana	39
सिद्धाचल तीर्थ स्तवन	siddhācala tīrtha stavana	27	वीर जिन स्तवन	vīra jina stavana	40
रायण पगला स्तवन	rāyaṇa pagalā stavana	28	वीर जिन चौमासी पारणुं स्तवन	vīra jina caumāsī pāraṇu	
सिद्धाचल तीर्थ स्तुति	siddhācala tīrtha stuti	29		stavana	41
सिद्धाचल तीर्थ स्तुति	siddhācala tīrtha stuti	29	वीर जिन स्तुति	vīra jina stuti	42
ऋषभ जिन चैत्यवंदन	ṛṣabha jina caityavandana	31	वीर जिन स्तुति	vīra jina stuti	43
ऋषभ जिन चैत्यवंदन	ṛṣabha jina caityavandana	31	दीपावली पर्व चैत्यवंदन	dīpāvalī parva caityavandana	44
ऋषभ जिन स्तवन	ṛṣabha jina stavana	32	दीपावली पर्व स्तवन	dīpāvalī parva stavana	44

पर्युषण पर्व चैत्यवन्दन	paryuṣaṇa parva caityavandana	45	प्रसन्नचंद्र राजर्षि सज्जाय	prasannacandra rājarsī sajjhāya	65
दूज तिथि चैत्यवन्दन	dūja tithi caityavandana	46	धोबीडा सज्जाय	dhobīḍā sajjhāya	66
बीज तिथि स्तवन	bīja tithi stavana	46	जग सपना सज्जाय	jaga sapanā sajjhāya	67
बीज तिथि स्तुति	bīja tithi stuti	49	शीयल व्रत सज्जाय	śīyala vrata sajjhāya	67
बीज तिथि सज्जाय	bīja tithi sajjhāya	50	अध्यात्म सज्जाय	adhyātma sajjhāya	68
पंचमी तिथि चैत्यवन्दन	pañcamī tithi caityavandana	52	अध्यात्म सज्जाय	adhyātma sajjhāya	69
पंचमी तिथि स्तवन	pañcamī tithi stavana	52	अध्यात्म सज्जाय	adhyātma sajjhāya	70
पंचमी तिथि स्तुति	pañcamī tithi stuti	53	अध्यात्म सज्जाय	adhyātma sajjhāya	71
पंचमी तिथि सज्जाय	pañcamī tithi sajjhāya	54			
अष्टमी तिथि चैत्यवन्दन	aṣṭamī tithi caityavandana	55	विधि विभाग	vidhi part	
अष्टमी तिथि स्तवन	aṣṭamī tithi stavana	56	पच्चक्खाण के सूत्र	sūtras of the paccakkhāṇa	1
अष्टमी तिथि स्तुति	aṣṭamī tithi stuti	57	प्रभात के पच्चक्खाण	Morning paccakkhāṇas	1
अष्टमी तिथि सज्जाय	aṣṭamī tithi sajjhāya	59	नमुक्कारसहिअ-मुट्ठिसहिअ	namukkārasahiam-muttisahiam	1
एकादशी तिथि चैत्यवन्दन	ekādaśī tithi caityavandana	60	पोरिसी / साङ्ग-पोरिसी	porisī / sāḍḍha-porisī	2
एकादशी तिथि स्तवन	ekādaśī tithi stavana	60	पुरिमङ्ग / अवङ्ग	purimaḍḍha / avaḍḍha	2
एकादशी तिथि स्तुति	ekādaśī tithi stuti	62	एगासणा / बियासणा	egāsaṇā / biyāsaṇā	3
एकादशी तिथि सज्जाय	ekādaśī tithi sajjhāya	63	आयंबिल / नीवी	āyambila / nivī	4
मनोरमा सती सज्जाय	manoramā satī sajjhāya	64	तिविहार उपवास / पाणहार	tivihāra upavāsa / paṇahāra	5

चउविहार उपवास	cauvihāra upavāsa	5	सामायिक लेने की विधि	Procedure of taking the sāmāyika	16
शाम के पच्चक्खाण	Evening paccakkhāṇas	6	सामायिक पारने की विधि	Procedure of completing the sāmāyika	17
पाणहार	pāṇahāra	6	देव-वन्दन की विधि	Procedure of deva-vandana	18
चउविहार उपवास	cauvihāra upavāsa	6	देवसिअ प्रतिक्रमण की विधि	Procedure of devasia pratikramaṇa	20
चउव्विहार	cauvvihāra	7	राइअ प्रतिक्रमण की विधि	Procedure of rāia pratikramaṇa	25
तिविहार	tivihāra	7	पच्चक्खाण पारने की विधि	Procedure of completing the paccakkhāṇa	29
दुविहार	duvihāra	7	नमस्कार-महा-मन्त्र का छन्द	namaskāra-mahā-mantra kā chanda	30
देसावगासिक	desāvagāsika	8			
पच्चक्खाण पारने के सूत्र	sūtras for completing the paccakkhāṇa	8			
एगासणादि	egāsaṇā etc.	8			
तिविहार उपवास	tivihāra upavāsa	9			
मुहपत्ति के पडिलेहण के ५० बोल	50 Words for the paḍilehaṇa of the muhapatti	10			
विधियाँ	Procedures	12			
सांकेतिक शब्द एवं सूचनाएँ	Notes and key words	12			
गुरु-वन्दन की विधि	Procedure of guru-vandana	15			
चैत्य-वन्दन की विधि	Procedure of caitya-vandana	15			

श्री अरुणोदय फाउन्डेशन - कोबा के ट्रस्टीगण

श्री चंद्रकांतभाई शिवलाल शाह - अहमदाबाद

श्री सुमतिभाई हालाभाई हरडे
श्री चंद्रकांतभाई जेचंदभाई शाह
श्री कमलचंदजी महेता
श्री चाणक्यभाई वाडीलाल शाह

- मुंबई
- अहमदाबाद
- मद्रास
- मुंबई

श्री महेशकुमार पी. जैन
श्री बाबूलालजी बी. चौधरी
श्री अशोकराज समराजजी 'सिंघवी'
श्री महावीरचंदजी सुराणा

- मुंबई
- अहमदाबाद
- जोधपुर
- बेंगलोर

कार्यवाहक समिति के सदस्यगण

श्री विजयचंदजी समदडीया
श्री अनीलकुमार तिलोकचंदजी नाहटा
श्री ललितकुमार कांतिलालजी सांठिया
श्री भद्रबाहू शाह - सायन
श्री जयंतिलालजी खीमराजजी बर्लोटा
डॉ. श्री पारसमलजी अमरचंदजी बैद
श्री जिज्ञेश सुरेन्द्रभाई शाह
श्री नितिन रतिलाल मालणवाला

- मद्रास
- मुंबई
- मुंबई
- मुंबई
- बेंगलोर
- मद्रास
- अहमदाबाद
- मुंबई

श्री बिमल चंद्रकांतभाई शाह
श्री चैतन्यभाई अंबालाल शाह
श्री कुमारपाल अंबालाल महेता
श्री मुकेश जैन
श्री भद्रेशभाई फतासापोल
श्री सुरेशभाई पुंजीराम शाह
श्री कांतिभाई पटेल
श्री योगेश जैन

- अहमदाबाद
- अहमदाबाद
- हिंमतनगर
- जयपुर
- अहमदाबाद
- कुकरवाडा
- उबखल
- सुस्त

प्रतिक्रमण सूत्र

सह विवेचन

भाग - २ [हिन्दी - अंग्रेजी]

सूत्र विभाग

निर्वाण सागर

Pratikramaṇa Sūtra

With Explanation

Part - 2 [Hindī - English]

sūtra part

Nirvāṇa Sāgara

२५. भगवान्हं आदि वन्दन सूत्र

भगवान्हं, आचार्यहं, उपाध्यायहं, सर्व-साधुहं.१.

शब्दार्थ :-

भगवान्हं = भगवन्तो को वन्दन हो

आचार्यहं = आचार्यों को वन्दन हो

उपाध्यायहं = उपाध्यायों को वन्दन हो

सर्व-साधुहं = सर्व साधुओं को वन्दन हो

गाथार्थ :-

भगवन्तो को वन्दन हो, आचार्यों को वन्दन हो, उपाध्यायों को वन्दन हो,
सर्व साधुओं को वन्दन हो. १.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र के प्रत्येक पद को खमासमण सूत्र के साथ बोलकर भगवान्
आदि को नमस्कार किया जाता है.

25. bhagavānham ādi vandana sūtra

bhagavānham, ācāryaham, upādhyāyaham, sarva-sādhuham.1.

Literal meaning :-

bhagavānham = be obeisance to the bhagavantas

ācāryaham = be obeisance to the ācāryas

upādhyāyaham = be obeisance to the upādhyāyas

sarva-sādhuham = be obeisance to all the sādhus

Stanzaic meaning :-

Be obeisance to the bhagavantas, be obeisance to the ācāryas, be obeisance
to the upādhyāyas and be obeisance to all the sādhus. 1.

Introduction of the sūtra :-

Salutation is being offered to the bhagavāna etc. uttering each phrase of this
sūtra along with khamāsamaṇa sūtra.

२६. देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं? सूत्र

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! देवसिअ पडिक्कमणे
ठाउं? इच्छं, सव्वस्स वि देवसिअ, दुच्चिंतिअ,
दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, मिच्छा मि दुक्कडं.१.

शब्दार्थ :-

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! = हे भगवान्! स्वेच्छा से आज्ञा
प्रदान कीजिए

इच्छाकारेण = स्वेच्छा से, संदिसह = आज्ञा प्रदान कीजिए,
भगवन् = हे भगवान्

देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं ? = देवसिअ [दैवसिक] प्रतिक्रमण
[दिवस संबंधी प्रतिक्रमण / दिवस दौरान किये हुए पापों के
प्रतिक्रमण] में स्थिर रहूं ?

देवसिअ = देवसिअ, पडिक्कमणे = प्रतिक्रमण में, ठाउं ? =
स्थिर रहूं?

इच्छं = मैं आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ

26. devasia paḍikkamaṇe thāu? sūtra

icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! devasia paḍikkamaṇe
thāu? iccham, savvassa vi devasia, duccintia,
dubbhāsia, ducchiṭṭhia, micchā mi dukkaḍam.1.

Literal meaning :-

icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! = oh bhagavān! kindly give me the
permission voluntarily

icchākāreṇa = voluntarily, sandisaha = give me the permission,
bhagavan = oh bhagavān!

devasia paḍikkamaṇe thāu? = shall i concentrate in devasia [daivasika]
pratikramaṇa [pratikramaṇa of the day / pratikramaṇa of the misdeeds
committed during the day time]

devasia = in devasia, paḍikkamaṇe = pratikramaṇa, thāu? = shall i
concentrate?

iccham = i obey [accept] your orders

सव्वस्स वि = सभी

देवसिअ = दैवसिक

दुच्चिंतित्तिअ = दुष्ट [आर्त ध्यान और रौद्र ध्यान से होने वाले] चिंतन संबंधी

दुब्भासिअ = दुष्ट [सावद्य] भाषण संबंधी

दुच्चिट्ठित्तिअ = दुष्ट चेष्टा [निषिद्ध क्रिया] संबंधी

मिच्छा मि दुक्कडं = मेरे दुष्कृत्य मिथ्या हों

मिच्छा = मिथ्या हों, मि = मेरे, दुक्कडं = दुष्कृत्य

गाथार्थ :-

दैवसिक प्रतिक्रमण में स्थिर रहूँ ? [इसकी] हे भगवान्! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान करो । मैं आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ. दुष्ट चिंतन, दुष्ट भाषण और दुष्ट चेष्टाओं संबंधी मेरे सभी दैवसिक दुष्कृत्य मिथ्या हों. १.

विशेषार्थ :-

देवसिअ [दैवसिक] प्रतिक्रमण = दिवस के अंत में किया जाने वाला प्रतिक्रमण.

savvassa vi = all

devasia = of the day

duccintia = concerning evil thoughts [occurring due to āṛta dhyāna and raudra dhyāna]

dubbhāsia = concerning evil talks / words

duccittia = concerning evil deeds [forbidden deeds]

micchā mi dukkaḍam = my misdeeds may become fruitless

micchā = may become fruitless, mi = my, dukkaḍam = misdeeds

Stanzaic meaning :-

Shall I concentrate in **devasia pratikramaṇa**? Oh **bhagavān**! kindly give me the permission voluntarily [for it]. I accept your orders. All my misdeeds concerning evil thoughts, evil words and evil deeds of the day may become fruitless. ... 1.

Specific meaning :-

devasia [daivasika] pratikramaṇa = pratikramaṇa performed at the end of the day.

सूत्र परिचय :-

दिन में किए हुए समस्त पापों का संक्षिप्त वर्णन करके इस सूत्र से प्रतिक्रमण करने के लिये स्थिर हुआ जाता है.

Introduction of the sūtra :-

By this sūtra, firmness is being done to perform **pratikramaṇa** briefly describing all the sins committed during the day.

२७. इच्छामि ठामि सूत्र

इच्छामि ठामि काउस्सगं, जो मे देवसिओ अइयारो कओ,
 काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मगो,
 अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचित्तिओ,
 अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो,
 नाणे, दंसणे, चरित्ता-चरित्ते, सुए, सामाइए,
 तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं,
 पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुण-व्वयाणं,
 चउण्हं सिक्खा-वयाणं, बारस-विहस्स सावग-धम्मस्स,
 जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं. ...१.

शब्दार्थ :-

इच्छामि ठामि काउस्सगं = मैं कायोत्सर्ग में स्थिर होना चाहता हूँ
 इच्छामि = मैं चाहता हूँ, ठामि = स्थिर होना, काउस्सगं =
 कायोत्सर्ग में

27. icchāmi ṭhāmi sūtra

icchāmi ṭhāmi kāussaggam, jo me devasio aiyāro kao,
 kāio, vāio, māṇasio, ussutto, ummaggo,
 akappo, akaraṇijjo, dujjhāo, duvvicintio,
 aṇāyāro, aṇicchaviṇṇo, asāvaga-pāuggo,
 nāṇe, dansaṇe, carittā-caritte, sue, sāmāie,
 tiṇham guttiṇam, caṇham kasāyāṇam,
 pañcaṇha-maṇuvvayaṇam, tiṇham guṇa-vvayaṇam,
 caṇham sikkhā-vayaṇam, bārasa-vihassa sāvaga-dhammassa,
 jam khaṇḍiam jam virāhiam, tassa micchā mi dukkaḍam.1.

Literal meaning :-

icchāmi ṭhāmi kāussaggam = i am willing to be concentrated in kāyotsarga
 icchāmi = i am willing, ṭhāmi = to be concentrated, kāussaggam = in
 kāyotsarga

जो मे देवसिओ अइयारो कओ = मेरे द्वारा दिवस में जो अतिचार हुआ हो

जो = जो, मे = मेरे द्वारा, देवसिओ = दिवस में, अइयारो = अतिचार, कओ = हुआ हो

काइओ वाइओ माणसिओ = काया द्वारा, वाणी द्वारा, मन द्वारा
काइओ = काया द्वारा, वाइओ = वाणी द्वारा, माणसिओ = मन द्वारा

उस्सुत्तो = उत्सूत्र [सूत्र के विरुद्ध] कहने से

उम्मग्गो = उन्मार्ग में [मार्ग के विरुद्ध] चलने से

अकप्पो = अकल्पनीय [आचार के विरुद्ध] वर्तन करने से

अकरणिज्जो = अकरणीय [अयोग्य] कार्य करने से

दुज्झाओ = दुष्ट ध्यान [आर्त या रौद्र ध्यान] करने से

दुव्विचिंतिओ = दुष्ट चिंतन करने से

अणायारो = अनाचार [न आचरने योग्य आचरण] करने से

अणिच्छिअव्वो = अनिच्छित [मन से न चाहने योग्य] वर्तन करने से

असावग-पाउग्गो = श्रावक के योग्य व्यवहार से विरुद्ध आचरण करने से

असावग = श्रावक के विरुद्ध, पाउग्गो = आचरण करने से

jo me devasio aiyāro kao = the violations which are committed by me during the day

jo = which, me = by me, devasio = during the day, aiyāro = the violations, kao = are committed

kāio vāio māṇasio = by deeds, by words, by thoughts

kāio = by deeds, vāio = by words, māṇasio = by thoughts

ussutto = by speaking against the sūtras

ummaggo = by acting in wrong way

akappo = by acting against the prescribed code of conduct

akaraṇijjo = by doing undesirable activities

dujjhāo = by evil concentration [ārtta or raudra dhyāna]

duvvicintio = by ill-thinking

aṇāyāro = by doing improper behaviour

aṇicchāvvo = by doing acts undesirable [by the heart]

asāvaga-pāuggo = by acting against the code of conduct fit for a śrāvaka

asāvaga = against a śrāvaka, pāuggo = by acting

नाणे दंसणे = ज्ञान संबंधी, दर्शन संबंधी

नाणे = ज्ञान संबंधी, दंसणे = दर्शन संबंधी

चरित्ताचरित्ते = देश-विरति चारित्र संबंधी

सुए सामाइए = श्रुत ज्ञान संबंधी, सामायिक संबंधी

सुए = श्रुत ज्ञान संबंधी, सामाइए = सामायिक संबंधी

तिण्हं गुत्तीणं = तीन गुप्तियों संबंधी

तिण्हं = तीन, गुत्तीणं = गुप्तियों संबंधी

चउण्हं कसायाणं = चार कषाय संबंधी

चउण्हं = चार, कसायाणं = कषाय संबंधी

पांचण्ह-मणु-व्वयाणं = पांच अणु व्रत में

पांचण्हं = पांच, अणु = अणु, व्वयाणं = व्रत में

तिण्हं गुण-व्वयाणं = तीन गुण व्रत में

गुण = गुण

चउण्हं सिक्खा-वयाणं = चार शिक्षा व्रत में

सिक्खा = शिक्षा, वयाणं = व्रत में

बारस-विहस्स सावग-धम्मस्स = बारह प्रकार के [व्रत रूपी] श्रावक धर्म में

बारस = बारह, विहस्स = प्रकार के, सावग = श्रावक,

nāṇe dāsaṇe = regarding jñāna, regarding darśana

nāṇe = regarding jñāna, dāsaṇe = regarding darśana

carittācaritte = about deśa-virati cāritra

sue sāmāie = about śruta jñāna, about sāmāyika

sue = about śruta jñāna, sāmāie = about sāmāyika

tiṇhaṃ guttiṇaṃ = about three guptis

tiṇhaṃ = three, guttiṇaṃ = about guptis

cauṇhaṃ kaṣāyāṇaṃ = about four kaṣāyas

cauṇhaṃ = four, kaṣāyāṇaṃ = about kaṣāyas

pañcaṇha-maṇu-vvayaṇaṃ = in five small [partially observed] vows

pañcaṇhaṃ = five, aṇu = small, vvayaṇaṃ = in vows

tiṇhaṃ guṇa-vvayaṇaṃ = in three characteristic vows

guṇa = characteristic

cauṇhaṃ sikkhā-vayaṇaṃ = in four moral [educational] vows

sikkhā = moral, vayaṇaṃ = in vows

bārasa-vihassa sāvaga-dhammassa = in twelve types [of vows] of śrāvaka's dharma [code of conduct]

bārasa = twelve, vihassa = types of, sāvaga = śrāvaka's, dhammassa =

धम्मस्स = धर्म में

जं खंडिअं जं विराहिअं = जो खंडना हुई हो, जो विराधना हुई हो

जं = जो, खंडिअं = खंडना हुई हो, विराहिअं = विराधना हुई हो

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं = मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों

तस्स = वे, मिच्छा = मिथ्या हो, मि = मेरे, दुक्कडं = दुष्कृत्य

गाथार्थ :-

मैं कायोत्सर्ग में स्थिर होना चाहता हूँ. काया द्वारा, वाणी द्वारा, मन द्वारा, उत्सूत्र कहने से, उन्मार्ग में चलने से, अकल्पनीय वर्तन करने से, अकरणीय कार्य करने से, दुष्ट ध्यान करने से, दुष्ट चिंतन करने से, अनाचार करने से, अनिच्छित वर्तन करने से, श्रावक के योग्य व्यवहार से विरुद्ध आचरण करने से, ज्ञान संबंधी, दर्शन संबंधी, देश-विरति चारित्र संबंधी, श्रुत ज्ञान संबंधी, सामायिक संबंधी, तीन गुप्तियों संबंधी, चार कषाय संबंधी और पांच अणु व्रत में, तीन गुण व्रत में, चार शिक्षा व्रत में— बारह प्रकार के श्रावक धर्म में खंडना हुई हो, जो विराधना

in dharma [code of conduct]

jam khandiam jam virāhiam = violations which are committed, faults which are committed

jam = which, khandiam = violations are committed, virāhiam = faults are committed

tassa micchā mi dukkaḍam = those misdeeds of mine may become fruitless

tassa = those, micchā = may become fruitless, mi = of mine, dukkaḍam = misdeeds

Stanzaic meaning :-

I am willing to be concentrated in kāyotsarga. The violations which are committed by me during the day by deeds, by words, by thoughts, by speaking against the sūtras, by acting in wrong way, by acting against the prescribed code of conduct, by doing undesirable activities, by evil concentration, by ill-thinking, by doing improper behaviour, by doing acts undesirable, by acting against the code on conduct fit for a śrāvaka, regarding jñāna, regarding darśana, about deśa-virati cāritra, about śruta jñāna, about sāmāyika, about three guptis, about four kaṣāyas and in five small vows, in three characteristic vows, in four moral vows--

हुई हो, मेरे द्वारा दिवस में जो अतिचार हुए हों, मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों.

विशेषार्थ :-

सूत्र = सर्वज्ञ या आप्त पुरुषों द्वारा कथित वचनों की रचना.

उन्मार्ग = क्षायोपशमिक भाव को छोड़कर औदयिक भाव में प्रवेश करना.

क्षायोपशमिक भाव = उदय में आये हुए कर्मों को क्षय करने पर और उदय में न आये हुए कर्मों का उपशमन करने पर उत्पन्न होने वाले भाव.

औदयिक भाव = कर्मोदय से उत्पन्न होने वाले भाव.

कर्मोदय = पूर्व में की हुई शुभाशुभ प्रवृत्तियों से बंधे कर्म का उदय होने पर प्रकट होने वाला फल.

देश-विरति चारित्र = आंशिक रूप में चारित्र का पालन करना.

चारित्र = सावध [हिंसक / पापमय] योग से निवृत्ति.

आर्त ध्यान = दुःख, मुसीबत, विटंबना और निराशा प्रधान दुष्ट चिंतन / अनिष्ट संयोग, इष्ट वियोग, रोग व निदान संबंधी दुष्ट ध्यान.

रौद्र ध्यान = हिंसा, झूठ, चोरी और परिग्रह संबंधी दुष्ट चिंतन.

in twelve types of śrāvakas code of conduct, violations which are committed, faults which are committed, those misdeeds of mine may become fruitless.

Specific meaning :-

sūtra = Composition of discourses spoken by sarvajña or reliable persons.

unmārga = To enter into audayika bhāva leaving kṣāyopāśamika bhāva.

kṣāyopāśamika bhāva = The emotions occurring on destroying the karmas fruitifying and mitigating the karmas not fruitifying.

audayika bhāva = The emotions occurring by the fruitification of karma.

karmodaya = The fruits resulting from karmas binded by good and evil activities done in the past.

deśa-virati cāritra = To observe cāritra partially.

cāritra = To retire from violent [sinful] activities.

ārta dhyāna = Evil thinking mainly about unhappiness, troubles, tough conditions and disappointment / evil thinking about coincidence of undesired separation of the desired, disease and nidāna [determination].

raudra dhyāna = Evil thinking regarding violence, lie, theft and possessions.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र से श्रावक के आचार तथा बारह व्रतों में लगे अतिचारों का संक्षेप में वर्णन कर प्रतिक्रमण करने के लिये कायोत्सर्ग का संकल्प किया जाता है.

Introduction of the sūtra :-

By this sūtra, determination of kāyotsarga is being done to perform pratikramaṇa describing in brief the violations attached to the conducts and twelve vows of the śrāvaka.

२८. पंचाचार के अतिचार

नाणम्मि दंसणम्मि अ,

चरणम्मि तवम्मि तह य वीरियम्मि.

आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ.१.

काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे.

वंजण-अत्थ-तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो.२.

निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वित्तिगिच्छा अमूढ-दिट्ठी अ.

उववूह-थिरीकरणे, वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ.३.

पणिहाण-जोग-जुत्तो, पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं.

एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो.४.

बारस-विहम्मि वि तवे, सब्भितर-बाहिरे कुसल-दिट्ठे.

अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो.५.

अणसण-मूणोअरिया, वित्ति-संखेवणं रसच्चाओ.

काय-किलेसो संलीणया य बज्झो तवो होइ.६.

28. pañcācāra ke aticāra

nāṇammi dansaṇammi a,

caraṇammi tavammi taha ya vīriyammi.

āyaraṇam āyāro, ia eso pañcahā bhaṇio.1.

kāle viṇae bahumāṇe, uvahāṇe taha aniṇhavaṇe.

vañjaṇa-attha-tadubhae, aṭṭhaviho nāṇamāyāro.2.

nissaṅkia nikkaṅkhia, nivvitiḡicchā amūḡha-diṭṭhī a.

uvavūha-thirīkaraṇe, vacchalla-pabhāvaṇe aṭṭha.3.

paṇihāṇa-joga-jutto, pañcahim samiīhim tihim guttihim.

esa carittāyāro, aṭṭhaviho hoi nāyavvo.4.

bārasa-vihammi vi tave, sabbhintara-bāhire kusala-diṭṭhe.

agilāi aṇājīvī, nāyavvo so tavāyāro.5.

aṇasaṇa-mūṇoariyā, vitti-saṅkhevaṇam rasaccāo.

kāya-kilesa sanliṇayā ya bajjho tavo hoi.6.

पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ.
 ज्ञाणं उस्सग्गो वि अ, अब्भित्तरओ तवो होइ.....७.
 अणिगूहिअ-बल-वीरिओ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो.
 जुंजइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरियायारो.८.
 शब्दार्थ :-

१. नाणम्मि दंसणम्मि अ चरणम्मि = ज्ञान, दर्शन और चरित्र संबंधी
 नाणम्मि = ज्ञान, दंसणम्मि = दर्शन, अ = और, चरणम्मि =
 चरित्र संबंधी
 तवम्मि तह य वीरियम्मि आयरणं आयारो = तथा तप और वीर्य
 [आत्मबल] संबंधी आचरण आचार है
 तवम्मि = तप, तह = तथा, य = और, वीरियम्मि = वीर्य,
 आयरणं = आचरण, आयारो = आचार
 इअ एसो पंचहा भणिओ = इस तरह यह [आचार] पाँच प्रकार का
 कहा गया है
 इअ = इस तरह, एसो = यह, पंचहा = पाँच प्रकार का,
 भणिओ = कहा गया है
 २. काले विणए बहुमाणे = काल, विनय, बहुमान संबंधी

pāyacchittam viṇao, veyāvaccam taheva sajjhāo.
 jhāṇam ussaggo vi a, abbhintarao tavo hoi.7.
 aṇigūhia-bala-vīrio, parakkamai jo jahuttamāutto.
 juñjai a jahāthāmam, nāyavvo vīriyāyāro.8.
 Literal meaning :-

1. nāṇammi dāsaṇammi a caraṇammi = about jñāna, darśana and cāritra
 nāṇammi = about jñāna, dāsaṇammi = darśana, a= and, caraṇammi =
 cāritra
 tavammi taha ya vīriyammi āyaraṇam āyāro = and practice about tapa and
 vīrya [psychic strength] is ācāra [conduct]
 tavammi = about tapa, taha = and, ya = and, vīriyammi = vīrya,
 āyaraṇam = practice, āyāro = is ācāra
 ia eso pañcahā bhaṇio = in this way this [ācāra] is said to be of five types
 ia = in this way, eso = this, pañcahā = of five types, bhaṇio = is said to
 be
 2. kāle viṇaḥ bahumāṇe = about proper time, proper respect and reverence

काले = काल, विणए = विनय, बहुमाणे = बहुमान संबंधी
 उवहाणे तह अनिणहवणे = उपधान और अनिहवता संबंधी
 उवहाणे = उपधान, अनिणहवणे = अनिहवता संबंधी
 वंजण-अत्थ-तदुभए = व्यंजन, अर्थ और इन दोनों संबंधी
 वंजण = व्यंजन, अत्थ = अर्थ, तदुभय = इन दोनों संबंधी
 अट्ठ-विहो नाणमायारो = आठ प्रकार का ज्ञानाचार है
 अट्ठ = आठ, विहो = प्रकार का, नाणमायारो = ज्ञानाचार है
 ३. निस्संकिअ निक्कंखिअ = निःशंकता, निष्कांक्षता
 निस्संकिअ = निःशंकता, निक्कंखिअ = निष्कांक्षता
 निव्वितिगिच्छा अमूढ-दिट्ठी अ = निर्विचिकित्सा और अमूढ दृष्टि
 निव्वितिगिच्छा = निर्विचिकित्सा, अमूढ = अमूढ, दिट्ठी =
 दृष्टि
 उववूह थिरीकरणे = प्रशंसा, स्थिरीकरण
 उववूह = प्रशंसा, थिरीकरणे = स्थिरीकरण
 वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ = वात्सल्य और प्रभावना— [दर्शनाचार]
 आठ प्रकार का है
 वच्छल्ल = वात्सल्य, पभावणे = प्रभावना, अट्ठ = आठ
 प्रकार का है

kāle = about proper time, viṇae = proper respect, bahumāṇe = reverence
 uvahāṇe taha anīṇhavaṇe = about upadhāna and anihnavatā
 uvahāṇe = about upadhāna, anīṇhavaṇe = anihnavatā
 vañjaṇa-attha-tadubhae = about consonant, meaning and both of these
 vañjaṇa = about consonant, attha = meaning, tadubhaya = both of these
 attha-viho nāṇamāyāro = jñānācāra is of eight types
 attha = of eight, viho = types, nāṇamāyāro = jñānācāra is
 3. nissāṅkia nikkāṅkhia = unsuspectiousness, undesirous
 nissāṅkia = unsuspectiousness, nikkāṅkhia = undesirous
 nivvitiḡicchā amūḡha-diṡṡhī a = undelusiveness and uninfatuated view
 nivvitiḡicchā = undelusiveness, amūḡha = uninfatuated, diṡṡhī = view
 uvavūha thirīkarāṇe = admiration, steadiness
 uvavūha = admiration, thirīkarāṇe = steadiness
 vacchalla-pabhāvaṇe attha = affection and influence-- [darśanācāra] is of
 eight types
 vacchalla = affection, pabhāvaṇe = influence, attha = is of eight types

४. पणिहाण-जोग-जुत्तो = चित्त की समाधि पूर्वक
 पणिहाण = चित्त की, जोग = समाधि, जुत्तो = पूर्वक
 पंचहिं समिइहिं तीहिं गुत्तीहिं = पाँच समिति और तीन गुप्तियों [का पालन]
 पंचहिं = पाँच, समिइहिं = समिति, तीहिं = तीन, गुत्तीहिं = गुप्तियों
 एस = यह
 चरित्ता-यारो अट्ठविहो होइ नायव्वो = आठ प्रकार का चारित्राचार जानने योग्य है
 चरित्तायारो = चारित्राचार, होइ = है, नायव्वो = जानने योग्य
 ५. बारस-विहम्मि = बारहों प्रकार का
 बारस = बारहों, विहम्मि = प्रकार का
 वि तवे सब्बिंतर बाहिरे = आभ्यंतर और बाह्य तप
 वि = और, तवे = तप, सब्बिंतर = आभ्यंतर, बाहिरे = बाह्य
 कुसल-दिट्ठे = कुशल [जिनेश्वरों] द्वारा देखा गया [कथित] है
 कुसल = कुशल द्वारा, दिट्ठे = देखा गया है
 अगिलाइ अणाजीवी = ग्लानि रहित और आजीविका के हेतु रहित
 अगिलाइ = ग्लानि रहित, अणाजीवी = आजीविका के हेतु रहित

4. paṇihāṇa joga-jutto = with peacefulness of mind / concentration
 paṇihāṇa = of mind, joga = peacefulness, jutto = with
 pañcahim samīhiṃ tīhiṃ guttīhiṃ = [observance of] five samitis and three guptis
 pañcahim = five, samīhiṃ = samitis, tīhiṃ = three, guttīhiṃ = guptis
 esa = this
 caritā-yāro atthaviho hoi nāyavvo = cāritrācāra of eight types is worth knowing
 caritāyāro = cāritrācāra, hoi = is, nāyavvo = worth knowing
 5. bārasa-vihammi = all the twelve types of
 bārasa = all the twelve, vihammi = types of
 vi tave sabbhīntara bāhire = internal and external penance
 vi = and, tave = penance, sabbhīntara = internal, bāhire = external
 kusala-ditthe = is seen [said] by the proficient [jineśvaras]
 kusala = by the proficient, ditthe = is seen
 agilāi aṇājīvī = without regret and without the aim of livelihood
 agilāi = without regret, aṇājīvī = without the aim of livelihood

नायव्वो सो तवायारो = वह तपाचार जानने योग्य है

नायव्वो = जानने योग्य है, सो = वह, तवायारो = तपाचार

६.अणसण-मूणोअरिया = उपवास, ऊनोदरता

अणसणं = उपवास, उणोअरिया = ऊनोदरता

वित्ति-संखेवणं रसच्चाओ = वृत्ति संक्षेप, रस त्याग

वित्ति = वृत्ति, संखेवणं = संक्षेप, रस = रस, च्चाओ = त्याग

काय-किलेसो संलीणया य = काय क्लेश और संलीनता[संकोचन]

काय = काय, किलेसो = क्लेश, संलीणया = संलीनता

बज्झो तवो होइ = बाह्य तप है

बज्झो = बाह्य, तवो = तप

७.पायच्छित्तं विणओ = प्रायश्चित्त, विनय

पायच्छित्तं = प्रायश्चित्त, विणओ = विनय

वेयावच्चं तहेव सज्झाओ = वैयावृत्त्य और स्वाध्याय

वेयावच्चं = वैयावृत्त्य, तहेव = और, सज्झाओ = स्वाध्याय

झाणं उस्सग्गो वि अ = ध्यान और उत्सर्ग [त्याग]

झाणं = ध्यान, उस्सग्गो = उत्सर्ग, वि अ = और

nāyavvo so tavāyāro = that tapācāra [conduct of penance] is worth knowing

nāyavvo = is worth knowing, so = that, tavāyāro = conduct of penance

6.aṇasaṇa-mūṇoariyā = fast, eating less

aṇasaṇam = fast, ūṇoariyā = eating less

vitti-saṅkhevaṇam rasaccāo = abridgement of eatables / taking less items of food, giving up of tastefulness

vitti = eatables, saṅkhevaṇam = abridgement of, rasa = of tastefulness, ccāo = giving up

kāya-kilesa saṅlīṇayā ya = physical sufferings and contraction

kāya = physical, kilesa = sufferings, saṅlīṇayā = contraction

bajjho tavo hoi = are external forms of penance

bajjho = external forms, tavo = of penance, hoi = are

7.pāyacchitam viṇao = repentance, politeness

pāyacchitam = repentance, viṇao = politeness

veyāvaccam taheva sajjhāo = service and self study

veyāvaccam = service, taheva = and, sajjhāo = self study

jhāṇam ussaggo vi a = meditation and renouncement

jhāṇam = meditation, ussaggo = renouncement, vi a = and

अभितरओ तवो होइ = अभ्यंतर तप है

अभितरओ = अभ्यंतर

८.अणिगूहिअ-बल-वीरिओ = बल [शारीरिक शक्ति] और वीर्य [आत्मबल] को न छिपाते हुए

अणिगूहिअ = न छिपाते हुए, बल = बल, वीरिओ = वीर्य

परक्कमइ जो जहुत्तं = यथोक्त [शास्त्र में कहे अनुसार उपर्युक्त विषय में] पराक्रम [विशेष प्रयत्न] करना

परक्कमइ = पराक्रम करना, जो जहुत्तं = यथोक्त

आउत्तो जुंजइ अ जहाथामं = और पालन में यथा योग्य शक्ति जोड़ना

आउत्तो = पालन में, जुंजइ = जोड़ना, जहा = यथा योग्य, थामं = शक्ति

नायव्वो वीरियायारो = वीर्याचार जानने योग्य है

वीरियायारो = वीर्याचार

गाथार्थ :-

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य संबंधी आचारण आचार है. इस तरह यह [आचार] पाँच प्रकार का कहा गया है..... १.

abbhīntarao tavo hoi = are internal forms of penance

abbhīntarao = internal forms

8.aṇigūhia-bala-vīrio = without concealing strength and virility

aṇigūhia = without concealing, bala = strength, vīrio = virility

parakkamai jo jahuttam = to enterprise as said [in the afore said subjects according to the scriptures]

parakkamai = to enterprise, jo jahuttam = as said

āutto juñjai a jahāthāmam = and to join in observing according to the best of ability

āutto = in observing, juñjai = to join, jahā = according to the best, thāmam = of ability

nāyavvo vīriyāyāro = vīryācāra is worth knowing

vīriyāyāro = vīryācāra

Stanzaic meaning :-

Practice of jñāna, darśana, cāritra, tapa and vīrya is ācāra. In this way this [ācāra] is said to be of five types. 1.

काल, विनय, बहुमान, उपधान, अनिह्नवता, व्यंजन, अर्थ और इन दोनों संबंधित— आठ प्रकार का ज्ञानाचार है. २.
 निःशंकता, निष्कांक्षता, निर्विचिकित्सा, अमूढ दृष्टि, प्रशंसा, स्थिरीकरण, वात्सल्य और प्रभावना— आठ प्रकार का [दर्शनाचार] है. ३.
 चित्त की समाधि पूर्वक पाँच समिति और तीन गुप्तियों [का पालन]— यह आठ प्रकार का चारित्राचार जानने योग्य है. ४.
 बारहों प्रकार का आभ्यंतर और बाह्य तप जिनेश्वरों द्वारा कथित है. ग्लानि रहित और आजीविका के हेतु रहित वह तपाचार जानने योग्य है. ५.
 उपवास, ऊनोदरता, वृत्ति संक्षेप, रस त्याग, काय क्लेश और संकोचन बाह्य तप है. ६.
 प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान और उत्सर्ग अभ्यंतर तप है. ७.
 बल और वीर्य को न छिपाते हुए यथोक्त पराक्रम करना और पालन करने में यथाशक्ति [अपनी आत्मा को] जोड़ना— यह वीर्याचार जानने योग्य है. ८.

[jñānācāra is of eight types— about proper time, proper respect, reverence, upadhāna, anihnavatā, consonant, meaning and both of these. 2.
 [darśanācāra] is of eight types-- unsuspectingness, undesirous, undelusive-ness and uninfatuated view, admiration, steadiness, affection and influence. 3.
 [Observation of] five samitis and three guptis with peacefulness of mind-- this cāritrācāra of eight types is worth knowing. 4.

All the twelve types of internal and external penance is said by the jineśvaras. That tapācāra without regret and without the aim of livelihood is worth knowing. 5.

Fast, eating less, taking less varieties of food, giving up of tastefulness, physical sufferings and contraction are external forms of penance. 6.
 Repentance, politeness, service, self study, meditation and renouncement are internal forms of penance. 7.
 To enterprise as said without concealing the strength and virility and to join [his own soul] in observing according to the best of ability-- this vīryācāra is worth knowing. 8.

विशेषार्थ :-

ज्ञान / सम्यग् ज्ञान = मोक्ष मार्ग और मोक्ष के साधनों का बोध कराने वाला द्वादशांगी आदि रूप श्रुत ज्ञान;

दर्शन / सम्यग् दर्शन = तत्त्वभूत पदार्थों में यथार्थ श्रद्धा.

चारित्र / सम्यक् चारित्र = सर्व विरति चारित्र और देश विरति चारित्र.

सर्व विरति चारित्र = सावद्य योग [क्रियाओं] से संपूर्ण निवृत्ति वाला आचरण.

देश विरति चारित्र = सावद्य योग [क्रियाओं] से आंशिक निवृत्ति वाला आचरण.

तप = शरीर के रस आदि धातु और कर्मों का शोषण करने वाला आचरण.

ज्ञान के आठ आचार :-

१. काल- नियत समय में श्रुत ज्ञान का अभ्यास करना व कराना.
२. विनय- गुरु, ज्ञान, ज्ञानी, ज्ञान के उपकरण और ज्ञानाभ्यासी का आदर करते हुए यथा योग्य भक्ति करना.
३. बहुमान- गुरु आदि के प्रति बहुमान [हार्दिक प्रीति] रखना.

Specific meaning :-

jñāna / samyag jñāna [right knowledge] = Scriptural knowledge in the form of **dvādaśāṅgī** [twelve aṅgas] etc. comprehending the path of salvation and the means of salvation.

darśana / samyag darśana [right faith] = Proper faith in fundamental matters.

cāritra / samyak cāritra [right conduct] = **sarva virati cāritra** and **deśa virati cāritra**.

sarva virati cāritra = Conduct with complete retirement of from sinful activities.

deśa virati cāritra = Conduct with partial retirement from sinful activities.

tapa [penance] = Conduct fading the substances of the body like semen and karmas.

Eight conducts of jñāna :-

1. **kāla**- To study or to teach the **śruta jñāna** during prescribed time.
2. **vinaya [respect]**- To adore properly respecting the preceptor, **jñāna** [knowledge], **jñānī** [learned person], sources of **jñāna** and the learner.
3. **bahumāna [reverence]**- To have respect [heartily affection] towards the

४. उपधान- विधि पूर्वक उपधान [शास्त्र निर्दिष्ट तप के साथ क्रिया] कर शास्त्र और सूत्रों का अभ्यास करना.
५. अनिह्नवता- सिद्धांत या गुरु आदि के विरुद्ध न बोलना.
६. व्यंजन- सूत्र या अक्षरों का उच्चारण शुद्ध करना.
७. अर्थ- सूत्र या शब्दों का अर्थ शुद्ध करना.
८. तदुभय [दोनों]- सूत्र का उच्चार और अर्थ- दोनों शुद्ध करना.

दर्शनाचार के आठ आचार :-

१. निःशंकाता- जिन वचन या सिद्धांत में शंका न करना.
२. निष्कांक्षता- जिन वचन और जिन मत के सिवाय अन्य [मिथ्यात्व] वचन या मत की कांक्षा [इच्छा] न करना.
३. निर्विकित्सा- जैन दर्शन के फल में संदेह कर विचलित न होना [मति विभ्रम न होना] या साधु-साध्वियों के मलिन वस्त्र आदि देख घृणा न करना.
४. अमूढ दृष्टि [मूढ दृष्टि वाला न होना]- चमत्कारादि देख विचलित न होना.

guru etc.

4. upadhāna- To study the scriptures and sūtras performing upadhāna [rites along with penance as specified in the scriptures].
5. anihnavaṭā- Not to speak ill of the preceptor or doctrines.
6. vyañjana [consonant]- To pronounce the sūtras or letters correctly.
7. artha [meaning]- To do correct meaning of the sūtras or the words.
8. tadubhaya [both]- To do both the pronunciation and meaning of sūtras correctly.

Eight conducts of darśanācāra :-

1. niḥśaṅkatā [unsuspiciousness]- Not to suspect the words of jina or the doctrines.
2. niṣkāṅkṣatā [undesirous]- Not to desire other [false] words or doctrines other than the words of jina and the doctrine of jina.
3. nirvikitsā [undelusiveness]- Not to become unsteady [not to be confused] by doubting in the fruits of jaina philosophy or not to feel dislike on seeing uncleaned cloths, wooden utensils etc. of sādhu-sādhvīs.
4. amūḍha drṣṭi [uninfatuated view]- Not to become unsteady seeing miracles.

५. प्रशंसा- गुणवान और साधर्मि के गुणों की प्रशंसा करना.

६. स्थिरीकरण- धर्म मार्ग से विचलित होते हुए को स्थिर करना.

७. वात्सल्य- साधर्मिकों के प्रति वात्सल्य भाव रखना.

८. प्रभावना- धर्म प्रभावना करना.

चारित्र के आठ आचार :-

पाँच समिति और तीन गुप्तियों का पालन करना.

तप के बारह आचार :-

♦ बाह्य तप के छ आचार :-

१. अनशन [उपवास]- नियम [पचक्षेत्राण] पूर्वक आहार न लेना.

२. ऊणोदरी- भूख की अपेक्षा कुछ कम प्रमाण में आहार करना.

३. वृत्ति-संक्षेप- खाने-पीने के पदार्थों की संख्या और प्रमाण को घटाकर सीमित करना.

४. रस त्याग- रस [भक्ष्य विगइ] का यथा शक्ति त्याग करना.

५. काय-क्लेश- संयम पालन तथा इंद्रिय विकार और कषायों के दमन के लिये शारीरिक कष्ट सहन करना.

5. praśānsā [admiration]- To praise the virtues of a meritorious person or a co-religionist.

6. sthīrīkaraṇa [stabilization]- To make the person firm going astray from the path of religion.

7. vātsalya [affection]- To have affectionate feelings towards the co-religionists.

8. prabhāvanā [influence]- To glorify the religion.

Eight Conducts of cāritra :-

To observe five samitis and three guptis.

Twelve Conducts of tapa :-

♦ Six Conducts of bāhya tapa [external penance] :-

1. anaśana [fast]- Not to take food by vow.

2. ūṇodari- To eat a little less than the hunger.

3. vṛtti-saṅkṣepa- To limit eatables and drinks by reducing the number and quantity of items.

4. rasa tyāga- To give up the tasteful items [bhakṣya vigai] according to the capacity.

5. kāya-kleśa [physical sufferings]- To undergo physical hardships for self control and for suppression of sensual deterioration and kaṣāyas.

६. संकोचन- इंद्रिय विकार और कषायों के दमन के लिये शरीर [अंगोपांग] को संकोच कर रखना.

◆ अभ्यंतर तप के छ आचार :-

१. प्रायश्चित्त- दोषों की शुद्धि के लिये शास्त्रोक्त प्रायश्चित्त लेना.

२. विनय- कर्म क्षय के लिये मोक्ष साधनों की यथाविधि आराधना करना.

३. वैयावृत्य- पूज्य भाव से संघ की सेवा करना.

४. स्वाध्याय- स्व आत्मा का अध्ययन / आत्म हितकारी शास्त्रों का अध्ययन करना.

५. ध्यान- चित्त को एकाग्र कर शुभ ध्यान करना.

६. उत्सर्ग- लोक समूह, शरीर, उपधि, आहार और पानी का त्याग [द्रव्य उत्सर्ग] तथा कषाय, संसार और कर्म का त्याग [भाव उत्सर्ग]

भक्ष्य विगई :- विगई जो आहार में ले सकते हैं / दूध, दही, घी, तेल, गुड़ / मिठाई और तली हुई वस्तुएँ.

6. saṅkocana [contraction]- To keep the body contracted for suppressing the sensual deterioration and kaṣāyas.

◆ Six conducts of abhyantara tapa [internal penance] :-

1. prāyaścitta- To take repentance according to scriptures for the rectification of faults.

2. vinaya- To pursue the means of salvation properly for the destruction of karmas.

3. vaijāvr̥t̥tya- To serve society [four-folded religious congregation] with dedication.

4. svādhyāya- Study of self / to study the literature beneficial to the soul.

5. dhyāna- To practise auspicious meditation concentrating the mind.

6. utsarga- Avoidance of public gatherings, body, material things, food and water [physical abandonment] and giving up of kaṣāyas, world and karmas [psychological renouncement].

bhakṣya vigai :- vigai which can be used while eating / milk, curd, butter, oil, jaggery / sweets and fired items.

वीर्य के तीन आचार :-

मन, वचन और काया की शक्ति को छुपाये बिना ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप संबंधी आचार के पालन में पुरुषार्थ करना.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र में श्रावक के आचार के पांच मुख्य भेदों एवं उनके प्रभेदों का वर्णन है.

Three Conducts of vīrya :- To make efforts in observing the code of conduct relating to **jñāna**, **darśana**, **cāritra** and **tapa** without hiding mental, vocal and physical capability.

Introduction of the sūtra :-

In this **sūtra**, there is a description of five main divisions and their sub-divisions of conducts of the **śrāvaka**.

२९. सुगुरु वन्दना सूत्र

इच्छामि खमा-समणो! वंदितुं जावणिज्जाए, निसीहिआए,
 अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहो-कायं काय-संफासं-
 खमणिज्जो भे! किलामो? अप्प-किलंतणं बहु-सुभेण भे!
 दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे?
 खामेमि खमा-समणो! देवसिअं वइक्कमं, आवस्सिआए
 पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए
 तित्तिसन्न यराए जं किंचि मिच्छाए, मण-दुक्कडाए,
 वय-दुक्कडाए, काय-दुक्कडाए, कोहाए, माणाए,
 मायाए, लोभाए, सब्ब-कालिआए, सब्ब-मिच्छो-वयाराए,
 सब्ब-धम्मा-इक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ,
 तस्स खमा-समणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि,
 अप्पाणं वोसिरामि.....१.

29. suguru vandanā sūtra

icchāmi khamā-samaṇo! vanditum jāvaṇijjāe, nisihiāe,
 aṇujāṇaha me miuggaḥam, nisihi, aho-kāyaṃ kāya-samphāsam-
 khamañijjo bhe! kilāmo? appa-kilantāṇam bahu-subheṇa bhe!
 divaso vaikkanto? jattā bhe? javaṇijjam ca bhe?
 khāmemi khamā-samaṇo! devasiam vaikkamam, āvassīāe
 paḍikkamāmi, khamāsamaṇāṇam, devasīāe āsāyaṇāe
 tittisanna yarāe jaṃ kiñci micchāe, maṇa-dukkadāe,
 vaya-dukkadāe, kāya-dukkadāe, kohāe, māṇāe,
 māyāe, lobhāe, savva-kālīāe, savva-miccho-vayārāe,
 savva-dhammā-ikkamaṇāe āsāyaṇāe jo me aiyāro kao,
 tassa khamā-samaṇo! paḍikkamāmi, nindāmi, garihāmi,
 appāṇam vosirāmi.1.

शब्दार्थ :-

इच्छामि = मैं चाहता हूँ

खमा-समणो! = हे क्षमाश्रमण !

वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए = [अन्य प्रवृत्ति / व्यापार] त्याग कर शक्ति अनुसार वंदन करना

वंदिउं = वंदन करना, जावणिज्जाए = शक्ति के अनुसार,

निसीहिआए = त्याग कर

अणुजाणह मे मिउग्गहं = अवग्रह [मर्यादित भूमि / गुरु के समीपवर्ती भूमि] में प्रवेश करने के लिये मुझे आज्ञा प्रदान करो
अणुजाणह = आज्ञा प्रदान करो, मे = मुझे, मिउग्गहं = अवग्रह में प्रवेश करने के लिये

निसीहि = अशुभ व्यापार को त्याग करके

अहो-कायं काय-संफासं = [आपके] अधो शरीर [शरीर का नीचला भाग / चरणों] को मेरे शरीर [हाथ] द्वारा स्पर्श करने से
अहो = अधो, कायं = शरीर, काय = मेरे शरीर द्वारा, संफासं = स्पर्श करने से

खमणिज्जो भे! किलामो = हुए खेद के लिये आप क्षमा करें

खमणिज्जो = क्षमा करें, भे = आप, किलामो = हुए खेद के

Literal meaning :-

icchāmi = i wish

khamā-samaṇo! = oh! kṣamāśramaṇa!

vandium jāvaṇijjāe nisīhiāe = to obeisance according to the best of my ability giving up [all other activities]

vandium = to obeisance, jāvaṇijjāe = according to the best of my ability, nisīhiāe = giving up

aṇujāṇaha me miuggaḥam = kindly allow me to enter the avagraha [restricted area / area near by to the guru]

aṇujāṇaha = kindly allow, me = me, miuggaḥam = to enter the avagraha

nisīhi = giving up all evil activities

aho-kāyam kāya-samphāsam = by touching your lower part of the body [feet] with my body [hands]

aho = lower part, kāyam = of the body, kāya = with my body, samphāsam = by touching

khaṇaṇijjo bhe! kilāmo = you forgive for the discomfort caused

khaṇaṇijjo = forgive, bhe = you, kilāmo = for the discomfort caused

लिये

अप्प-किलंतानं बहु-सुभेण भे! दिवसो वड्क्कंतो ? = आपका दिन
अल्प ग्लानि और अधिक सुख पूर्वक व्यतीत हुआ है ?

अप्प = अल्प, किलंतानं = ग्लानि, बहु = अधिक, सुभेण =
सुख पूर्वक, भे = आपका, दिवसो = दिन, वड्क्कंतो = व्यतीत
हुआ है?

जत्ता भे ? = आपकी [संयम] यात्रा [ठीक चल रही है] ?

जत्ता = यात्रा, भे = आपकी

जवणिज्जं च भे ? = और आपका [मन एवं इंद्रियों] उपघात [पीड़ा]
रहित हैं ?

जवणिज्जं = उपघात रहित हैं?, च = और

खामेभि खमा-समणो! देवसिअं वड्क्कमं = हे क्षमाश्रमण! दिन में
हुए व्यतिक्रम [अपराधों] की मैं क्षमा मांगता हूँ

खामेभि = मैं क्षमा मांगता हूँ, देवसिअं = दिन में हुए, वड्क्कमं
= व्यतिक्रम की

आवस्सिआए = आवश्यक क्रिया के लिये [मैं अवग्रह से बाहर
जाता हूँ]

पडिक्कमामि = मैं प्रतिक्रमण करता हूँ

appa-kilantāṇaṃ bahu-subheṇa bhe! divaso vaikkanto? = has your day
passed with little affliction and more comfort?

appa = little, kilantāṇaṃ = affliction, bahu = more, subheṇa = with
comfort, bhe = your, divaso = day, vaikkanto = has passed

jattā bhe? = [Is] your journey [of self-control going on well]

jattā = journey

javanijjam ca bhe? = and is your [mind and sense organs] without affliction?

javanijjam = are without affliction, ca = and

khāmemi khamā-samaṇo! devasiam vaikkamaṃ = oh kṣamāśramaṇa! i beg
forgiveness for the mistakes committed during the day

khāmemi = i beg forgiveness, devasiam = committed during the day,
vaikkamaṃ = for the mistakes

āvassīāe = [i go out of the avagraha] for necessary rites

paḍikkamāmi = i perform the pratikramaṇa

खमासमणाणं देवसिआए = दिन में क्षमाश्रमण के प्रति
 खमासमणाणं = क्षमाश्रमण के प्रति, देवसिआए = दिन में
 आसायणाए तितीसन्नयराए = तैंतीस में से अन्य जो कोई भी
 आशातना की हो
 आसायणाए = आशातना की हो, तितीस = तैंतीस में से,
 अन्नयराए = अन्य जो कोई भी
 जं किंचि = जो कोई
 जं = जो, किंचि = कोई
 मिच्छाए = मिथ्या भाव द्वारा
 मण-दुक्कडाए = मन के दुष्कृत्यों द्वारा
 मण = मन के, दुक्कडाए = दुष्कृत्यों द्वारा
 वय-दुक्कडाए = वचन के दुष्कृत्यों द्वारा
 वय = वचन के
 काय-दुक्कडाए = काया के दुष्कृत्यों द्वारा
 काय = काया के
 कोहाए माणाए मायाए लोभाए = क्रोध से, मान से, माया से या
 लोभ से
 कोहाए = क्रोध से, माणाए = मान से, मायाए = माया से,

khamāsamaṇāṇaṃ devasiāe = in the day towards kṣamāśramaṇa
 khamāsamaṇāṇaṃ = towards kṣamāśramaṇa, devasiāe = in the day
 āsāyaṇāe tittisannayarāe = any of the other irreverence that might have
 done out of thirty three
 āsāyaṇāe = irreverences that might have done, tittisa = out of thirty
 three, annayarāe = any of the other
 jaṃ kiñci = any of
 jaṃ = any, kiñci = of
 micchāe = by wrong feelings / delusion
 maṇa-dukkadāe = by mental misdeeds / evil thinking
 maṇa = by mental, dukkadāe = misdeeds
 vaya-dukkadāe = by vocal misdeeds / evil speaking
 vaya = by vocal
 kāya-dukkadāe = by physical misdeeds / evil deeds
 kāya = by physical
 kohāe māṇāe māyāe lobhāe = by anger, by pride, by deceit or by
 greediness
 kohāe = by anger, māṇāe = by pride, māyāe = by deceit, lobhāe = by

लोभाए = लोभ से सव्व-कालियाए = सर्व काल संबंधी सव्व = सर्व, कालियाए = काल संबंधी सव्व-मिच्छो-वयाराए = सर्व प्रकार के मिथ्या उपचारों से सव्व = सर्व प्रकार के, मिच्छ = मिथ्या, उवयाराए = उपचारों से सव्व-धम्मा-इक्कमणाए = सर्व प्रकार के धर्म [करने योग्य प्रवृत्तियों] के अतिक्रमण से धम्म = धर्म के, अइक्कमणाए = अतिक्रमण से आसायणाए = हुए आशातना द्वारा जो मे अइयारो कओ = मुझसे जो अतिचार हुआ हो जो = जो, मे = मुझसे, अइयारो = अतिचार, कओ = हुआ हो तस्स = उनका खमासमणो! = हे क्षमाश्रमण! पडिक्कमामि = मैं प्रतिक्रमण करता हूँ निंदामि = मैं निंदा करता हूँ गरिहामि = मैं गर्हा करता हूँ	greediness savva-kāliyaē = regarding all the periods / past, present and future savva = all, kāliyaē = regarding the periods savva-miccho-vayārāe = by all types of false practices savva = by all types, micchā = false, uvayārāe = practices savva-dhammā-ikkamaṇāe = by all types of violations of duties [activities worth performing] dhamma = of duties, aikkamaṇāe = by violations āsāyaṇāe = through irreverence committed jo me aiyāro kao = any violation committed by me jo = any, me = by me, aiyāro = violation, kao = committed tassa = of them khamāsamaṇo! = oh kṣamāśramaṇa! paḍikkamāmi = i perform the pratikramaṇa nindāmi = i censure garihāmi = i condemn
---	--

अप्पाणं वोसिरामि = [अशुभ प्रवृत्तियों वाली] आत्मा का मैं त्याग करता हूँ

अप्पाणं = आत्मा का, वोसिरामि = त्याग करता

गाथार्थ :-

हे क्षमाश्रमण! [अन्य व्यापार] त्याग कर शक्ति के अनुसार मैं वंदन करना चाहता हूँ. मुझे अवग्रह में प्रवेश करने के लिये आज्ञा प्रदान करो. अशुभ व्यापार को त्याग करके, आपके चरणों को मेरी काया [मेरे हाथ] द्वारा स्पर्श करने से हुए खेद के लिए आप क्षमा करें. आपका दिन अल्प ग्लानि और अधिक सुख पूर्वक व्यतीत हुआ है ? आपकी [संयम] यात्रा [ठीक चल रही है] ? आपका मन और इंद्रियाँ पीड़ा रहित है ? हे क्षमाश्रमण! दिन में हुए अपराधों की मैं क्षमा मांगता हूँ. आवश्यक क्रिया के लिये [मैं अवग्रह में से बाहर जाता हूँ]. दिन में क्षमाश्रमण के प्रति तैंतीस में से अन्य जो कोई भी आशातना कि हो [उसका] मैं प्रतिक्रमण करता हूँ. जो कोई मिथ्या भाव द्वारा, मन, वचन या काया के दुष्कृत्य द्वारा; क्रोध, मान, माया या लोभ से; सर्व काल में, सर्व प्रकार के मिथ्या उपचारों से या सर्व प्रकार के धर्म अतिक्रमण से हुए आशातना द्वारा मुझसे जो कोई अतिचार हुआ हो, हे क्षमाश्रमण! उनका मैं प्रतिक्रमण करता हूँ.

appāṇam vosirāmi = i renounce the soul [engaged in evil activities]

appāṇam = the soul, vosirāmi = i renounce

Stanzaic meaning :-

Oh kṣamāśramaṇa! I wish to obeisance according to the best of my ability giving up [all other activities]. Kindly allow me to enter the restricted area. You forgive for the discomfort caused by touching your feet with my body [hands], giving up all evil activities. Has your day passed with little affliction and more comfort? [Is] your journey [of self-control going on well]? Is your mind and sense organs without affliction? Oh kṣamāśramaṇa! I beg forgiveness for the mistakes committed during the day. [I go out of the avagraha] for necessary rites. Any of the other irreverence that might have done out of thirty three in the day towards kṣamāśramaṇa [for that] I perform pratikramaṇa. Any violation committed by me through irreverence committed by delusion, by evil thinking, by evil speaking, by evil deeds, by anger, by pride, by deceit, by greediness, regarding all the periods, by all types of false practices or by all types of violations of duties, oh kṣamāśramaṇa! I perform pratikramaṇa, I censure, I condemn of them and I

निंदा करता हूँ, गर्हा करता हूँ एवं [अशुभ प्रवृत्तियों वाली] आत्मा का त्याग करता हूँ. १.

विशेषार्थ :-

वंदन के बत्तीस दोष :-

१. अनादर से, २. अभिमान से, ३. द्वेष से, ४. भय से, ५. क्रोध से, ६. जल्दी से, ७. कूदकर, ८. अनिच्छा से, ९. आगे-पीछे हिलते हुए, १०. घूमते हुए, ११. दूसरों से वंदन कराने की इच्छा से, १२. मैत्री की इच्छा से, १३. होशियारी बताने के लिये, १४. स्वार्थ के लिये, १५. छुपकर, १६. ठपके से, १७. खुश करने के लिये, १८. निंदा करते हुए, १९. दूसरी बातें करते हुए, २०. लोक निंदा से बचने के लिये, २१. दूसरे के देखने पर, २२. अक्षर कम बोलते हुए, २३. वंदन सूत्र का अस्पष्ट उच्चार करके हुए, २४. वंदन सूत्र मन में बोलते हुए, २५. वंदन सूत्र जोर से बोलते हुए, २६. वंदन करने के बाद जोर से 'मत्थाएण वंदामि' कहते हुए, २७. हाथों को घुमाकर सबको एक साथ, २८. आवर्त के समय हाथ द्वारा मस्तक को ठीक से स्पर्श न करते हुए, २९. रजोहरण को ठीक से स्पर्श न करते हुए, ३०. दोनों हाथों को घुटनों के बहार रखकर,

renounce the soul [engaged in evil activities]. 1.

Specific meaning :-

Thirty two faults of vandanā :-

To obeisance 1. with discourtesy, 2. with pride, 3. with malice, 4. out of fear, 5. with anger, 6. in a hurry, 7. by jumping, 8. unwillingly, 9. by moving forward and backward, 10. moving here and there, 11. with the desire of getting obeisanced from others, 12. with the desire of friendly relations, 13. to display cleverness, 14. with selfishness, 15. by hiding himself, 16. scolding others, 17. to please, 18. speaking ill of others, 19. talking on other subjects, 20. to escape public criticism, 21. if observed by others, 22. uttering less words, 23. without pronouncing the **vandanā sūtra** clearly, 24. humming **vandanā sūtra**, 25. uttering the **vandanā sūtra** too loudly, 26. by uttering '**matthaṇa vandaṃi**' loudly after obeisancing, 27. all simultaneously by rotating folded hands in all directions, 28. without touching the head properly by hands while performing the **āvarṭa**, 29. without touching the **rajoḥaraṇa** properly, 30. by keeping two hands outside the knees, 31. at

३१. अयोग्य समय पर और ३२. तीर्थंकर की आज्ञा को कर मानकर वंदन करना.

गुरु के प्रति तैंतीस आशातनाएं :-

१. अकारण गुरु के आगे चलना,
२. अकारण गुरु के साथ साथ चलना,
३. अकारण गुरु के पीछे नजदीक चलना,
४. अकारण गुरु के आगे खड़ा रहना,
५. अकारण गुरु के साथ साथ खड़ा रहना,
६. अकारण गुरु के पीछे नजदीक खड़ा रहना,
७. अकारण गुरु के आगे बैठना,
८. अकारण गुरु के साथ साथ बैठना,
९. अकारण गुरु के पीछे नजदीक बैठना,
१०. स्थंडिल भूमि साथ में जाने के बाद गुरु से पहले लौटना,
११. बाहर से एक साथ आने के बाद गुरु से पहले इरियावहियं करना,
१२. गोचरी [आहार] लाते समय लगे दोषों की आलोचना दूसरे के पास करके फिर गुरु के पास करना,

improper time, and 32. thinking the order of tīrthaṅkara as a tax/ burden.

Thirty three irreverence towards the guru :-

1. To walk in front of the **guru** without any reason,
2. To walk by the side of the **guru** without any reason,
3. To walk behind the **guru** keeping too nearer without any reason,
4. To stand in front of the **guru** without any reason,
5. To stand by the side of the **guru** without any reason,
6. To stand too nearer behind the **guru** without any reason,
7. To sit in front of the **guru** without any reason,
8. To sit by the side of the **guru** without any reason,
9. To sit too nearer behind the **guru** without any reason,
10. To return back before the **guru** on going together to **sthandila bhūmi** [place of excretion],
11. To perform **iriyāvahiyaṃ** prior to the **guru** on coming together from outside,
12. To criticize the faults committed while bringing the **gocari** [food] before others prior to that before **guru**,

१३. गोचरी दूसरे को दिखाकर फिर गुरु को दिखाना,
 १४. गोचरी करने के लिये दूसरों को निमंत्रण देकर फिर गुरु को निमंत्रण देना,
 १५. गुरु आज्ञा के बिना दूसरों को गोचरी देना,
 १६. साधारण गोचरी गुरु को देकर स्वयं अच्छी गोचरी लेना,
 १७. दिन में गुरु द्वारा पूछने या बुलाने पर जवाब न देना,
 १८. रात में गुरु द्वारा जगाने पर, बुलाने पर या कुछ पूछने पर जवाब न देना,
 १९. गुरु द्वारा बुलाने पर या कुछ पूछने पर आसन पर बैठे बैठे ही या संस्थारे में सोते सोते ही जवाब देना,
 २०. गुरु द्वारा बुलाने पर अविनय से जवाब देना,
 २१. गुरु को अबहुमान पूर्वक बुलाना,
 २२. गुरु का बताया हुआ काम न करना,
 २३. ऊंचे और कर्कश स्वर में गुरु को वंदन करना,
 २४. कोई आने पर गुरु द्वारा बातचीत करने से पहले स्वयं ही बातचीत कर लेना,
 २५. गुरु द्वारा बात करते समय या उपदेश देते समय हँसियारी बताने

13. To show **gocarī** to the **guru** after showing to others,
 14. To invite the **guru** after inviting others to take **gocarī**,
 15. To give **gocarī** to others without permission of the **guru**,
 16. To take best [items of] **gocarī** for himself giving ordinary [items of] **gocarī** to the **guru**,
 17. Not to reply when asked something or called by the **guru** during day time,
 18. Not to reply when awakened, asked something or called by the **guru** during night,
 19. To reply keeping seated on **āsana** [seat] or lying down on **santhārā** [woollen mat] itself on being called or asked something by the **guru**,
 20. To reply immodestly on being called by the **guru**,
 21. To address the **guru** without proper respect,
 22. Not to do the work shown by the **guru**,
 23. To perform obeisance to the **guru** in a loud and harsh tone,
 24. To talk himself, first prior to talking by the **guru** on arrival of somebody,
 25. To speak in middle to show cleverness while conversation or delivery of

के लिये बीच में बोलना,

२६. गुरु द्वारा धर्मकथा आदि कहते रहने पर बीच में बोलकर भंग करना,

२७. गुरु के बात करते समय उनकी बातों को तोड़ना,

२८. गुरु को उपदेश देना,

२९. गुरु के वचनों की प्रशंसा न करना,

३०. स्वयं विशेष रूप से धर्म कथादि कहना,

३१. गुरु के सामने ऊँचे या समान आसन पर बैठना,

३२. गुरु के आसन को पाँव लगाना या भूल से लगने पर क्षमा न माँगना,

३३. गुरु के आसन या संधारे पर बैठना.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र से सद्गुरुओं को दो बार वंदन करके, उनके प्रति लगे दोषों के लिये क्षमा माँगी जाती है. [दूसरी बार वंदन करते समय आवस्सियाए पद नहीं बोलना चाहिये.]

discourses by the **guru**,

26. To interrupt by speaking in middle while religious stories etc. is being told by the **guru**,

27. To interrupt talks while the **guru** is talking,

28. To preach to the **guru**,

29. Not to praise words of the **guru**,

30. To tell religious stories etc. specifically by himself,

31. To sit on higher or equivalent **āsana** before the **guru**,

32. To touch the **āsana** of **guru** with leg or not to beg pardon on touching with leg my mistake,

33. To sit on the **āsana** or **santhārā** of the **guru**.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra**, saluting the worthy preceptors twice, pardon is being asked for the faults committed against him. [While saluting for the second time, the phrase **āvassiyāe** should not be uttered.]

३०. देवसिअं आलोउं? सूत्र

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! देवसिअं आलोउं?
 इच्छं, आलोएमि. जो मे देवसिओ अइयारो कओ,
 काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो,
 अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ,
 अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो,
 नाणे, दंसणे, चरित्ता-चरित्ते, सुए, सामाइए,
 तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं,
 पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुण-व्वयाणं,
 चउण्हं सिक्खा-वयाणं, बारस-विहस्स सावग-धम्मस्स,
 जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं. ...१.

शब्दार्थ :-

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! = हे भगवान्! स्वेच्छा से आज्ञा
 प्रदान कीजिए

30. devasiam ālou? sūtra

icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! devasiam ālou?
 iccham, āloemi. jo me devasio aiyāro kao,
 kāio, vāio, māṇasio, ussutto, ummaggo,
 akappo, akaraṇijjo, dujjhāo, duvvicintio,
 aṇāyāro, aṇicchivvo, asāvaga-pāuggo,
 nāṇe, dansaṇe, carittā-caritte, sue, sāmāie,
 tiṇham guttiṇam, cauṇham kasāyāṇam,
 pañcaṇha-maṇuvvayaṇam, tiṇham guṇa-vvayaṇam,
 cauṇham sikkhā-vayaṇam, bārasa-vihassa sāvaga-dhammassa,
 jam khaṇḍiam jam virāhiam, tassa micchā mi dukkaḍam.1.

Literal meaning :-

icchākāreṇa sandisaha bhagavan! = Oh bhagavān! voluntarily give me the
 permission

इच्छाकारेण = स्वेच्छा से, संदिसह = आज्ञा प्रदान कीजिए,
भगवन् = हे भगवान्

देवसिअं आलोउं? = दिवस संबंधी [दिवस में किये अपराधों की]
आलोचना करूं?

देवसिअं = दिवस संबंधी, आलोउं = अलोचना करूं

इच्छं = मैं आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ

आलोएमि = मैं आलोचना करता हूँ

जो मे देवसिओ अइयारो कओ = मेरे द्वारा दिवस में जो अतिचार
हुआ हो

काइओ वाइओ माणसिओ = काया द्वारा, वाणी द्वारा, मन द्वारा

उस्सुत्तो = उत्सूत्र [सूत्र के विरुद्ध] कहने से

उम्मगो = उन्मार्ग में [मार्ग के विरुद्ध] चलने से

अकप्पो = अकल्पनीय [आचार के विरुद्ध] वर्तन करने से

अकरणिज्जो = अकरणीय [अयोग्य] कार्य करने से

दुज्झाओ = दुष्ट ध्यान [आर्त या रौद्र ध्यान] करने से

दुव्विचिंतिओ = दुष्ट चिंतन करने से

अणायारो = अनाचार [न आचरने योग्य आचरण] करने से

अणिच्छिअव्वो = अनिच्छित [मन से न चाहने योग्य] वर्तन करने से

icchākāreṇa = voluntarily, sandisaha = give me the permission,

bhagavan = Oh bhagavān!

devasiam ālou? = shall i censure [the faults] of the day? [committed during
the day]

devasiam = of the day, ālou = shall i censure

iccham = i am obeying your order

āloemi = i am censuring

jo me devasio aiyāro kao = the violations which are committed by me during
the day

kāio vāio māṇasio = by deeds, by words, by thoughts

ussutto = by speaking against the sūtras

ummaggo = by acting in wrong way

akappo = by acting against the prescribed code of conduct

akaraṇijjo = by doing undesirable activities

dujjhāo = by evil concentration [āṛta or raudra dhyāna]

duvvicintio = by ill-thinking

aṇāyāro = by doing improper behaviour

aṇicchavvo = by doing acts undesirable [by the heart]

असावग-पाउग्गो = श्रावक के योग्य व्यवहार से विरुद्ध आचरण करने से

नाणे दंसणे = ज्ञान संबंधी, दर्शन संबंधी

चरित्ताचरित्ते = देश-विरति चारित्र संबंधी

सुए सामाइए = श्रुत ज्ञान संबंधी, सामायिक संबंधी

तिण्हं गुत्तीणं = तीन गुप्तियों संबंधी

चउण्हं कसायाणं = चार कषाय संबंधी

पंचण्ह-भणु-व्वयाणं = पांच अणु व्रत में

तिण्हं गुण-व्वयाणं = तीन गुण व्रत में

चउण्हं सिक्खा-व्वयाणं = चार शिक्षा व्रत में

बारस-विहस्स सावग-धम्मस्स = बारह प्रकार के [व्रत रूपी] श्रावक धर्म में

जं खंडिअं जं विराहिअं = जो खंडना हुई हो, जो विराधना हुई हो

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं = मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों

[देखें सूत्र नं. २७]

asāvaga-pāuggo = by acting against the code of conduct fit for a śrāvaka

nāṇe daṇsaṇe = regarding jñāna, regarding darśana

caritācaritte = about deśa-virati cāritra

sue sāmāie = about śruta jñāna, about sāmāyika

tiṇhaṃ guttiṇaṃ = about three guptis

cauṇhaṃ kaṣāyāṇaṃ = about four kaṣāyas

pañcaṇha-maṇu-vvayāṇaṃ = in five small [partially observed] vows

tiṇhaṃ guṇa-vvayāṇaṃ = in three characteristic vows

cauṇhaṃ sikkhā-vayāṇaṃ = in four moral [educational] vows

bārasa-vihassa sāvaga-dhammassa = in twelve types [of vows] of śrāvaka's dharma [code of conduct]

jaṃ khaṇḍiā jaṃ virāhiā = violations which are committed, faults which are committed.

tassa micchā mi dukkaḍaṃ = those misdeeds of mine may become fruitless [Refer sūtra no. 27]

गाथार्थ :-

हे **भगवान्!** स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान करो. दिवस संबंधी [दिवस में किये अपराधों की] आलोचना करुं? आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूं. मैं अलोचना करता हूं. काया द्वारा, वाणी द्वारा, मन द्वारा, **उत्सूत्र** कहने से, उन्मार्ग में चलने से, अकल्पनीय वर्तन करने से, अकरणीय कार्य करने से, दुष्ट ध्यान करने से, दुष्ट चिंतन करने से, अनाचार करने से, अनिच्छित वर्तन करने से, **श्रावक** के योग्य व्यवहार से विरुद्ध आचरण करने से, **ज्ञान** संबंधी, **दर्शन** संबंधी, **देश-विरति चारित्र** संबंधी, **श्रुत ज्ञान** संबंधी, **सामायिक** संबंधी, तीन **गुप्तियों** संबंधी, चार **कषाय** संबंधी और पांच अणु व्रत में, तीन गुण व्रत में, चार शिक्षा व्रत में— बारह प्रकार के **श्रावक** धर्म में खंडना हुई हो, जो विराधना हुई हो, मेरे द्वारा दिवस में जो अतिचार हुए हों, मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र द्वारा **श्रावक** के आचार तथा बारह व्रतों में लगे अतिचारों का संक्षेप में वर्णन कर आलोचना की जाती है.

Stanzaic meaning :-

Oh **bhagavān!** voluntarily give me the permission. Shall i censure [the faults] of the day? [committed during the day]. I am obeying your order. I am censuring. The violations which are committed by me during the day by deeds, by words, by thoughts, by speaking against the **sūtras**, by acting in wrong way, by acting against the prescribed code of conduct, by doing undesirable activities, by evil concentration, by ill-thinking, by doing improper behaviour, by doing acts undesirable, by acting against the code on conduct fit for a **śrāvaka**, regarding **jñāna**, regarding **darśana**, about **deśa-virati cāritra**, about **śruta jñāna**, about **sāmāyika**, about three **guptis**, about four **kaṣāyas** and in five small vows, in three characteristic vows, in four moral vows-- in twelve types of **śrāvakas** code of conduct, violations which are committed, faults which are committed, those misdeeds of mine may become fruitless.

Introduction of the sūtra :-

Describing in brief the violations attached to the conducts and twelve vows of the **śrāvaka**, criticism is being done By this **sūtra**.

३१. सात लाख

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पति-काय, चौदह लाख साधारण वनस्पति-काय, दो लाख द्वीन्द्रिय, दो लाख त्रीन्द्रिय, दो लाख चउरिन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यच पंचेन्द्रिय, चौदह लाख मनुष्य- इस तरह चौरासी लाख जीव-योनि में से मेरे जीव ने जो कोई जीव-हिंसा की हो, करायी हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, उन सब का मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं.१.

शब्दार्थ :-

सात लाख = सात लाख

सात = सात, लाख = लाख

31. sāta lākha

sāta lākha pṛthvīkāya, sāta lākha apkāya, sāta lākha teukāya, sāta lākha vāukāya, dasa lākha pratyeka vanaspati-kāya, caudaha lākha sādharmaṇa vanaspati-kāya, do lākha dvīndriya, do lākha trīndriya, do lākha caurīndriya, cāra lākha devatā, cāra lākha nārakī, cāra lākha tiryāṇca pañcendriya, caudaha lākha manuṣya- isa taraha caurāsī lākha jīva-yoni me se mere jīva ne jo koī jīva-hinsā kī ho, karāyī ho, karate hue kā anumodana kiya ho, una saba kā mana-vacana-kāyā se micchā mi dukkaḍam.1.

Literal meaning :-

sāta lākha = seven lac

sāta = seven, lākha = lac

पृथ्वीकाय = पृथ्वी रूप शरीर वाले एक इंद्रिय के जीव
 अप्काय = जल रूप शरीर वाले एक इंद्रिय के जीव
 तेउकाय = अग्नि रूप शरीर वाले एक इंद्रिय के जीव
 वाउकाय = वायु रूप शरीर वाले एक इंद्रिय के जीव
 दस लाख = दस लाख

दस = दस

प्रत्येक वनस्पति-काय = स्वतंत्र शरीर से युक्त वनस्पति रूप एक
 इंद्रिय के जीव
 प्रत्येक = स्वतंत्र शरीर से युक्त, वनस्पति-काय = वनस्पति
 रूप जीव

चौदह लाख = चौदह लाख

चौदह = चौदह

साधारण-वनस्पति-काय = अनंत जीवों के बीच एक शरीर से युक्त
 वनस्पति रूप एक इंद्रिय के जीव
 साधारण = अनंत जीवों के बीच एक शरीर से युक्त,
 दो लाख = दो लाख
 दो = दो

pr̥thvikāya = living beings of one sense organ with earth as its body
 apkāya = living beings of one sense organ with water with as its body
 teukāya = living beings of one sense organ with fire as its body
 vāukāya = living beings of one sense organ with air as its body
 dasa lākha = ten lac

dasa = ten

pratyeka vanaspati-kāya = living beings of one of sense organ with
 independent body in the form of vegetation
 pratyeka = with independent body, vanaspati-kāya = living being in the
 form of vegetation

caudaha lākha = fourteen lac

caudaha = fourteen

sādhāraṇa-vanaspati-kāya = living beings of one sense organ with single
 body for infinite number of living beings in the form of vegetation
 sādharāṇa = single body for infinite number of living beings
 do lākha = two lac
 do = two

द्वीन्द्रिय = दो इंद्रिय वाले जीव

द्वि = दो, इंद्रिय = इंद्रिय वाले जीव

त्रीन्द्रिय = तीन इंद्रिय वाले जीव

त्रि = तीन

चतुरिन्द्रिय = चार इंद्रिय वाले जीव

चतुर = चार

चार लाख = चार लाख

चार = चार

देवता = [पाँच इंद्रिय वाले] देव लोक के जीव

नारकी = [पाँच इंद्रिय वाले] नारक के जीव

तिर्यच पंचेन्द्रिय = [देव, मनुष्य और नारक सिवाय के] पाँच इंद्रिय वाले पशु-पक्षी आदि जीव

तिर्यच = पशु-पक्षी आदि जीव, पंच = पांच

मनुष्य = मनुष्य

इस तरह चौरासी लाख जीव-योनि में से = इस तरह चौरासी लाख जीव-योनि में से

dvīndriya = living beings with two sense organ

dvi = two, indriya = living being with sense organ

trīndriya = living beings with three sense organs

tri = three

caurindriya = living beings with four sense organs

caura = four

cāra lākha = four lac

cāra = four

devatā = heavenly beings [with five sense organs] / gods

nārakī = living beings of the hell [with five sense organs]

tiryañca pañcendriya = non-human beings [living beings like animals, birds] with five sense organs [other than gods, human beings and naraka]

tiryañca = non-human beings, pañca = five

manuṣya = human beings

isa taraha caurāsī lākha jīva-yoni me se = in this way, out of eighty four lac form of living beings

isa = in this, taraha = way, caurāsī = eighty four, jīva = living beings, yoni

मेरे जीव ने जो कोई जीव-हिंसा की हो = मेरे जीव ने जो कोई जीव-हिंसा की हो

करायी हो = करायी हो

करते हुए का अनुमोदन किया हो = करते हुए का अनुमोदन किया हो

उन सब का = उन सब का / वे सभी

मन वचन-काया से = मन-वचन-काया से

मिच्छा = मिथ्या हों

मि दुक्कडं = मेरे दुष्कृत्य

= forms of, **me** = out, **se** = of
mere jīva ne jo koī jīva-hinsā kī ho = myself have committed any injury

mere = my, **jīva ne** = self, **jo koī** = any, **jīva-hinsā** = injury, **kī** = committed, **ho** = have

karāyī ho = have caused others to commit

karāyī = caused others to commit

karate hue kā anumodana kiyā ho = have appreciated on being committed by others

karate hue kā = on being committed by others, **anumodana kiyā** = appreciated

una saba kā = of all those

una = those, **saba** = all, **kā** = of

mana-vacana-kāyā se = by thought, speech and action

mana = thought, **vacana** = speech, **kāyā** = action, **se** = by

micchā = may become fruitless

mi dukkaḍam = misdeeds of mine

मि = मेरे, दुक्कडं = दुष्कृत्य

गाथार्थ :-

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पति-काय, चौदह लाख साधारण वनस्पति-काय, दो लाख द्वीन्द्रिय, दो लाख त्रीन्द्रिय, दो लाख चउरिन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यच पंचेन्द्रिय, चौदह लाख मनुष्य- इस तरह चौरासी लाख जीव-योनि में से मेरे जीव ने जो कोई जीव-हिंसा की हो, करायी हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, वे सभी मेरे दुष्कृत्य मन-वचन-काया से मिथ्या हों. १.

विशेषार्थ :-

योनि = जीव को पुनः उत्पन्न करने की शक्ति से संपन्न जीवों के उत्पन्न

mi = of mine, dukkadam = misdeeds

Stanzaic meaning :-

seven lac forms of living beings with earth as its body, seven lac forms of living beings with water as its body, seven lac forms of living beings with fire as its body, seven lac forms of living beings with air as its body, ten lac forms of living beings with independent body in the form of vegetation, fourteen lac forms of living beings with single body for infinite living beings in the form of vegetation, two lac forms of living beings with two sense organs, two lac forms of living beings with three sense organs, two lac forms of living beings with four sense organs, four lac forms of heavenly beings, four lac forms of living beings of the hell, four lac forms of non-human beings with five sense organs, fourteen lac forms of human beings-- in this way, out of eighty four lac forms of living beings, myself have committed any injury to any living beings, have caused others to commit it, has appreciated on being committed by others, all those misdeeds of mine may become fruitless by thought, words and actions. 1.

Specific meaning :-

yonī = The place where living beings, having the power of giving birth to the living

होने का स्थान.

चौरासी लाख योनि :- वर्ण, गंध, रस, स्पर्श और संस्थान [आकार] में समानता वाली प्रत्येक योनि को एक गिनने से चौरासी लाख प्रकार की योनियाँ होती हैं.

पृथ्वीकाय के जीवों की सात लाख योनियाँ :- तीन सौ पचास पृथ्वीकाय जीवों के मूल भेद X पाँच प्रकार के वर्ण X दो प्रकार की गंध X पाँच प्रकार के रस X आठ प्रकार के स्पर्श X पाँच प्रकार के संस्थान = सात लाख

विविध प्रकार के जीवों के मूल भेद :- पृथ्वीकाय के तीन सौ पचास, अप्काय के तीन सौ पचास, तेउकाय के तीन सौ पचास, वाउकाय के तीन सौ पचास, प्रत्येक वनस्पतिकाय के पाँच सौ, साधारण वनस्पतिकाय के सात सौ, द्वीन्द्रिय के एक सौ, त्रीन्द्रिय के एक सौ, चउरिन्द्रिय के एक सौ, देवता के दो सौ, नारकी के दो सौ, तिर्यच पंचेन्द्रिय के दो सौ, और मनुष्य के सात सौ मूल भेद हैं.

पाँच प्रकार के वर्ण- श्वेत, लाल, पीला, हरा और काला.

दो प्रकार की गंध- सुगंध और दुर्गंध.

beings again, take birth.

Eighty four lac forms of yonis :- There are eighty four lac forms of yonis [a place where living beings takes birth] considering each yoni of similar colour, smell, taste, touch and constitution [shape] as one.

Seven lac yonis of living beings with earth as its body :- Three hundred and fifty basic divisions of living beings with earth as its body x five types of colour x two types of smell x five types of taste x eight types of touch x five types of constitution = seven lac.

Basic divisions of various types of living beings :- prthvikāya have three hundred and fifty, apkāya have three hundred and fifty, teukāya have three hundred and fifty, vāukāya have three hundred and fifty, pratyeka vanaspatikāya have five hundred, sādharāṇa vanaspatikāya have seven hundred dvīndriya have one hundred, trīndriya have one hundred, caurīndriya have one hundred, devatā have two hundred, nārakī have two hundred, tiryāṇca pañcendriya have two hundred and manuṣya have seven hundred basic divisions.

Five types of colours- white, red, yellow, green and black.

Two types of smell- pleasant smell and unpleasant smell.

पाँच प्रकार के रस- तीखा, कड़वा, कषाय, खट्टा और मधुर.

[क्षार / खारे रस का समावेश मधुर रस में हो जाता है.]

आठ प्रकार के स्पर्श- कोमल, कठोर, शीत, ऊष्ण, हलका, भारी, चिकना और रूक्ष.

पाँच प्रकार के संस्थान- गोल, लंबगोल, चौरस, लंबचौरस और त्रिकोण.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र से चौरासी लाख जीव-योनि से उत्पन्न होनेवाले जीवों की जो विराधना [हिंसा] हुई हो, उसके लिये **मिच्छा मि दुक्कडं** देने में आया है.

Five types of taste- acrid, bitter, astringent, sour [acidic] and sweet.

[Taste of alkalinity / saline is included in sweet taste.]

Eight types of touch- soft, hard, cold, hot, lightness, weighty, greasy and dry.

Five types of constitution- Round, oval, square, rectangular and triangular.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra, micchā mi dukkaḍam** [pardon for evil deeds] is given for the violence or hurt that has been caused to the living beings originated from eighty four lac forms of life.

३२. अठारह पापस्थान

पहला प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्ता-दान,
चौथा मैथुन, पांचवां परिग्रह, छठा क्रोध,
सातवां मान, आठवां माया, नौवां लोभ, दसवां राग,
ग्यारहवां द्वेष, बारहवां कलह, तेरहवां
अभ्याख्यान, चौदहवां पैशुन्य, पन्द्रहवां रति-अरति,
सोलहवां पर-परिवाद, सत्रहवां माया-मृषा-वाद,
अठारहवां मिथ्यात्व-शल्य- इन अठारह पाप-स्थानों
में से मेरे जीव ने जिस किसी पाप का सेवन किया हो,
कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो,
उन सब का मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं...१.

शब्दार्थ :-

पहला प्रणातिपात = पहला जीव-हिसा [प्राणी को हानि, पीड़ा
पहुँचाना या नष्ट करना]

32. aṭhāraha pāpasthāna

pahalā prāṇātipāta, dūsarā mṛṣāvāda, tīsarā adattā-dāna,
cauthā maithuna, pāñcavāṁ parigraha, chaṭhā krodha,
sātavāṁ māna, āṭhavāṁ māyā, nauvāṁ lobha, dasavāṁ rāga,
gyārahavāṁ dveṣa, bārahavāṁ kalaha, terahavāṁ
abhyākhyāna, caudahavāṁ paiśunya, pandrahavāṁ rati-arati,
solahavāṁ para-parivāda, satrahavāṁ māyā-mṛṣā-vāda,
aṭhārahavāṁ miṭhyāṭva-śalya- ina aṭhāraha pāpa-sthānoṁ
meṁ se mere jīva ne jisa kisi pāpa kā sevana kiyā ho,
karāyā ho, karate hue kā anumodana kiyā ho,
una saba kā mana-vacana-kāyā se micchā mi dukkaḍam.1.

Literal meaning :-

pahalā prāṇātipāta = first violence to life [to harm, trouble or destroy the
living being]

पहला = पहला, प्रणातिपात = जीव-हिंसा
 दूसरा मृषावाद = दूसरा झूठ [असत्य, अप्रिय, अपथ्य, लाभहीन
 और अवास्तविक वचन बोलना]
 दूसरा = दूसरा, मृषावाद = झूठ
 तीसरा अदत्ता-दान = तीसरा चोरी [मालिक द्वारा स्वेच्छा से न दी
 हुई वस्तु को ग्रहण करना]
 तीसरा = तीसरा, अदत्ता-दान = चोरी
 चौथा मैथुन = चौथा काम क्रीड़ा [नर और मादा का परस्पर
 जातीय संबंध]
 चौथा = चौथा, मैथुन = काम क्रीड़ा
 पाँचवाँ परिग्रह = पाँचवाँ संग्रह [मालिकी भाव या मूर्च्छा से वस्तुओं
 का संग्रह करना]
 पाँचवा = पाँचवाँ, परिग्रह = संग्रह
 छठा क्रोध = छठा क्रोध
 छठा = छठा, क्रोध = क्रोध
 सातवाँ मान = सातवाँ मान
 सातवाँ = सातवाँ, मान = मान
 आठवाँ माया = आठवाँ माया

pahalā = first, prañātipāta = violence to life
 dūsarā mṛṣāvāda = second falsehood [to tell untrue, unpleasant,
 unwholesome, unadvantageous and unreal words]
 dūsarā = second, mṛṣāvāda = falsehood
 tīsarā adattā-dāna = third stealing [to take a thing not given by its owner
 voluntarily]
 tīsarā = third, adattā-dāna = stealing
 cauthā maithuna = fourth sexual activities [sexual relations between male
 and female]
 cauthā = fourth, maithuna = sexual activities
 pāñcavāḥ parigraha = fifth possessiveness [to hoard things with the feeling
 of ownership or attachment towards it]
 pāñcavāḥ = fifth, parigraha = possessiveness
 chaṭhā krodha = sixth anger
 chaṭhā = sixth, krodha = anger
 sātavāḥ māna = seventh undue pride
 sātavāḥ = seventh, māna = undue pride
 āṭhavāḥ māyā = eight deceit

आठवां = आठवां, माया = माया
 नौवां लोभ = नौवां लोभ
 नौवां = नौवां, लोभ = लोभ
 दसवां राग = दसवां राग
 दसवां = दसवां, राग = राग
 ग्यारहवां द्वेष = ग्यारहवां द्वेष
 ग्यारहवां = ग्यारहवां, द्वेष = द्वेष
 बारहवां कलह = बारहवां कलह
 बारहवां = बारहवां, कलह = कलह
 तेरहवां अभ्याख्यान = तेरहवां दोषारोपण
 तेरहवां = तेरहवां, अभ्याख्यान = दोषारोपण
 चौदहवां पैशुन्य = चौदहवां चुगली
 चौदहवां = चौदहवां, पैशुन्य = चुगली
 पन्द्रहवां रति-अरति = पंद्रहवां हर्ष और उद्वेग
 पन्द्रहवां = पंद्रहवां, रति = हर्ष, अरति = उद्वेग
 सोलहवां पर-परिवाद = सोलहवां पर-निंदा
 सोलहवां = सोलहवां, पर = पर, परिवाद = निंदा

āṭhavā = eight, māyā = deceit
 nauvā lobha = ninth greed
 nauvā = ninth, lobha = greed
 dasavā rāga = tenth attachment
 dasavā = tenth, rāga = attachment
 gyārahavā dveṣa = eleventh malice
 gyārahavā = eleventh, dveṣa = malice
 bārahavā kalaha = twelfth quarrel
 bārahavā = twelfth, kalaha = quarrel
 terahavā abhyākhyāna = thirteenth false accusation
 terahavā = thirteenth, abhyākhyāna = false accusation
 caudahavā paiśunya = fourteenth back-biting [speaking ill of others behind their back]
 caudahavā = fourteenth, paiśunya = back-biting
 pandrahavā rati-arati = fifteenth joy and sorrow
 pandrahavā = fifteenth, rati = joy, arati = sorrow
 solahavā para-parivāda = sixteenth condemnation [speaking ill of others]
 solahavā = sixteenth, para-parivāda = condemnation

सत्रहवाँ माया-मृषा-वाद = सत्रहवाँ कपट से युक्त झूठ

सत्रहवाँ = सत्रहवाँ, माया = कपट से युक्त

अठारहवाँ मिथ्यात्व-शल्य = अठारहवाँ मिथ्यात्व का दोष

अठारहवाँ = अठारहवाँ, मिथ्यात्व = मिथ्यात्व का, शल्य = दोष

इन अठारह पाप-स्थानों में से = इन अठारह पाप-स्थानों में से

मेरे जीव ने जिस किसी पाप का सेवन किया हो = मेरे जीव ने जिस किसी पाप का सेवन किया हो

कराया हो = कराया हो

करते हुए का अनुमोदन किया हो = करते हुए का अनुमोदन किया हो

satrahavāṁ māyā-mṛṣā-vāda = seventeenth fraudulent lie

satrahavāṁ = seventeenth, māyā = fraudulent, mṛṣāvāda = lie

aṭhārahavāṁ mithyātva-śalya = eighteenth defect of false belief

aṭhārahavāṁ = eighteenth, mithyātva = of false belief, śalya = defect

ina aṭhāraha pāpa-sthāno me se = from these eighteen places of sins

ina = these, aṭhāraha = eighteen, pāpa = sins, sthāno = places of, me se = from

mere jīva ne jisa kisi pāpa kā sevana kiya ho = myself have committed any of the sins

mere = my, jīva ne = self, jisa kisi = any, pāpa = the sins, kā = of, sevana kiya = committed, ho = have

karāyā ho = have caused others to commit

karāyā = caused to commit

karate hue kā anumodana kiya ho = have appreciated on being committed by others

karate = committed, hue = being, kā = on, anumodana kiya = appreciated

उन सब का = उन सब का / वे सभी

मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं = मन-वचन-काया से मेरे

दुष्कृत्य मिथ्या इच्छाक्रूरक्रूरजहों

मन-वचन-काया से = मन-वचन-काया से, मिच्छा = मिथ्या हो,

मि = मेरे, दुक्कडं = दुष्कृत्य

गाथार्थ :-

पहला प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्ता-दान, चौथा मैथुन, पांचवां परिग्रह, छठा क्रोध, सातवां मान, आठवां माया, नौवां लोभ, दसवां राग, ग्यारहवां द्वेष, बारहवां कलह, तेरहवां अभ्याख्यान, चौदहवां पैशुन्य, पन्द्रहवां रति-अरति, सोलहवां पर-परिवाद, सत्रहवां माया-मृषा-वाद, अठारहवां मिथ्यात्व-शल्य-इन अठारह पाप-स्थानों में से मेरे जीव ने जिस किसी पाप का सेवन किया हो, कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, उन सब का मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं. १.

una saba kā = of all those

una = those, saba kā = of all

mana-vacana-kāyā se micchā mi dukkaḍam = misdeeds of mine may become fruitless by thought, speech and action

mana = thought, vacana = speech, kāyā = action, se = by, micchā = may become fruitless, mi = of mine, dukkaḍam = misdeeds

Stanzaic meaning :-

First violence, second falsehood, third stealing, fourth sexual activities, fifth possession, sixth anger, seventh undue pride, eighth deceit, ninth greed, tenth attachment, eleventh malice, twelfth quarrel, thirteenth false accusation, fourteenth back-biting, fifteenth joy and sorrow, sixteenth condemnation, seventeenth fraudulent lies and eighteenth defect of false belief [delusions] -- out of these eighteen places of sins, myself have committed any of the sins, have caused others to commit, have appreciated on being committed by others, all those misdeeds of mine may become fruitless by thought, words and actions. 1.

विशेषार्थ :-

मिथ्यात्व = सम्यक्त्व से विपरीत / पदार्थ के यथार्थ स्वरूप पर श्रद्धा न करना एवं कुदेव, कुगुरु और कुधर्म में श्रद्धा रखना.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र से अठारह प्रकार से किए जानेवाले पापों के लिए क्षमा मांगी गयी है.

Specific meaning :-

mithyātva [false belief] = opposite of samyaktva [right belief] / not to have faith in real form of the substances and to have faith in kudeva, kuguru and kudharma.

Introduction of the sūtra :-

By this sūtra, forgiveness is being asked for the sins being committed in eighteen forms.

३३. सव्वस्स वि सूत्र

सव्वस्स वि देवसिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ,
इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! इच्छं,
तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.१.

शब्दार्थ :-

सव्वस्स वि = सभी

देवसिअ = दैवसिक

दुच्चिंतिअ = दुष्ट [आर्त ध्यान और रौद्र ध्यान से होने वाले] चिंतन
संबंधी

दुब्भासिअ = दुष्ट [सावद्य] भाषण संबंधी

दुच्चिट्ठिअ = दुष्ट चेष्टा [निषिद्ध क्रिया] संबंधी

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! = हे भगवान्! स्वेच्छा से आज्ञा
प्रदान कीजिए

इच्छाकारेण = स्वेच्छा से, संदिसह = आज्ञा प्रदान कीजिए,
भगवन्! = हे भगवान्!

33. savvassa vi sūtra

savvassa vi devasia duccintia, dubbhāsia, ducchiṭṭhia,
icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! iccham,
tassa micchā mi dukkaḍam.1.

Literal meaning :-

savvassa vi = all

devasia = of the day

duccintia = concerning evil thoughts [occurring due to āṛta dhyāna and
raudra dhyāna]

dubbhāsia = concerning evil talking / words

ducchiṭṭhia = concerning evil deeds [forbidden misdeeds]

icchākāreṇa sandisaha bhagavan! = oh bhagavān! kindly give me the
permission voluntarily

icchākāreṇa = voluntarily, sandisaha = give me the permission,
bhagavan! = Oh bhagavān!

इच्छं = मैं आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं = मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों

तस्स = वे, मिच्छा = मिथ्या हों, मि = मेरे, दुक्कडं =
दुष्कृत्य

गाथार्थ :-

दुष्ट चिंतन, दुष्ट भाषण और दुष्ट प्रवृत्ति संबंधी दिन में लगे सर्व
[अतिचारों का प्रतिक्रमण करने के लिये] हे भगवान! स्वेच्छा से आज्ञा
प्रदान करो. मैं आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ. मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या
हों. १.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र से पापों को संक्षेप में कहकर प्रतिक्रमण किया जाता है.

iccham = i obey accept your orders

tassa micchā mi dukkaḍam = those misdeeds of mine may become fruitless

tassa = those, micchā = may become fruitless, mi = of mine, dukkaḍam
= misdeeds

Stanzaic meaning :-

Oh bhagavāna! kindly give me the permission voluntarily [to perform the
pratikramaṇa of all the faults] committed during the day by evil thoughts, evil talks
and evil deeds. I accept your orders. Those misdeeds of mine may become
fruitless. 1.

Introduction of the sūtra :-

Briefly mentioning the sins, pratikramaṇa is being done by this sūtra.

३४. इच्छामि पडिक्कमिउं? सूत्र

इच्छामि पडिक्कमिउं? जो मे देवसिओ अइयारो कओ,
काइओ, वाइओ, माणसिओ, उरसुत्तो, उम्मग्गो,
अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ,
अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो,
नाणे, दंसणे, चरित्ता-चरित्ते, सुए, सामाइए,
तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं,
पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुण-व्वयाणं,
चउण्हं सिक्खा-वयाणं, बारस-विहस्स सावग-धम्मस्स,
जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं. ...१.

शब्दार्थ :-

इच्छामि पडिक्कमिउं? = मैं प्रतिक्रमण करूं?

इच्छामि = मैं करूं, पडिक्कमिउं = प्रतिक्रमण

जो मे देवसिओ अइयारो कओ = मेरे द्वारा दिवस में जो अतिचार

34. icchāmi paḍikkamiu? sūtra

icchāmi paḍikkamiu? jo me devasio aiyāro kao,
kāio, vāio, māṇasio, ussutto, ummaggo,
akappo, akaraṇijjo, dujjhāo, duvvicintio,
aṇāyāro, aṇicchāvvo, asāvaga-pāuggo,
nāṇe, dansaṇe, carittā-caritte, sue, sāmāie,
tiṇham guttiṇam, caṇṇham kasāyāṇam,
pañcaṇha-maṇuvvayāṇam, tiṇham guṇa-vvayāṇam,
caṇṇham sikkhā-vayāṇam, bārasa-vihassa sāvaga-dhammassa,
jam khaṇḍiam jam virāhiam, tassa micchā mi dukkaḍam.1.

Literal meaning :-

icchāmi paḍikkamiu = shall I perform the pratikramaṇa?

icchāmi = shall I perform, paḍikkamiu = the pratikramaṇa

jo me devasio aiyāro kao = the violations which are committed by me during

हुए हों
 काइओ वाइओ माणसिओ = काया द्वारा, वाणी द्वारा, मन द्वारा
 उस्सुत्तो = उत्सूत्र [सूत्र के विरुद्ध] कहने से
 उम्मग्गो = उन्मार्ग में [मार्ग के विरुद्ध] चलने से
 अकप्पो = अकल्पनीय [आचार के विरुद्ध] वर्तन करने से
 अकरणिज्जो = अकरणीय [अयोग्य] कार्य करने से
 दुज्झाओ = दुष्ट ध्यान [आर्त या रौद्र ध्यान] करने से
 दुव्विचिंतिओ = दुष्ट चिंतन करने से
 अणायासो = अनाचार [न आचरने योग्य आचरण] करने से
 अणिच्छिअव्वो = अनिच्छित [मन से न चाहने योग्य] वर्तन करने से
 असावग-पाउग्गो = श्रावक के योग्य व्यवहार से विरुद्ध आचरण करने से
 नाणे दंसणे = ज्ञान संबंधी, दर्शन संबंधी
 चरित्ताचरित्ते = देश-विरति-चारित्र संबंधी
 सुए सामाइए = श्रुत ज्ञान संबंधी, सामायिक संबंधी
 तिण्हं गुत्तीणं = तीन गुप्तियों संबंधी
 चउण्हं कसायाणं = चार कषाय संबंधी
 पंचण्ह-मणु-व्वयाणं = पांच अणु व्रत में

the day

kāio vāio māṇasio = by deeds, by words, by thoughts
 ussutto = by speaking against the sūtras
 ummaggo = by acting in wrong way
 akappo = by acting against the prescribed code of conduct
 akaraṇijjo = by doing undesirable activities
 dujjhāo = by evil concentration [ārta or raudra dhyāna]
 duvvicintio = by ill-thinking
 aṇāyāro = by doing improper behaviour
 aṇicchāvvo = by doing acts undesirable [by the heart]
 asāvaga-pāuggo = by acting against the code of conduct fit for a śrāvaka
 nāṇe dansaṇe = regarding jñāna, regarding darśana
 carittācaritte = about deśa-virati cāritra
 sue sāmāie = about śruta jñāna, about sāmāyika
 tiṇhaṃ guttiṇaṃ = about three guptis
 cauṇhaṃ kaṣāyāṇaṃ = about four kaṣāyas
 pañcaṇha-maṇu-vvayāṇaṃ = in five small [partially observed] vows

तिण्हं गुण-व्वयाणं = तीन गुण व्रत में

चउण्हं सिकखा-वयाणं = चार शिक्षा व्रत में

बारस-विहस्स सावग-धम्मस्स = बारह प्रकार के [व्रत रूपी] श्रावक धर्म में

जं खडिअं जं विराहिअं = जो खंडना हुई हो, जो विराधना हुई हो

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं = मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों
[देखें सूत्र नं.२७]

गाथार्थ :-

मैं प्रतिक्रमण करूँ ? काया से, वाणी से, मन से द्वारा, उत्सूत्र कहने से, उन्मार्ग में चलने से, अकल्पनीय वर्तन करने से, अकरणीय कार्य करने से, दुष्ट ध्यान करने से, दुष्ट चिंतन करने से, अनाचार करने से, अनिच्छित वर्तन करने से, श्रावक के योग्य व्यवहार से विरुद्ध आचरण करने से, ज्ञान संबंधी, दर्शन संबंधी, देश-विरति चारित्र संबंधी, श्रुत ज्ञान संबंधी, सामायिक संबंधी, तीन गुप्तियों संबंधी, चार कषाय संबंधी और पांच अणु व्रत में, तीन गुण व्रत में, चार शिक्षा व्रत में— बारह प्रकार के श्रावक धर्म में खंडना हुई हो, जो विराधना हुई हो, मेरे द्वारा

tiṇhaṃ guṇa-vvayaṇaṃ = in three characteristic vows

cauṇhaṃ sikkhā-vayaṇaṃ = in four moral [educational] vows

bārasa-vihassa sāvaga-dhammassa = in twelve types [of vows] of śrāvaka's dharma [code of conduct]

jaṃ khaṇḍiaṃ jaṃ virāhiaṃ = violations which are committed, faults which are committed

tassa micchā mi dukkaḍaṃ = those misdeeds of mine may become fruitless
[Refer sūtra no.27]

Stanzaic meaning :-

Shall I perform the pratikramaṇa. The violations which are committed by me during the day by deeds, by words, by thoughts, by speaking against the sūtras, by acting in wrong way, by acting against the prescribed code of conduct, by doing undesirable activities, by evil concentration, by ill-thinking, by doing improper behaviour, by doing acts undesirable, by acting against the code on conduct fit for a śrāvaka, regarding jñāna, regarding darśana, about deśa-virati cāritra, about śruta jñāna, about sāmāyika, about three guptis, about four kaṣāyas and in five small vows, in three characteristic vows, in four moral

दिवस में जो अतिचार हुए हों, मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र द्वारा श्रावक के आचार तथा बारह व्रतों में लगे अतिचारों को संक्षेप में वर्णन कर प्रतिक्रमण किया जाता है.

vows-- in twelve types of śrāvakas code of conduct, violations which are committed, faults which are committed, those misdeeds of mine may become fruitless.

Introduction of the sūtra :-

By this sūtra, pratikramaṇa is being done by describing in brief, the violations attached to the conducts and twelve vows of the śrāvaka.

३५. वंदित्तु सूत्र

वंदित्तु सव्व-सिद्धे, धम्मायरिए अ सव्व-साहू अ.
 इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग-धम्माइआरस्स.१.
 जो मे वयाइयारो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ.
 सुहुमो व बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि.२.
 दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे.
 कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं.३.
 जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं.
 रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि.४.
 आगमणे-निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे.
 अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं.५.
 संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु.
 सम्मत्तस्स-इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं.६.
 छक्काय-समारंभे, पयाणे अ पयावणे अ जे दोसा.

35. vandittu sūtra

vandittu savva-siddhe, dhammāyarie a savva-sāhū a.
 icchāmi paḍikkamiu, sāvaga-dhammāiārassa.1.
 jo me vayāiyāro, nāṇe taha dansaṇe caritte a.
 suhumo va bāyaro vā, taṃ ninde taṃ ca garihāmi.2.
 duvihe pariggahammi, sāvajje bahuvihe a āraṃbhe.
 kāravaṇe a karaṇe, paḍikkame desiaṃ savvaṃ.3.
 jaṃ baddhamindīehiṃ, cauhiṃ kasāehiṃ appasatthehiṃ.
 rāgeṇa va doseṇa va, taṃ ninde taṃ ca garihāmi.4.
 āgamaṇe-niggamaṇe, ṭhāṇe caṅkamaṇe aṇābhoge.
 abhioge a nioge, paḍikkame desiaṃ savvaṃ.5.
 saṅkā kaṅkha vigicchā, pasansa taha santhavo kuliṅgīsu.
 sammattassa-iāre, paḍikkame desiaṃ savvaṃ.6.
 chakkāya-samāraṃbhe, payaṇe a payāvaṇe a je dosā.

अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे. ७.
 पंचण्हमणु-व्वयाणं, गुण-व्वयाणं च तिण्हमइयारे.
 सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ८.
 पढमे अणु-व्वयम्मि, थूलग-पाणाइवाय-विरइओ.
 आयरिअ-मप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं. ९.
 वह-बंध-छवि-च्छेए, अइभारे भत्त-पाण-वुच्छेए.
 पढम-वयस्स-इयारे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. १०.
 बीए अणु-व्वयम्मि, परिथूलग-अलिय-वयण-विरइओ.
 आयरिअ-मप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं. ११.
 सहसा रहस्स दारे, मोसुवाएसे अ कूडलेहे अ.
 बीय-वयस्स-इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. १२.
 तइए अणु-व्वयम्मि, थूलग-परदव्व-हरण-विरइओ.
 आयरिअ-मप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं. १३.
 तेनाहड-प्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध-गमणे अ.
 कूड-तुल कूड-माणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. १४.

attatthā ya paratthā, ubhayatthā ceva taṃ ninde. 7.
 pañcaṇhamāṇu-vvayaṇaṃ, guṇa-vvayaṇaṃ ca tiṇhamaiyāre.
 sikkhāṇaṃ ca cauṇhaṃ, paḍikkame desiaṃ savvaṃ. 8.
 paḍhame aṇu-vvayammi, thūlaga-pāṇāivāya-viraio.
 āyaria-mappasatthe, ittha pamāya-ppasaṅgeṇaṃ. 9.
 vaha-bandha-chavi-cchee, aibhāre bhatta-pāṇa-vucchee.
 paḍhama-vayassa-iyāre, paḍikkame desiaṃ savvaṃ. 10.
 bīe aṇu-vvayammi, parithūlaga-aliya-vayaṇa-viraio.
 āyaria-mappasatthe, ittha pamāya-ppasaṅgeṇaṃ. 11.
 sahasā rahassa dāre, mosuvaese a kūḍalehe a.
 bīya-vayassa-iāre, paḍikkame desiaṃ savvaṃ. 12.
 taie aṇu-vvayammi, thūlaga-paradavva-haraṇa-viraio.
 āyaria-mappasatthe, ittha pamāya-ppasaṅgeṇaṃ. 13.
 tenāhaḍa-ppaoge, tappadīrūve viruddha-gamaṇe a.
 kūḍa-tula kūḍa-māṇe, paḍikkame desiaṃ savvaṃ. 14.

चउत्थे अणु-व्वयंमि, निच्चं परदार-गमण-विरईओ.
 आयरिअ-मप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं..... १५.
 अपरिग्गहिआ-इत्तर, अणंग-विवाह-तिव्व-अणुरागे.
 चउत्थ-वयस्स-इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं..... १६.
 इत्तो अणु-व्वए पंचमंमि, आयरिअ-मप्पसत्थम्मि.
 परिमाण-परिच्छेए, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं..... १७.
 धण-धन्न-खित्त-वत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअ-परिमाणे.
 दुपए चउप्पयंमि य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं..... १८.
 गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च.
 वुड्ढी सइ-अंतरद्धा, पढमम्मि गुण-व्वए निंदे..... १९.
 मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंध-मल्ले अ.
 उवभोग-परिभोगे, बीअम्मि गुण-व्वए निंदे..... २०.
 सचित्ते पडिबद्धे, अपोलि-दुप्पोलिअं च आहारे.
 तुच्छोसहि-भक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं..... २१.
 इंगाली-वण-साडी-, भाडी-फोडी सुवज्जए कम्मं.

cautthe aṇu-vvayammi, niccam paradāra-gamaṇa-viraio.
 āyaria-mappasatthe, ittha pamāya-ppasaṅgeṇam.....15.
 apariggahiā-ittara, aṇaṅga-vivāha-tivva-aṇurāge.
 cauttha-vayassa-iāre, paḍikkame desiam savvam.....16.
 itto aṇu-vvae pañcamammi, āyaria-mappasatthammi.
 parimāṇa-paricchee, ittha pamāya-ppasaṅgeṇam.....17.
 dhaṇa-dhanna-khitta-vatthū, ruppa-suvanne a kuvia-parimāṇe.
 dupae cauppayammi ya, paḍikkame desiam savvam.....18.
 gamaṇassa u parimāṇe, disāsu uḍḍham ahe a tiriam ca.
 vuddhī sai-antaraddhā, paḍhamammi guṇa-vvae ninde.....19.
 majjammi a maṇsammi a, pupphe a phale a gandha-malle a.
 uvabhoga-paribhoge, bīammi guṇa-vvae ninde.....20.
 sacitte paḍibaddhe, apoli-duppoliam ca āhāre.
 tucchosahi-bhakkhaṇayā, paḍikkame desiam savvam.....21.
 iṅgālī-vaṇa-sāḍī-, bhāḍī-phoḍī suvajjae kammam.

वाणिज्जं चेव दंत-लक्ख-रस-केस-विस-विसयं. २२.
 एवं खु जंत-पिल्लण कम्मं, निल्लंछणं च दव-दाणं.
 सर-दह-तलाय-सोसं, असई-पोसं च वज्जिज्जा. ... २३.
 सत्थग्गि-मुसल-जंतग-तण-कट्ठे मंत-मूल-भेसज्जे.
 दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. २४.
 न्हाणु-व्वट्ठण-वन्नग-विलेवणे सह-रूव-रस-गंधे.
 वत्थासण-आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. २५.
 कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि-अहिगरण-भोग-अइरित्ते.
 दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि-गुण-व्वए निंदे. २६.
 तिविहे दुप्पणिहाणे, अण-वट्ठाणे तहा सइ-विहूणे.
 सामाइय-वितह-कए, पढमे सिक्खा-वए निंदे. २७.
 आणवणे पेसवणे, सदे रूवे अ पुगगल-क्खेवे.
 देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खा-वए निंदे. २८.
 संथारुच्चार-विहि-पमाय तह चेव भोयणा-भोए.
 पोसह-विहि-विवरीए, तइए सिक्खा-वए निंदे. २९.

vāṇijjam ceva danta-lakkha-rasa-kesa-visa-visayam. 22.
 evam khu janta-pillaṇa kammam, nillañchaṇam ca dava-dāṇam.
 sara-daha-talāya-sosam, asaī-posam ca vajjijjā. 23.
 satthaggi-musala-janta-ga-taṇa-katṭhe manta-mūla-bhesajje.
 dinne davāvie vā, paḍikkame desiam savvam. 24.
 nhāṇu-vvaṭṭaṇa-vannaga-vilevaṇe sadda-rūva-rasa-gandhe.
 vatthāsaṇa-ābharaṇe, paḍikkame desiam savvam. 25.
 kandappe kukkuie, mohari-ahigaraṇa-bhoga-airitte.
 daṇḍammi aṇaṭṭhāe, taiaṃmi-guṇa-vvae ninde. 26.
 tivihe duppaṇihāṇe, aṇa-vaṭṭhāṇe taha sai-vihūṇe.
 sāmāiya-vitaha-kae, paḍhame sikkhā-vae ninde. 27.
 āṇavaṇe pesavaṇe, sadde rūve a puggala-kkheve.
 desāvagāsiāmmi, bīe sikkhā-vae ninde. 28.
 santhāruccāra-vihi-pamāya taha ceva bhoyaṇā-bhoe.
 posaha-vihi-vivarīe, taie sikkhā-vae ninde. 29.

सचित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस-मच्छरे चेव.
 कालाइक्कम-दाणे, चउत्थे सिक्खा-वए निंदे. ३०.
 सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा.
 रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि. ३१.
 साहूसु संविभागो, न कओ तव-चरण-करण-जुत्तेसु.
 संते फासुअ-दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि. ३२.
 इह-लोए पर-लोए, जीविअ-मरणे अ आसंस-पओगे.
 पंच-विहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते. ३३.
 काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए.
 मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स. ३४.
 वंदण-वय-सिक्खा-गारवेसु, सन्ना-कसाय-दंडेसु.
 गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे.... ३५.
 सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि.
 अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ. ३६.
 तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तर-गुणं च.

sacitte nikkhivaṇe, pihiṇe vavaesa-macchare ceva.
 kālāikkama-dāṇe, cautthe sikkhā-vae ninde. 30.
 suhiesu a duhiesu a, jā me assaṇjaesu aṇukampā.
 rāgeṇa va doseṇa va, tam ninde tam ca garihāmi. 31.
 sāhūsu samvibhāgo, na kao tava-caraṇa-karaṇa-juttesu.
 sante phāsua-dāṇe, tam ninde tam ca garihāmi. 32.
 iha-loe para-loe, jīvia-maraṇe a āsansa-paoge.
 pañca-viho aiāro, mā majjha hujja maraṇante. 33.
 kāeṇa kāiassa, paḍikkame vāiassa vāyāe.
 maṇasā māṇasiassa, savvassa vayāiārassa. 34.
 vandaṇa-vaya-sikkhā-gāra-vesu, sannā-kasāya-daṇḍesu.
 guttisū a samiīsū a, jo aiāro a tam ninde. 35.
 sammadditṭhī jīvo, jai vi hu pāvaṃ samāyarai kiñci.
 appo si hoi bandho, jeṇa na niddhamdhasam kuṇai. 36.
 tam pi hu sapadikkamaṇaṃ, sappariāvaṃ sauttara-guṇaṃ ca.

खिप्पं उवसामेइ, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो. ३७.
 जहा विसं कुट्ठ-गयं, मंत-मूल-विसारया.
 विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं. ३८.
 एवं अट्ठ-विहं कम्मं, राग-दोस-समज्जिअं.
 आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ. ३९.
 कय-पावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरु-सगासे.
 होइ अइरेग-लहुओ, ओहरिअ-भरुव्व भारवहो. ४०.
 आवस्सएण एण, सावओ जइवि बहुरओ होइ.
 दुक्खाणमंत-किरिअं, काही अचिरेण कालेण. ४१.
 आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण-काले.
 मूल-गुण-उत्तर-गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि. ४२.
 तस्स धम्मस्स केवलि-पन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओ मि
 आराहणाए, विरओ मि विराहणाए.
 तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं. ४३.
 जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ.

khippam uvasāmei, vāhi vva susikkhio vijjo. 37.
 jahā visam kutṭha-gayam, manta-mūla-visārayā.
 vijjā haṇanti mantehim, to tam havai nivvisam. 38.
 evam atṭha-viham kammam, rāga-dosa-samajjiam.
 āloanto a nindanto, khippam haṇai susāvaō. 39.
 kaya-pāvo vi maṇusso, āloia nindia guru-sagāse.
 hoi airega-lahuō, oharia-bharuvva bhāravaho. 40.
 āvassaena eena, sāvaō jaivi bahurao hoi.
 dukkhāṇamanta-kiriam, kāhī acireṇa kāleṇa. 41.
 āloaṇā bahuviḥā, na ya sambhariā paḍikkamaṇa-kāle.
 mūla-guṇa-uttara-guṇe, tam ninde tam ca garihāmi. 42.
 tassa dhammassa kevali-pannattassa, abbhutṭhio mi
 ārāhaṇāe, virao mi virāhaṇāe.
 tiviheṇa paḍikkanto, vandāmi jiṇe cauvvīsam. 43.
 jāvaṇti ceiāim, uḍḍhe a ahe a tiria-loe a.

सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं..... ४४.
जावंत के वि साहू, भरहेरवय-महाविदेहे अ.
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं..... ४५.
चिर-संचिय-पाव-पणासणीइ, भव-सय-सहस्स-महणीए.
चउवीस-जिण-विणिग्गय-कहाइ, वोलंतु मे दिअहा. . ४६.
मम मंगल-मरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ.
सम्म-दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च. ४७.
पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाण-मकरणे पडिक्कमणं.
असद्धहणे अ तहा, विवरीअ-परुवणाए अ. ४८.
खामेमि सव्व-जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे.
मिती मे सव्व-भूएसु, वेरं मज्झ न केणइ..... ४९.
एवमहं आलोइअ, निंदिअ-गरहिअ-दुगंछिअं सम्मं.
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं. ५०.
शब्दार्थ :-

१. वंदितु = वंदन कर के

savvāim tāim vande, iha santo tattha santāim..... 44.
jāvanta ke vi sāhū, bharaheravaya-mahāvidehe a.
savvesim tesim paṇao, tivihēṇa tidaṇḍa-virayaṇaṃ..... 45.
cira-sañciya-pāva-paṇāsaṇīi, bhava-saya-sahassa-mahaṇīe.
cauvīsa-jīṇa-viṇiggaya-kahāi, volantu me diāhā. 46.
mama maṅgala-marihaṇtā, siddhā sāhū suam ca dhammo a.
samma-ddiṭṭhī devā, dīntu samāhiṃ ca bohiṃ ca. 47.
paḍisiddhāṇaṃ karaṇe, kiccāṇa-makarāṇe paḍikkamaṇaṃ.
asaddahaṇe a tahā, vivarīa-parūvaṇāe a..... 48.
khāmemi savva-jīve, savve jīvā khamantu me.
mittī me savva-bhūesu, veram majjha na keṇai. 49.
evamaham āloia, nīndia-garahia-dugañchiam sammam.
tīvihēṇa paḍikkanto, vandaṃmi jīṇe cauvvīsaṃ..... 50.

Literal meaning :-

1.vandittu = obeisancing

सव्व-सिद्धे = सर्व सिद्ध भगवन्तो को

सव्व = सर्व, सिद्धे = सिद्ध भगवन्तो को

धम्मायरिए अ सव्व-साहू अ = और धर्माचार्यों को तथा सर्व साधुओं को

धम्म = धर्म के, आयरिए = आचार्यों को, अ = और, साहू =

साधुओं को, अ = तथा

इच्छामि पडिक्कमिउं = मैं प्रतिक्रमण करना चाहता हूँ

इच्छामि = मैं चाहता हूँ, पडिक्कमिउं = प्रतिक्रमण करना

सावग-धम्मा-इआरस्स = श्रावक के धर्म में लगे अतिचारों का

सावग = श्रावक के, धम्म = धर्म में, अइआरस्स = अतिचारों का

२. जो मे वयाइआरो = मुझे व्रत में जो अतिचार लगे हों

जो = जो, मे = मुझे, वय = व्रत में, अइआरो = अतिचार लगे हों

नाणे तह दंसणे चरित्ते अ = तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि में

नाणे = ज्ञान, तह = तथा, दंसणे = दर्शन, चरित्ते = चारित्र, अ = आदि में

सुहुमो व बायरो वा = सूक्ष्म [छोटे] या बादर [बड़े]

savva-siddhe = to all siddha bhagavantas

savva = all, siddhe = to siddha bhagavantas

dhammāyariē a savva-sāhū a = and to religious preceptors and all sādhus

dhamma = to religious, āyariē = preceptors, a = and, sāhū = to sādhus

icchāmi paḍikkamiu = i wish to perform the pratikramaṇa

icchāmi = i wish, paḍikkamiu = to perform the pratikramaṇa

sāvaga-dhammā-iārassa = for the violations committed in śrāvaka dharma

[code of moral conduct prescribed for house-holders]

sāvaga = in śrāvaka, dhamma = dharma, aiārassa = for the violations committed

2. jo me vayāiāro = violations which are committed by me in the practice of vows

jo = which, me = by me, vaya = in the practice of vows, aiāro = violations committed

nāṇe taha dānsaṇe caritte a = and in jñāna, darśana, cāritra etc.

nāṇe = in jñāna, taha = and, dānsaṇe = darśana, caritte = cāritra, a = etc.

suhumo va bāyaro vā = invisible [small] or visible [big]

सुहुमो = सूक्ष्म, व = या, बायरो = बादर, वा = या
 तं निंदे तं च गरिहामि = मैं उनकी [मेरे उन अतिचारों की] निंदा
 करता हूँ और मैं उनकी गद्दी करता हूँ
 तं = उनकी, निंदे = मैं निंदा करता हूँ, च = और, गरिहामि
 = मैं गद्दी करता हूँ

३.दुविहे परिग्गहम्मि = दो प्रकार के परिग्रहों के कारण
 दु = दो, विहे = प्रकार के, परिग्गहम्मि = परिग्रहों के कारण
 सावज्जे बहुविहे अ आरंभे = और अनेक प्रकार के पापमय कार्य
 सावज्जे = पापमय, बहु = अनेक, आरंभे = कार्य
 कारावणे अ करणे = कराने से या करने से

कारावणे = कराने से, अ = या, करणे = करने से
 पडिक्कमे देसिअं सव्वं = दिवस में लगे सर्व [पापों] का मैं
 प्रतिक्रमण करता हूँ
 पडिक्कमे = मैं प्रतिक्रमण करता हूँ, देसिअं = दिवस में लगे,
 सव्वं = सर्व का

४.जं बद्धं = जो बंधे हों
 जं = जो, बद्धं = बंधे हों
 इंदिएहिं = इंद्रियों से

suhumo = invisible, va = or, bāyaro = visible, vā = or
 tam ninde tam ca garihāmi = i censure them and i condemn them [those
 misdeeds of mine]

tam = them, ninde = i censure, ca = and, garihāmi = i condemn

3.duvihe pariggahammi = due to two types of possessiveness
 du = two, vihe = types of, pariggahammi = due to possessiveness
 sāvajje bahuvihe a ārambhe = and many types of sinful activities
 sāvajje = sinful, bahu = many, ārambhe = activities
 kārāvaṇe a kaṇe = by causing to do or by doing

kārāvaṇe = by causing to do, a = or, kaṇe = by doing
 paḍikkame desiam savvam = i perform pratikramaṇa of all [the sins]
 committed during the day
 paḍikkame = i perform pratikramaṇa, desiam = committed during the
 day, savvam = of all

4.jam baddham = which are bonded
 jam = which, baddham = are bonded
 indiehim = by sense organs

चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं = चार प्रकार के अप्रशस्त कषायों से
 चउहिं = चार प्रकार के, कसाएहिं = कषायों से, अप्पसत्थेहिं
 = अप्रशस्त

रागेण व दोसेण व = और राग से या द्वेष से

रागेण = राग से, व = और, दोसेण = द्वेष से

५.आगमणे-निग्गमणे = आने से, जाने से

आगमणे = आने से, निग्गमणे = जाने से

ठाणे चंकमणे = खड़े रहने से, इधर-उधर फिरने से

ठाणे = खड़े रहने से, चंकमणे = इधर-उधर फिरने से

अणाभोगे अभिओगे अ निओगे = भूल जाने से, [किसी के] दबाव से
 और बंधन [नौकरी आदि] के कारण

अणाभोगे = भूल जाने से, अभिओगे = दबाव से, निओगे =
 बंधन के कारण

६.संका कंख विगिच्छा = शंका, आकांक्षा, विचिकित्सा

संका = शंका, कंख = आकांक्षा, विगिच्छा = विचिकित्सा

पसंस तह संथवो कुलिंगीसु = कुलिंगियों की प्रशंसा और परिचय
 से

पसंस = प्रशंसा, संथवो = परिचय से, कुलिंगीसु = कुलिंगियों

cauhim kasāehim appasatthehim = by four types of improper kaṣāayas
 cauhim = four types of, kasāehim = by kaṣāayas, appasatthehim =
 improper

rāgeṇa va doseṇa va = and by attachment or by hatred

rāgeṇa = by attachment, va = and, doseṇa = by hatred

5.āgamaṇe-niggamaṇe = while coming, while going

āgamaṇe = while coming, niggamaṇe = while going

thāṇe caṅkamaṇe = while standing, while moving here and there

thāṇe = while standing, caṅkamaṇe = while moving here and there

aṇābhoge abhioge a nioge = by forgetting, under pressure [of any one] and
 due to bondage [like service / dependence upon others]

aṇābhoge = by forgetting, abhioge = under pressure, nioge = due to
 bondage

6.saṅkā kaṅkamaṇe vigicchā = doubt, desire, dislikes

saṅkā = doubt, kaṅkamaṇe = desire, vigicchā = dislikes

pasansa taha santhavo kuliṅgisu = by praising and acquaintance with
 believers in false doctrines

pasansa = by praising, santhavo = acquaintance, kuliṅgisu = with

की
 सम्मतस्स-इआरे = सम्यक्त्व के [इन पाँच] अतिचारों से
 सम्मतस्स = सम्यक्त्व के, अइआरे = अतिचारों से
 ७. छक्काय समारंभे = छः काय के जीवों की विराधना से
 छ = छः, क्काय = काय के जीवों की, समारंभे = विराधना से
 पयाणे अ पयावणे अ जे दोसा = तथा पकाने से, पकवाने से जो
 दोष [लगे हों]
 पयाणे = पकाने से, पयावणे = पकवाने से, जे = जो, दोसा =
 दोष
 अत्तट्ठा य परट्ठा उभयट्ठा चेव = अपने लिये या दूसरों के लिये
 और साथ ही दोनों के लिये
 अत्तट्ठा = अपने लिये, य = या, परट्ठा = दूसरों के लिये,
 उभयट्ठा = दोनों के लिये, इव = साथ ही
 ८. पंचण्हमणु-व्वयाणं = पाँच अणु-व्रत संबंधी
 पंचण्हं = पाँच, अणु = अणु, व्वयाणं = व्रत संबंधी
 गुण-व्वयाणं च तिण्हं = और तीन गुण-व्रत संबंधी

believers in false doctrines
 sammattassa-iāre = by [these five] violations of samyaktva
 sammattassa = of samyaktva, aiāre = by violations
 7. chakkāya samārambhe = by injuring the living beings of six forms
 chakkāya = the living beings of six forms, samārambhe = by injuring
 payaṇe a payāvaṇe a je dosā = and the faults which [are committed] by
 cooking and by getting cooked
 payaṇe = by cooking, payāvaṇe = by getting cooked, je = which, dosā =
 the faults
 attatthā ya paratthā ubhayatthā ceva = for himself or for others and for both
 together
 attatthā = for himself, ya = or, paratthā = for others, ubhayatthā = for
 both, iva = together
 8. pañcaṇhamāṇu-vvayāṇam = regarding five minor-vows [vows observed
 partially]
 pañcaṇham = five, aṇu = minor, vvayāṇam = regarding vows
 guṇa-vvayāṇam ca tiṇham = and regarding three characteristic-vows [vows
 strengthening five minor-vows]

गुण = गुण, तिण्हं = तीन
 अइयारे = अतिचारों का
 सिक्खाणं च चउण्हं = और चार शिक्षा-व्रत संबंधी

सिक्खाणं = शिक्षा-व्रत संबंधी, चउण्हं = चार
 ९.पढमे अणु-व्वयम्मि = प्रथम अणु-व्रत में
 पढमे = प्रथम, व्वयम्मि = व्रत में
 थूलग-पाणाइवाय-विरईओ = स्थूल [आंशिक रूप में] प्राणातिपात से
 विरमण [निवृत्ति] में
 थूलग = स्थूल, पाणाइवाय = प्राणातिपात से, विरईओ =
 विरमण में
 आयरियं = अतिचारों का
 अप्पसत्थे = अप्रशस्त भाव के कारण
 इत्थ = यहाँ
 पमाय-प्पसंगेणं = प्रमाद के कारण
 पमाय = प्रमाद, प्पसंगेणं = के कारण
 १०.वह-बंध-छविच्छेए = मारने से, बांधने से, अंगोपांग के छेदने से
 वह = मारने से, बंध = बांधने से, छवि = अंगोपांग के, छेए

guṇa = characteristic, tiṇhaṃ = three
 aiyāre = of the violations
 sikkhāṇaṃ ca cauṇhaṃ = and regarding four educational vows [vows
 training for acetic life]
 sikkhāṇaṃ = regarding educational vows, cauṇhaṃ = four
 9.paḍhame aṇu-vvayammi = in first minor vow
 paḍhame = first, vvayammi = in vow
 thūlaga-pāṇāivāya-viraīo = of ceasing from partial violence
 thūlaga = partial, pāṇāivāya = from violence, viraīo = of ceasing
 āyariyaṃ = of violations
 appasatthe = due to undesirable / improper feelings
 ittha = here
 pamāya-ppasaṅgeṇaṃ = due to carelessness / negligence
 pamāya = carelessness, ppasaṅgeṇaṃ = due to
 10.vaha-bandha-chavi-cchee = by beating, by tying up, by mutilation of limbs
 vaha = by beating, bandha = by tying up, chavi = of limbs, cchee = by

= छेदने से

अइ-भारे भत्त-पाण-वुच्चेए = अधिक बोझ लादने से, आहार-पानी का विच्छेद करने से [भूखा-प्यासा रखने से]

अइ = अधिक, भारे = बोझ लदने से, भत्त = आहार, पाण = पानी का, वुच्चेए = विच्छेद करने से

पढम-वयस्स-इयारे = प्रथम व्रत में लगे अतिचारों का

पढम = प्रथम, वयस्स = व्रत में, अइयारे = लगे अतिचारों का

११.बीए अणु-व्वयम्मि = दूसरे अणु-व्रत में

बीए = दूसरे

परिथूलग-अलिय-वयण-विरईओ = स्थूल मृषावाद [असत्य बोलने से] विरमण में

परिथूलग = स्थूल, अलियवयण = मृषावाद

१२.सहसा रहस्स दारे = सहसाभ्याख्यान [बिना विचारे दोषारोपण करने] से, रहस्याभ्याख्यान [किसी के रहस्य का मनमाना अनुमान लगाकर कहने] से, स्वदारा मंत्र भेद [स्व स्त्री की गुप्त बातों को प्रकाशित करने] से

सहसा = सहसाभ्याख्यान से, रहस्स = रहस्याभ्याख्यान से, दारे = स्वदारा मंत्र भेद से

mutilation

ai-bhāre bhatta-pāṇa-vucchee = by loading too much of burden, by depriving of food and water [by keeping hungry and thirsty]

ai = too much of, bhāre = by loading burden, bhatta = of food, pāṇa = water, vucchee = by depriving

paḍhama-vayassa-iyāre = of the violations committed in first vow

paḍhama = first, vayassa = in vow, aiyāre = of the violations committed

11.bīe aṇu-vvayammi = in second minor vow

bīe = second

parithūlaga-aliya-vayaṇa-viraō = in ceasing from partial untruth speaking

parithūlaga = partial, aliya = untruth, vayaṇa = speaking

12.sahasā rahassa dāre = by sahasābhyākhyāna [accusing without fore thought], by rahasyābhyākhyāna [by speaking out secrets of any other arbitrarily], by svadārā mantra bheda [by giving out the secrets of his own wife]

sahasā = by sahasābhyākhyāna, rahassa = by rahasābhyākhyāna, dāre = by svadārā mantra bheda

मोसुवएसे अ कूड-लेहे अ = और मिथ्या उपदेश [झूठी सलाह] देने से और झूठे लेख लिखने से

मोस = मिथ्या, उवएसे = उपदेश देने से, कूड = झूठे, लेहे = लेख लिखने से

बीय-वयस्स-इआरे = दूसरे व्रत में लगे अतिचारों का

बीय = दूसरे

१३. तइए अणु-व्वयम्मि = तीसरे अणु-व्रत में

तइए = तीसरे

थूलग-परदव्व-हरण-विरईओ = स्थूल पर-द्रव्य हरण से विरमण में

पर = पर, दव्व = द्रव्य, हरण = हरण से

१४. तेनाहड-प्पओगे = चोर द्वारा लायी वस्तु रखने से और [चोर को] प्रोत्साहक वचन बोलने से

तेना = चोर द्वारा, हड = लायी वस्तु रखने से, प्पओगे = प्रोत्साहक वचन बोलने से

तप्पडिरूवे विरुद्ध-गमणे अ = नकली [या मिलावटी] माल बेचने से और [राज्य] विरुद्ध कार्य करने से

तप्पडिरूवे = नकली माल बेचने से, विरुद्ध = विरुद्ध कार्य,

mosuvaese a kūḍa-lehe a = and by misguiding [giving false advice] and by forging documents [writing false facts]

mosa = false, uvaese = by giving advice, kūḍa = false, lehe = by writing documents

bīya-vayassa-iāre = violations committed in second vow

bīya = second

13. taie aṇu-vvayammi = in third minor vow

taie = third

thūlaga-para-davva-haraṇa-viraio = in ceasing from partial theft of property of others

para = of others, davva = property, haraṇa = theft of

14. tenāhaḍa-ppaoge = by keeping the articles brought by a thief and by speaking words of encouragement [to a thief]

tenā = by a thief, haḍa = by keeping the articles brought, ppaoge = by speaking words of encouragement

tappaḍirūve viruddha-gamaṇe a = by selling duplicate [or adulterated] goods and by doing acts against [the state] [violating laws of the state]

tappaḍirūve = by selling duplicate goods, viruddha = acts against,

गमणे = करने से
 कूड-तुल कूड-माणे = गलत तोलने से और गलत मापने से

कूड = गलत, तुल = तोलने से, माणे = मापने से
 १५. चउत्थे अणु-व्वयंमि = चौथे अणु-व्रत में
 चउत्थे = चौथे
 निच्चं परदार-गमण-विरईओ = नित्य पर-स्त्री गमन से निवृत्ति में

निच्चं = नित्य, पर = पर, दार = स्त्री, गमण = गमन से

१६. अपरिग्गहिआ-इत्तर = अविवाहिता [स्त्री, कन्या या विधवा] के साथ गमन करने से, अल्प समय के लिये रखी स्त्री [वेश्या या रखैल] के साथ गमन करने से
 अपरिग्गहिआ = अविवाहिता के साथ गमन करने से, इत्तर = अल्प समय के लिये रखी स्त्री के साथ गमन करने से
 अणंग-विवाह-तिव्व-अणुरागे = काम वासना जाग्रत करने वाली क्रियाओं से, दूसरों के विवाह कराने से, विषय भोग में तीव्र अनुराग रखने से

gamaṇe = by doing
 kūḍa-tula kūḍa-māṇe = by false weighing and false measurements [cheating in weight and measuring]
 kūḍa = false, tula = by weighing, māṇe = measuring
 15. cautthe aṇu-vvayammi = in fourth minor vow
 cautthe = fourth
 niccam paradāra-gamaṇa-viraīo = in ceasing frequent sexual relations with other women
 niccam = frequent, para = other, dāra = women, gamaṇa = sexual relations with
 16. apariggahiā-ittara = by having sexual relations with unmarried [women, virgin or a widow], by having sexual relations with women kept for a short period [prostitute or concubine]
 apariggahiā = by having sexual relations with unmarried, ittara = by having sexual relations with women kept for a short period
 aṇaṅga-vivāha-tivva-aṇurāge = by activities inciting sex desires, by arranging [performing] marriages of others, by holding strong desire in sexual pleasures

अणंग = काम वासना जाग्रत करने वाली क्रियाओं से, विवाह = दूसरों के विवाह कराने से, तिब्ब = तीव्र, अणुरागे = विषय भोग में अनुराग रखने से

चउत्थ-वयस्स-इआरे = चौथे व्रत में लगे अतिचारों का
चउत्थ = चौथे

१७.इत्तो अणु-व्वए पंचमंमि = अब पांचवें अणु-व्रत में
इत्तो = अब, पंचमंमि = पांचवें

परिमाण-परिच्छेए = परिग्रह के परिमाण [मर्यादा] में
परिमाण = परिमाण में, परिच्छेए = परिग्रह के

१८.धण-धन्न-खित्त-वत्थू = धन, धान्य, जमीन, मकान के
धण = धन, धन्न = धान्य, खित्त = जमीन, वत्थू = मकान के

रुप्प-सुवन्ने अ कुविअ = चांदी, सुवर्ण और [अन्य] धातुओं के
रुप्प = चांदी, सुवन्ने = सुवर्ण, कुविअ = धातुओं के

परिमाणे दुपए चउप्पयमि य = द्विपद [दो पांव वाले- मनुष्य, पक्षी आदि] और चतुष्पद [चार पांव वाले-पशु आदि] प्राणियों के परिमाण में

परिमाणे = परिमाण में, दु = द्वि, पए = पद, चउ = चतुः,

anaṅga = by activities inciting sex desires, vivāha = by arranging marriages of others, tivva = strong, aṇurāge = by holding desire in sexual pleasures

cauttha-vayassa-iāre = for the violations committed in fourth vow
cauttha = in fourth

17.itto aṇu-vvāe pañcamammi = Now in fifth minor vow
itto = now, pañcamammi = in fifth

parimāṇa-paricchee = in the limitations of possessions
parimāṇa = in the limitations, paricchee = of possessions

18.dhaṇa-dhanna-khitta-vatthū = of wealth, food grains, lands, buildings
dhaṇa = of wealth, dhanna = food grains, khitta = lands, vatthū = buildings

ruppa-suvanne a kuvia = of silver, gold and [other] metals
ruppa = of silver, suvanne = gold, kuvia = metals

parimāṇe dupae cauppayammi ya = in the limitations of two legged [human beings, birds etc.] and four legged [animals etc.] living beings

parimāṇe = in the limitations, du = of two, pae = legged, cau = four,

प्पयंमि = पद

१९.गमणस्स उ परिमाणे = और गमन के परिमाण में

गमणस्स = गमन के, उ = और

दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च = ऊर्ध्व और अधो तथा तिर्यग्
दिशाओं में

दिसासु = दिशाओं में, उड्ढं = ऊर्ध्व, अहे = अधो, तिरिअं =
तिर्यग्

वुड्ढी सइ-अंतरद्धा = वृद्धि होने से और विस्मृति होने से [भूल
जाने से]

वुड्ढी = वृद्धि होने से, सइअंतरद्धा = विस्मृति होने से

पढमम्मि गुण-व्वाए = प्रथम गुण-व्रत में

पढमम्मि = प्रथम, व्वाए = व्रत में

निंदे = मैं निंदा करता हूँ

२०.मज्जम्मि अ मंसम्मि अ = मद्य [मदिरा-नशीले पदार्थ] और
मांस का

मज्जम्मि = मद्य, मंसम्मि = मांस का

पुप्फे अ फले अ = और पुष्प तथा फल का

पुप्फे = पुष्प, फले = फल का

ppayammi = legged

19.gamaṇassa u parimāṇe = and in the restrictions of movement

gamaṇassa = of movement, u = and parimāṇe = in the restrictions

disāsu uḍḍham ahe a tiriam ca = in upper, lower and oblique directions

disāsu = in directions, uḍḍham = upper, ahe = lower, tiriam = oblique

vuddhī sai-antaraddhā = by increasing and by forgetting

vuddhī = by increasing, saiantaraddhā = by forgetting

paḍhamammi guṇa-vvāe = in first characteristic vow

paḍhamammi = first, vvāe = in vow

ninde = I censure

20.majjammi a maṇsammi a = of wine [intoxicating substances] and meat

majjammi = of wine, maṇsammi = meat

pupphe a phale a = and of flowers and fruits

pupphe = of flowers, phale = fruits

गंध-मल्ले अ = और गंध तथा माला का

गंध = गंध, मल्ले = माला का

उवभोग-परिभोगे = उपभोग और परिभोग करने से

उवभोग = उपभोग, परिभोगे = परिभोग करने से

वीअम्मि गुण-व्वए = दूसरे गुण-व्रत में [लगे अतिचारों का]

वीअम्मि = दूसरे

२१.सचित्ते पडिबद्धे = सचित्त [सजीव] आहार, [सचित्त से]संलग्न

[सजीव से संलग्न निर्जीव] आहार

सचित्ते = सचित्त आहार, पडिबद्धे = संलग्न आहार

अपोलि-दुप्पोलिअं च आहारे = अपक्व आहार और अर्ध पक्व

आहार

अपोलि = अपक्व, दुप्पोलिअं = अर्ध पक्व, आहारे = आहार

तुच्छोसहि-भक्खणया = तुच्छ औषधि [वनस्पति] के भक्षण से

तुच्छ = तुच्छ, ओसहि = औषधि के, भक्खणया = भक्षण से

२२.इंगाली-वण-साडी-भाडी-फोडी = अंगार [भट्ठी के उपयोग

वाले], वन [वनस्पतियों का छेदन प्रधान], शाटक [वाहन और

उनके उपकरण बनाने का], भाटक [वाहन और पशुओं द्वारा

gandha-malle a = and of scent and garlands

gandha = of scent, malle = garlands

uvabhoga-paribhoge = by consuming and reconsuming

uvabhoga = by consuming, paribhoge = reconsuming

bīammi guṇa-vvāe = [of the violations committed] in second characteristic
vow

bīammi = in second

21.sacitte paḍibaddhe = sacitta [animate] food and food joint [with sacitta]

[inanimate food in contact with animate substance / things]

sacitte = sacitta food, paḍibaddhe = joint food

apoli-duppoliā ca āhāre = uncooked food and semi-cooked food

apoli = uncooked, duppoliā = semi-cooked, āhāre = food

tucchosahi-bhakkhaṇayā = by eating stuffless medicines [vegetables]

tuccha = stuffless, osahi = medicines, bhakkhaṇayā = by eating

22.iṅgālī-vaṇa-sāḍī-bhāḍī-phoḍī = fire works [having the usage of ovens],
forest [mainly cutting of vegetation], vehicles [manufacture of vehicles and
their parts], transportation [to earn freight through vehicles and animals],

किराया उपजाने का], विस्फोटक [पृथ्वी-पत्थर आदि को खोदने-फोड़ने का],

इंगाली = अंगार, वण = वन, साडी = शाटक, भाडी = भाटक, फोडी = विस्फोटक

सुवज्जए = त्यागने योग्य हैं

कम्मं = कार्य [आजीविका के]

वाणिज्जं = व्यापार [खरीद-बिक्री का]

चेव = इसी प्रकार

दंत-लक्ख-रस-केस-विस-विसयं = दांत [पशु-पक्षियों के दांत-हड्डी आदि से वस्तुएँ बनाना], लाख [लाख, साबुन, क्षार आदि], रस [दूध, दही, घी, तेल, मांस, मदिरा आदि], केश [मनुष्य और पशु के बाल], विष [जहर या जहरी पदार्थ] संबंधी

दंत = दांत, लक्ख = लाख, रस = रस, केस = केश, विस = विष, विसयं = संबंधी

२३.एवं खु = वस्तुतः इसी प्रकार

एवं = इसी प्रकार, खु = वस्तुतः

जंत-पिल्लण = यंत्र द्वारा पीसना [तेज गति से काम करने वाली मशीन द्वारा]

explosives [to dig, burst earth, stones etc.]

ingālī = fire works, vaṇa = forest, sāḍī = vehicles, bhāḍī = transportation, phodī = explosives

suvaḷḷae = are worth giving up

kammam = works of [livelihood]

vāṇijjam = business [of purchase and sales]

ceva = similarly

danta-lakkha-rasa-kesa-visa-visayam = concerning teeth [to prepare articles from the teeth and bones of animals and birds], wax [wax, soap, salt etc.], juice [milk, curd, butter, oil, meat, wine etc.], hair [of men and animals], poison [poison or poisonous substances]

danta = teeth, lakkha = wax, rasa = juice, kesa = hair, visa = poison, visayam = concerning

23.evam khu = actually in the same manner

evam = in the same manner, khu = actually

janta-pillana = grinding through machines [by machines working with high speed]

जंत = यंत्र द्वारा, पिल्लण = पीसना
 कम्मं = कार्य
 निल्लच्छणं च दव-दाणं = निर्लाछन [अंग छेदने आदि] करने का
 और आग [वन आदि में] लगाने का
 निल्लच्छणं = निर्लाछन करने का, दव = आग, दाणं = लगाने का
 सर-दह-तलाय-सोसं = सरोवर, स्रोत, तालाब को सुखाने का
 सर = सरोवर, दह = स्रोत, तलाय = तालाब को, सोसं =
 सुखाने का
 असाई-पोसं च = और असती [व्यापार के लिये पशु, दास, नट
 आदि का] पोषण का
 असाई = असती, पोसं = पोषण का
 वज्जिज्जा = त्यागने योग्य हैं
 २४. सत्थ-ग्गि-मुसल-जंतग-तण-कट्ठे = शस्त्र, अग्नि, मूसल,
 चक्की, तृण और काष्ठ को
 सत्थ = शस्त्र, अग्गि = अग्नि, मुसल = मूसल, जंतग =
 चक्की, तण = तृण, कट्ठे = काष्ठ को
 मंत-मूल-भेसज्जे = मंत्र, मूल [जड़ी-बुट्टी] और औषधि को
 मंत = मंत्र, मूल = मूल, भेसज्जे = औषधि को

janta = through machines, pillana = grinding
 kammam = works
 nillañchaṇam ca dāva-dāṇam = of amputation [mutilation of limbs] and
 setting fire [to forests etc.]
 nillañchaṇam = of amputation, dāva = fire, dāṇam = setting
 sara-daha-talāya-sosam = of drying up lakes, streams and ponds
 sara = lakes, dāha = streams, talāya = ponds, sosam = of drying up
 asaī-posam ca = and evil feedings [feeding of animals, slaves, acrobats etc.
 for business purposes / to earn money]
 asaī = evil, posam = feedings
 vajjijjā = are worth giving up
 24. sattha-ggi-musala-jantaga-taṇa-katṭhe = to arms, fire, pestle, grinding
 machine, grass and wood
 sattha = to arms, aggi = fire, musala = pestle, jantaga = grinding
 machine, taṇa = grass, katṭhe = wood
 manta-mūla-bhesajje = to hymns, roots [medical herbs] and medicines
 manta = to hymns, mūla = roots, bhesajje = medicines

दिन्ने दवाविए वा = देने से और दिलाने से

दिन्ने = देने से, दवाविए = दिलाने से

२५. ण्हाणु-व्वट्ठण-वन्नग-विलेवणे = स्नान, उद्वर्तन [शारीरिक मैल निकालने के लिये विलेपन], रंगाई [या चित्रकारी], विलेपन [सुगंधी पदार्थों का]

ण्हाणु = स्नान, व्वट्ठण = उद्वर्तन, वन्नग = रंगाई, विलेवणे = विलेपन

सद्द-रूव-रस-गंधे = शब्द, रूप, रस, गंध

सद्द = शब्द, रूव = रूप, रस = रस, गंधे = गंध

वत्थासण-आभरणे = वस्त्र, आसन, आभरण

वत्थ = वस्त्र, आसण = आसन, आभरणे = आभरण

२६. कंदप्पे कुक्कुइए = काम विकार, अधम चेष्टाओं [इशारों] के कारण

कंदप्पे = काम विकार, कुक्कुइए = अधम चेष्टाओं के कारण

मोहरि-अहिगरण-भोग-अइरित्ते = वाचालता, हिंसक साधनों को तैयार रखने, भोग की अतिरेकता के कारण

मोहरि = वाचालता, अहिगरण = हिंसक साधनों को तैयार रखने, भोग = भोग की, अइरित्ते = अतिरेकता के कारण

dinne davāvie vā = by giving and by making to give

dinne = by giving, davāvie = making to give

25. ṇhāṇu-vvattāṇa-vannaga-vilevaṇe = bathing, rubbing [anointing for removing dirt from the body], colouring [or painting], anointing [of scented substances]

ṇhāṇu = bathing, vvattāṇa = rubbing, vannaga = colouring, vilevaṇe = anointing

sadda-rūva-rasa-gandhe = words, form, taste, scent

sadda = words, rūva = form, rasa = taste, gandhe = scent

vatthāsaṇa-ābharāṇe = cloths, seat, ornaments

vattha = cloths, āsaṇa = seat, ābharāṇe = ornaments

26. kaṇḍappe kukkuie = due to sexual desire, bad sexy gestures

kaṇḍappe = due to sexual desire, kukkuie = bad sexy gestures

mohari-ahigaraṇa-bhoga-airitte = due to talkativeness, keeping violent equipment ready, too much of enjoyment

mohari = due to talkativeness, ahigaraṇa = keeping violent equipment ready, bhoga = of enjoyment, airitte = too much

दंडम्मि अणट्ठाए = अनर्थ दंड द्वारा

दंडम्मि = दंड द्वारा, अणट्ठाए = अनर्थ

तइअम्मि-गुण-व्वाए निंदे = तीसरे गुण-व्रत में [लगे अतिचारों की] में निंदा करता हूँ

तइअम्मि = तीसरे

२७.तिविहे दुप्पणिहाणे = तीन प्रकार [मन-वचन-काया] के दुष्प्रणिधान [दुष्ट प्रवृत्तियों में एकाग्रता] से

ति = तीन, दुप्पणिहाणे = दुष्प्रणिधान से

अण-वट्ठाणे तथा सई-विहुणे = अविधि पूर्वक करने से और विस्मृति के कारण

अणवट्ठाणे = अविधि पूर्वक करने से, सईविहुणे = विस्मृति के कारण

सामाइय वितहकए = सामायिक में विराधना द्वारा

सामाइय = सामायिक में, वितहकए = विराधना द्वारा

पढमे सिक्खावए निंदे = प्रथम शिक्षा-व्रत में [लगे अतिचारों की] में निंदा करता हूँ

पढमे = प्रथम, सिक्खा = शिक्षा, वए = व्रत में

daṇḍammi aṇaṭṭhāe = by means of unnecessary [activities inviting] punishments

daṇḍammi = by means of punishments, aṇaṭṭhāe = unnecessary

taiaṃmi-guṇa-vvāe ninde = i censure [the violations committed] in third characteristic vow

taiaṃmi = in third

27.tivihe duppaṇihāṇe = three types of [mind-speech-action] ill-concentration [concentration in evil activities]

ti = three, duppaṇihāṇe = ill-concentration

aṇa-vatṭhāṇe tahā saī-vihūṇe = by doing in wrong way and due to forgetting

aṇavatṭhāṇe = by doing in wrong way, saīvihūṇe = due to forgetting

sāmāiya vitahakae = by means of violations in sāmāyika

sāmāiya = in sāmāyika, vitahakae = by means of violations

paḍhame sikkhā-vāe ninde = i censure [the violations committed in practice of] first educating vow

paḍhame = first, sikkhā = educating, vāe = in vow

२८. आणवणे पेसवणे = वस्तु को बाहर से मंगवाने से और बाहर भेजने से

आणवणे = बाहर से मंगवाने से, पेसवणे = बाहर भेजने से
सदे रूवे अ पुगल-क्खेवे = शब्द कर के, रूप दिखाकर या
पुद्गल [वस्तु] फेंककर अपनी उपस्थिति बताने से
सदे = शब्द कर के, रूवे = रूप दिखाकर, अ = या, पुगल
= पुद्गल, क्खेवे = फेंककर

देसावगासिअम्मि = देसावगासिक के

बीए सिक्खा-वए निदे = दूसरे शिक्षा व्रत में [लगे अतिचारों की] में
निंदा करता हूँ

२९. संथारुच्चार-विहि-पमाय = संथारा और उच्चार [विसर्जन] की
विधि में हुए प्रमाद के कारण

संथार = संथारा, उच्चार = उच्चार की, विहि = विधि में,

पमाय = हुए प्रमाद के कारण

तह चेव भोयणा-भोए = और इसी प्रकार भोजन आदि की चिंता के
कारण

चेव = इसी प्रकार, भोयण = भोजन आदि की, आभोए =
चिंता के कारण

28. āṇavaṇe pesavaṇe = by bringing in and sending out the goods

āṇavaṇe = by bringing in, pesavaṇe = by sending out

sadde rūve a puggala-kkheve = by showing his own presence felt by making
sound, showing appearance or by throwing some articles

sadde = by making sound, rūve = showing appearance, a = or, puggala
= some articles, kkheve = by throwing

desāvagāsiāmmi = of desāvagāśika

bīe sikkhā-vae nīde = i censure [the violations committed] in practice of
second educating vow

29. saṇthāruccāra-vihi-pamāya = by negligence committed in the process of
saṇthārā and excreting

saṇthāra = of saṇthārā, uccāra = excreting, vihi = in the process,

pamāya = by negligence committed

taha ceva bhoyaṇā-bhoe = and similarly due to the thoughts of meals etc.

ceva = similarly, bhoyaṇa = of meals etc., ābhoe = due to the thoughts

पोसह-विहि-विवरीए = पौषध की विधि में विपरीतता से

पोसह = पौषध की, विवरीए = विपरीतता से

तइए सिक्खा-वए निंदे = तीसरे शिक्षा व्रत में [लगे अतिचारों की]
में निंदा करता हूँ

३०. सचित्ते निक्खिवणे पिहिणे = सजीव वस्तु डालने [मिलाने] से
और सजीव वस्तु से ढांकने से [या उपर रखने से]

सचित्ते = सजीव वस्तु, निक्खिवणे = डालने से, पिहिणे =
ढांकने से

ववएस-मच्छरे चेव = इसी प्रकार बहाना और मत्सर [द्वेष] करने से
ववएस = बहाना, मच्छरे = मत्सर करने से

कालाइक्कम-दाणे = समय बीत जाने के बाद दान देने से

काल = समय, अइक्कम = बीत जाने के बाद, दाणे = दान
देने से

चउत्थे सिक्खा-वए निंदे = चौथे शिक्षा व्रत में [लगे अतिचारों की]
में निंदा करता हूँ

३१. सुहिएसु अ दुहिएसु = सुहित [ज्ञान, दर्शन, चारित्र में रत
अथवा वस्त्र, पात्रादि उपधि से सुखी] और दुःखी [रोग, तप
आदि के कारण अस्वस्थता अथवा उपधि की कमी से दुःखी]

posaha-vihi-vivarīe = by contrariety in the procedure of **pausaḍha**

posaha = of **pausaḍha**, vivarīe = by contrariety

taie sikkhā-vae ninde = i censure [the violations committed] in practice of
third educating vow

30. sacitte nikkhivane pihīne = by putting in [adding in] an animate thing and
by covering up with [or by keeping over] an animate thing

sacitte = animate thing, nikkhivane = by putting in, pihīne = by covering
up

vavaesa-macchare ceva = similarly by doing pretence and jealousy

vavaesa = by doing pretence, macchare = jealousy

kālā ikkama-dāṇe = by giving alms late after passing of proper time

kālā = proper time, aikkama = late after passing of, dāṇe = by giving
alms

cautthe sikkhā-vae ninde = i censure [the violations committed] in practice of
fourth educating vow

31. suhiesu a duhiesu = of happy [engrossed in pursuing jñāna, darśana
and cāritra or happy with requisites like clothes, pātras / wooden

utensils] and unhappy [sick due to disease, penance etc. or unhappy due

[साधुओं की]

सुहिएसु = सुहित, दुहिएसु = दुःखी

अ जा मे अस्संजएसु अणुकंपा = और मैंने अस्वयंत [अस्वच्छंद]

साधुओं की जो भक्ति की हो

जा = जो, अस्संजएसु = अस्वयंत साधुओं की, अणुकंपा = भक्ति की हो

रागेण व दोषेण व = राग से या द्वेष से

रागेण = राग से, दोषेण = द्वेष से

३२.साहसु संविभागो न कओ = साधुओं की कुछ भक्ति न की हो

साहसु = साधुओं की, संविभाग = कुछ भक्ति, न = न, कओ = की हो

तव-चरण-करण-जुत्तेसु = तप, चारित्र और क्रिया से युक्त

तव = तप, चरण = चारित्र, करण = क्रिया से, जुत्तेसु = युक्त

संते फासुअ-दाणे = देने योग्य अचित दान होने पर भी

संते = होने पर भी, फासुअ = अचित दान, दाणे = देने योग्य

३३.इहलोए परलोए = इस लोक, पर लोक की

to the shortage of requisites] [sādhus]

suhiesu = of happy, duhiesu = unhappy

a jā me assaṇṇjaesu aṇukampā = and devotion / service of non-self-regulated sādhus which i might have done

jā = which, assaṇṇjaesu = of non-self-regulated sādhus, aṇukampā = devotion might have done

rāgeṇa va doseṇa va = with attachment or malice

rāgeṇa = with attachment, doseṇa = malice

32.sāhūsu samvibhāgo na kao = some service of sādhus that might have not been performed

sāhūsu = of sādhus, samvibhāgo = some service, na = not, kao = might have been performed

tava-carāṇa-karaṇa-juttesu = observing penance, cāritra and kriyā [religious rites]

tava = penance, carāṇa = cāritra, karaṇa = kriyā, juttesu = observing

sante phāsua-dāṇe = even on having acita [inanimate] alms worth giving

sante = even on having, phāsua = acita alms, dāṇe = worth giving

33.ihaloe paraloe = of this world, of other world

इहलोए = इस लोक, परलोए = पर लोक की
जीविअ-मरणे अ = जीवन, मृत्यु की और [काम भोग की]
जीविअ = जीवन, मरणे = मृत्यु की
आसंस-पओगे = आकांक्षा [इच्छा] की प्रवृत्ति
आसंस = आकांक्षा की, पओगे = प्रवृत्ति
पंच-विहो अइआरो = पांच प्रकार के अतिचार
मा मज्झ हुज्ज मरणंते = मुझे मृत्यु के समय में न हों
मा = न, हुज्ज = हों, मरणंते = मृत्यु के समय में
३४.काएण = काया द्वारा
काइअस्स = काया से
वाइअस्स = वचन से
वायाए = वचन द्वारा
मणसा = मन द्वारा
माणसिअस्स = मन से
सव्वस्स वयाइआरस्स = सर्व व्रतों में लगे अतिचारों का
सव्वस्स = सर्व
३५.वंदण-वय-सिक्खा-गारवेसु = वंदन, व्रत, शिक्षा और गौरव [गर्व]
संबंधी

ihaloe = of this world, paraloe = of other world
jīvia-maraṇe a = of life, death and [of sexual pleasures]
jīvia = of life, maraṇe = death
āsansa-paoge = activities of desire
āsansa = of desire, paoge = activities
pañca-viho aiāro = five types of violations
mā majjha hujja maraṇante = let me not have at the time of death
mā = not, hujja = let have, maraṇante = at the time of death
34.kāeṇa = by the body
kāiassa = with body
vāiassa = with speech
vāyāe = by speech
maṇasā = by thoughts
māṇasiassa = with thoughts
savvassa vayāiārassa = of violations committed in all vows
savvassa = all
35.vandana-vaya-sikkhā-gāravesu = regarding obeisance, vow, education
and pride

वंदन = वंदन, सिक्खा = शिक्षा, गारवेसु = गौरव संबंधी
 सन्ना-कसाय-दंडेसु = संज्ञा [अभिलाषा], कषाय और दंड संबंधी
 सन्ना = संज्ञा, कसाय = कषाय, दंडेसु = दंड संबंधी
 गुत्तीसु अ समिईसु अ = गुप्ति और समितियों संबंधी
 गुत्तीसु = गुप्ति, समिईसु = समितियों संबंधी
 जो अइआरो अ = जो अतिचार लगे हों
 ३६.सम्मदिट्ठी जीवो = सम्यग्दृष्टि जीव
 जइ वि = यद्यपि
 हु = वास्तव में
 पावं समायरइ किंचि = थोड़ा पाप करता भी है
 पावं = पाप, समायरइ = करता भी है, किंचि = थोड़ा
 अप्पो सि होइ बंधो = उसे थोड़ा ही कर्म बंध होता है
 अप्पो = थोड़ा ही, सि = उसे, होइ = होता है, बंधो = कर्म
 बंध
 जेण न निद्धंधसं कुणइ = क्योंकि [वह पाप] निर्दयता पूर्वक नहीं
 करता है
 जेण = क्योंकि, निद्धंधसं = निर्दयता पूर्वक, कुणइ = करता है
 ३७.तं पि हु = उसको [उस पाप को] भी अवश्य

vandana = regarding obeisance, sikkhā = education, gāra_vesu = pride
 sannā-kasāya-da_ndesu = regarding sa_njñā [desire], ka_ṣāya and da_nḍa
 sannā = regarding sa_njñā, ka_ṣāya = ka_ṣāya, da_ndesu = da_nḍa
 guttisu a samiīsu a = regarding guptis and samitis
 guttisu = regarding guptis, samiīsu = samitis
 jo aiāro a = violations which are committed
 36.sammaddiṭṭhī jīvo = living being with right vision / faith
 jaivi = though
 hu = actually
 pāvam samāyarai kiñci = even commits some sin
 pāvam = sin, samāyarai = even commits, kiñci = some
 appo si hoi bandho = karma binds him only a little
 appo = only a little, si = him, hoi bandho = karma binds
 jeṇa na niddhamdhasam kuṇai = because [he] does not commit [sin]
 ruthlessly / whole-heartily
 jeṇa = because, niddhamdhasam = ruthlessly, kuṇai = commit
 37.ta_m pi hu = surely to them [the sins] also

तं = उसको, पि = भी, हु = अवश्य
 सपडिक्कमणं = प्रतिक्रमण करके
 सप्परिआवं = पश्चात्ताप करके
 सउत्तर-गुणं च = और उत्तर गुण सहित / प्रायश्चित्त करके
 स = सहित, उत्तर = उत्तर, गुणं = गुण
 खिप्पं उवसामेइ = शीघ्र उपशांत [नष्ट] करता है
 खिप्पं = शीघ्र, उवसामेइ = उपशांत करता है
 वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो = जैसे शिक्षित वैद्य व्याधि [रोग] को
 [नष्ट करता है]
 वाहि = व्याधि को, व्व = जैसे, सुसिक्खिओ = शिक्षित, विज्जो
 = वैद्य
 ३८. जहा विसं कुट्ठ-गयं = जैसे पेट में गये हुए विष को
 जहा = जैसे, विसं = विष को, कुट्ठ = पेट में, गयं = गये
 हुए
 मंत-मूल-विसारया विज्जा = मंत्र और मूल [जड़ी-बूटी] का
 जानकार वैद्य
 मंत = मंत्र, मूल = मूल का, विसारया = जानकार, विज्जा = वैद्य

tam = to them, pi = also, hu = surely
 sapaḍikkamaṇam = by performing pratikramaṇa
 sappariāvaṃ = by repenting
 sauttara-guṇam ca = and with latter virtues / by atoning
 sa = with, uttara = latter, guṇam = virtues
 khippam uvasāmei = pacifies [destroys] soon
 khippam = soon, uvasāmei = pacifies
 vāhi vva susikkhio vijjo = as a learned doctor [uproots] the disease
 vāhi = the disease, vva = as, susikkhio = a learned, vijjo = doctor
 38. jahā visam kutṭha-gayam = just as the poison having reached in the
 stomach
 jahā = just as, visam = the poison, kutṭha = in the stomach, gayam =
 having reached
 manta-mūla-visārayā vijjā = an expert doctor of hymns and roots [medicinal
 herbs]
 manta = of hymns, mūla = roots, visārayā = an expert, vijjā = doctor

हणति मंतेहिं = मंत्र से नष्ट करते हैं

हणति = नष्ट करते हैं, मंतेहिं = मंत्र से

तो तं हवइ निव्विसं = उससे वह निर्विष होता है

तो = उससे, तं = वह, हवइ = होता है, निव्विसं = निर्विष

३९. एवं अट्ठ-विहं कम्मं राग-दोस-समज्जिअं = इसी प्रकार राग और द्वेष से उपार्जित आठ प्रकार के कर्म को

एवं = इसी प्रकार, अट्ठ = आठ, विहं = प्रकार के, कम्मं = कर्म को, राग = राग, दोस = द्वेष से, समज्जिअं = उपार्जित

आलोअंतो अ निंदंतो = आलोचना और निंदा करता हुआ

आलोअंतो = आलोचना करता हुआ, निंदंतो = निंदा करता हुआ

खिप्पं हणइ सुसावओ = सुश्रावक शीघ्र नष्ट करता है

हणइ = नष्ट करता है, सुसावओ = सुश्रावक

४०. कय-पावो वि मणुस्सो = पाप किया हुआ मनुष्य भी

कय = किया हुआ, पावो = पाप, वि = भी, मणुस्सो = मनुष्य

आलोइअ निदिअ गुरु-सगासे = गुरु समक्ष आलोचना और निंदा करके

आलोइअ = आलोचना करके, निदिअ = निंदा करके, गुरु = गुरु, सगासे = समक्ष

haṇanti mantehim = destroys with hymns

haṇanti = destroys, mantehim = with hymns

to tam havai nivvisam = thus he become free from poison

to = thus, tam = he, havai = become, nivvisam = free from poison

39. evam atṭha-vihaṃ kammam rāga-dosa-samajjiam = similarly to the eight types of karmas accumulated with attachment and hatred

evam = similarly, atṭha = the eight, vihaṃ = types of, kammam = to karmas, rāga = with attachment, dosa = hatred, samajjiam = accumulated

āloanto a nindanto = by criticising and by censuring

āloanto = by criticising, nindanto = by censuring

khippam haṇai susāvao = worthy śrāvaka destroys soon

haṇai = destroys, susāvao = worthy śrāvaka

40. kaya-pāvo vi maṇusso = even the man having committed the sins

kaya = having committed, pāvo = the sins, vi = even, maṇusso = the man

āloia nindia guru-sagāse = by criticising and censuring before the guru

āloia = by criticising, nindia = censuring, guru = the guru, sagāse = before

होइ अइरेग-लहुओ = बहुत हलका होता है [पाप के भार से मुक्त होता है]

होइ = होता है, अइरेग = बहुत, लहुओ = हलका
ओहरिअ-भरुव्व भारवहो = भार उतारे हुए भारवाहक की तरह
ओहरिअ = उतारे हुए, भरु = भार, व्व = की तरह, भारवहो = भारवाहक

४१. आवस्सएण एएण = इन आवश्यकों द्वारा
आवस्सएण = आवश्यकों, एएण = इन द्वारा
सावओ जइवि बहुरओ होइ = यद्यपि श्रावक बहुत रज [कर्म] वाला होता है
सावओ = श्रावक, जइवि = यद्यपि, बहु = बहुत, रओ = रज वाला

दुक्खाणमंत-किरिअं = दुःखों का अंत
दुक्खाणं = दुःखों का, अंतकिरिअं = अंत
काही अचिरेण कालेण = थोड़े समय में करता है
काही = करता है, अचिरेण = थोड़े, कालेण = समय में
४२. आलोयणा बहुविहा = आलोचना बहुत प्रकार की है
आलोयणा = आलोचना, विहा = प्रकार की है

hoi airega-lahuo = becomes very light [becomes free from the burden of sins]

hoi = becomes, airega = very, lahuo = light
oharia-bharuvva bhāravaho = like a load-carrier unloading the burden
oharia = unloading, bharu = the burden, vva = like, bhāravaho = a load carrier

41. āvassaena eeṇa = by these āvaśyakas [necessary rites]
āvassaena = āvaśyakas, eeṇa = by these
sāvao jaivi bahurao hoi = though the śrāvaka will be a victim of too much particles of dust [too many karmas]
sāvao = the śrāvaka, jaivi = though, bahu = too much, rao = particles of dust

dukkhāṇamanta-kiriāṃ = an end of miseries
dukkhāṇaṃ = of miseries, antakiriāṃ = an end
kāhī acireṇa kāleṇa = brings about in a short time
kāhī = brings about, acireṇa = in a short, kāleṇa = time
42. āloyaṇā bahu-vihā = criticism is of many types
āloyaṇā = criticism, bahuvihā = is of many types

न य संभरिआ पडिक्कमण-काले = और प्रतिक्रमण के समय [जो अतिचार] याद न आये हों

य = और, संभरिआ = याद आये हों, पडिक्कमण = प्रतिक्रमण के, काले = समय

मूल-गुण उत्तर-गुणे = मूल-गुण [अणु-व्रत] और उत्तर-गुण [गुण-व्रत और शिक्षा-व्रत] संबंधी

मूल = मूल, गुण = गुण, उत्तर = उत्तर, गुणे = गुण संबंधी

४३. तस्स धम्मस्स = उस [श्रावक] धर्म की

तस्स = उस, धम्मस्स = धर्म की

केवलि-पन्नत्तस्स = केवलि भगवंत द्वारा प्ररूपित

केवलि = केवलि भगवंत द्वारा, पन्नत्तस्स = प्ररूपित

अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए = मैं आराधना [पालन] के लिये

उपस्थित [तत्पर] हूँ

अब्भुट्ठिओ = उपस्थित हूँ, मि = मैं, आराहणाए = आराधना के लिये

विरओ मि विराहणाए = मैं विराधनाओं से विराम पाता [निवृत्त होता] हूँ

na ya sambhariā paḍikkamaṇa-kāle = and [the violations which] might not have been remembered at the time of pratikramaṇa

ya = and, sambhariā = might have been remembered, paḍikkamaṇa = of pratikramaṇa, kāle = at the time

mūla-guṇa uttara-guṇe = regarding basic virtues [minor vows] and supporting virtues [characteristic vows and educational vows]

mūla = regarding basic, guṇa = virtues, uttara = supporting, guṇe = virtues

43. tassa dhammassa = of that [śrāvaka] dharma

tassa = that, dhammassa = of dharma

kevali-pannattassa = disclosed by the kevalī bhagavanta

kevali = by the kevalī bhagavanta, pannattassa = disclosed

abbhuṭṭhio mi ārahaṇāe = i am present [ready] to adore [observe]

abbhuṭṭhio = am present, mi = i, ārahaṇāe = to adore

virao mi virāhaṇāe = i halt [retire] from the violations

विराओ = विराम पाता हूँ, विराहणाए = विराधनाओं से
तिविहेण पडिक्कंतो = तीन प्रकार [मन-वचन-काया] से प्रतिक्रमण
करते हुए

पडिक्कंतो = प्रतिक्रमण करते हुए

वंदामि जिणे चउव्वीसं = चौबीस जिनेश्वरों को मैं वंदन करता हूँ
वंदामि = मैं वंदन करता हूँ, जिणे = जिनेश्वरों को, चउव्वीसं
= चौबीस

४४. जावन्ति चेइआइं = जितने जिन बिंब

उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ = उर्ध्व लोक [स्वर्ग], अधोलोक
[नरकभूमि / पाताल] और तिर्यग् / मध्य [मनुष्य] लोक में

सव्वाइं ताइं वंदे = उन सबको मैं वंदन करता हूँ

इह संतो = यहां रहा हुआ

तत्थ संताइं = वहां रही हुई

[देखें सूत्र नं. १४]

४५. जावन्त के वि साहू = जितने कोई भी साधु

भरहेरवय-महाविदेहे अ = भरत, ऐरावत और महाविदेह क्षेत्र में

सव्वेसिं तेसिं पणओ = उन सबको मैं प्रणाम करता हूँ

virao = halt, virāhaṇāe = from the violations

tivihena paḍikkanto = performing the pratikramaṇa in three ways [by
thoughts, words and actions]

paḍikkanto = performing the pratikramaṇa

vandāmi jiṇe cauvvīsaṃ = i obeisance to twenty four jineśvaras

vandāmi = i obeisance, jiṇe = to jineśvaras, cauvvīsaṃ = twenty four

44. jāvanti ceīāim = as many as jina idols

uddhe a ahe a tiria loe a = in upper world [heaven], lower world [nether
world / hell] and central world [world of human beings]

savvāim tāim vande = i am obeisancing to all of them

iha santo = being here

tattha santāim = present there

[Refer sūtra no. 14]

45. jāvanta ke vi sāhū = as many as any of the sādhus

bharaheravaya-mahāvidehe a = in bharata, airāvata and mahāvideha
regions

savvesim tesim paṇao = i am obeisancing to all of them

तिविहेण = तीन प्रकार से

तिदंड-विरयाणं = तीन प्रकार के दंड से निवृत्त

[देखें सूत्र नं. १५]

४६. चिर-संचिअ-पाव-पणासणीइ = चिर काल से संचित पाप को नाश करने वाली

चिर = चिर काल से, संचिअ = संचित, पाव = पाप को,

पणासणीइ = नाश करने वाली

भव-सय-सहस्स महणीए = लाखों भवों का मंथन [नाश] करने वाली

भव = भवों का, सयसहस्स = लाखों, महणीए = मंथन करने वाली

चउवीस-जिण-विणिग्गय-कहाइ = चौबीस जिनेश्वरों के मुख से प्रगटित धर्म कथाओं से

चउवीस = चौबीस, जिण = जिनेश्वरों के, विणिग्गय = मुख से प्रगटित, कहाइ = धर्म कथाओं से

वोलंतु मे दिअहा = मेरे दिन व्यतीत हों

वोलंतु = व्यतीत हों, दिअहा = दिन

४७. मम मंगलं = मुझे मंगल रूप हों

मम = मुझे, मंगलं = मंगल रूप हों

अरिहंता सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ = अरिहंत, सिद्ध और साधु,

tivihēṇa = by three ways

tidanda-virayāṇaṃ = free from three types of punishment

[Refer sūtra no. 15]

46. cira-sañcia-pāva-paṇāsaṇīi = destroying the sins accumulated since a long period / times immemorial

cira = since a long period, sañcia = accumulated, pāva = the sins,

paṇāsaṇīi = destroying

bhava-saya-sahassa-mahaṇīe = churning [destroying] lacs of life cycles

bhava = of life cycles, sayasahassa = lacs, mahaṇīe = churning

cauvisa-jīṇa-viṇiggaya-kaḥāi = with the religious moral stories revealed from the mouth of twenty four jīṇesvaras

cauvisa = twenty four, jīṇa = of jīṇesvaras, viṇiggaya = revealed from the mouth, kaḥāi = with the religious moral stories

volantu me diahā = let my days pass

volantu = let pass, diahā = days

47. mama maṅgalaṃ = be auspicious to me

mama = to me, maṅgalaṃ = be auspicious

arihaṇtā siddhā sāhū suam ca dhammo a = arihaṇta, siddha and sādhū,

श्रुत ज्ञान और [चारित्र] धर्म

अरिहंता = अरिहंत, सिद्धा = सिद्ध, साहू = साधु, सुअं =

श्रुत ज्ञान, धम्मो = धर्म

सम्म-दिट्ठी देवा = सम्यग्दृष्टि देव

सम्म = सम्यग्, दिट्ठी = दृष्टि, देवा = देव

दिंतु समाहिं च बोहिं च = समाधि और बोधि प्रदान करें

दिंतु = प्रदान करें, समाहिं = समाधि, बोहिं = बोधि

४८. पडिसिद्धाणं करणे = निषिद्ध कार्य करने से

पडिसिद्धाणं = निषिद्ध कार्य

किच्चाण-मकरणे = करने योग्य कार्य न करने से

किच्चाणं = करने योग्य कार्य, अकरणे = न करने से

पडिक्कमणं = प्रतिक्रमण [करना आवश्यक है]

असदहणे अ तहा = और वैसे ही [जिन वचनों में] अश्रद्धा

असदहणे = अश्रद्धा

विवरीअ-परुवणाए अ = और विपरीत प्ररूपणा के कारण

विवरीअ = विपरीत, परुवणाए = प्ररूपणा के कारण

४९. खामेमि सव्व-जीवे = सर्व जीवों को मैं क्षमा करता हूँ

śruta jñāna and [cāritra] dharma

arihaṇtā = arihaṇta, siddhā = siddha, sāhū = sādhu, suam = śruta

jñāna, dhammo = dharma

samma-ddiṭṭhī devā = gods with right vision / faith

samma = right, ddiṭṭhī = with vision, devā = gods

dintu samāhim ca bohim ca = shall bestow trance and bodhi [seed of salvation]

dintu = shall bestow, samāhim = trance, bohim = bodhi

48. paḍisiddhāṇaṃ karaṇe = by doing forbidden deeds

paḍisiddhāṇaṃ = forbidden deeds

kiccāṇa-makarāṇe = by not doing the deeds worth doing

kiccāṇaṃ = the deeds worth doing, akarāṇe = by not doing

paḍikkamaṇaṃ = [doing] pratikramaṇa [is necessary]

asaddahaṇe a tahā = and similarly lack of faith [in the teachings of jina]

asaddahaṇe = lack of faith

vivariā-parūvaṇāe a = and due to contrary disclosures / wrong teachings

vivariā = contrary, parūvaṇāe = due to disclosures

49. khāmemi sava-jīve = i forgive all living beings

खामेमि = मैं क्षमा करता हूँ, सव्व = सर्व, जीवे = जीवों
सव्वे जीवा खमंतु मे = सर्व जीव मुझे क्षमा करें

सव्वे = सर्व, जीवा = जीव, खमंतु = क्षमा करें, मे = मुझे
मिती मे सव्व-भूएसु = सर्व जीवों के साथ मेरी मैत्री है

मिती = मैत्री है, मे = मेरी, सव्व = सर्व, भूएसु = जीवों के
साथ

वेरं मज्झ न केणइ = मेरा किसी के साथ वैर नहीं है

वेरं = वैर, मज्झ = मेरा, न = नहीं है, केणइ = किसी के साथ

५०. एवमहं = इस तरह

आलोइअ निदिअ-गरहिअ-दुगंछिअं सम्मं = सम्यक् प्रकार से

आलोचना, निंदा, गर्हा और दुगंछा [अरुचि व्यक्त] करके

गरहिअ = गर्हा, दुगंछिअं = दुगंछा करके, सम्मं = सम्यक्
प्रकार से

गाथार्थ :-

सर्व सिद्ध भगवंत, धर्माचार्य और सर्व साधुओं को वंदन कर के श्रावक
के धर्म में लगे अतिचारों का मैं प्रतिक्रमण करना चाहता हूँ, १

khāmemi = i forgive, savva = all, jīve = living beings

savve jīvā khamantu me = all living beings may forgive me

savve = all, jīvā = living beings, khamantu = may forgive, me = me

mitti me savva-bhūesu = my friendly relations are with all living beings

mitti = friendly relations are, me = my, savva = all, bhūesu = with living
beings

veram majjha na keṇai = i have no enmity with any one

veram = enmity, majjha = i, na = have no, keṇai = with any one

50. evamaham = in this way

āloia nindia-garahia-dugañchiam sammam = by criticising, censuring,
condemning and strongly disapproving in right manner

garahia = condemning, dugañchiam = strongly disapproving, sammam =
in right manner

Stanzaic meaning :-

Obeisancing to all **siddha bhagavantas**, religious preceptors and all **sādhus**, i
wish to perform the **pratikramaṇa** for the violations committed in **śrāvaka**
dharma. 1.

छोटे या बड़े, जो अतिचार मुझे व्रत तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि में लगे हों, उनकी मैं निंदा करता हूँ और गर्हा करता हूँ. २
दो प्रकार के परिग्रह के कारण और अनेक प्रकार के पापमय कार्य करने और कराने से दिन में लगे सर्व पापों का मैं प्रतिक्रमण करता हूँ. ३

इंद्रिय, चार प्रकार के अप्रशस्त कषाय और राग या द्वेष से जो [अशुभ कर्म] बंधे हों, उनकी मैं निंदा करता हूँ और गर्हा करता हूँ. ४
आने से, जाने से, खड़े रहने से, फिरने से, भूल जाने से, [किसी के] दबाव से और बंधन के कारण दिन में लगे सर्व [अतिचारों] का मैं प्रतिक्रमण करता हूँ. ५

शंका, आकांक्षा, विचिकित्सा, कुलिंगियों की प्रशंसा और परिचय-सम्यक्त्व के [इन पांच] अतिचारों से दिन में लगे सर्व [पापों] का मैं प्रतिक्रमण करता हूँ. ६

छः काय के जीवों की विराधना से और अपने लिये, दूसरों के लिये या दोनों के लिये पकाने से या पकवाने से जो दोष [लगे हों], उनकी मैं निंदा करता हूँ. ७

पाँच अणु-व्रत, तीन गुण व्रत और चार शिक्षा व्रत संबंधी दिन में लगे सर्व [अतिचारों] का मैं प्रतिक्रमण करता हूँ. ८

Small or big, violations which are committed by me in vows and in jñāna, darśana, cāritra etc., I censure them and I condemn them. 2.

I perform pratikramaṇa of all the sins committed during the day due to two types of possessiveness and by doing and causing to do many types of sinful activities. 3.

[Evil karmas] which are bonded by sense organs, by four types of improper kaṣāyas and by attachment or by hatred, I censure them and I condemn them. 4.

I perform pratikramaṇa of all [the violations] committed during the day while coming, while going, while standing, while moving about, by forgetting, under pressure [of any one] and due to bondage. 5.

I perform pratikramaṇa of all [the sins] committed during the day by doubt, desire, dislike, praise and acquaintance with believers in false doctrines-- [these five] violations of right faith. 6.

The faults which [are committed] by injuring the living beings of six forms and by cooking, by getting cooked for himself, for others or for both together, I censure them. 7.

I perform pratikramaṇa of all [the violations] committed during the day regarding five minor vows, three characteristic vows and four educational vows. 8.

प्रथम अणु-व्रत में स्थूल प्राणातिपात से निवृत्ति में अप्रशस्त भाव और प्रमाद के कारण यहां लगे अतिचारों का [मैं प्रतिक्रमण करता हूँ]. ९ मारने से, बांधने से, अंगोपांग को छेदने से, अधिक बोझ लादने से और आहार-पानी का विच्छेद करने से दिन में प्रथम व्रत में लगे सर्व अतिचारों का मैं प्रतिक्रमण करता हूँ. १०

दूसरे अणु-व्रत में स्थूल मृषावाद से निवृत्ति में अप्रशस्त भाव और प्रमाद के कारण यहाँ लगे अतिचारों का [मैं प्रतिक्रमण करता हूँ]. ११

सहस्राभ्याख्यान से, रहस्याभ्याख्यान से, स्व-दारा मंत्र भेद से, मिथ्या उपदेश से और झूठे लेख लिखने से दूसरे व्रते में दिन में लगे सर्व अतिचारों का मैं प्रतिक्रमण करता हूँ. १२

तीसरे अणु-व्रत में स्थूल पर-द्रव्य हरण से निवृत्ति में अप्रशस्त भाव और प्रमाद के कारण यहां लगे अतिचारों का [मैं प्रतिक्रमण करता हूँ]. १३

चोर द्वारा लायी वस्तु को रखने से, चोर को प्रोत्साहक वचन बोलने से, नकली माल बेचने से, राज्य विरुद्ध कार्य करने से, गलत तोलने से और गलत मापने से दिन में लगे सर्व [अतिचारों] का मैं प्रतिक्रमण

[I perform **pratikramaṇa**] of the violations committed here in first minor vow of ceasing from partial violence due to undesirable feelings and carelessness.9.

I perform **pratikramaṇa** of all the violations committed during the day in the first vow by beating, by tying, by mutilation of limbs, by loading too much of burden and by depriving of food and water. 10.

[I perform **pratikramaṇa**] of the violations committed here in second minor vow of ceasing from partial untrue speaking due to improper feelings and negligence. 11.

I perform **pratikramaṇa** of the all violations committed during the day in second vow by accusing without fore thought, by speaking out secrets of any other arbitrarily, by giving out secrets of his own wife, by misguiding and by forging documents. 12.

[I perform **pratikramaṇa**] of the violations committed here in third minor vow of ceasing from partial theft of property of others due to undesirable feelings and negligence. 13.

I perform **pratikramaṇa** of [all the violations committed] during the day by keeping articles brought by a thief, by speaking words of encouragement to a thief, by selling duplicate goods, by doing acts against the state, by false weighing and

करता हूँ. १४
 चौथे अणु-व्रत में नित्य पर-स्त्री गमन से निवृत्ति में अप्रशस्त भाव और प्रमाद के कारण यहां लगे अतिचारों का [मैं प्रतिक्रमण करता हूँ]. १५
 अविवाहिता के साथ गमन करने से, अल्प समय के लिये रखी स्त्री के साथ गमन करने से, काम वासना जाग्रत करने वाली क्रियाओं से, दूसरों के विवाह कराने से और विषय भोग में तीव्र अनुराग रखने से दिन में चौथे व्रत में लगे सर्व अतिचारों का मैं प्रतिक्रमण करता हूँ. १६
 अब पांचवें अणु-व्रत में परिग्रह के परिमाण में अप्रशस्त भाव और प्रमाद के कारण यहां लगे अतिचारों का [मैं प्रतिक्रमण करता हूँ]. १७
 धन, धान्य, जमीन, मकान, चांदी, सोना, अन्य धातु, द्विपद और चतुष्पद के परिमाण में दिन में लगे सर्व [अतिचारों] का मैं प्रतिक्रमण करता हूँ. १८
 ऊर्ध्व, अधो और तिर्यग् दिशाओं में गमन के परिमाण में वृद्धि होने से और विस्मृति होने से प्रथम गुण व्रत में [लगे अतिचारों की] मैं निंदा करता हूँ. १९
 मद्य, मांस, पुष्प, फल, गंध और माला के उपभोग और परिभोग करने से दूसरे गुण व्रत में [लगे अतिचारों की] मैं निंदा करता हूँ. २०

by false measuring. 14.
 I perform **pratikramaṇa** of the violations committed here in fourth minor vow of ceasing from frequent sexual relations with other women due to undesirable feelings and negligence. 15.
 [I perform **pratikramaṇa**] of all the violations committed during the day in forth vow by having sexual relations with unmarried, by having sexual relations with women kept for a short period, by activities inciting sexual desire, by performing marriages of others and by holding strong desire in sexual pleasures. 16.
 [I perform **pratikramaṇa**] of the violations committed here in fifth minor vow of limitations of possessions due to undesirable feelings and negligence. 17.
 I perform **pratikramaṇa** of all [the violations] committed during the day in the limitations of wealth, food grains, lands, buildings, silver, gold, other metals, two-legged and four legged living beings. 18.
 I censure [the violations committed] in first characteristic vow by increasing and by forgetting the restrictions in movement in upper, lower and oblique directions. 19.
 I censure [the violations committed] in second characteristic vow by consuming and reconsuming wine, meat, flowers, fruits, scent and garlands. 20.

सचित्त, [सचित्त से] संलग्न, अपक्व, अर्धपक्व आहार और तुच्छ वनस्पति के भक्षण से दिन में लगे सर्व [अतिचारों का] मैं **प्रतिक्रमण** करता हूँ. २१

अंगार, वन, शाटक, भाटक, विस्फोटक कार्य; और इसी प्रकार दंत, लाख, रस, केश और विष संबंधी व्यापार त्यागने योग्य हैं. २२

वस्तुतः इसी प्रकार यंत्र द्वारा पीसने का, निर्माण करने का, आग लगाने का, सरोवर, स्रोत, तालाब सुखाने का और असती पोषण का कार्य त्यागने योग्य हैं. २३

शस्त्र, अग्नि, मूसल, चक्की, तृण, काष्ठ, मंत्र, मूल और औषधि को देने से या दिलाने से दिन में लगे सर्व [अतिचारों] का मैं **प्रतिक्रमण** करता हूँ. २४

स्नान, उद्धर्तन, रंगाई, विलेपन, शब्द, रूप, रस, गंध, वस्त्र, आसन और आभरण के विषय में दिन में लगे सर्व [अतिचारों] का मैं **प्रतिक्रमण** करता हूँ. २५

काम विकार, अधम चेष्टाओं के कारण, वाचालता, हिंसक साधनों को तैयार रखने और भोग की अतिरेकता के कारण अनर्थ दंड द्वारा तीसरे गुण व्रत में [लगे अतिचारों की] मैं निंदा करता हूँ. २६

I perform **pratikramaṇa** of all [the violations] committed during the day by eating animate, joint [with animate], uncooked, semi-cooked food and stuffless vegetables. 21.

Works of fire, forest, vehicles, transportation, explosives; similarly businesses concerning teeth, wax, juice, hair and poisons are worth giving up. 22.

In the same way works of grinding by machines, castration, setting fire, drying up lakes, streams, ponds and evil feedings are actually worth giving up. .. 23.

I perform **pratikramaṇa** of all [the violations] committed during the day by giving or making to give arms, fire, pestle, grinding machine, grass, wood, hymn, roots and medicines. 24.

I perform **pratikramaṇa** of all [the violations] committed during the day regarding bathing, rubbing, colouring, anointing, words, form, taste, scent, clothes, seat and ornaments. 25.

I censure [the violations committed] in third characteristic vow by means of unnecessary [activities inviting] punishments due to sexual desires, bad sexy gestures, talkativeness, keeping violent equipments ready for use and too much of enjoyment. 26.

तीन प्रकार के दुष्प्रणिधान, अविधि पूर्वक करने और विस्मृति के कारण सामायिक की विराधना द्वारा प्रथम शिक्षा व्रत में [लगे अतिचारों की] मैं निंदा करता हूँ..... २७

वस्तु को बाहर से मंगवाने से और बाहर भेजने से, शब्द करके, रूप दिखाकर या वस्तु फेंककर अपनी उपस्थिति बताने से देसावगाशिक के दूसरे शिक्षा व्रत में [लगे अतिचारों की] मैं निंदा करता हूँ.... २८

संथारा और विसर्जन की विधि में हुए प्रमाद से और इसी प्रकार भोजन आदि की चिंता के कारण पौषध की विधि में विपरीतता से तीसरे शिक्षा व्रत में [लगे अतिचारों की] मैं निंदा करता हूँ..... २९

संचित वस्तु डालने, ढंकने से, बहाना, इर्ष्या करने से और समय बीत जाने के बाद दान देने से चौथे शिक्षा व्रत में [लगे अतिचारों की] मैं निंदा करता हूँ..... ३०

सुखी, दुःखी और अस्वयंत साधुओं की जो भक्ति राग से या द्वेष से की हो, मैं उसकी [मेरे उन दुष्कर्म की] निंदा करता हूँ, और मैं उसकी गर्हा करता हूँ..... ३१

देने योग्य अचित्त दान होने पर भी, तप, चारित्र और क्रिया से युक्त

I censure [the violations committed in practice of] first educating vow by means of violations in **sāmāyika** due to three types of ill-concentration, by doing in wrong way and due to forgetting..... 27.

I censure [the violations committed in practice of] second educating vow of **deśāvagāśika** by bringing in and sending out the goods, by making his own presence felt by making sound, showing appearance or by throwing some article..... 28.

I censure [the violations committed in practice of] third educating vow by contrariety in the procedure of **pausaḍha** by negligence committed in the process of **santhārā** and excreting and similarly due to the thoughts of meals etc..... 29.

I censure [the violations committed in practice of] fourth educating vow by putting in, covering up with an animate things, by doing pretext, jealousy and by giving alms late after passing of proper time..... 30.

Service to happy, unhappy and non self-regulated **sādhus** which I might have done with attachment or malice, I censure them, I condemn them [those misdeeds of mine]..... 31.

Some service of **sādhus** observing penance, **cāritra** and **kriyā** that might have

साधुओं की कुछ भक्ति न की हों, मैं उसकी [मेरे उन दुष्कर्मों की] निंदा करता हूँ और मैं उसकी गद्दी करता हूँ. ३२
 पांच प्रकार के अतिचार— इस लोक, परलोक, जीवन, मृत्यु और [काम-भोग की इच्छा] की प्रवृत्ति मुझे मृत्यु के समय न हों. ३३
 [अशुभ] काया, वचन और मन [योग] द्वारा सर्व व्रतों में लगे अतिचारों का [शुभ] काया, वचन और मन [योग] से मैं प्रतिक्रमण करता हूँ. ३४
 वंदन, व्रत, शिक्षा, गौरव, संज्ञा, कषाय, दंड, गुप्ति और समितियों संबंधी जो अतिचार लगे हों, उनकी मैं निंदा करता हूँ. ३५
 सम्यग्दृष्टि जीव यद्यपि वास्तव में थोड़ा पाप करता भी है [तो] उसे थोड़ा ही कर्म बंध होता है क्योंकि [वह पाप] निर्दयता पूर्वक नहीं करता है. ३६
 प्रतिक्रमण करके, पश्चात्ताप करके और प्रायश्चित्त करके उसको [उस पाप को] भी अवश्य ही [वह / सम्यग्दृष्टि जीव] शीघ्र नष्ट करता है जैसे शिक्षित वैद्य रोग को [नष्ट करता है]. ३७
 जैसे पेट में गये हुए जहर को मंत्र और मूल का जानकर वैद्य मंत्र द्वारा नष्ट करता है और उससे वह निर्विष हो जाता है... ३८
 ...इसी प्रकार राग और द्वेष द्वारा उपार्जित आठ प्रकार के कर्म को

not been performed even on having **acita** alms worth giving, I censure them and I condemn them [those misdeeds of mine]. 32.
 Let me not have at the time of death, the five types of violations-- activities of desire of this world, other world, life, death and [sexual pleasures]. 33.
 I perform **pratikramaṇa** of violations committed in all vows by [evil activities of] body, speech and thoughts with [good activities of] body, speech and thoughts. 34.
 violations which are committed regarding obeisance, vow, education, pride, **saññā, kaṣāya, daṇḍa, gupti** and **samitis**, I censure them. 35.
 Though a living being with right vision actually commits some sin, [then] only a little **karma** binds him because [he] does not commit [sin] ruthlessly. 36.
 [He / the living being with right vision] surely destroys them [those sins] also soon by performing **pratikramaṇa**, by repenting and by atoning just as a learned doctor [destroys] the disease. 37.
 Just as an expert of hymn and roots destroys the poison having reached into the stomach by the hymns and he becomes free from poison by this... 38.
 ...similarly a worthy **śrāvaka** soon destroys by criticising and censuring eight

आलोचना और निंदा करके सुश्रावक शीघ्र नष्ट कर देता है. ३९
 भार उतारे हुए भार वाहक की तरह पाप किया हुआ मनुष्य भी गुरु समक्ष
 आलोचना और निंदा करके बहुत हल्का होता है. ४०
 यद्यपि श्रावक बहुत कर्मवाला होता है, [फिर भी वह] इन आवश्यकों
 द्वारा दुःखों का अंत थोड़े समय में करता है. ४१

मूल गुण और उत्तर गुण संबंधी आलोचना बहुत प्रकार की है. और
 प्रतिक्रमण के समय [जो अतिचार] याद न आये हों, उनकी [उन
 अतिचारों की] मैं निंदा करता हूँ और गर्हा करता हूँ. ४२
 केवली भगवंत द्वारा प्ररूपित उस धर्म की आराधना के लिये मैं तत्पर
 हूँ और विराधनाओं से मैं निवृत्त होता हूँ. तीन प्रकार से प्रतिक्रमण करते
 हुए मैं चौबीस जिनेश्वरों को वंदन करता हूँ. ४३
 ऊर्ध्व लोक, अधो लोक और तिर्यग् लोक में जितनी जिन प्रतिमाएं हैं,
 यहां रहा हुआ मैं, वहां रही हुई उन सब [प्रतिमाओं] को वंदन करता
 हूँ. ४४
 भरत, ऐरावत और महाविदेह क्षेत्र में जितने कोई भी साधु तीन प्रकार
 से, तीन दंड से निवृत्त हैं, उन सबको मैं प्रणाम करता हूँ. ४५

types of **karmas** acquired by attachment and hatred. 39.
 Even the man having committed the sins becomes very light by criticising and
 censuring before the guru like a load carrier unloading the burden. 40.
 Though the **śrāvaka** will be a victim of too many **karmas**, [even then he] brings
 about an end of miseries in a short time by these **āvaśyakas** [necessary religious
 rites]. 41.
 Criticism regarding basic virtues and supporting virtues is of many types. And
 [the violations which] might not have been remembered at the time of
pratikramaṇa, I censure them [those violations] and I condemn them. 42.
 I am ready to adore that **dharma** disclosed by the **kevalī bhagavanta** and I retire
 from violations. I obeisance to twenty four **jineśvaras** performing **pratikramaṇa**
 in three ways. 43.
 As many as **jina** idols are present in upper world, nether world and human world,
 being here, I am obeisancing to all of them [those idols] present there. 44.
 As many as any of the **sādhus**, free from three types of punishment in three ways,
 present in **bharata**, **airāvata** and **mahāvideha** region, I am obeisancing to all
 of them. 45.

चिर काल से संचित पाप को नष्ट करने वाली और लाखों भव को नष्ट करने वाली चौबीस जिनेश्वरों के मुख से कथित कथाओं से मेरे दिन व्यतीत हों.....४६

अरिहंत, सिद्ध, साधु, श्रुत ज्ञान और चारित्र धर्म मुझे मंगल रूप हो और सम्यग्दृष्टि देव समाधि और बोधि प्रदान करें.....४७

निषिद्ध कार्य करने से, करने योग्य कार्य न करने से, [जिन वचनों में] अश्रद्धा से और विपरीत प्ररूपणा के कारण प्रतिक्रमण [करना आवश्यक है].....४८

सर्व जीवों को मैं क्षमा करता हूँ. सर्व जीव मुझे क्षमा करें. सर्व जीवों के साथ मेरी मैत्री है. मेरा किसी के साथ वैर नहीं है.....४९

इस तरह सम्यक् प्रकार से आलोचना, निंदा, गर्हा और अरुचि व्यक्त करके, तीन प्रकार से [मन-वचन-काया से] प्रतिक्रमण करते हुए चौबीस जिनेश्वरों को मैं वंदन करता हूँ.....५०

विशेषार्थ :-

३. दो प्रकार के परिग्रह :-

१. बाह्य परिग्रह- धन-धान्य आदि.

२. आभ्यंतर परिग्रह- मिथ्यात्व, तीन वेद [पुरुष, स्त्री, नपुंसक वेद],

Let my days pass with the religious stories / illustrations revealed from the mouth of twenty four **jineśvaras** destroying the sins accumulated since times immemorial and destroying lacs of life cycles. 46.

arihaṇta, **siddha**, **sādhū**, **śruta jñāna** and **cāritra dharma** be auspicious to me. And gods with right vision shall bestow trance and **bodhi**. 47.

[Doing] **pratikramaṇa** [is necessary] because of doing forbidden deeds, not doing deeds worth doing, lack of faith [in the teachings of **jina**] and wrong teachings. 48.

I forgive all living beings. All living beings may forgive me. My friendly relations are with all living beings. I have no enmity with any one. 49.

In this manner, by criticising, censuring, condemning and strongly disapproving in right way, I obeisance twenty four **jineśvaras** performing **pratikramaṇa** in three manners [by thought, words and deeds]. 50.

Specific meaning :-

3. Two types of possessiveness :-

1. External possessiveness- Wealth, food grains etc.

2. Internal possessiveness- **mithyāṭva**, three types of sexual inclination

चार कषाय और हास्य आदि छः

[inclination towards male, female and eunuch], four **kaṣāya** and six **hāsyā** etc.

४. अप्रशस्त = न इच्छने योग्य और न आदरने योग्य.

4. **apraśasta** = Undesirable and not worth doing

राग = जीव द्वारा कर्मों में रंग जाना या विषय सुख में आसक्त हो जाना.

rāga = The soul colouring in **karmas** or fascinating in sensual pleasures.

द्वेष = अप्रीति, मात्सर्य को धारण करना.

dveṣa = To hold dislike and jealousy.

६. कुलिङ्ग = मोक्ष प्राप्ति में बाधक आचार वाला धर्म.

6. **kuliṅga** = **dharma** with code of conducts abstracting attainment of salvation.

९. अप्रशस्त भाव = क्रोध आदि के भाव उत्पन्न होने से मन अनियंत्रित हो जाना.

9. **apraśasta bhāva** = Undesirable feelings / mind going out of control due to rise of anger etc.

२०. उपभोग = एक ही बार उपयोग में आने वाली वस्तु का उपयोग करना.

20. **upabhoga** = To use a thing useful for only one time.

परिभोग = बार बार उपयोग में आने वाली वस्तु का उपयोग करना.

paribhoga = To use a thing useful for several times.

२१. तुच्छ औषधि- खाने योग्य कम और न खाने योग्य अधिक भाग वाली वनस्पतियाँ.

21. **tuccha auṣadhi** [**stuffless medicines / trivial herbs**]- Vegetation having little part worth eating and more part worth not eating.

२४. शस्त्र- प्राणियों की हिंसा में उपयोगी साधन.

24. **śastra** [**arms**] = Instrument useful in causing injury to living beings.

२५. आसन = बैठने के उपयोग में आने वाला ऊनी आदि कपड़े का टुकड़ा.

25. **āsana** = A piece of cloth like woollen used for sitting.

२६. अहिगरण / अधिकरण = आत्मा को दुर्गति का अधिकारी बनाने वाले साधनों के तैयार रखना.

26. **ahigaraṇa / adhikaraṇa** = To keep the equipments [violent instruments] ready which makes the soul to move in evil state.

२९. संथारा = सोने के लिये बिछाया जाने वाला ऊन आदि का कपड़ा.

29. **santhārā** = A cloth like woollen spread while sleeping.

उच्चार = मल-मूत्रादि का विसर्जन.

uccāra = Giving out of excreta, urine etc.

पोषध / पोषध / पोसह = आहार आदि के विधिपूर्वक त्याग द्वारा आत्मा को पोषण करने वाला अनुष्ठान [धार्मिक क्रिया].

३१. अस्संजएसु :-

१. अस्वयंत या अस्वच्छंद = गुरु आज्ञानुसार विचरने वाले साधु / स्वेच्छा से न विचरने वाले साधु.

२. असंयत = संयम मार्ग [आराधना] से भ्रष्ट साधु.

३२. करण / क्रिया = प्रसंग वश किये जाने वाले धार्मिक अनुष्ठान.

चरण / चारित्र = हमेशा पालने योग्य धार्मिक आचरण.

करण सित्तरि / सित्तर प्रकार की क्रिया :- चार प्रकार की पिंड [आहार] विशुद्धि, पाँच समिति, तीन गुप्ति, बारह भावना, बारह प्रतिमा [विशिष्ट प्रकार का तप], पाँच इंद्रियों का निग्रह, पच्चीस प्रकार की प्रतिलेखना [पडिलेहन] और चार प्रकार के अभिग्रहों [विशेष प्रकार से दृढ़ता पूर्वक निश्चित किया हुआ पच्चक्खाण] का पालन.

चरण सित्तरि / सित्तर प्रकार का चारित्र :- दस प्रकार का यति धर्म, सत्रह प्रकार का संयम, पाँच महाव्रत, दस प्रकार का वैयावृत्य, नव प्रकार की ब्रह्मचर्य की गुप्तियाँ, बारह प्रकार का तप, चार कषायों का निग्रह एवं दर्शन-ज्ञान-चारित्र धर्म का पालन.

poṣadha / pauṣadha / posaha = A religious rite strengthening the soul by giving up of food according to the procedure.

31. assañjaesu :-

1. asvañyata or asvacchanda = sādhū moving about according to the directives / with the permission of guru; sādhū not moving about at his own desires.

2. asañyata = sādhū having given up proper way [performances] of sañyama.

32. karaṇa / kriyā = Religious rites performed occasionally.

carāṇa / cāritra = Religious rites worth observing always.

karaṇa sittarī / seventy types of rites :- Four types of purity of food, five samiti, three gupti, twelve bhāvanā [feelings / thoughts], twelve pratimā [special type of penance], control over five organs, twenty five types of pratilekhana [padilehana] and observation of four types of abhigraha [a special type of firmly determined paccakkhāṇa determination].

carāṇa sittarī / seventy types of cāritra :- Ten types of yati dharma, seventeen types of sañyama, five great vows, ten types of vaiyāvṛtya [devotional service], nine types of restrictions for the protection of celibacy, twelve types of penance, control of four kaṣāyas and practice of darśana-jñāna-cāritra

३३. संलेखना तप = शरीर और कषायों का शोषण करने वाला तप एवं क्रिया.

३४. दो प्रकार के वंदन :- १. चैत्यवंदन, २. गुरु वंदन.

श्रावक के बारह प्रकार के व्रत :- १. पाँच अणु-व्रत, २. तीन गुण-व्रत और ३. चार शिक्षा व्रत.

♦ अणु-व्रत = स्थूल [आंशिक] रूप से पाला जाने वाला संयम संबंधी नियम [व्रत]; महाव्रतों की अपेक्षा से छोटे व्रत.

♦ स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत :- मन, वचन, काया से स्थूल जीव हिंसा न करने और न कराने का नियम / गृहस्थ द्वारा निरपराधी त्रस जीव की संकल्प पूर्वक निरपेक्ष हिंसा न करने और न कराने का नियम.

♦ स्थूल-मृषावाद-विरमण व्रत = स्थूल [बड़े व अनर्थकारी] झूठ बोलने का त्याग.

♦ स्थूल-अदत्तादान-विरमण व्रत = स्वेच्छा से न दिये हुए को लेने का स्थूल रूप से त्याग.

♦ स्व-दारा-संतोष पर-दारा-गमन-विरमण व्रत = स्व स्त्री से संतुष्ट रहने और पर स्त्री के साथ गमन न करने का नियम.

dharmā.

33. **sanlekhanā tapa** = Penance and religious rite reducing [exploiting] the body and **kaṣāyas**.

34. Two types of **vandana** :- 1. **caitya vandana**, 2. **guru vandana**.

Twelve types of vows of **śrāvaka** :- 1. Five minor vows; 2. Three characteristic vow and four educational vows.

♦ **aṇu-vrata** = Vow concerning **saṇyama** being observed in partial form; vow smaller in comparison to greater vows.

♦ **sthūla prāṇātipāta viramaṇa vrata** = Vow not to do or not to make to do partial violence of living beings by thoughts, words and deeds / vow not to do and not to make to do unnecessary violence / injury to guiltless living beings capable of moving about by a house holder with determination.

♦ **sthūla-mṛṣāvāda-viramaṇa vrata** = Giving up of telling [big and calamitous] lies partially.

♦ **sthūla-adattādāna-viramaṇa vrata** = Partial giving up of taking which is not given voluntarily.

♦ **sva-dārā-santoṣa para-dārā-gamaṇa-viramaṇa vrata** = Vow to be satisfied with one's own wife and not to have sexual relations with other women.

- ◆ स्थूल-परिग्रह-परिमाण व्रत = स्थूल रूप से परिग्रह को मर्यादित करने का नियम.
- ◆ गुण व्रत = आत्म गुणों / अणु व्रतों की पुष्टि कराने वाला व्रत.
- ◆ दिक्-परिमाण व्रत = विविध दिशाओं में आने-जाने की सीमा को मर्यादित करने का नियम.
- ◆ भोगोपभोग परिमाण व्रत = भोग और उपभोग की वस्तुओं के मर्यादित करने का नियम.
- ◆ अनर्थ-दंड-विरमण व्रत = बिना कारण आत्मा को दंडित कराने वाली अनावश्यक प्रवृत्तियों से निवृत्त रहने का नियम.
- ◆ शिक्षा व्रत = गृहस्थ को साधु-जीवन का शिक्षण प्रदान करने वाले व्रत.
- ◆ सामायिक व्रत = [कम से कम] दो घड़ी [अड़तालीस मिनट] तक सावध व्यापार को त्याग करके सम-भाव में रहने का नियम.
- ◆ देसावगासिक [देशावकाशिक] व्रत- विविध व्रतों में रखी छूटों को प्रतिदिन मर्यादित करने का नियम.
- ◆ पौषधोपवास व्रत- पर्व तिथि एवं अन्य दिनों में पौषध के साथ उपवास आदि तप करने का नियम.

- ◆ **sthūla-parigraha-parimāṇa vrata** = Vow to limit possessions partially.
- ◆ **guṇa vrata [characteristic vow]** = Vow strengthening the virtues of soul / minor vows.
- ◆ **dik-parimāṇa vrata** = Vow to limit limitations of coming and going in various directions.
- ◆ **bhogopa-bhoga parimāṇa vrata** = Vow to limit the objects of usage and reusage.
- ◆ **anartha-danḍa-viramaṇa vrata** = Vow to give up unnecessary activities which makes the soul to be punished [degraded] without any reason.
- ◆ **śikṣā vrata** = Vow teaching the life of an ascetic to a householder.
- ◆ **sāmāyika vrata** = Vow to observe / be in equanimity at least for a period of two ghaṭī [forty eight minutes] giving up sinful activities.
- ◆ **desāvagāsika [deśāvakaśika] vrata** = Vow to limit daily the exemptions provided in various vows.
- ◆ **pauṣadhōpavāsa vrata** = Vow to perform **pauṣadha** along with penance like fast on auspicious days and other days.

♦ अतिथि-संविभाग व्रत = साधु या साधर्मिक को शुद्ध आहार-पानी आदि का भक्ति व बहुमान पूर्वक दान करने का नियम.

३५.तीन प्रकार के गारव :-

- १.रस गारव = इच्छित मधुर आहार-पानी आदि कि प्राप्ति का अभिमान होना.
- २.ऋद्धि गारव = धन कुटुंब आदि कि प्राप्ति का अभिमान होना.
- ३.साता गारव = सुख और सुख सामग्रियों कि प्राप्ति का गौरव होना.

चार प्रकार की संज्ञा :-

- १.आहार संज्ञा,
- २.भय संज्ञा,
- ३.मैथुन संज्ञा और
- ४.परिग्रह संज्ञा.

४०.आलोचना = दोषों को गुरु समक्ष प्रगट करना.

४१.आवश्यक = दिन, रात्रि आदि के अंत में गृहस्थ और श्रमणों द्वारा अवश्य ही करने योग्य धार्मिक क्रिया.

♦ atithi-samvibhāga vrata = Vow of giving faultless alms like food, water to sādhu or co-religionists with devotion and respect.

35.Three types of gārava :-

1. rasa gārava [pride of taste] = To have proudness of getting desired / good food, drinks etc.
2. rddhi gārava [pride of prosperity] = To have proudness of achieving wealth, good family etc.
3. sātā gārava [pride of comfortable life] = To have proudness of securing comforts and means of luxurious comforts.

Four types of sañjñā [inborn tendencies] :-

1. āhāra sañjñā [instinct desire for food],
2. bhaya sañjñā [instinct fear],
3. maithuna sañjñā [instinct sexual desires] and
4. parigraha sañjñā [instinct desire of possessiveness].

40. ālocanā = To speak out the faults before guru.

41. āvaśyaka = Religious rite worth performing necessarily by the house-holders and śramaṇas at the end of day, night etc.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र द्वारा, बारह व्रत आदि रूप श्रावक धर्म में विविध प्रकार से लगने वाले दोषों को गुरु समक्ष स्वीकार कर, पश्चात्ताप पूर्वक उन दोषों की निंदा की गयी है. इस सूत्र के अन्त में प्रतिक्रमण का महत्त्व बताकर, सर्व जिनेश्वर, चैत्य एवं साधुओं को वंदन कर, सर्व जीवों को क्षमा कर, सर्व जीवों से क्षमा मांगी गयी है.

Introduction of the sūtra :-

By this sūtra, confessing the faults committed in various ways in śrāvaka dharma like twelve vows etc. before the guru, those faults are censured with repentance. At the end of this sūtra, showing the greatness of pratikramaṇa, obeisancing all the jineśvaras, caityas, and sādhus, forgiving all the living beings, forgiveness is being asked with all the living beings.

३६. अब्भुट्ठिओमि सूत्र

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि,
अब्भिंतर-देवसिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि देवसिअं.
जं किंचि अपत्तिअं, पर-पत्तिअं; भत्ते, पाणे;
विणए, वेयावच्चे; आलावे, संलावे; उच्चासणे, समासणे;
अंतर-भासाए, उवरि-भासाए; जं किंचि मज्झ
विणय-परिहीणं, सुहुमं वा, बायरं वा; तुब्भे जाणह,
अहं न जाणामि; तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.१.

शब्दार्थ :-

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! = हे भगवन्! स्वेच्छा से आज्ञा
प्रदान करो

इच्छा-कारेण = स्वेच्छा से, संदिसह = आज्ञा प्रदान करो,

भगवन् = हे भगवन्

अब्भुट्ठिओमि = मैं उपस्थित हूँ

अब्भिंतर-देवसिअं खामेउं? = दिन में किये हुए [अपराधों की] क्षमा

36. abbhutṭhiomi sūtra

icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! abbhutṭhiomi,
abbhintara-devasiam khāmeu? iccham, khāmemi devasiam.
jam kiñci apattiam, para-pattiam; bhatte, pāṇe;
viṇae, veyāvacce; ālāve, sanlāve; uccāsaṇe, samāsaṇe;
antara-bhāsāe, uvari-bhāsāe; jam kiñci majjha
viṇaya-parihīṇam, suhumam vā, bāyaram vā; tubbhe jāṇaha,
aham na jāṇāmi; tassa micchā mi dukkaḍam.1.

Literal meaning :-

icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! = oh bhagavan! kindly give me the
permission voluntarily

icchā-kāreṇa = voluntarily, sandisaha = kindly give me the permission,

bhagavan = oh bhagavan

abbhutṭhiomi = i am present

abbhintara-devasiam khāmeu? = to seek forgiveness [for the faults]

मांगने के लिये
 अब्भिंतर = किये हुए, देवसिअं = दिन में, खामेउं = क्षमा
 मांगने के लिये
 इच्छं = आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ
 खामेमि देवसिअं = दिवस में हुए [अपराधों की] मैं क्षमा मांगता हूँ

 खामेमि = मैं क्षमा मांगता हूँ, देवसिअं = दिवस में हुए
 जं किंचि अपत्तिअं पर-पत्तिअं = जो कोई अप्रीतिकारक, विशेष
 अप्रीतिकारक हुआ हो
 जं = जो, किंचि = कोई, अपत्तिअं = अप्रीतिकारक, पर-पत्तिअं
 = विशेष अप्रीतिकारक हुआ हो
 भत्ते पाणे = आहार-पानी में
 भत्ते = आहार, पाणे = पानी में
 विणए वेयावच्चे = विनय, वैयावृत्त्य में
 विणए = विनय, वेयावच्चे = वैयावृत्त्य में
 आलावे संलावे = बोलने में, बातचीत करने में
 आलावे = बोलने में, संलावे = बातचीत करने में
 उच्चासणे समासणे = [गुरु से] ऊँचे आसन पर बैठने से, [गुरु के]

committed during the day
 abbhintara = committed, devasiam = during the day, khāmeu = to seek
 forgiveness
 iccham = i accept your order
 khāmemi devasiam = i beg pardon [for the misdeeds] committed during the
 day
 khāmemi = i beg pardon, devasiam = committed during the day
 jam kiñci apattiam para-pattiam = whatever unpleasantness, bitterness is
 done
 jam kiñci = whatever, apattiam = unpleasantness, para-pattiam =
 bitterness is done
 bhatte pāṇe = in the matter of food, water
 bhatte = in the matter of food, pāṇe = water
 viṇae veyāvacce = regarding politeness, dedicated service
 viṇae = regarding politeness, veyāvacce = dedicated service
 ālāve sanlāve = while talking, during conversation
 ālāve = while talking, sanlāve = during conversation
 uccāsaṇe samāsaṇe = by sitting on a place [seat] higher [than the guru], by

समान आसन पर बैठने से
 उच्चासणे = ऊंचे आसन पर बैठने से, समासणे = समान
 आसन पर बैठने से
 अंतर-भासाए उवरि-भासाए = [गुरु के] बीच में बोलने से, [गुरु की
 बात पर] टीका-टिप्पणी करने से
 अंतर = बीच में, भासाए = बोलने से, उवरि-भासाए = टीका-
 टिप्पणी करने से
 जं किचि मज्झ विणय-परिहीणं = मुझसे जो कोई विनय रहित
 [वर्तन] हुआ हो
 मज्झ = मुझसे, विणय = विनय, परिहीणं = रहित वर्तन हुआ
 हो
 सुहुमं वा बायरं वा = सूक्ष्म [छोटा] या बादर [बड़ा]
 सुहुमं = सूक्ष्म, वा = या, बायरं = बादर
 तुब्भे जाणह अहं न जाणामि = आप जानते हो, मैं नहीं जानता हूँ
 तुब्भे = आप, जाणह = जानते हो, अहं = मैं, न = नहीं,
 जाणामि = जानता हूँ
 तस्स मिच्छा मि दुक्कडं = मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों
 तस्स = वे, मिच्छा = मिथ्या हों, मि = मेरे, दुक्कडं

sitting on a place equivalent [to that of **guru**]
uccāsaṇe = by sitting on a place higher, **samāsaṇe** = by sitting on a
 place equivalent
antara-bhāsāe uvari-bhāsāe = by interrupting [while the **guru** is talking], by
 commenting [on the talks of the **guru**]
antara-bhāsāe = by interrupting, **uvari-bhāsāe** = by commenting
jaṃ kiñci majjha viṇaya-parihīṇaṃ = if any discourteous [act] is shown by
 me
jaṃ = if, **kiñci** = any, **majjha** = by me, **viṇaya** = discourteous [act],
parihīṇaṃ = is shown
suhumaṃ vā bāyaraṃ vā = minor [minute] or major [big]
suhumaṃ = minor, **vā** = or, **bāyaraṃ** = major
tubbhe jāṇaha ahaṃ na jāṇāmi = you know, i do not know
tubbhe = you, **jāṇaha** = know, **ahaṃ** = i, **na** = do not, **jāṇāmi** = know
tassa micchā mi dukkaḍaṃ = those misdeeds of mine may become fruitless
tassa = those, **micchā** = may become fruitless, **mi** = of mine, **dukkhaḍaṃ**

= दुष्कृत्य

गाथार्थ :-

हे भगवन्! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान करो। दिन में किये हुए [अपराधों की] क्षमा मांगने के लिये मैं उपस्थित हुआ हूँ, आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ, दिन में हुए [अपराधों की] मैं क्षमा मांगता हूँ, आहार-पानी में, विनय में, वैयावृत्य में, बोलने में, बातचीत करने में, ऊँचे आसन पर बैठने से, समान आसन पर बैठने से, बीच में बोलने से, टीका करने से जो कोई अप्रीतिकारक, विशेष अप्रीतिकारक हुआ हो, छोटा या बड़ा विनय रहित [वर्तन] मुझसे हुआ हो, [जो] आप जानते हो, मैं नहीं जानता हूँ, मेरे वे अपराध मिथ्या हों..... १.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र से गुरु महाराज के प्रति हुए अविनय के लिये क्षमा मांगी जाती है.

= misdeeds

Stanzaic meaning :-

Oh **bhagavan!** kindly give me the permission voluntarily. I am present to seek forgiveness [for the faults] committed during the day. I accept your orders. I beg pardon [for the misdeeds] committed during the day. If any unpleasantness, bitterness is done in the matter of food-water, regarding politeness, dedicated service, while talking, during conversation, by sitting on a higher place, by sitting on an equivalent place, by interrupting, by commenting any major or minor discourteous [act] in shown by me [which] you know, I do not know, those misdeeds of mine may become fruitless. 1.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra**, forgiveness is asked for the impoliteness shown towards **guru mahārāja**.

३७. आयरिय-उवज्झाए सूत्र

आयरिय-उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल-गणे अ.
जे मे केइ कसाया सव्वे तिविहेण खासेमि

१

37. āyariya-uvajjhāe sūtra

āyariya-uvajjhāe, sīse sāhammie kula-gaṇe a.
je me kei kasāyā savye tivihena khāmami

1

सास साहम्मिए= शिष्य [शिक्षण या उपदेश ग्रहण करने के योग्य],
साधर्मिक [समान धर्म के पालक] के प्रति
सीसे = शिष्य, साहम्मिए = साधर्मिक के प्रति
कुल-गणे अ= कुल [एक आचार्य का शिष्य समुदाय] और गण
[तीन कुलों का समूह] के प्रति

sīse sahammie = towards disciple [worth learning and accepting advice], co-
religionist [observer of similar dharma]
sīse = towards disciple, sāhammie = co-religionist
kula-gaṇe a = towards kula [group of disciples of one ācārya] and gaṇa
[group of three kulas]

कुल = कुल, गणे = गण के प्रति, अ = और
 जे मे केइ कसाया = मैंने जो कोई कषाय किये हों
 जे = जो, मे = मैंने, केइ = कोई, कसाया = कषाय किये हों
 सव्वे ति-विहेण खामेभि = उन सबकी मैं तीन प्रकार [मन-वचन-
 काया] से क्षमा मांगता हूँ
 सव्वे = उन सबकी, ति = तीन, विहेण = प्रकार से, खामेभि
 = मैं क्षमा मांगता हूँ

२.सव्वस्स समण-संघस्स भगवओ = पूज्य सकल श्रमण संघ को

सव्वस्स = सकल, समण = श्रमण, संघस्स = संघ को,
 भगवओ = पूज्य
 अंजलिं करिअ सीसे = मस्तक पर अंजलि करके [हाथ जोड़कर]
 अंजलिं = अंजलि, करिअ = करके, सीसे = मस्तक पर
 सव्वं खमावइत्ता = सबसे क्षमा मांगकर
 सव्वं = सबसे, खमावइत्ता = क्षमा मांगकर
 खमामि सव्वस्स अहयं पि = मैं भी सबको क्षमा करता हूँ
 खमामि = क्षमा करता हूँ, सव्वस्स = सबको, अहयं = मैं, पि = भी

kula = towards kula, gaṇe = gaṇa, a = and
 je me kei kasāyā = whatever kaṣāyas I might have done
 je kei = whatever, me = i, kasāyā = kaṣāyas might have done
 savve ti-viheṇa khāmemi = i seek forgiveness of all those in three ways [by
 thought, words and deeds]
 savve = of all those, ti = in three, viheṇa = ways, khāmemi = i seek
 forgiveness

2.savvassa samaṇa-saṅghassa bhagavao = to adorable entire society of
 śramaṇa

savvassa = entire, samaṇa = of śramaṇa, saṅghassa = to society,
 bhagavao = adorable
 añjalim karia sīse = folding both hands over the head
 añjalim = both hands, karia = folding, sīse = over the head
 savvam khamāvaittā = seeking forgiveness from all
 savvam = from all, khamāvaittā = seeking forgiveness
 khamāmi savvassa ahayam pi = i also forgive all
 khamāmi = forgive, savvassa = all, ahayam = i, pi = also

३.सव्वस्स जीव-रासिस्स= सर्व जीवों के समूह से
 सव्वस्स = सर्व, जीव = जीवों के, रासिस्स = समूह से
 भावओ धम्म-निहिअ-निअ-चित्तो = अपने मन को धर्म भावना में
 स्थापित कर / अंतःकरण से धर्म भावना पूर्वक
 भावओ = भावना में, धम्म = धर्म, निहिअ = स्थापित कर,
 निअ = अपने, चित्तो = मन को

गाथार्थ :-

आचार्य, उपाध्याय, शिष्य, साधर्मिक, कुल और गण के प्रति मैंने जो
 कोई कषाय किये हों, उन सबकी मैं तीन प्रकार से क्षमा माँगता हूँ. १.
 पूज्य सकल श्रमण संघ को मस्तक पर अंजलि कर, सबसे क्षमा माँगकर,
 मैं भी सबको क्षमा करता हूँ. २.
 अपने मन को धर्म भावना में स्थापित कर, सर्व जीवों के समूह से क्षमा
 माँगकर, मैं भी सबको क्षमा करता हूँ. ३.

विशेषार्थ :-

श्रमण संघ = श्रमण [साधु] प्रधान / के मार्गदर्शन में युक्त चतुर्विध [साधु,
 साध्वी, श्रावक और श्राविका रूप] संघ

3.savvassa jīva-rāsissa = from the mass of all living beings
 savvassa = all, jīva = of living beings, rāsissa = from the mass
 bhāvao dhamma-nihia-nia-citto = establishing my heart in religious feelings /
 with religious feelings in the heart
 bhāvao = feelings, dhamma = in religious, nihia = establishing, nia = my,
 citto = heart

Stanzaic meaning :-

What ever kaṣāyas I might have done towards ācārya, upādhyāya, disciple, co-
 religionist, kula and gaṇa, I seek forgiveness of all those in three ways. 1.
 Folding both hands over the head to adorable entire society of śramaṇas,
 seeking forgiveness from all, I also forgive all. 2.
 Establishing my heart in religious feelings, seeking forgiveness from the mass of
 all living beings, I also forgive all. 3.

Specific meaning :-

śramaṇa saṅgha = Four fold society [of sādhu, sādhvī, śrāvaka and śrāvikā]
 having prominent position / the guidance of śramaṇa [sādhu].

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र से आचार्य आदि, सकल संघ तथा सर्व जीवों के प्रति किये हुए अपराधों के लिए क्षमा याचना की जाती है.

Introduction of the sūtra :-

By this sūtra, pardon is being asked in respect of the offences committed against the ācārya etc., the whole society and all the living beings.

३८. सुअ-देवया स्तुति

सुअ-देवया भगवई, नाणा-वरणीय-कम्म-संघायं.
तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअ-सायरे भत्ती. १.

शब्दार्थ :-

सुअ-देवया भगवई = पूज्य श्रुत-देवी [श्रुत की अधिष्ठायिका / रक्षण करने वाली देवी]

सुअ = श्रुत, देवया = देवी, भगवई = पूज्य

नाणा-वरणीय-कम्म-संघायं = ज्ञानावरणीय कर्म समूह को

नाणावरणीय = ज्ञानावरणीय, कम्म = कर्म, संघायं = समूह को

तेसिं = उनके

खवेउ = क्षय करो

सययं जेसिं सुअ-सायरे भत्ती = प्रवचन रूपी समुद्र में जिनकी सदा भक्ति है

सययं = सदा, जेसिं = जिनकी, सुअ = प्रवचन रूपी, सायरे = समुद्र में, भत्ती = भक्ति है

38. sua-devayā stuti

sua-devayā bhagavaī, nāṇā-varaṇīya-kamma-saṅghāyam.
tesim̐ khaveu sayayam, jesim̐ sua-sāyare bhattī. 1.

Literal meaning :-

sua-devayā bhagavaī = venerable śruta-devī [goddess protecting the śruta / religious literature]

sua = śruta, devayā = devī, bhagavaī = venerable

nāṇā-varaṇīya-kamma-saṅghāyam = to the mass of jñānāvaraṇīya karma

nāṇāvaraṇīya = of jñānāvaraṇīya, kamma = karma, saṅghāyam = to the mass

tesim̐ = of those

khaveu = shall annihilate

sayayam jesim̐ sua-sāyare bhattī = who have always faith in religious discourses like ocean

sayayam = always, jesim̐ = who, sua = religious discourses like, sāyare = in ocean, bhattī = have faith

गाथार्थ :-

प्रवचन रूपी समुद्र में जिनकी सदा भक्ति है, उनके ज्ञानावरणीय कर्म के समूह को पूज्य श्रुत-देवी क्षय करो. १.

सूत्र परिचय :-

श्रुत देवता की इस स्तुति को पुरुष ही बोलें.

Stanzaic meaning :-

Venerable goddess of religious literature shall annihilate the mass of jñānāvaraṇīya karma of those who have always faith in religious discourses like ocean. 1.

Introduction of the sūtra :-

Only men should utter this eulogy of the god of scriptures.

३९. कमल-दल स्तुति

कमल-दल-विपुल-नयना,

कमल-मुखी कमल-गर्भ-सम-गौरी.

कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुत-देवता सिद्धिम्. ...१.

शब्दार्थ :-

कमल-दल-विपुल-नयना = कमल पत्र जैसे विशाल नेत्रों वाली

कमल = कमल, दल = पत्र जैसे, विपुल = विशाल, नयना = नेत्रों वाली

कमल-मुखी = कमल जैसे मुख वाली

मुखी = मुख वाली

कमल-गर्भ-सम-गौरी = कमल के मध्य भाग जैसे गौर वर्ण वाली

कमल = कमल के, गर्भ = मध्य भाग, सम = जैसे, गौरी = गौर वर्ण वाली

कमले-स्थिता = कमल पर स्थित

39. kamala-dala stuti

kamala-dala-vipula-nayanā,

kamala-mukhī kamala-garbha-sama-gaurī.

kamale sthitā bhagavatī, dadātu śruta-devatā siddhim.1.

Literal meaning :-

kamala-dala-vipula-nayanā = with large eyes like the leaves of lotus flower

kamala = of lotus flower, dala = like the leaves, vipula = large, nayanā = with eyes

kamala-mukhī = with face like lotus flower

kamala = lotus flower, mukhī = with face like

kamala-garbha-sama-gaurī = fair complexioned like the central part of lotus flower

garbha = the central part, sama = like, gaurī = fair complexioned

kamale sthitā = seated on lotus flower

कमले = कमल पर, स्थिता = स्थित भगवती = पूज्य ददातु = प्रदान करे श्रुत-देवता = श्रुत देवी श्रुत = श्रुत, देवता = देवी सिद्धिम् = सिद्धि गाथार्थ :- कमल पत्र जैसे विशाल नेत्रोंवाली, कमल जैसे मुखवाली, कमल के मध्य भाग जैसे गौर वर्ण वाली और कमल पर स्थित पूज्य श्रुत देवी सिद्धि प्रदान करे. १ सूत्र परिचय :- श्रुत-देवता की इस स्तुति को स्त्रियां ही बोलें.	kamale = on lotus flower, sthitā = seated bhagavatī = venerable dadātu = may bestow śruta-devatā = śruta devī / goddess of śruta śruta = śruta, devatā = devī siddhim = success / desired fruits Stanzaic meaning :- Venerable śruta devī with large eyes like the leaves of lotus flower, with face like lotus flower, fair complexioned like the central part of lotus flower and seated on lotus flower may bestow the success. 1. Introduction of the sūtra :- Only women should utter this eulogy of the god of scriptures.
--	---

४०. जीसे खित्ते स्तुति

जीसे खित्ते साहू, दंसण-नाणेहिं चरण-सहिएहिं.
साहंति मुक्ख-मग्गं, सा देवी हरउ दुरिआइं.१.

शब्दार्थ :-

जीसे खित्ते = जिनके क्षेत्र में

जीसे = जिनके, खित्त = क्षेत्र में

साहू = साधु

दंसण-नाणेहिं चरण-सहिएहिं = दर्शन, ज्ञान और चारित्र द्वारा

दंसण = दर्शन, नाणेहिं = ज्ञान, चरण = चारित्र, सहिएहिं = द्वारा

साहंति मुक्ख-मग्गं = मोक्ष मार्ग की साधना करते हैं

साहंति = साधना करते हैं, मुक्ख = मोक्ष, मग्गं = मार्ग की

सा देवी हरउ दुरिआइं = वह देवी [क्षेत्र-देवता] विघ्नों का हरण करे

सा = वह, देवी = देवी, हरउ = हरण करे, दुरिआइं = विघ्नों

40. jīse khitte stuti

jīse khitte sāhū, dāṇṣaṇa-nāṇehim carāṇa-sahiehim.
sāhanti mukkha-maggam, sā devī harau duriāim.....1.

Literal meaning :-

jīse khitte = in whose area

jīse = in whose, khitte = area

sāhū = sādhus

dāṇṣaṇa-nāṇehim carāṇa-sahiehim = through right faith, right knowledge and right conduct

dāṇṣaṇa = right faith, nāṇehim = right knowledge, carāṇa = right conduct, sahiehim = through

sāhanti mukkha-maggam = are striving in the path of salvation

sāhanti = are striving, mukkha = of salvation, maggam = in the path

sā devī harau duriāim = that goddess [goddess of the area] may ward off the obstacles

sā = that, devī = goddess, harau = may ward off, duriāim = the

का

गाथार्थ :-

जिनके क्षेत्र में साधु दर्शन-ज्ञान-चारित्र्य द्वारा मोक्ष मार्ग की साधना करते हैं, वह [क्षेत्र] देवी विघ्नों का हरण करे. १.

सूत्र परिचय :-

क्षेत्र-देवता की यह स्तुति पुरुष ही बोलें.

obstacles

Stanzaic meaning :-

That goddess [of the area] may ward off the obstacles, in whose area, sādhus are striving in the path of salvation through right faith, right knowledge and right conduct. 1.

Introduction of the sūtra :-

Only men should utter this eulogy of the regional god.

४१. यस्याः क्षेत्रं स्तुति

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया.

सा क्षेत्र-देवता नित्यं, भूयान्नः सुख-दायिनी.१.

शब्दार्थ :-

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य = जिसके क्षेत्र का आश्रय लेकर / जिसके क्षेत्र में

यस्याः = जिसके, क्षेत्रं = क्षेत्र का, समाश्रित्य = आश्रय लेकर

साधुभिः साध्यते क्रिया = साधुओं द्वारा [मोक्ष मार्ग की] क्रिया की साधना की जाती है

साधुभिः = साधुओं द्वारा, साध्यते = साधना की जाती है, क्रिया = क्रिया की

सा क्षेत्र-देवता = वह क्षेत्र देवी

सा = वह, क्षेत्र = क्षेत्र, देवता = देवी

नित्यं भूयान्नः सुख-दायिनी = हमें सदा सुख देनेवाली हो

नित्यं = सदा, भूयान् = हो, नः = हमें, सुख = सुख, दायिनी

41. yasyāḥ kṣetram stuti

yasyāḥ kṣetram samāśritya, sādhubhiḥ sādhyate kriyā.

sā kṣetra-devatā nityam, bhūyānnah sukha-dāyini.1.

Literal meaning :-

yasyāḥ kṣetram samāśritya = by taking advantage of whose region / in whose region

yasyāḥ = whose, kṣetram = region, samāśritya = by taking advantage of sādhubhiḥ sādhyate kriyā = striving of religious rites [for the path of salvation] is being done by the sādhus

sādhubhiḥ = by the sādhus, sādhyate = striving is being done, kriyā = of religious rites

sā kṣetra-devatā = that goddess of kṣetra [region]

sā = that, kṣetra = kṣetra, devatā = goddess of

nityam bhūyānnah sukha-dāyini = may always be the bestower of happiness upon us

nityam = always, bhūyān = may be, nah = upon us, sukha = of

= देनेवाली

गाथार्थ :-

जिसके क्षेत्र में साधुओं द्वारा क्रिया की साधना की जाती हैं, वह क्षेत्र देवी हमें सदा सुख देनेवाली हो. १.

सूत्र परिचय :-

क्षेत्र देवता की इस स्तुति को स्त्रियां नित्य, पुरुष पक्खी आदि प्रतिक्रमण में और विहार में साधु भगवंत दैवसिक प्रतिक्रमण में बोलते हैं.

happiness, **dāyini** = the bestower

Stanzaic meaning :-

That goddess of region may always be the bestower of happiness upon us in whose area striving of religious rites [for the path of salvation] is being done by the **sādhus**. 1.

Introduction of the sūtra :-

Women daily, men in **pratikramaṇas** such as **pakkhī** and **sādhū bhagavantas** in **daivasika pratikramaṇa** during **vihāra** utters this eulogy of the regional god.

४२. ज्ञानादि-गुण स्तुति

ज्ञानादि-गुण-युतानां, नित्यं स्वाध्याय-संयम-रतानाम्.
विदधातु भवन-देवी, शिवं सदा सर्व-साधूनाम्.१.

शब्दार्थ :-

ज्ञानादि-गुण-युतानां = ज्ञान आदि गुणों से युक्त

ज्ञान = ज्ञान, आदि = आदि, गुण = गुणों से, युतानां = युक्त
नित्यं स्वाध्याय-संयम-रतानाम् = नित्य स्वाध्याय और संयम में
लीन

नित्यं = नित्य, स्वाध्याय = स्वाध्याय, संयम = संयम में,
रतानाम् = लीन

विदधातु = करे

भवन-देवी = भवन देवी

भवन = भवन, देवी = देवी

शिवं सदा = सदा कल्याण

शिवं = कल्याण, सदा = सदा

सर्व-साधूनाम् = सर्व साधुओं का

42. jñānādi-guṇa stuti

jñānādi-guṇa-yutānām, nityam svādhyāya-saṇyama-ratānām.
vidadhātu bhavana-devī, śivam sadā sarva-sādhūnām.1.

Literal meaning :-

jñānādi-guṇa-yutānām = having the qualities like knowledge.

jñāna = knowledge, ādi = like, guṇa = the qualities, yutānām = having
nityam svādhyāya-saṇyama-ratānām = always deeply engrossed in self-
study and self-control

nityam = always, svādhyāya = in self-study, saṇyama = self-control,
ratānām = deeply engrossed

vidadhātu = may do

bhavana-devī = goddess of the building

bhavana = of the building, devī = goddess

śivam sadā = always welfare

śivam = welfare, sadā = always

sarva-sādhūnām = of all sādhus

सर्व = सर्व, साधूनाम् = साधुओं का

गाथार्थ :-

ज्ञानादि गुणों से युक्त, नित्य स्वाध्याय और संयम में लीन सर्व साधुओं का भवन देवी सदा कल्याण करे. १.

सूत्र परिचय :-

भवन देवता की यह स्तुति पक्खी आदि प्रतिक्रमण में एवं विहार में साधु भगवंतों द्वारा दैवसिक प्रतिक्रमण में बोली जाती है.

sarva = all, sādhuṇām = of sādhus

Stanzaic meaning :-

Goddess of the building may always do welfare of all sādhus having the qualities like knowledge and always deeply engrossed in self-study and self-control. 1.

Introduction of the sūtra :-

This eulogy of the god of the world is being uttered in pratikramaṇas such as pakkhī and by sādhu bhagavantas in daivasika pratikramaṇa during the vihāra.

४३. नमोस्तु वर्द्धमानाय स्तुति

नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा.

तज्जया-वाप्त-मोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम्.१.

येषां विकचा-रविन्द-राज्या,

ज्यायः क्रम-कमलावलिं दधत्या.

सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं,

कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः. .२.

कषाय-तापा-दित-जन्तु-निर्वृतिं,

करोति यो जैन-मुखाम्बुदोद्-गतः.

स शुक्र-मासोद्भव-वृष्टि-सन्निभो,

दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम्. .३.

शब्दार्थ :-

१. नमोस्तु वर्द्धमानाय = श्री वर्द्धमान [महावीर] स्वामी को नमस्कार हो

43. namostu varddhamānāya stuti

namostu varddhamānāya, sparddhamānāya karmaṇā.

tajjayā-vāpta-mokṣāya, parokṣāya kutīrthinām.1.

yeṣāṃ vikacā-ravinda-rājyā,

jiyāyaḥ krama-kamalā-valim dadhatyā.

sadrśairiti saṅgatam praśasyam,

kathitam santu śivāya te jinendrāḥ. .2.

kaṣāya-tāpā-rdita-jantu-nirvṛtim,

karoti yo jaina-mukhāmbudod-gataḥ.

sa śukra-māsodbhava-vṛṣṭi-sannibho,

dadhātu tuṣṭim mayi vistaro girām..3.

Literal meaning :-

1. namostu varddhamānāya = be obeisance to śrī vardhamāna [mahāvīra] svāmī

नमः = नमस्कार, अस्तु = हो, वर्द्धमानाय = श्री वर्द्धमान
स्वामी को

स्पर्द्धमानाय कर्मणा = कर्मों के साथ स्पर्धा करते हुए

स्पर्द्धमानाय = स्पर्धा करते हुए, कर्मणा = कर्मों के साथ

तज्जया-वाप्त-मोक्षाय = उन पर विजय द्वारा मोक्ष प्राप्त किये हुए

तद् = उन पर, जय = विजय द्वारा, अवाप्त = प्राप्त किये
हुए, मोक्षाय = मोक्ष

परोक्षाय कुतीर्थिनाम् = कुतीर्थियों [मिथ्यात्वियों] के लिये अगम्य

परोक्षाय = अगम्य, कुतीर्थिनाम् = मिथ्यात्वियों के लिये

२.येषां = जिनकी

विकचा-रविन्द-राज्या = विकसित कमल पंक्तियों ने

विकच = विकसित, अरविन्द = कमल, राज्या = पंक्तियों ने

ज्यायः क्रम-कमला-वलिं दधत्या = उत्तम चरण कमल की श्रेणी को
धारण करने वाली

ज्यायः = उत्तम, क्रम = चरण, कमल = कमल की, आवलिं
= श्रेणी को, दधत्या = धारण करने वाली

namaḥ = obeisance, astu = be, varddhamānāya = to śrī varddhamāna
svāmī

sparddhamānāya karmaṇā = competing with karmas

sparddhamānāya = competing, karmaṇā = with karmas

tajjayā-vāpta-mokṣāya = having attained salvation by overcoming them

tad = them, jaya = by overcoming, avāpta = having attained, mokṣāya =
salvation

parokṣāya kutīrthinām = beyond comprehension for mithyātvīs [believers in
false doctrines]

parokṣāya = beyond comprehension, kutīrthinām = for mithyātvīs

2.yeṣāṃ = whose

vikacā-ravinda-rājyā = rows of fully blossomed lotus flowers

vikaca = fully blossomed, aravinda = of lotus flowers, rājyā = rows

jyāyāḥ krama-kamalā-valim dadhatyā = borne by row of auspicious lotus like
feet

jyāyāḥ = auspicious, krama = feet, kamala = lotus like, āvalim = row of,
dadhatyā = borne by

सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं कथितं = [मानो] कहा कि समान के साथ
 इस प्रकार समागम होना प्रशंसनीय है
 सदृशैः = समान के साथ, इति = इस प्रकार, संगतं =
 समागम होना, प्रशस्यं = प्रशंसनीय है, कथितं = कहा कि
 सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः = वे जिनेश्वर मोक्ष के लिये हों
 सन्तु = हों, शिवाय = मोक्ष के लिये, ते = वे, जिनेन्द्राः =
 जिनेश्वर

३. कषाय-तापा-र्दित-जन्तु-निर्वृतिं करोति यो = जो कषाय रूपी ताप
 से पीड़ित प्राणियों की शांति करता है
 कषाय = कषाय रूपी, ताप = ताप से, अर्दित = पीड़ित, जन्तु
 = प्राणियों की, निर्वृतिं = शांति, करोति = करता है, यो = जो
 जैन-मुखा-म्बुदोदगतः = जिनेश्वर के मुख रूपी मेघ से प्रगटित
 जैन = जिनेश्वर के, मुख = मुख रूपी, अम्बुदः = मेघ से,
 उदगतः = प्रगटित
 स = वह
 शुक्र-मासोद्भव-वृष्टि-सन्निभो = ज्येष्ठ मास में होने वाली वृष्टि

sadrśairiti saṅgatam praśasyam kathitam = [seems to have] told that
 companionship with equivalents like this is praise worthy
 sadrśaiḥ = with equivalents, iti = like this, saṅgatam = companionship,
 praśasyam = is praise worthy, kathitam = told that
 santu śivāya te jinendrāḥ = those jineśvaras may be for salvation
 santu = may be, śivāya = for salvation, te = those, jinendrāḥ = jineśvaras

3. kaṣāya-tāpā-rdita-jantu-nirvṛtim karoti yo = which makes peace for living
 beings afflicted with the heat of kaṣāyas
 kaṣāya = of kaṣāyas, tāpa = with the heat, ardita = afflicted, jantu = for
 living beings, nirvṛtim = peace, karoti = makes, yo = which
 jaina-mukhā-mbudodgataḥ = revealed from the mouth of jineśvara
 resembling clouds
 jaina = of jineśvara, mukha = from the mouth resembling, ambudaḥ =
 clouds, udgataḥ = revealed
 sa = that
 śukra-māsodbhava-vṛṣṭi-sannibho = like the first showers of jeṣṭha month

समान शुक्र = ज्येष्ठ, मासः = मास में, उद्भव = होने वाली, वृष्टि = वृष्टि, सन्निभो = समान दधातु तुष्टिं मयि = मुझ पर अनुग्रह धारण करो दधातु = धारण करो, तुष्टिं = अनुग्रह, मयि = मुझ पर विस्तरो गिराम् = वाणी का विस्तार / समूह विस्तरो = विस्तार, गिराम् = वाणी का गाथार्थ :- कर्मों के साथ स्पर्धा करते हुए और उन पर विजय द्वारा मोक्ष प्राप्त किये हुए और मिथ्यात्वियों के लिये अगम्य श्री महावीर स्वामी को नमस्कार हो..... १. वे जिनेन्द्र मोक्ष के लिये हों जिनकी उत्तम चरण कमल की श्रेणी को धारण करने वाली विकसित कमलों की पंक्ति ने [मानों] कहा कि समान के साथ इस प्रकार समागम होना प्रशंसनीय है..... २. ज्येष्ठ मास में होने वाली वृष्टि के समान जो कषाय रूपी ताप से पीड़ित प्राणियों की शांति करता है, जिनेश्वर के मुख रूपी मेघ से प्रगटित वाणी का वह समूह मुझ पर अनुग्रह धारण करो..... ३.	[eight month of hindu lunar calendar] śukra = of jeṣṭha, māsaḥ = month, udbhava vṛṣṭi = the first showers, sannibho = like dadhātu tuṣṭim mayi = may bestow blessings upon me dadhātu = may bestow, tuṣṭim = blessings, mayi = upon me vistaro girām = collection of discourses vistaro = collection, girām = of discourses Stanzaic meaning :- Be obeisance to śrī mahāvīra svāmī who has attained salvation by competing with the karmas and by overcoming them and is beyond comprehension for mithyātvīs. 1. Those jineśvaras may be for salvation whose row of auspicious lotus like feet borne by row of fully blossomed lotus flowers [seems to have] told that companionship with equivalents like this is praise worthy. 2. That collection of discourses revealed from the mouth of jineśvaras resembling clouds which makes peace for living beings afflicted by the heat of kaṣāyas like the first showers of jyeṣṭha month, may bestow blessing upon me. 3.
---	---

सूत्र परिचय :-

श्री महावीर स्वामी, सर्व तीर्थंकर एवं जिन वाणी की इस स्तुति को देवसिय आदि प्रतिक्रमण में पुरुष ही बोलें.

Introduction of the sūtra :-

This eulogy of śrī mahāvīra svāmī, all the tīrthaṅkaras and the speech of jina should be uttered only by men in pratikramaṇas such as devasiya.

४४. विशाल-लोचन स्तुति

विशाल-लोचन-दलं, प्रोद्यद्-दन्तांशु-केसरम्.
 प्रातर्वीर-जिनेन्द्रस्य, मुख-पद्मं पुनातु वः.१.
 येषामभिषेक-कर्म कृत्वा,

मत्ता हर्ष-भरात् सुखं सुरेन्द्राः.
 तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं,
 प्रातः सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः..२.
 कलंक-निर्मुक्त-ममुक्त-पूर्णतं,
 कुतर्क-राहु-ग्रसनं सदोदयम्.
 अपूर्व-चन्द्रं जिन-चन्द्र-भाषितं,
 दिना-गमे नौमि बुधैर्नमस्कृतम्..३.

शब्दार्थ :-

१.विशाल-लोचन-दलं = विशाल नेत्र रूपी पत्र वाला
 विशाल = विशाल, लोचन = नेत्र रूपी, दलं = पत्र वाला

44. viśāla-locana stuti

viśāla-locana-dalam, prodyad-dantāṁśu-kesaram.
 prātar-vīra-jinendrasya, mukha-padmaṁ punātu vaḥ.1.
 yeṣāmabhiṣeka-karma kṛtvā,

mattā harṣa-bharāt sukhaṁ surendrāḥ.
 tṛṇamapi gaṇayanti naiva nākaṁ,
 prātaḥ santu śivāya te jinendrāḥ..2.
 kalaṅka-nirmukta-mamukta-pūrṇatam,
 kutarka-rāhu-grasanam sadodayam.
 apūrva-candram jina-candra-bhāṣitam,
 dinā-game naumi budhair-namaskṛtam..3.

Literal meaning :-

1.viśāla-locana-dalam = with big eyes like leaves
 viśāla = big, locana = with eyes, dalam = like leaves

प्रोद्यद्-दन्तांशु-केसरम् = देदीप्यमान दांतों की किरण रूपी पुष्प
केसर वाला

प्रोद्यद् = देदीप्यमान, दन्त = दांतों की, अंशु = किरण रूपी,
केसरम् = पुष्प केसर वाला

प्रातः = प्रातः काल में

वीर-जिनेन्द्रस्य मुख-पद्मं = श्री महावीर जिनेश्वर का मुख रूपी
कमल

वीर = श्री महावीर, जिनेन्द्रस्य = जिनेश्वर का, मुख = मुख
रूपी, पद्मं = कमल

पुनातु वः = तुम्हें पवित्र करो

पुनातु = पवित्र करो, वः = तुम्हें

२.येषाम् = जिनकी

अभिषेक-कर्म कृत्वा = अभिषेक क्रिया करके

अभिषेक = अभिषेक, कर्म = क्रिया, कृत्वा = करके

मत्ता हर्ष-भरात् = हर्ष के समूह से मत्त बने हुए

मत्ता = मत्त बने हुए, हर्ष = हर्ष के, भरात् = समूह से

सुखं = सुख को

सुरेन्द्राः = सुरेन्द्र

prodyad-dantāṁśu-kesaram = with radiant rays of teeth like pollen

prodyad = radiant, danta = with teeth, aṁśu = rays of, kesaram = like
pollen

prātaḥ = in early morning

vīra-jinendrasya mukha-padmaṁ = the face of śrī mahāvīra jineśvara
resembling lotus flower

vīra = śrī mahāvīra, jinendrasya = of jineśvara, mukha = the face
resembling, padmaṁ = lotus flower

punātu vaḥ = may bestow blessing upon you

punātu = may bestow blessing, vaḥ = upon you

2.yeṣām = whose

abhiṣeka-karma kṛtvā = after performing ceremonial bath

abhiṣeka-karma = ceremonial bath, kṛtvā = after performing

mattā harṣa-bharāt = having become intoxicated with over joy

mattā = having become intoxicated, harṣa-bharāt = with over joy

sukhaṁ = to pleasures

surendrāḥ = surendras [presiding deities of celestial beings]

तृणमपि गणयन्ति नैव = तृण मात्र भी नहीं मानते

तृणम् = तृण मात्र, अपि = भी, गणयन्ति = मानते, नैव = नहीं

नाकं = स्वर्ग के

प्रातः सन्तु शिवाय = प्रातः काल में शिव-सुख [मोक्ष] के लिये हों

प्रातः = प्रातः काल में, सन्तु = हों, शिवाय = शिव-सुख के लिये

ते जिनेन्द्राः = वे जिनेश्वर

ते = वे, जिनेन्द्राः = जिनेश्वर

३. कलंक-निर्मुक्तं = कलंक से रहित

कलंक = कलंक से, निर्मुक्तं = रहित

अमुक्त पूर्णतं = पूर्णता का त्याग न करने वाले

अमुक्त = त्याग न करने वाले, पूर्णतं = पूर्णता का

कुतर्क-राहु-ग्रसनं = कुतर्क रूपी राहु को ग्रसने वाले

कुतर्क = कुतर्क रूपी, राहु = राहु को, ग्रसनं = ग्रसने वाले

सदोदयम् = सदा उदयवान

सदा = सदा, उदयम् = उदयवान

अपूर्वचन्द्रं = अपूर्व [नवीन] चंद्र को

अपूर्व = अपूर्व, चन्द्रं = चंद्र को

tṛṇamapi gaṇayanti naiva = do not consider worth even a piece of straw

tṛṇam = worth a piece of straw, api = even, gaṇayanti = consider, naiva = do not

nākam = of the heaven

prātaḥ santu śivāya = may be for salvation in early morning

prātaḥ = early morning, santu = may be, śivāya = for salvation

te jinendrāḥ = those jineśvaras

te = those, jinendrāḥ = jineśvaras

3. kalaṅka-nirmuktam = free from blemishes

kalaṅka = blemishes, nirmuktam = free from

amukta pūrṇatam = not giving up fullness

amukta = not giving up, pūrṇatam = fullness

kutarka-rāhu-grasanam = eclipsing sophistry like rāhu

kutarka = sophistry like, rāhu = rāhu, grasanam = eclipsing

sadodayam = ever rising / always prospering / in full splendour

sadā = ever, udayam = rising

apūrvacandram = unique type of moon

apūrva = unique type of, candram = moon

जिन-चन्द्र-भाषितं = जिनेश्वरों द्वारा कथित

जिनचंद्र = जिनेश्वरों द्वारा, भाषितं = कथित

दिना-गमे नौमि = मैं प्रातः काल में स्तुति करता हूँ

दिनागमे = प्रातः काल में, नौमि = मैं स्तुति करता हूँ

बुधैर्नमस्कृतम् = पंडितों द्वारा नमस्कृत

बुधैः = पंडितों द्वारा, नमस्कृतम् = नमस्कृत

गाथार्थ :-

विशाल नेत्र रूपी पत्र वाला और देदीप्यमान दंत-किरण रूपी पुष्प केसर वाला, श्री महावीर जिनेश्वर का मुख रूपी कमल प्रातः काल में तुम्हें पवित्र करो. १.

जिनकी अभिषेक क्रिया करके हर्ष समूह से मत्त बने हुए सुरेन्द्र स्वर्ग सुख को तृण मात्र भी नहीं मानते, वे जिनेश्वर प्रातःकाल में शिव सुख के लिये हों. २.

कलंक से रहित, पूर्णता का त्याग न करने वाले, कुतर्क रूपी राहु को ग्रसने वाले, सदा उदयवान, जिनेश्वरों द्वारा कथित और पंडितों द्वारा नमस्कृत [आगम रूपी] अपूर्व चंद्र की मैं प्रातः काल में स्तुति करता हूँ. ३.

jina-candra-bhāṣitam = revealed by the jineśvaras

jinacandra = by the jineśvaras, bhāṣitam = revealed

dinā-game naumi = I eulogise in early morning

dināgame = in early morning, naumi = I eulogise

budhair-namaskṛtam = obeisanced by the scholars

budhaiḥ = by the scholars, namaskṛtam = obeisanced

Stanzaic meaning :-

The face of śrī mahāvīra jineśvara resembling lotus flower with big eyes like leaves and with radiant rays of teeth like pollen may bestow blessing upon you in early morning. 1.

Those jineśvaras, whose, after performing ceremonial bath, surendras having become intoxicated with over joy do not consider the pleasures of heaven worth even a piece of straw, may be for salvation in early morning. 2.

In early morning, I eulogise [the holy scriptures āgamas like] an unique type of moon free from blemishes, not giving up fullness, eclipsing sophistry like rāhu, always in full splendour, revealed by the jineśvaras and obeisanced by the scholars. 3.

सूत्र परिचय :-

श्री महावीर स्वामी, सर्व तीर्थंकर एवं जिन आगम की इस स्तुति को राइअ प्रतिक्रमण में पुरुष ही बोलें.

Introduction of the sūtra :-

Only men shall utter this eulogy of śrī mahāvīra svāmī, all the tīrthaṅkaras and jina āgama [jain scriptures] in rāia pratikramaṇa.

४५. वर-कनक स्तुति

वर-कनक-शंख-विद्रुम-

मरकत-घन-सन्निभं विगत-मोहम्.

सप्तति-शतं जिनानां, सर्वामर-पूजितं वन्दे. १.

शब्दार्थ :-

वर कनक-शंख-विद्रुम-मरकत-घन-सन्निभं = श्रेष्ठ सुवर्ण, शंख, विद्रुम, नीलम और मेघ जैसे [पीत, श्वेत, रक्त, नील और श्याम] वर्णवाले

वर = श्रेष्ठ, कनक = सुवर्ण, शंख = शंख, विद्रुम = विद्रुम, मरकत = नीलम, घन = मेघ, सन्निभं = जैसे

विगत मोहम् = मोह से रहित

विगत = रहित, मोहम् = मोह से

सप्तति शतं जिनानां = एक सौ सित्तर जिनेश्वरों को

सप्तति = सित्तर, शतं = एक सौ, जिनानां = जिनेश्वरों को

सर्वामर-पूजितं = सर्व देवों से पूजित

45. vara-kanaka stuti

vara-kanaka-śaṅkha-vidruma-

marakata-ghana-sannibham̐ vigata-moham.

saptati-śatam̐ jinānām̐, sarvāmara-pūjitaṁ vande. 1.

Literal meaning :-

vara kanaka-śaṅkha-vidruma-marakata-ghana-sannibham̐ = coloured like best gold, conch, coral, sapphire and clouds [yellow, white, red, green and black]

vara = best, kanaka = gold, śaṅkha = conch, vidruma = coral, marakata = sapphire, ghana = clouds, sannibham̐ = like

vigata moham = devoid of infatuation

vigata = devoid of, moham = infatuation

saptati śatam̐ jinānām̐ = to one hundred and seventy jineśvaras

saptati = seventy, śatam̐ = one hundred, jinānām̐ = to jineśvaras

sarvāmara-pūjitaṁ = adored by all gods

सर्व = सर्व, अमर = देवों से, पूजितं = पूजित

वन्दे = मैं वंदन करता हूँ

गाथार्थ :-

श्रेष्ठ सुवर्ण, शंख, विद्रुम [मूंगा / परवाला], नीलम, और मेघ जैसे [पीत, श्वेत, रक्त, नील और श्याम] वर्ण वाले, मोह रहित और सर्व देवों से पूजित एक सौ सित्तर जिनेश्वरों को मैं वंदन करता हूँ. १.

विशेषार्थ :-

एक सौ सित्तर तीर्थंकर :- जंबू द्वीप के महाविदेह में बत्तीस, भरत में एक और ऐरावत में एक— कुल चौतीस विजय है; इसी प्रकार धातकी खंड में अडसठ विजय और अर्ध-पुष्कर-वर द्वीप में अडसठ विजय— इस तरह ढाई द्वीप के कर्म भूमियों में कुल एक सौ सित्तर विजय हैं. प्रत्येक विजय में एक समय में एक तीर्थंकर होते हैं और प्रत्येक विजय में तीर्थंकर होने पर उनकी उत्कृष्ट संख्या एक सौ सित्तर होती है. ऐसा ही श्री अजितनाथ भगवान के समय में हुआ था.

sarva = all, amara = by gods, pūjitam = adored

vande = I obeisance

Stanzaic meaning :-

I obeisance to one hundred and seventy jineśvaras coloured like best gold, conch, coral, sapphire and clouds [yellow, white, red, green and black], devoid of infatuation and adored by all gods. 1.

Specific meaning :-

One hundred and seventy tīrthaṅkaras :- There are in all thirty four vijayas [regions]-- thirty two in mahāvideha, one in bharata and one in airāvata of jambū-dvīpa; similarly sixty eight vijayas in dhātakī khaṇḍa and sixty eight vijayas in ardha-puṣkara-vara dvīpa— in total there are one hundred and seventy vijayas in karma bhūmis [the lands of activities] of dhāī dvīpa [two and a half islands]. One tīrthaṅkara will be present at a time in each vijaya and on presence of one tīrthaṅkara in every vijaya, the maximum number will be one hundred and seventy. Such happened at the time of śrī ajitanātha bhagavāna.

सूत्र परिचय :-

इस स्तुति से एक सौ सित्तर तीर्थकरों को वन्दन किया जाता है. इसे पुरुष ही बोलें.

Introduction of the sūtra :-

By this eulogy, obeisance is being offered to one hundred and seventy tīrthaṅkaras. This should be uttered only by men.

४६. अड्ढाइज्जेसु सूत्र

अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु, पनरससु कम्म-भूमीसु;
जावंत के वि साहू, रय-हरण-गुच्छ-पडिग्गह-धरा.....१.
पंच-मह-व्वय-धरा, अट्ठारस-सहस्स-सीलंग-धरा;
अक्खुया-यार-चरित्ता,
ते सव्वे सिरसा मणसा, मत्थएण वंदामि..२.

शब्दार्थ :-

१. अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु = अढाई द्वीप और समुद्र [जंबू द्वीप, लवण समुद्र, धातकी खंड, कालोदधि समुद्र और अर्ध-पुष्कर-वर द्वीप] की
अड्ढाइज्जेसु = अढाई, दीव = द्वीप, समुद्देसु = समुद्र
पनरससु कम्म-भूमीसु = पंद्रह कर्म भूमियों में
पनरससु = पंद्रह, कम्म = कर्म, भूमीसु = भूमियों में
जावंत के वि साहू = जो कोई भी साधु
जावंत = जो, के = कोई, वि = भी, साहू = साधु

46. aḍḍhāijjesu sūtra

aḍḍhāijjesu dīva-samuddesu, panarasasu kamma-bhūmīsu;
jāvaṇta ke vi sāhū, raya-haraṇa-guccha-paḍiggaha-dharā.1.
pañca-maha-vvaya-dharā, aṭṭhārasa-sahassa-sīlaṅga-dharā;
akkhuyā-yāra-carittā,
te savve sirasā maṇasā, matthaena vandaṃmi..2.

Literal meaning :-

1. aḍḍhāijjesu dīva-samuddesu = of two and a half islands and oceans
[jambū dvīpa, lavaṇa samudra, dhātakī khaṇḍa, kālodadhi samudra and ardha-puṣkara-vara dvīpa]
aḍḍhāijjesu = two and a half, dīva = islands, samuddesu = oceans
panarasasu kamma-bhūmīsu = in fifteen lands of activities
panarasasu = fifteen, kamma = of activities, bhūmīsu = in lands
jāvaṇta ke vi sāhū = any of the sādhus
jāvaṇta ke vi = any of, sāhū = the sādhus

रय-हरण-गुच्छ-पडिग्गह-धरा = रजोहरण [रज को दूर करने वाला साधुओं का ऊन का उपकरण विशेष], गुच्छक [साधुओं के पात्रों की झोली को ढंकने का ऊन का कपड़ा] और [काष्ठ के पात्र को धारण करने वाले

रयहरण = रजोहरण, गुच्छ = गुच्छक, पडिग्गह = पात्र को, धरा = धारण करने वाले

२. पंच-मह-व्वय-धरा = पाँच महाव्रतों को धारण करने वाले
पंच = पाँच, महव्वय = महाव्रतों को

अट्ठारस-सहस्स-सीलंग-धरा = अट्ठारह हजार शील [शीयल / चारित्र] के अंगों को धारण करने वाले

अट्ठारस = अट्ठारह, सहस्स = हजार, सील = शील के, अंग = अंगों को

अक्खुया-यार-चरित्ता = अखंड आचार और चारित्र को धारण करने वाले

अक्खुय = अखंड, आयार = आचार, चरित्ता = चारित्र को धारण करने वाले

ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि = उन सबको मैं सिर [शरीर], मन और मस्तक द्वारा वंदन करता हूँ

raya-haraṇa-guccha-paḍiggaha-dharā = holding rajoharaṇa [a special woollen appliance of sādhus for relinquishing the dust], guccaka [woollen cloth for covering the knapsack of the pātrās of the sādhus] and pātrās [wood vessels]

rayaharaṇa = rajoharaṇa, gucccha = guccaka, paḍiggaha = pātrās, dharā = holding

2. pañca-maha-vvaya-dharā = observing five great vows

pañca = five, maha = great, vvaya = vows, dharā = observing

atthārasa-sahassa-sīlaṅga-dharā = observing eighteen thousand aspects of sīla [sīyala / cāritra]

atthārasa = eighteen, sahassa = thousand, sīla = of sīla, aṅga = aspects

akkhuyā-yāra-carittā = observing uninterrupted code of conduct and cāritra

akkhuyā = uninterrupted, āyāra = code of conduct, carittā = observing cāritra

te savve sirasā maṇasā matthaena vandāmi = i obeisance all of them with head [body], mind and head

ते = उन, सब्बे = सबको, सिरसा = सिर [शरीर], मणसा = मन, मत्थाएण = मस्तक द्वारा, वंदामि = मैं वंदन करता हूँ

गाथार्थ :-

अढाई द्वीप और समुद्र की पंद्रह कर्म भूमियों में जो कोई साधु रजोहरण, गुच्छक एवं पात्र को धारण करने वाले... १.
...पाँच महाव्रत को धारण करने वाले, अट्ठारह हजार शील के अंगों को धारण करने वाले, अखंड आचार और चारित्र को धारण करने वाले हैं, उन सबको शरीर, मन और मस्तक से वंदन करता हूँ. २.

विशेषार्थ :-

अठारह हजार शील [चारित्र] के अंग :- दस प्रकार के यति धर्म का पालन X दस प्रकार [पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय और अजीव वस्तु (अजीव वस्तु में जीव मानकर)] की हिंसा के त्याग द्वारा X पाँच इंद्रियों के दमन द्वारा जयणा X चार प्रकार की संज्ञा से रहित होकर X तीन योग से X तीन करण से = अट्ठारह हजार शील के अंग.

te = them, sabbe = all of, sirasā = with head, maṇasā = mind, matthaṇa = head [body], vandāmi = I obseisance

Stanzaic meaning :-

Any of the sādhus in fifteen lands of activities of aḍḍhā dvīpa and oceans holding rajoharaṇa, gucchaka and pātras... 1.
...observing five great vows, observing eighteen thousand aspects of śīla, observing uninterrupted code of conduct and cāritra, I obseisance all of them with body, mind and head... 2.

Specific meaning :-

Eighteen thousand aspects of śīla [cāritra] :- Observance of ten types of yati dharma X giving up of ten types of injury [to pṛthvikāya, apkāya, teukāya, vaukāya, vanaspatikāya, dvīndriya, trīndriya, caturindriya, pañcendriya and inanimate objects (imagining an animate being in an inanimate object)] X jayaṇā through control over five sense organs X by becoming devoid of four sañjñā [instincts] X by three yoga X by three karaṇa = eighteen thousand aspects of śīla.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र से अढाई द्वीप में स्थित सर्व मुनियों को वन्दन किया जाता है.

Introduction of the sūtra :-

By this sūtra, obeisance is being offered to all the muni's present in aḍḍhāī dvīpa.

४७. लघु-शान्ति स्तव

शान्तिं शान्ति-निशान्तं, शान्तं शान्ता-शिवं नमस्कृत्य.
 स्तोतुः शान्ति-निमित्तं, मन्त्र-पदैः शान्तये स्तौमि.१.
 ओमिति निश्चित-वचसे, नमो नमो भगवतेर्हते पूजाम्.
 शान्ति-जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम्. ...२.
 सकलातिशेषक-महा-संपत्ति-समन्विताय शस्याय.
 त्रैलोक्य-पूजिताय च, नमो नमः शान्ति-देवाय.३.
 सर्वामर-सुसमूह-स्वामिक-संपूजिताय न जिताय.
 भुवन-जन-पालनोद्यत-तमाय सततं नमस्तस्मै.४.
 सर्व-दुरितौघ-नाशन-कराय सर्वाशिव-प्रशमनाय.
 दुष्ट ग्रह-भूत-पिशाच-शाकिनीनां प्रमथनाय.५.
 यस्येति नाम-मन्त्र-प्रधान-वाक्योपयोग-कृत-तोषा.
 विजया कुरुते जन-हित-मिति च नुता नमत तं शान्तिम्..६.
 भवतु नमस्ते भगवति!, विजये! सुजये! परा-परैरजिते!.

47. laghu-śānti stava

śāntim śānti-niśāntam, śāntam śāntā-śivam namaskṛtya.
 stotuḥ śānti-nimittam, mantra-padaiḥ śāntaye staumi.1.
 omiṭi niścita-vacase, namo namo bhagavaterhate pūjām.
 śānti-jināya jayavate, yaśasvine svāmine daminām.2.
 sakalātiśeṣaka-mahā-sampatti-samanvitāya śasyāya.
 trailokya-pūjitāya ca, namo namaḥ śānti-devāya.3.
 sarvāmara-susamūha-svāmika-sampūjitāya na jitāya.
 bhuvana-jana-pālanodyata-tamāya satatam namas-tasmai.4.
 sarva-duritaugha-nāśana-karāya sarvāśiva-praśamanāya.
 duṣṭa graha-bhūta-piśāca-śākinīnām pramathanāya.5.
 yasyeti nāma-mantra-pradhāna-vākyaopayoga-kṛta-toṣā.
 vijayā kurute jana-hita-miti ca nutā namata tam śāntim.6.
 bhavatu namaste bhagavati!, vijaye! sujaye! parā-parairajite!.

अपराजिते! जगत्यां, जयतीति जयावहे! भवति.७.
 सर्वस्यापि च संघस्य, भद्र-कल्याण-मंगल-प्रददे!
 साधूनां च सदा शिव-सुतुष्टि-पुष्टि-प्रदे! जीयाः.८.
 भव्यानां कृत-सिद्धे!, निर्वृति-निर्वाण-जननि! सत्त्वानाम्.
 अभय-प्रदान-निरते!, नमोस्तु स्वस्ति-प्रदे! तुभ्यम्.९.
 भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे! नित्यमुद्यते! देवि!
 सम्यग्-दृष्टीनां धृति-रति-मति-बुद्धि-प्रदानाय. १०.
 जिन-शासन-निरतानां,

शान्ति-नतानां च जगति जनतानाम्.
 श्री-संपत्कीर्ति-यशो-वर्द्धनि!, जय देवि! विजयस्व. . ११.
 सलिला-नल-विष-विषधर-दुष्ट-ग्रह-राज-रोग-रण-भयतः.
 राक्षस-रिपु-गण-मारि-चौरेति-श्वापदा-दिभ्यः. १२.
 अथ रक्ष रक्ष सुशिवं,
 कुरु कुरु शान्तिं च कुरु कुरु सदेति.
 तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं,

aparājite! jagatyām, jayatīti jayāvahe! bhavati..... 7.
 sarvasyāpi ca saṅghasya, bhadra-kalyāṇa-maṅgala-pradade!.
 sādḥūnām ca sadā śiva-sutuṣṭi-puṣṭi-prade! jīyāḥ. 8.
 bhavyānām kṛta-siddhe!, nirvṛti-nirvāṇa-janani! sattvānām.
 abhaya-pradāna-nirate!, namostu svasti-prade! tubhyam. 9.
 bhaktānām jantūnām, śubhāvahe! nitya-mudyate! devi!.
 samyag-dṛṣṭīnām dhṛti-rati-mati-buddhi-pradānāya. 10.
 jina-śāsana-niratānām,

śānti-natānām ca jagati janatānām.
 śrī-sampat-kīrti-yaśo-varddhani!, jaya devi! vijayasva. 11.
 salilā-nala-viṣa-viṣadhara-duṣṭa-graha-rāja-roga-raṇa-bhayataḥ.
 rākṣasa-ripu-gaṇa-māri-caureti-śvāpadā-dibhyaḥ. 12.
 atha rakṣa rakṣa suśivam,
 kuru kuru śāntim ca kuru kuru sadeti.
 tuṣṭim kuru kuru puṣṭim,

कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वम्..१३.
 भगवति! गुणवति! शिव-शान्ति-
 तुष्टि-पुष्टि-स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम्.
 ओमिति नमो नमो ह्रौं ह्रीं ह्रूं ह्राः,
 यः क्षः ह्रीं फट् फट् स्वाहा..१४.
 एवं-यन्नामाक्षर-पुरस्सरं, संस्तुता जया-देवी.
 कुरुते शान्तिं नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै.१५.
 इति पूर्व-सूरि-दर्शित-मन्त्र-पद-विदर्भितः स्तवः शान्तेः.
 सलिलादि-भय-विनाशी, शान्त्यादि-करश्च भक्तिमताम्..१६.
 यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथा-योगम्.
 स हि शान्ति-पदं यायात्, सूरिः श्री-मान-देवश्च.... .१७.
 उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्न-वल्लयः.
 मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे.१८.
 सर्व-मंगल-मांगल्यं, सर्व-कल्याण-कारणम्.
 प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयति शासनम्.१९.

kuru kuru svastim ca kuru kuru tvam. .13.
 bhagavati! guṇavati! śiva-sānti-
 tuṣṭi-puṣṭi-svastīha kuru kuru janānām.
 omi ti namo namo hrām̐ hrīm̐ hrūm̐ hraḥ,
 yaḥ kṣaḥ hrīm̐ phaṭ phaṭ svāhā..14.
 evaṁ-yannāmākṣara-purassaram, sanstutā jayā-devī.
 kurute śāntim namatām, namo namaḥ śāntaye tasmai.15.
 iti pūrva-sūri-darśita-mantra-pada-vidarbhitaḥ stavah śānteḥ.
 salilādi-bhaya-vināśī, śāntyādi-karaśca bhaktimatām.16.
 yaścainam pathati sadā, śṛṇoti bhāvayati vā yathā-yogam.
 sa hi śānti-padam yāyāt, sūriḥ śrī-māna-devaśca.17.
 upasargāḥ kṣayam yānti, chidyante vighna-vallayaḥ.
 manaḥ prasannatāmeti, pūjyamāne jineśvare.18.
 sarva-maṅgala-māṅgalyam, sarva-kalyāṇa-kāraṇam.
 pradhānam sarva-dharmāṇām, jainam jayati śāsanam.19.

शब्दार्थ :-

१. शान्ति = श्री शान्तिनाथ भगवान को

शान्ति-निशान्तं = शांति के गृह समान

शान्ति = शांति के, निशान्तं = गृह समान

शान्तं = शांत रस [तीनों प्रकार के प्राकृतिक गुण- सत्त्व, रजस् और तमस् से रहित अवस्था] से युक्त

शान्ता-शिवं = अशिव [कर्म जन्य कलेश] शांत हो चुके हैं

शान्त = शांत हो चुके हैं, अशिवं = अशिव

नमस्कृत्य = नमस्कार करके

नमः = नमस्कार, कृत्य = करके

स्तोतुः = स्तुति करने वालों की

शान्ति-निमित्तं मन्त्र-पदैः = शांति में निमित्तभूत मंत्र पदों से

शान्ति = शांति में, निमित्तं = निमित्तभूत, मन्त्र = मंत्र, पदैः = पदों से

शान्तये = शांति के लिये

स्तौमि = मैं स्तुति करता हूँ

Literal meaning :-

1. sāntim = to śrī sāntinātha bhagavānasānti-nisāntam = alike an abode of peacesānti = of peace, nisāntam = alike an abodesāntam = having sānta rasa [sentiment of mental peace-- condition free from three natural qualities of purity, dust and darkness / good, bad and evil]sāntā-śivam = evil consequences are pacified [sufferings resulting from the karmas]sānta = are pacified, aśivam = evil consequencesnamaskṛtya = obeisancingstotuḥ = of the eulogists [devotees eulogising you]sānti-nimittam mantra-padaiḥ = with the verses of hymns causing about peacesānti = peace, nimittam = causing about, mantra = of hymns, padaiḥ = with the versessāntaye = for the sake of peacestaumi = i eulogise

२.ओमिति निश्चित-वचसे = 'ॐ' ऐसे निश्चित वचन वाले
ओम् = ॐ, इति = ऐसे, निश्चित = निश्चित, वचसे = वचन
वाले

नमो नमो = नमस्कार हो, नमस्कार हो / बारंबार नमस्कार हो

भगवतेर्हते पूजाम् = पूजा के योग्य भगवान

भगवते = भगवान, अर्हते = योग्य, पूजाम् = पूजा के

शान्ति-जिनाय = श्री शान्तिनाथ जिनेश्वर को

शान्ति = श्री शान्तिनाथ, जिनाय = जिनेश्वर को

जयवते यशस्विने स्वामिने दमिनाम् = जयवान, यशस्वी और
[इंद्रिय] दमन करने वालों के स्वामी [योगीश्वर]

जयवते = जयवान, यशस्विने = यशस्वी, स्वामिने = स्वामी,

दामिनाम् = दमन करने वालों के

३.सकला-तिशेषक-महा-संपत्ति-समन्विताय = सर्व अतिशय रूपी
महा संपत्ति से युक्त

सकल = सर्व, अतिशेषक = अतिशय रूपी, महा = महा,

संपत्ति = संपत्ति से, समन्विताय = युक्त

शस्याय त्रैलोक्य-पूजिताय च = प्रशस्त और त्रैलोक्य पूजित

2.omiti niścita-vacase = represented by a determined word om

om = om, iti = represented by, niścita = a determined, vacase = word

namo namo = be obeisance again and again

bhagavaterhate pūjām = venerable bhagavāna worthy of worship

bhagavate = bhagavāna, arhate = worthy, pūjām = of worship

śānti-jināya = to śrī śāntinātha jineśvara

śānti = to śrī śāntinātha, jināya = jineśvara

jayavate yaśasvine svāmine daminām = victorious, reputed and master of
controlers of [sense organs] [yogīśvara]

jayavate = victorious, yaśasvine = reputed, svāmine = master, daminām
= of controlers

3.sakalā-tiśeṣaka-mahā-sampatti-samanvitāya = having the most precious
wealth of all atīśaya [marvellous attributes]

sakala = all, atīśeṣaka = of atīśaya, mahā = the most precious, sampatti
= wealth, samanvitāya = having

śasyāya trailokya-pūjitāya ca = worthy of praise and worshipped by living
beings in three worlds

शस्याय = प्रशस्त, त्रैलोक्य = त्रैलोक्य, पूजिताय = पूजित, च = और

नमो नमः शान्ति-देवाय = श्री शान्तिनाथ भगवान को बारंबार नमस्कार हो

नमो नमः = बारंबार नमस्कार हो, शान्ति = श्री शान्तिनाथ, देवाय = भगवान को

४.सर्वामर-सुसमूह-स्वामिक-संपूजिताय = सर्व देव समूह के स्वामियों द्वारा विशिष्ट रूप से पूजित

सर्व = सर्व, अमर = देव, सुसमूह = समूह के, स्वामिक = स्वामियों द्वारा, संपूजिताय = विशिष्ट रूप से पूजित

न जिताय = अजेय

भुवन-जन-पालनोद्यत-तमाय = विश्व के लोगों का पालन करने में तत्पर रहने वाले

भुवन = विश्व के, जन = लोगों का, पालन = पालन करने में, उद्यततमाय = तत्पर रहने वाले

सततं नमस्तस्मै = उनको [श्री शान्तिनाथ भगवान को] सदा नमस्कार हो

सततं = सदा, नमः = नमस्कार हो, तस्मै = उनको

śasyāya = worthy of praise, trailokya = by living beings in three worlds, pūjitāya = worshipped, ca = and

namo namaḥ śānti-devāya = be obeisance again and again to śrī śāntinātha bhagavāna

namo namaḥ = be obeisance again and again, śānti = to śrī śāntinātha, devāya = bhagavāna

4.sarvāmara-susamūha-svāmika-sampūjitāya = well worshipped by the presiding deity of the assembly of all gods

sarva = all, amara = of gods, susamūha = of the assembly, svāmika = by the presiding deity, sampūjitāya = well worshipped

na jitāya = invincible

bhuvana-jana-pālanodyata-tamāya = always ready to protect all living beings of the universe

bhuvana = of the universe, jana = all living beings, pālana = to protect, udyatatamāya = always ready

satatam namastasmai = always be obeisance to them [śrī śāntinātha bhagavāna]

satatam = always, namaḥ = be obeisance, tasmai = to them

५. सर्व-दुरितौघ-नाशन-कराय = सर्व प्रकार के भय के समूह को नाश करने वाले

सर्व = सर्व प्रकार के, दुरित = भय के, ओघ = समूह को, नाशन = नाश, कराय = करने वाले

सर्वा-शिव-प्रशमनाय = सर्व उपद्रवों का शमन करने वाले

अशिव = उपद्रवों का, प्रशमनाय = शमन करने वाले

दुष्ट-ग्रह-भूत-पिशाच-शाकिनीनां प्रमथनाय = दुष्ट ग्रह, भूत, पिशाच और शाकिनियों के उत्पात का संपूर्णतया नाश करने वाले

दुष्ट = दुष्ट, ग्रह = ग्रह, भूत = भूत, पिशाच = पिशाच, शाकिनीनां = शाकिनियों के उत्पात का, प्रमथनाय = संपूर्णतया नाश करने वाले

६. यस्य = जिनके

इति = इस तरह

नाम-मन्त्र-प्रधान-वाक्योपयोग-कृत-तोषा = नाम-मंत्र वाले उत्तम अनुष्ठानों से संतुष्ट

नाम = नाम, मन्त्र = मंत्रवाले, प्रधान = उत्तम, वाक्योपयोग = अनुष्ठानों से, कृततोषा = संतुष्ट

विजया = विजया देवी कुरुते जन-हितम् = लोक का हित करती

5. sarva-duritaugha-nāśana-karāya = destroyers of all types of groups of fears

sarva = of all types, durita = of fears, ogha = of groups nāśana-karāya = destroyers

sarvā-śiva-praśamanāya = pacifiers of all troubles

aśiva = of troubles, praśamanāya = pacifiers

duṣṭa-graha-bhūta-piśāca-śākinīnām pramathanāya = complete destroyers of troubles of evil planets, evil spirits, ghosts and witches

duṣṭa = evil, graha = planets, bhūta = evil spirits, piśāca = ghosts, śākinīnām = of troubles of witches, pramathanāya = complete destroyers

6. yasya = whose

iti = in this manner

nāma-mantra-pradhāna-vākyopayoga-kṛta-toṣā = satisfied with most auspicious rites of hymns with names

nāma = with names, mantra = of hymns, pradhāna = most auspicious, vākyopayoga = with rites, kṛta-toṣā = satisfied

vijayā = vijayā devī [goddess vijayā] kurute jana-hitam = does good to the

हे
 कुरुते = करती है, जन = लोक का, हितम् = हित
 इति च नुता = इससे ही स्तुति की गयी है
 इति = इससे, च = ही, नुता = स्तुति की गयी है
 नमत तं शान्तिम् = उन श्री शान्तिनाथ भगवान को नमस्कार करो
 नमत = नमस्कार करो, तं = उन, शान्तिम् = श्री शान्तिनाथ
 भगवान को
 ७. भवतु नमस्ते = आपको नमस्कार हो
 भवतु = हो, नमः = नमस्कार, ते = आपको
 भगवति! = हे भगवती! [ज्ञान आदि गुणों से युक्त]
 विजये! = हे विजया!
 सुजये! = हे सुजया! [श्रेष्ठ जयवाली]
 परापरैः = पर और अपर रहस्यों से [अन्य श्रेष्ठ देवताओं से]
 अजिते! = हे अजिता! [अजेय]
 अपराजिते! = हे अपराजिता! [अपराजित]
 जगत्यां जयति = जगत में [आप] जय को प्राप्त होती हो
 जगत्यां = जगत में, जयति = जय को प्राप्त होती हो
 इति = इसलिये

people
 kurute = does, jana = to the people, hitam = good
 iti ca nutā = only therefore eulogy is performed
 iti = therefore, ca = only, nutā = eulogy is performed
 namata tam śāntim = perform obeisance to those śrī śāntinātha bhagavāna
 namata = perform obeisance, tam = to those, śāntim = to śrī śāntinātha
 bhagavāna
 7. bhavatu namaste = be obeisance to you
 bhavatu = be, namaḥ = obeisance, te = to you
 bhagavati! = oh bhagavati! [having highest qualities like knowledge]
 vijaye! = oh vijayā!
 sujaye! = oh sujayā! [well victorious]
 parāparaiḥ = with former and latter secret hymns [by other superior gods]
 ajite! = oh ajitā! [unconquered]
 aparājite! = oh aparājitā! [undefeated]
 jagatyām jayati = [you] attain victory in the world
 jagatyām = in the world, jayati = attain victory
 iti = therefore

जयावहे! = हे जयावहा! [विजय दिलाने वाली]

भवति! = हे भवती! [हे श्रीमती!]

८.सर्वस्य = सकल

अपि = भी

च = और

संघस्य = संघ को

भद्र-कल्याण-मंगल-प्रददे! = भद्र, कल्याण और मंगल [सुख, आरोग्य और आनंद] प्रदान करने वाली

भद्र = भद्र, कल्याण = कल्याण, मंगल = मंगल, प्रददे = प्रदान करने वाली

साधूनां = साधुओं को

च = एवं

सदा = सदा

शिव-सुतुष्टि-पुष्टि-प्रदे! = निरुपद्रवता [शांति / चित्त की स्वस्थता], संतोष [इंद्रिय जय] और पुष्टि [उत्साह / गुण वृद्धि] प्रदान करने वाली

शिव = निरुपद्रवता, सुतुष्टि = संतोष, पुष्टि = पुष्टि, प्रदे = प्रदान करने वाली

jayāvahe! = oh jayāvahā! [causer of victory]

bhavatī! = oh bhavatī! [oh śrīmatī]

8.sarvasya = entire

api = also

ca = and

saṅghasya = to the society

bhadra-kalyāṇa-maṅgala-pradade! = bestower of welfare, prosperity and auspicious things [happiness, wellbeing and pleasure]

bhadra = of welfare, kalyāṇa = prosperity, maṅgala = auspicious things, pradade = bestower

sādhūnām = to sādhus

ca = and

sadā = always

śiva-sutuṣṭi-puṣṭi-prade! = bestower of peace [mental peace], satisfaction [control over sense organs] and nourishment [encouragement / increment in virtues]

śiva = of peace, sutuṣṭi = satisfaction, puṣṭi = nourishment, prade = bestower

जीयाः = [आपकी] जय हो
 ९.भव्यानां = भव्य जीवों [उपासकों] को
 कृत-सिद्धे! = हे कृत सिद्धा! [सिद्धि देने वाली]
 कृत = देने वाली, सिद्धे = सिद्धा
 निर्वृति-निर्वाण-जननि! = शांति और प्रमोद देने वाली
 निर्वृति = शांति, निर्वाण = प्रमोद, जननि = देने वाली
 सत्त्वानाम् = सत्त्व शालियों को
 अभय-प्रदान-निरते! = अभय प्रदान करने में तत्पर
 अभय = अभय, प्रदान = प्रदान करने में, निरते = तत्पर
 नमोस्तु = नमस्कार हो
 नमो = नमस्कार, अस्तु = हो
 स्वस्ति-प्रदे! = क्षेम प्रदान करने वाली
 स्वस्ति = क्षेम
 तुभ्यम् = आपको
 १०.भक्तानां जन्तूनां = भक्त जनों को
 भक्तानां = भक्त, जन्तूनां = जनों को
 शुभावहे! नित्यमुद्यते! = सदा शुभ करने में तत्पर
 शुभावहे = शुभ करने में, नित्यम् = सदा, उद्यते = तत्पर

jīyāḥ = be [your] victory
 9.bhavyānām = to worthy living beings [worshippers]
 kṛta-siddhe! = oh kṛta siddhā! [bestower of success]
 kṛta = bestower, siddhe = of success
 nirvṛti-nirvāṇa-janani! = bestower of peace and joy
 nirvṛti = peace, nirvāṇa = joy, janani = bestower of
 sattvānām = to the holders of higher qualities
 abhaya-pradāna-nirate! = always ready to bestow fearlessness
 abhaya = fearlessness, pradāna = ready to bestow, nirate = always

 namostu = be obeisance
 namaḥ = obeisance, astu = be
 svasti-prade! = bestower of forgiveness
 svasti = forgiveness
 tubhyam = to you
 10.bhaktānām jantūnām = to the devotees
 śubhāvahe! nityamudyate! = always ready to do good
 śubhāvahe = to do good, nityam = always, udyate = ready

देवि! = हे देवी!

सम्यग्-दृष्टीनां = सम्यग्दृष्टियों को

सम्यग् = सम्यक्, दृष्टीनां = दृष्टियों को

धृति-रति-मति-बुद्धि प्रदानाय = स्थिरता [चित्त की स्वस्थता], हर्ष, विचार शक्ति और बुद्धि [हिताहित की निर्णय-शक्ति] प्रदान करने वाली

धृति = स्थिरता, रति = हर्ष, मति = विचार शक्ति, बुद्धि = बुद्धि, प्रदानाय = प्रदान करने वाली

११.जिन-शासन-निरतानां = जिन धर्म में अनुरक्त

जिन = जिन, शासन = धर्म में, निरतानां = अनुरक्त

शान्ति-नतानां च = और श्री शान्तिनाथ भगवान को नमन करने वाले
शान्ति = शान्तिनाथ भगवान को, नतानां = नमन करने वाले
जगति = जगत में

जनतानाम् = जनता को

श्री-संपत्-कीर्ति-यशो-वर्द्धनि! = लक्ष्मी, संपत्ति, कीर्ति और यश की वृद्धि करने वाली

श्री = लक्ष्मी, संपत् = संपत्ति, कीर्ति = कीर्ति, यशो = यश की, वर्द्धनि = वृद्धि करने वाली

devī! = oh devī!

samyag-dr̥ṣṭīnām = to the holders of right vision

samyag = right, dr̥ṣṭīnām = vision

dhṛti-rati-mati-buddhi pradānāya = bestower of steadiness [mental peace], pleasure, intellect and perception [power of deciding good and evil]

dhṛti = of steadiness, rati = pleasure, mati = intellect, buddhi = perception, pradānāya = bestower

11.jina-sāsana-niratānām = devoted in jainism

jinaśāsana = in jainism, niratānām = devoted

sānti-natānām ca = and bowers to śrī sāntinātha bhagavāna

sānti = to śrī sāntinātha bhagavāna, natānām = bowers

jagati = in the world

janatānām = to the people

śrī-sampat-kīrti-yaśo-varddhani! = increaser of wealth, property, fame and reputation

śrī = of wealth, sampat = property, kīrti = fame, yaśo = reputation, varddhani = increaser

जय = आपकी जय हो

देवि! = हे देवी!

विजयस्व = आपकी विजय हो

१२.सलिला-नल-विष-विषधर-दुष्ट-ग्रह-राज-रोग-रण-भयतः = बाढ, अग्नि, विष, सर्पदंश, दुष्ट ग्रह, राजा, रोग और युद्ध के भय से [—इन आठ प्रकार के भयों से]

सलिल = बाढ, अनल = अग्नि, विष = विष, विषधर = सर्प दंश, राज = राजा, रोग = रोग, रण = युद्ध के, भयतः = भय से

राक्षस-रिपु-गण-मारि-चौरेति-श्वापदा-दिभ्यः = राक्षस, शत्रु समूह, महामारी [मरकी], चोर, ईति [सात प्रकार के उपद्रव], हिंसक पशु आदि से

राक्षस = राक्षस, रिपु = शत्रु, गण = समूह, मारि = महामारी, चौर = चोर, इति = ईति, श्वापद = हिंसक पशु, आदिभ्यः = आदि से

१३.अथ = अब

रक्ष रक्ष = रक्षण कर, रक्षण कर

सुशिवं कुरु कुरु = उपद्रव रहित कर, उपद्रव रहित कर

jaya = be your victory

devi! = oh devi!

vijayasva = be your success

12.salilā-nala-ṣiṣa-ṣiṣadhara-duṣṭa-graha-rāja-roga-ṛaṇa-bhayataḥ = from the fear of floods, conflagration, poisons, snake-bite, evil planets, rulers, diseases and outbreak of war [--with these eight types of fears]

salila = of floods, anala = conflagration, ṣiṣa = poison, ṣiṣadhara = snake-bite, rāja = rulers, roga = diseases, ṛaṇa = outbreak of war, bhayataḥ = from the fears

rākṣasa-ripu-gaṇa-māri-caureti-śvāpadā-dibhyaḥ = from demons, group of enemies, epidemic diseases, thieves, īti [seven types of disturbances / troubles], ferocious animals etc.

rākṣasa = from demons, ripu = of enemies, gaṇa = group, māri = epidemic diseases, caura = thieves, iti = īti, śvāpada = ferocious animals, ādibhyaḥ = etc.

13.atha = now

rakṣa rakṣa = protect, protect

susivam kuru kuru = make free from troubles, make free from troubles

सुशिवं = उपद्रव रहित, कुरु = कर
 शान्तिं च कुरु कुरु = और शांति कर, शांति कर
 शांति = शांति
 सदा = सदा
 इति = इसी प्रकार
 तुष्टिं कुरु कुरु = तुष्टि कर, तुष्टि कर
 तुष्टि = तुष्टि
 पुष्टिं कुरु कुरु = पुष्टि कर, पुष्टि कर
 पुष्टि = पुष्टि
 स्वस्तिं च कुरु कुरु = और क्षेम कर, क्षेम कर
 स्वस्ति = क्षेम
 त्वम् = तू
 १४. भगवति! गुणवति! = हे भगवती!, हे गुणवती [हे पूज्य गुणवान् देवी]
 भगवति = हे पूज्य, गुणवति = गुणवान् देवी
 शिव-शान्ति-तुष्टि-पुष्टि-स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् = यहां मनुष्यों को निरुपद्रवता, शांति, तुष्टि, पुष्टि और क्षेम करो
 शिव = निरुपद्रवता, शांति = शांति, तुष्टि = तुष्टि, पुष्टि =

suśivam = free from troubles, kuru = make
 śāntim ca kuru kuru = and confer peace, confer peace
 śāntim = peace, kuru = confer
 sadā = always
 iti = similarly
 tuṣṭim kuru kuru = confer contentment, confer contentment
 tuṣṭim = contentment
 puṣṭim kuru kuru = strengthen, strengthen
 puṣṭim kuru = strengthen
 svastim ca kuru kuru = and prosper, prosper
 svastim kuru = prosper
 tvam = you
 14. bhagavati! guṇavati! = oh bhagavati! oh guṇavati! [oh venerable virtuous goddess]
 bhagavati = oh venerable, guṇavati = virtuous goddess
 śiva-śānti-tuṣṭi-puṣṭi-svastiha kuru kuru janānām = here make free from troubles, peace, contentment, strengthen, and prosper to the people
 śiva = free from troubles, śānti = peace, tuṣṭi = contentment, puṣṭi =

पुष्टि, स्वस्ति = क्षेम, इह = यहां, कुरु कुरु = करो, जनानाम् = मनुष्यों को

ओमिति नमो नमो ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फट् फट् स्वाहा =
[शांतिनाथ भगवान् को] ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फट् फट्
स्वाहा- ऐसे मंत्राक्षरों से बारंबार नमस्कार हो

ओमिति ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फट् फट् स्वाहा = ॐ ह्रीं
ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फट् फट् स्वाहा- ऐसे मंत्राक्षरों से

१५. एवं-यन्ना-माक्षर-पुरस्सरं संस्तुता जया-देवी = इस तरह जिनके
[मंत्र रूप के] नामाक्षरों द्वारा अच्छी तरह से स्तुत जया देवी
एवं = इसी तरह, यन् = जिनके, नामाक्षर = नामाक्षरों,
पुरस्सरं = द्वारा, संस्तुता = अच्छी तरह से स्तुत, जया =
जया, देवी = देवी

कुरुते शान्तिं नमतां = नमस्कार करने वालों को शांति करती है
कुरुते = करती है, शान्तिं = शांति, नमतां = नमस्कार करने
वालों को

नमो नमः शान्तये तस्मै = उन श्री शांतिनाथ भगवान् को बारंबार

strengthen, svasti= prosper, iha = here, kuru kuru = make, janānām = to
the people

omiti namo namo hrām̐ hrīm̐ hrūm̐ hrah̐ yah̐ kṣah̐ hrīm̐ phaṭ phaṭ svāhā =
be obeisance [to śrī sāntinātha bhagavāna] again and again with the
words of hymns like-- ॐ hrām̐ hrīm̐ hrūm̐ hrah̐ yah̐ kṣah̐ hrīm̐ phaṭ phaṭ
svāhā

omiti hrām̐ hrīm̐ hrūm̐ hrah̐ yah̐ kṣah̐ hrīm̐ phaṭ phaṭ svāhā = with the
words of hymns like ॐ hrām̐ hrīm̐ hrūm̐ hrah̐ yah̐ kṣah̐ hrīm̐ phaṭ phaṭ
svāhā

15. evam-yannā-mākṣara-purassaram sanstutā jayā-devī = similarly goddess
jayā whose eulogy is done well with the words [in the form of hymn]
evam = similarly, yan = whose, nāmākṣara = the words, purassaram =
with, sanstutā = eulogy is done well, jayā = jayā, devī = goddess

kurute sāntim namatām = makes peace to the performers of obeisance
kurute = makes, sāntim = peace, namatām = to the performers of
obeisance

namo namaḥ sāntaye tasmāi = be obeisance again and again to those śrī

नमस्कार हो

शान्तये = श्री शान्तिनाथ भगवान को, तस्मै = उन

१६. इति पूर्व-सूरि-दर्शित-मन्त्र-पद-विदर्भितः स्तवः शान्तेः = इस तरह पूर्व आचार्यों द्वारा दर्शित मंत्र पदों से गर्भित शान्ति स्तव

पूर्व = पूर्व, सूरि = आचार्यों द्वारा, दर्शित = दर्शित, मन्त्र = मन्त्र, पद = पदों से, विदर्भितः = गर्भित, स्तवः = स्तव, शान्तेः = शान्ति

सलिलादि-भय-विनाशी शान्त्यादि-करश्च भक्तिमताम् = भक्ति करने वालों के लिये जल आदि का भय नष्ट करने वाला है एवं शान्ति आदि करने वाला है

सलिल = जल, आदि = आदि, भय = भय, विनाशी = नष्ट करने वाला है, शान्ति = शान्ति, आदि = आदि, करः = करने वाला है, च = और, भक्तिमताम् = भक्ति करने वालों के लिये

१७. यश्चैनं पठति सदा शृणोति भावयति वा यथा-योगम् = और जो इसको सदा [प्रति दिन] यथा योग्य पढ़ता है, सुनता है या भावना / श्रद्धा करता है

यः = जो, च = और, एनं = इसको, पठति = पढ़ता, शृणोति

śāntinātha bhagavāna

śāntaye = to śrī śāntinātha bhagavāna, tasmāi = those

16. iti pūrva-sūri-darśita-mantra-pada-vidarbhitaḥ stavaḥ śānteḥ = in this way, śānti stava composed with the phrases of hymns revealed by ancestral ācāryas

iti = in this way, pūrva = ancestral, sūri = by ācāryas, darśita = revealed, mantra = of hymns, pada = with the phrases, vidarbhitaḥ = composed, stavaḥ = stava, śānteḥ = śānti

salilādi-bhaya-vināśī śāntyādi-karaśca bhaktimatām = is the destroyer of fears like water / floods and is the maker of peace etc. to the performer of devotion

salila = water, ādi = like, bhaya = of fears, vināśī = is the destroyer, śānti = of peace, ādi = etc., karaḥ = is the maker, ca = and, bhaktimatām = to the performer of devotion

17. yaścainam paṭhati sadā śṛṇoti bhāvayati vā yathā-yogam = and who always [daily] studies, listens or have faith in it properly

yaḥ = who, ca = and, enam = it, paṭhati = studies, śṛṇoti = listens,

= सुनता है, भावयति = भावना करता है, वा = या, यथा =
यथा, योगम् = योग्य

स = वह

हि शान्ति-पदं यायात् = निश्चय ही शान्ति / मोक्ष पद प्राप्त करता है
हि = निश्चय ही, शान्ति = शान्ति, पदं = पद, यायात् = प्राप्त
करता है

सूरिः श्री-मान-देवश्च = श्री मानदेव सूरि भी

सूरिः = सूरि, श्री मानदेवः = श्री मानदेव, च = भी

१८. उपसर्गाः क्षयं यान्ति = उपसर्ग नष्ट होते हैं

उपसर्गाः = उपसर्ग, क्षयं = नष्ट, यान्ति = होते हैं

छिद्यन्ते विघ्न-वल्लयः = विघ्न रूपी लताएँ कट जाती हैं

छिद्यन्ते = कट जाती है, विघ्न = विघ्न रूपी, वल्लयः = लताएँ

मनः प्रसन्नतामेति = मन प्रसन्नता को प्राप्त करता है

मनः = मन, प्रसन्नताम् = प्रसन्नता को, एति = प्राप्त करता है

पूज्यमाने जिनेश्वरे = जिनेश्वर का पूजन करने से

पूज्यमाने = पूजन करने से, जिनेश्वरे = जिनेश्वर का

१९. सर्व-मंगल-मांगल्यं = सर्व मंगलों में मंगल रूप

bhāvayati = have faith in, vā = or, yathāyogam = properly

sa = he

hi śānti-padam yāyāt = certainly attains bliss / salvation

hi = certainly, śānti padam = bliss, yāyāt = attains

sūriḥ śrī-māna-devaśca = śrī mānadeva sūri too

sūriḥ = sūri, śrī mānadevaḥ = śrī mānadeva, ca = too

18. upasargāḥ kṣayam yānti = troubles comes to an end

upasargāḥ = troubles, kṣayam yānti = comes to an end

chidyante vighna-vallayaḥ = obstacles like creepers are destroyed

chidyante = are destroyed, vighna = obstacles like, vallayaḥ = creepers

manah prasannatāmeti = heart is filled with joy

manah = heart, prasannatām = with joy, eti = is filled

pūjyamāne jineśvare = by worshipping jineśvara

pūjyamāne = by worshipping, jineśvare = jineśvara

19. sarva-maṅgala-māṅgalyam = the most auspicious amongst all auspices /
auspicious things

सर्व = सर्व, मंगल = मंगलों में, मांगल्यं = मंगल रूप

सर्व-कल्याण-कारणम् = सर्व कल्याणों का कारण

कल्याण = कल्याणों का, कारणम् = कारण

प्रधानं सर्व-धर्माणां = सर्व धर्मों में श्रेष्ठ

प्रधानं = श्रेष्ठ, धर्माणां = धर्मों में

जैनं जयति शासनम् = जैन शासन जयवंत है

जैनं = जैन, जयति = जयवंत है, शासनम् = शासन

गाथार्थ :-

शान्ति के गृह समान, शान्त-रस से युक्त, अश्वि शांत हो चुके हैं [जिनके, ऐसे], स्तुति करने वालों की शांति के लिये श्री शांतिनाथ भगवान को नमस्कार करके, शांति में निमित्तभूत मंत्र पदों से मैं स्तुति करता हूँ. १.
ॐ ऐसे निश्चित वचन वाले, पूजा के योग्य भगवान, जयवान्. यशस्वी और योगीश्वर श्री शांतिनाथ जिनेश्वर को बारंबार नमस्कार हो. २.

सर्व अतिशय रूपी महा संपत्ति से युक्त, प्रशस्त और त्रैलोक्य पूजित श्री शान्तिनाथ भगवान को बारंबार नमस्कार हो. ३.

sarva = all, maṅgala = amongst auspicious, māṅgalyam = the most auspicious

sarva-kalyāṇa-kāraṇam = the supreme cause of all prosperity

kalyāṇa = of prosperity, kāraṇam = the supreme cause

pradhānam sarva-dharmāṇām = the best among all religious pursuits

pradhānam = the best, dharmāṇām = among religious pursuits

jainam jayati śāsanam = jainism is victorious

jainam śāsanam = jainism, jayati = is victorious

Stanzaic meaning :-

For the peace of eulogists, obeisancing śrī śāntinātha bhagavāna, like an abode of peace, having śānta-rasa, [such, whose] evil consequences are pacified, I eulogise with the verses of hymns causing about peace. 1.
Be obeisance again and again to śrī śāntinātha jineśvara represented by a determined word om̐, venerable, bhagavāna worthy of adoration, victorious, reputed and yogīśvara. 2.

Again and again be obeisance to śrī śāntinātha bhagavāna having the most precious wealth of all marvellous attributes, worthy of praise and worshipped by

...सर्व देव समूह के स्वामियों द्वारा विशिष्ट प्रकार से पूजित, अजेय, विश्व के लोगों का रक्षण करने में सदा तत्पर रहने वाले... उनको [श्री शांतिनाथ भगवान को] सदा नमस्कार हो। ४.
 सर्व प्रकार के भयों का नाश करने वाले, सर्व उपद्रवों का शमन करने वाले, दुष्ट ग्रह, भूत, पिशाच और शाकिनियों के उत्पात का संपूर्णतया नाश करने वाले [उनको (श्री शांतिनाथ भगवान को) सदा नमस्कार हो]। ५.
 उन श्री शांतिनाथ भगवान को नमस्कार करो, जिनके इस तरह नाम मंत्र वाले उत्तम अनुष्ठानों से संतुष्ट विजया देवी लोगों का हित करती है, इससे ही [उनकी- विजया देवी की] स्तुति की गयी है। ६.
 हे भगवती!, हे विजया!, हे सुजया!, हे अजिता!, हे अपराजिता!, हे जयावहा!, हे भवती! पर और अपर रहस्यों से जगत में [आप] जय को प्राप्त होती हो. इसलिये आपको नमस्कार हो. ७ [१].
 ज्ञानादि ऐश्वर्य गुणों से युक्त, श्रेष्ठ जयवाली, अन्य श्रेष्ठ देवों से अजेय, अपराजित और विजय दिलाने वाली हे श्रीमती विजया देवी! जगत में आप जय पाती हो. इसलिये आपको नमस्कार हो. ७ [२].
 और सकल संघ को भद्र, कल्याण और मंगल प्रदान करने वाली एवं साधुओं को भी सदा शिव, तुष्टि और पुष्टि प्रदान करने वाली [हे विजया

all living beings in three worlds. 3.
 Always be obeisance to them [to śrī śāntinātha bhagavāna] well worshipped by the presiding deity of the assembly of all gods, invincible, always ready to protect all living beings of the universe... 4.
 [Always be obeisance to them (to śrī śāntinātha bhagavāna)]..., the destroyers of all types of fears, pacifiers of all troubles, complete destroyers of all troubles of evil planets, evil spirits, ghosts and witches. 5.
 Perform obeisance to those śrī śāntinātha bhagavāna whose, in this manner, vijayā devī satisfied with most auspicious rites of hymns with name does good to the people; only therefore [her-- vijayā devī's] eulogy is performed. 6.
 Oh bhagavati!, oh vijayā!, oh sujayā!, oh ajitā!, oh aparājita!, oh jayāvahā!, oh bhavati! [you] attain victory in the world with former and latter secret hymns. Therefore be obeisance to you. 7. [1]
 Oh śrīmatī vijayā devī! having highest qualities like knowledge, well victorious, unconquered by other superior gods, undefeated and causer of victory! you attain victory in the world. Therefore be obeisance to you. 7. [2]
 [Oh vijayā devī!], the bestower of welfare, prosperity and auspicious things to entire society and also the bestower of peace, satisfaction and nourishment to

देवी! आपकी जय हो. ८.
 भव्य उपासकों को शांति और प्रमोद देने वाली, सत्त्वशालियों को अमय
 प्रदान करने में तत्पर, सिद्धि देनेवाली, क्षेम प्रदान करने वाली [हे विजया
 देवी!] आपको नमस्कार हो. ९.
 भक्त जनों को सदा शुभ करने में तत्पर; सम्यग्दृष्टियों को स्थिरता,
 हर्ष, विचार शक्ति और बुद्धि प्रदान करने वाली;... [हे देवी!]... १०.
 ...जैन धर्म में अनुरक्त और श्री शान्तिनाथ भगवान को नमन करने वाली
 जनता की लक्ष्मी, संपत्ति, कीर्ति और यश की वृद्धि करने वाली हे देवी!
 जगत में आपकी जय हो, आपकी विजय हो. ११.
 बाढ, अग्नि, विष, सर्प दंश, दुष्ट ग्रह, राजा, रोग और युद्ध के भय से,
 राक्षस, शत्रु समूह, महामारी, चोर, ईति, हिंसक पशु आदि से... [अब
 तू रक्षण कर, रक्षण कर;] १२.
 ...अब तू रक्षण कर, रक्षण कर; उपद्रव रहित कर, उपद्रव रहित कर
 और शांति कर, शांति कर; इसी तरह तुष्टि कर, तुष्टि कर; पुष्टि कर,
 पुष्टि कर और क्षेम कर, क्षेम कर. १३.
 हे पूज्य गुणवान देवी! यहां मनुष्यों को निरुपद्रवता, शांति, तुष्टि, पुष्टि
 और क्षेम करो. ॐ हौं ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फट् फट् स्वाहा- ऐसे
 मंत्राक्षरों से [श्री शान्तिनाथ भगवान को] बारंवार नमस्कार हो. ... १४

sādhus, always be [your] victory. 8.
 [Oh vijayā devī!], the bestower of peace and joy to worthy living beings; always
 ready to bestow fearlessness, bestower of success and bestower of forgiveness
 to the holders of higher qualities, be obeisance to you. 9.
 [Oh devī!], always ready to do good to the devotees; bestower of steadiness,
 pleasure, intellect and perception to the holders of right vision;... 10.
 Oh devī!..., increaser of wealth, property, fame and reputation to the people
 devoted in jainism and bowers to śrī sāntinātha bhagavāna, be your victory, be
 your success in the world. 11.
 [Now you protect, protect...] from the fears of floods, conflagration, poisons,
 snake-bite, evil planets, rulers, diseases and outbreak of war, from demons,
 group of enemies, epidid diseases, thieves, īti, ferocious animals etc.... ... 12.
 ...now you protect, protect; make free from troubles, make free from troubles;
 and confer peace, confer peace; similarly confer contentment, confer
 contentment; strengthen, strengthen and prosper, prosper. 13.
 Oh venerable virtuous goddess! here make free from the troubles, peace,
 contentment, strengthen and prosper to the people. Be obeisance again and
 again [to śrī sāntinātha bhagavāna] with the words of hymns like-- ॐ hrām

इस तरह जिनके [मंत्र रूप] नामाक्षरों द्वारा अच्छी तरह से स्तुत जया देवी नमस्कार करने वालों को शांति करती है, उन श्री शान्तिनाथ भगवान को वारंवार नमस्कार हो. १५.

इस तरह पूर्व आचार्यों द्वारा दर्शित मंत्र पदों से गर्भित शांति स्तव भक्ति करने वालों के लिये जल आदि के भय को नष्ट करने वाला है और शांति आदि करने वाला है. १६.

वह जो इसको [शांति स्तव को] सदा यथा योग्य पढ़ता है, सुनता है या श्रद्धा करता है, और श्री मानदेव सूरि भी निश्चय ही शांति पद प्राप्त करते हैं. १७.

जिनेश्वर के पूजन से उपसर्ग नष्ट होते हैं, विघ्न रूपी लताएं कट जाती हैं और मन प्रसन्नता को प्राप्त करता है. १८.

सर्व मंगलों में मंगल, सर्व कल्याणों का कारण, सर्व धर्मों में श्रेष्ठ जैन शासन जयवंत है. १९.

विशेषार्थ :-

ओम् / ॐकार = यह मंत्र बीज पंच परमेष्ठि, परमात्म पद एवं परम तत्त्व सूचक है.

hrīm̐ hrūm̐ hrah yah kṣah hrīm̐ phaṭ phaṭ svāhā. 14.

Similarly goddess jayā whose eulogy is done well with the words [in the form of hymn] makes peace to the performers of obeisance, be obeisance again and again to those śrī śāntinātha bhagavāna. 15.

In this way, śānti stava composed with the phrases of hymns, revealed by ancestral ācāryas is the destroyer of fears like floods and is the maker of peace etc. to the performers of devotion. 16.

He who daily studies, listens to or have faith properly in it [in śānti stava] and śrī mānadeva sūri too certainly attains bliss. 17.

Troubles come to an end, obstacles like creepers are destroyed and the heart is filled with joy by worshipping jineśvaras. 18.

Jainism, the most auspicious amongst all auspices, the supreme cause of all prosperity, the best among all religions is victorious. 19.

Specific meaning :-

om / sound of ॐ = This seed of sacred hymn represents pañca parameṣṭhī, the state of supreme soul [supreme being] and supreme element.

ह्रीं = यह मंत्र बीज संपत्ति, रूप, कीर्ति, धन, पुण्य, जय और ज्ञान प्रदान करने वाला है।

ह्रीं = यह मंत्र बीज दुःख, उपसर्ग, महा संकट को दूर करने वाला, सिद्ध विद्या को प्रदान करने वाला और सर्व भयों का नाश करने वाला है।

ह्रूं = यह मंत्र बीज विजय प्रदान करने वाला, रक्षण करने वाला और पूज्यता दिलाने वाला है।

ह्रः = यह मंत्र बीज शत्रुओं की कूट व्यूह रचना को नष्ट करने वाला है।

यः = यह मंत्र बीज सर्व अशिवों / उपद्रवों का शमन करने वाला है।

क्षः = यह मंत्र बीज भूत, पिशाच, शाकिनी और ग्रहों के दुष्प्रभाव को दूर करता है।

फट् = यह मंत्र बीज रक्षण के लिये अस्त्र रूप है।

स्वाहा = यह मंत्र बीज देवताओं को आह्वान करने के लिये उपयोगी है।

सूत्र परिचय :-

मरकी के उपद्रव को दूर करने के लिये नाडोल नगर में श्री मानदेव सूरि द्वारा रचित इस स्तोत्र को पढ़ने, सुनने तथा इस से मन्त्रित जल को छिड़कने से सर्व रोग दूर होते हैं और शान्ति फैलती है।

hrām̐ = This seed of sacred hymn is the origin of prosperity, splendid form [beauty], fame, wealth, good luck, success and knowledge.

hrīm̐ = This seed of sacred hymn pacifies grief, impediments, great troubles, bestows supernatural knowledge and destroys all types of fears.

hrūm̐ = This seed of sacred hymn brings victory, gives protection and makes worthy of venerable.

hrah̐ = this seed of sacred hymn overcomes deceptive strategic disposition of enemies.

yah̐ = This seed of sacred hymn pacifies all impediments.

kṣah̐ = This seed of sacred hymn removes evil sprits, ghosts, witches and evil effects of planets.

phaṭ = This seed of sacred hymn is like a weapon for defence.

svāhā = This phrase of sacred hymn is useful for invoking the gods.

Introduction of the sūtra :-

All diseases dispel and peace spread by reading, hearing or sprinkling water consecrated by this hymn composed by **śrī mānadeva sūri** to dispel the calamity of **marakī** [a disease] in **nādola** city.

४८. चउक्कसाय सूत्र

चउक्कसाय-पडिमल्लुल्लूरणु,
 दुज्जय-मयण-बाण-मुसुमूरणु.
 सरस-पियंगु-वन्नु गय-गामिउ,
 जयउ पासु भुवण-त्तय-सामिउ..१.
 जसु तणु-कंति-कडप्प-सिणिद्धउ,
 सोहइ फणि-मणि-किरणा-लिद्धउ.
 नं नव-जल-हर-तडिल्लय-लंछिउ,
 सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ..२.

शब्दार्थ :-

१.चउक्कसाय-पडिमल्लुल्लूरणु = चार कषाय रूपी शत्रुओं का
 नाश करने वाले

चउ = चार, कसाय = कषाय, पडिमल्ल = शत्रुओं का,
 उल्लूरणु = नाश करने वाले

दुज्जय-मयण-बाण-मुसुमूरणु = दुर्जय काम देव के बाणों को तोड़ने

48. caukkasāya sūtra

caukkasāya-paḍimallullūraṇu,
 dujjaya-mayaṇa-bāṇa-musumūraṇu.
 sarasa-piyaṅgu-vannu gaya-gāmiu,
 jayau pāsu bhavaṇa-ttaya-sāmiu..1.
 jasu taṇu-kanti-kaḍappa-siṇiddhau,
 sohai phaṇi-maṇi-kiraṇā-liddhau.
 naṁ nava-jala-hara-taḍillaya-lañchiu,
 so jiṇu pāsu payacchau vañchiu..2.

Literal meaning :-

1.caukkasāya-paḍimallullūraṇu = destroyers of four kaṣāyas like enemies

cau = four, kasāya = kaṣāyas, paḍimalla = of enemies, ullūraṇu =
 destroyers

dujjaya-mayaṇa-bāṇa-musumūraṇu = breakers of unconquerable flowery

वाले
 दुज्जय = दुर्जेय, मयण = काम देव के, बाण = बाणों को,
 मुसुमूरणु = तोड़ने वाले
 सरस-पियंगु-वन्नु = नवीन प्रियंगु लता जैसे वर्ण वाले

 सरस = नवीन, पियंगु = प्रियंगु लता जैसे, वन्नु = वर्ण वाले

 गय-गामिउ = हाथी जैसी गति वाले
 गय = हाथी जैसी, गामिउ = गति वाले
 जयउ पासु भुवण-त्तय-सामिउ = तीनों भुवन [लोक] के स्वामी श्री
 पार्श्वनाथ प्रभु जय को प्राप्त हों
 जयउ = जय को प्राप्त हों, पासु = श्री पार्श्वनाथ प्रभु, भुवण
 = भुवन के, त्तय = तीनों, सामिउ = स्वामी
 २.जसु तणु-कंति-कडप्प-सिणिद्धउ = जिनके शरीर का तेजो मंडल
 मनोहर है
 जसु = जिनके, तणु = शरीर का, कंति = तेजो, कडप्प =
 मंडल, सिणिद्धउ = मनोहर है
 सोहइ = शोभित

arrows of cupid [god of love / desire for sex]
 dujjaya = unconquerable, mayana = of cupid, bāṇa = flowery arrows,
 musumūraṇu = breakers of
 sarasa-piyaṅgu-vannu = having [green] complexion resembling fresh
 priyaṅgu creeper
 sarasa = fresh, piyaṅgu = resembling priyaṅgu creeper, vannu = having
 complexion
 gaya-gāmiu = having gait like an elephant
 gaya = like an elephant, gāmiu = having gait
 jayau pāsu bhavaṇa-ttaya-sāmiu = śrī pārśvanātha prabhu, lord of all the
 three worlds may attain victory
 jayau = may attain victory, pāsu = śrī pārśvanātha prabhu, bhavaṇa = of
 worlds, ttaya = all the three, sāmiu = lord
 2.jasu taṇu-kanti-kaḍappa-siṇiddhau = whose splendid halo of the physique
 is charming
 jasu = whose, taṇu = of the physique, kanti = splendid, kaḍappa = halo,
 siṇiddhau = is charming
 sohai = is resplendent

फणि-मणि-किरणा-लिद्धउ = नाग-मणि की किरणों से युक्त

फणि = नाग, मणि = मणि की, किरण = किरणों से,
अलिद्धउ = युक्त

नं नव-जल-हर-तडिल्लय-लंछिउ = सच ही बिजली से युक्त नवीन
मेघ जैसा है

नं = सच ही, नव = नवीन, जल-हर = मेघ जैसा है,
तडिल्लय = बिजली से, लंछिउ = युक्त

सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ = वे श्री पार्श्वनाथ जिनेश्वर
मनोवांछित प्रदान करें

सो = वे, जिणु = जिनेश्वर, पासु = श्री पार्श्वनाथ, पयच्छउ =
प्रदान करें, वंछिउ = मनोवांछित

गाथार्थ :-

चार कषाय रूपी शत्रुओं का नाश करने वाले, दुर्जेय काम देव के बाणों
को तोड़ने वाले, नवीन प्रियंगु लता जैसे [नील] वर्ण वाले, हाथी जैसी
गति वाले और तीनों लोक के नाथ श्री पार्श्वनाथ प्रभु जय का
प्राप्त हों. १.

phaṇi-maṇi-kiraṇā-liddhau = have with the rays emanating from the jewel of
cobra

phaṇi = of cobra, maṇi = from the jewel, kiraṇa = the rays emanating,
aliddhau = have

nam nava-jala-hara-taḍillaya-lañchiu = is really like a new cloud with
thunderbolt

nam = really, nava = new, jalahara = is like a cloud, taḍillaya =
thunderbolt, lañchiu = with

so jiṇu pāsu payacchau vañchiu = those śrī pārśvanātha jineśvara may
bestow the desired fruits

so = those, jiṇu = jineśvara, pāsu = śrī pārśvanātha, payacchau = may
bestow, vañchiu = the desired fruits

Stanzaic meaning :-

śrī pārśvanātha prabhu, the destroyers of four kaṣāyas like enemies, breakers
of unconquerable flowery arrows of cupid, having [green] complexion like fresh
priyaṅgu creeper, having gait like an elephant and lord of all the three worlds may
attain victory. 1.

जिनके शरीर का तेजो मंडल मनोहर है, शोभित है, नागमणि की किरणों से युक्त है और सच ही बिजली युक्त नवीन मेघ समान है, वे श्री पार्श्वनाथ जिनेश्वर मनोवांछित प्रदान करें..... २.

विशेषार्थ :-

मयण-बाण / कामदेव के बाण :- विशिष्ट प्रकार से उन्मत्त हुए तीव्र काम वासना के भावों द्वारा मन पर आक्रमण.

सूत्र परिचय :-

यह सूत्र श्री पार्श्वनाथ भगवान के गुण कीर्तन एवं स्तुति रूप चैत्य-वन्दन है.

Those śrī pārsvanātha jineśvara may bestow the desired fruits whose splendid halo of the physique is charming, is resplendent, have the rays emanating from the jewel of cobra and is really like a new cloud with thunder bolt..... 2.

Specific meaning :-

mayana-bāṇa / kāmadeva ke bāṇa [flowery arrows of cupid] :- Invasion by special types of intoxicating intense desire for sex relations over the mind.

Introduction of the sūtra :-

This sūtra is a caitya-vandana in the form of eulogy and qualities of śrī pārsvanātha bhagavāna.

४९. मन्नह जिणाणं सज्झाय

मन्नह जिणाणमाणं, मिच्छं परिहरह, धरह सम्मत्तं.
 छव्विह-आवस्सयम्मि, उज्जुत्तो होइ पइ-दिवसं.१.
 पव्वेसु पोसह-वयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ.
 सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ.२.
 जिण-पूआ जिण-थुणणं, गुरु-थुअ साहम्मिआण वच्छल्लं.
 ववहारस्स य सुद्धी, रह-जत्ता तित्थ-जत्ता य.३.
 उवसम-विवेग-संवर, भासा-समिई छजीव-करुणा य.
 धम्मिअ-जण-संसग्गो, करण-दमो चरण-परिणामो.४.
 संघोवरि बहु-माणो, पुत्थय-लिहणं पभावणा तित्थे.
 सड्ढाण किच्चमेअं, निच्चं सुगुरु-वएसेणं.५.

शब्दार्थ :-

१. मन्नह जिणाणमाणं = जिनेश्वर की आज्ञा को मानना

मन्नह = मानना, जिणाणं = जिनेश्वर की, आणं = आज्ञा को

49. mannaha jīṇāṇaṃ sajjhāya

mannaha jīṇāṇamāṇaṃ, miccham pariharaha, dharaha sammattam.
 chavviha-āvassayammi, ujjutto hoi pai-divasam.1.
 pavvesu posaha-vayaṃ, dāṇaṃ sīlaṃ tavo a bhāvo a.
 sajjhāya namukkāro, parovayāro a jayaṇā a.2.
 jīṇa-pūā jīṇa-thuṇaṇaṃ, guru-thua sāhammiāṇa vacchallam.
 vavahārassa ya suddhī, raha-jattā tittha-jattā ya.3.
 uvasama-vivega-samvara, bhāsā-samīi chajīva-karuṇā ya.
 dhammi-a-jaṇa-saṃsaggo, karaṇa-damo caraṇa-pariṇāmo.4.
 saṅghovari bahu-māṇo, putthaya-lihaṇaṃ pabhāvaṇā titthe.
 saddhāṇa kiccameaṃ, niccam sugurū-vaeseṇaṃ.5.

Literal meaning :-

1. mannaha jīṇāṇamāṇaṃ = to obey the orders of jīneśvara

mannaha = to obey, jīṇāṇaṃ = of jīneśvara, āṇaṃ = the orders

मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं = मिथ्यात्व को त्याग कर सम्यक्त्व को धारण करना

मिच्छं = मिथ्यात्व को, परिहरह = त्याग कर, धरह = धारण करना, सम्मत्तं = सम्यक्त्व को

छ-व्विह-आवस्सयम्मि उज्जुतो होइ पइ-दिवसं = प्रतिदिन छः प्रकार के आवश्यकों में उद्यमी होना

छ = छः, विह = प्रकार के, आवस्सयम्मि = आवश्यकों में, उज्जुतो = उद्यमी, होइ = होना, पइ = प्रति, दिवसं = दिन

२.पव्वेसु पोसह-वयं = पर्व दिनों में पौषध व्रत करना

पव्वेसु = पर्व दिनों में, पोसह = पौषध, वयं = व्रत करना

दाणं सीलं तवो अ भावो अ = और दान देना, शीयल पालना, तप करना और उत्तम भावना रखना

दाणं = दान देना, सीलं = शीयल पालना, तवो = तप करना, अ = और, भावो = उत्तम भावना रखना

सज्झाय नमुक्कारो = स्वाध्याय करना, नवकार मंत्र का जाप करना

सज्झाय = स्वाध्याय करना, नमुक्कारो = नवकार मंत्र का जाप करना

परोवयारो अ जयणा अ = और परोपकार करना और जयणा का

miccham pariharaha dharaha sammattam = to accept samyaktva [true faith] by giving up mithyātva [false belief]

miccham = mithyātva, pariharaha = by giving up, dharaha = to accept, sammattam = samyaktva

cha-vviha-āvassayammi ujjutto hoi pai-divasam = to be diligent in performing six types of āvaśyakas [necessary religious rites] every day

cha = six, vviha = types of, āvassayammi = āvaśyakas, ujjutto = to be diligent, hoi = in performing, pai = every, divasam = day

2.pavvesu posaha-vayam = to do vow of paṇṣadha in auspicious days

pavvesu = in auspicious days, posaha = of paṇṣadha, vayam = to do vow

dāṇam sīlam tavo a bhāvo a = and to give charity, to observe good moral conduct, to do penance and to have noble thoughts

dāṇam = to give charity, sīlam = to observe good moral conduct, tavo = to do penance, a = and, bhāvo = to have noble thoughts

sajjhāya namukkāro = to do religious study, to count navakāra mantra

sajjhāya = to do self [religious] study, namukkāro = to count navakāra mantra

parovayāro a jayaṇā a = and to do good to others and to observe jayaṇā

पालन करना

परोवयारो = परोपकार करना, जयणा = जयणा का पालन करना

३. जिण-पूआ जिण-थुण्णं = जिनेश्वर की पूजा करना, जिनेश्वर की स्तुति करना

जिण = जिनेश्वर की, पूआ = पूजा करना, थुण्णं = स्तुति करना

गुरु-थुअ साहम्मिआण वच्छल्लं = गुरु की स्तुति करना, साधर्मिक के प्रति वात्सल्य रखना

गुरु = गुरु की, थुअ = स्तुति करना, साहम्मिआण = साधर्मिक के प्रति, वच्छल्लं = वात्सल्य रखना

ववहारस्स य सुद्धी = और व्यवहार शुद्धि रखना

ववहारस्स = व्यवहार, य = और, सुद्धी = शुद्धि रखना

रह-जत्ता तिथ-जत्ता य = रथ यात्रा और तीर्थ यात्रा करना

रह = रथ, जत्ता = यात्रा, तिथ = तीर्थ, जत्ता = यात्रा करना

४. उवसम-विवेग-संवर = उपशांत रहना, विवेक रखना, संवर करना [कर्म के अंतः प्रवाह को रोकना]

उवसम = उपशांत रहना, विवेग = विवेक रखना, संवर =

parovayāro = to do good to others, jayaṇā = to observe jayaṇā

3. jīṇa-pūā jīṇa-thuṇaṇam = to worship jīneśvara, to eulogize jīneśvara

jīṇa = jīneśvara, pūā = to worship, thuṇaṇam = to eulogize

guru-thua sāhammiāṇa vacchallam = to eulogize preceptor, to have affection towards co-religionist

guru = preceptor, thua = to eulogize, sāhammiāṇa = towards co-religionist, vacchallam = to have affection

vavahārassa ya suddhī = and to keep the dealings honest

vavahārassa = the dealings, ya = and, suddhī = to keep honest

raha-jattā tittha-jattā ya = to carry on chariot pilgrimage and to pilgrimage holly places

raha = chariot, jattā = pilgrimage, tittha = holly places, jattā = to pilgrimage

4. uvasama-vivega-samvara = to be peaceful, to have discretion, to restrain [to stop the inflow of karmas]

uvasama = to be peaceful, vivega = to have discretion, samvara = to

संवर करना

भासा-समिई छ-जीव-करुणा य = भाषा समिति रखना और छः
काय के जीवों के प्रति करुणा रखना

भासा समिई = भाषा समिति रखना, छ = छः काय के, जीव
= जीवों के प्रति, करुणा = करुणा रखना

धम्मिअ-जण-संसग्गो = धार्मिक जनों के संसर्ग में रहना

धम्मिअ = धार्मिक, जण = जनों के, संसग्गो = संसर्ग में रहना

करण-दमो चरण-परिणामो = इंद्रियों का दमन करना, चारित्र
ग्रहण करने की भावना रखना

करण = इंद्रियों का, दमो = दमन करना, चरण = चारित्र
ग्रहण करने की, परिणामो = भावना रखना

५.संघोवरि बहु-माणो = संघ का बहुमान करना

संघोवरि = संघ का, बहुमाणो = बहुमान करना

पुत्थय-लिहणं पभावणा तित्थे = पुस्तक लिखाना [और छपाना],
तीर्थ प्रभावना करना

पुत्थय = पुस्तक, लिहणं = लिखाना, पभावणा = प्रभावना
करना, तित्थे = तीर्थ की

सड्ढाण किच्चमेअं निच्चं सुगुरु-वासेणं = श्रावक के ये नित्य

restrain

bhāsā-samīī cha-jīva-karuṇā ya = to keep bhāṣā samiti and to have mercy
for living beings of six forms

bhāsā samīī = to keep bhāṣā samiti, cha = six forms of, jīva = for living
beings, karuṇā = to have mercy

dhammia-jaṇa-saṇsaggo = to be in contact with religious people

dhammia = religious, jaṇa = with people, saṇsaggo = to be in contact

kaṇa-damo caṇa-pariṇāmo = to control sense organs and to have
sentiments of accepting cāritra [ascetic life]

kaṇa = sense organs, damo = to control, caṇa = of accepting cāritra,
pariṇāmo = to have sentiments

5.saṅghovari bahu-māṇo = to respect the society

saṅghovari = the society, bahumāṇo = to respect

putthaya-lihaṇaṃ pabhāvaṇā titthe = to make to write [and publish] the
books, to glorify religion / to increase the splendour of pilgrimage places

putthaya = the books, lihaṇaṃ = to cause to write, pabhāvaṇā = to
glorify, titthe = religion

saddhāṇa kiccameaṃ niccam suguru-vaesenam = [these] daily duties of a

कर्तव्य सद्गुरु के उपदेश से जानना

सङ्गहाण = श्रावक के, किच्चमेअं = ये कर्तव्य, निच्चं = नित्य,
सुगुरु = सद्गुरु के, उवासेणं = उपदेश से जानना

गाथार्थ :-

जिनेश्वर की आज्ञा को मानना, मिथ्यात्व को त्याग कर सम्यक्त्व को धारण करना, प्रतिदिन के छः आवश्यकों में उद्यमी होना,.... १.
...पर्व दिनों में पौषध व्रत करना, दान करना, शीयल पालना, तप करना, उत्तम भावना रखना, स्वाध्याय करना, नवकार मंत्र का जाप करना, परोपकार करना और जयणा का पालन करना,.... २.
...जिनेश्वर की पूजा करना, जिनेश्वर की स्तुति करना, गुरु की स्तुति करना, साधर्मिक के प्रति वात्सल्य रखना, व्यवहार शुद्धि रखना, रथयात्रा और तीर्थ यात्रा करना,.... ३.
...उपशांत रहना, विवेक रखना, संवर करना, भाषा समिति का पालन करना, छः काय के जीवों के प्रति करुणा रखना, धार्मिक जनों के संसर्ग में रहना, इंद्रियों का दमन करना और चारित्र ग्रहण की भावना रखना,.... ४.

śrāvaka [a truly religious person] must be understood from the sermons of worthy preceptors [religious teachers]

saddhāṇa = of a śrāvaka, kiccameam = these duties, niccam = daily, suguru = of worthy preceptors, uvaeseṇam = must be understood from the sermons

Stanzaic meaning :-

To obey the orders of jineśvara, to accept samyaktva by giving up mithyātva, to be diligent in performing six type of āvaśyakas every day,.... 1.
...to do vow of pauṣadha in auspicious days, to give charity, to observe good moral conduct, to do penance, to have noble thoughts, to do self [religious] study, to count navakāra mantra, to do good to others and to observe jayaṇā,.... 2.
...to worship jineśvara, to eulogize jineśvara, to eulogize preceptor, to have affection towards co-religionist, to keep the dealings honest, to carry on chariot pilgrimage and to pilgrimage holy places,.... 3.
...to be peaceful, to have discretion, to restrain, to keep bhāṣā samiti, to have mercy for living beings of six forms, to be in contact with religious people, to control sense organs and to have sentiments of accepting cāritra,.... 4.

...संघ का बहुमान करना, पुस्तक लिखाना [और छपाना] और तीर्थ प्रभावना करना— श्रावक के ये कर्तव्य सद्गुरु के उपदेश से जानना. ५.

विशेषार्थ :-

पर्व दिवस = धार्मिक उत्सव या अनुष्ठान के लिये निर्धारित दिवस.
गुरु स्तुति = गुरु की शुद्ध आहार, पानी, औषध, वस्त्र, पात्र, वसति आदि से भक्ति करना एवं उनके गुणों की प्रशंसा करना.
व्यवहार शुद्धि = लोक व्यवहार में टीकापात्र, निंदनीय या अनादरणीय व्यवहार न करना.

रथ-यात्रा = अलंकृत रथ में जिनेश्वर की प्रतिमा को स्थापन कर वाजिन्त्र आदि के साथ सकल संघ सहित नगर में फिरना.

उपशम = कषायों को शांत रखते हुए क्षमा, नम्रता, सरलता और संतोष रखना.

विवेक = सत्य-असत्य, कार्य-अकार्य, सार-असार आदि का विचार.

दान = स्व उपकार की बुद्धि से आनंद पूर्वक अन्य को बहुमान के साथ

...to respect the society, to make to write [and publish] books and to glorify the religion-- these daily duties of **śrāvaka** must be understood from the sermons of worthy preceptors. 5.

Specific meaning :-

parva divasa = Days fixed for religions festivals and rites

guru stuti = To give right type of food, water, medicines, clothes, wooden vessels, place etc. with dedication to the **guru** and to praise their virtues.

vyavahāra śuddhi = Not to do activities worth criticizable, condemnable or unrespectable in public view.

ratha-yātrā = To take out a procession in the town along with entire **saṅgha** installing an idol of **jīneśvara** in a decorated chariot accompanied by musical instruments / band.

upaśama = To develop forgiveness, humbleness, simplicity and satisfaction keeping the **kaṣāyas** under control.

viveka = Decision of true and untrue, proper and improper deeds, advantage and disadvantage etc.

dāna = To give aims to others with respect cheerfully with the object of self-

दान देना.

जयणा = अपने दैनिक व्यवहार में जीव रक्षा और जीव दया के पालन का ध्यान रखना.

सूत्र परिचय :-

इस सज्झाय द्वारा श्रावक के छत्तीस कर्तव्यों का वर्णन किया गया है.

benefit.

jayaṇā = To be careful in protecting living beings and their well-being in our daily activities.

Introduction of the sūtra :-

Thirty six duties of the śrāvaka are described by this sajjhāya.

५०. भरहेसर सज्झाय

भरहेसर बाहुबली, अभय कुमारो अ ढंढण कुमारो.
 सिरिओ अण्णिआ उत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ.१.
 मेअज्ज थूलभद्दो, वयर रिसी नंदिसेण सीहगिरी.
 कयवन्नो अ सुकोसल, पुंडरीओ केसी करकंडू.२.
 हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल महासाल सालिभद्दो अ.
 भद्दो दसन्नभद्दो, पसन्नचंदो अ जसभद्दो.३.
 जंबु पहू वंकचूलो, गय सुकुमालो अवंति सुकुमालो.
 धन्नो इलाइ पुत्तो, चिलाइ पुत्तो अ बाहुमुणी.४.
 अज्ज गिरी अज्ज रक्खिअ, अज्ज सुहत्थी उदायगो मणगो.
 कालय सूरी संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ.५.
 पभवो विण्हु कुमारो, अद्द कुमारो दढप्पहारी अ.
 सिज्जंस कूरगडू अ, सिज्जंभव मेह कुमारो अ.६.
 एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुण-गणेहिं संजुत्ता.

50. bharaheṣara sajjhāya

bharaheṣara bāhubalī, abhaya kumāro a dhaṇḍhaṇa kumāro.
 sirio aṇṇiā utto, aimutto nāgadatto a.1.
 meajja thūlabhaddo, vayara risī nandiseṇa sīhagiri.
 kayavanno a sukosala, puṇḍariō kesī karakaṇḍū.2.
 halla vihalla sudansaṇa, sāla mahāsāla sālibhaddo a.
 bhaddo dasannabhaddo, pasannacando a jasabhaddo.3.
 jambu pahū vaṅkacūlo, gaya sukumālo avanti sukumālo.
 dhanṇo ilāi putto, cilāi putto a bāhumuṇī.4.
 ajja giri ajja rakkhia, ajja suhatthī udāyago maṇago.
 kālaya sūri sambo, pajjunno mūladevo a.5.
 pabhavo viṇhu kumāro, adda kumāro dadhappahārī a.
 sijjansa kūragadū a, sijjambhava meha kumāro a.6.
 emāi mahāsattā, dintu suhaṃ guṇa-gaṇehim sañjuttā.

जेसिं नाम-ग्गहणे, पाव-प्पबंधा विलिज्जन्ति.७.
 सुलसा चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयन्ती.
 नमया सुंदरी सीया, नंदा भद्दा सुभद्दा य.८.
 राइमई रिसिदत्ता, पउमाघई अंजणा सिरिदेवी.
 जिट्ठ सुजिट्ठ मिगावई, पभावई चिल्लणादेवी.९.
 बंभी सुंदरी रुप्पिणी, रेवई कुंती सिवा जयन्ती य.
 देवई दोवई धारणी, कलावई पुप्फचूला य. १०.
 पउमावई य गोरी, गंधारी लक्खमणा सुसीमा य.
 जंबूवई सच्चभामा, रुप्पिणी कण्हट्ट महिसीओ. ... ११.
 जक्खा य जक्खदिन्ना, भूआ तह चैव भूअदिन्ना य.
 सेणा वेणा रेणा, भइणीओ थूलभदस्स. १२.
 इच्चाइ महा-सईओ, जयन्ति अकलंक-सील-कलिआओ.
 अज्ज वि वज्जइ जासिं, जस-पडहो तिहुअणे सयले. १३.
 शब्दार्थ :-

१. भरहेसर बाहुबली = भरतेश्वर [भरत चक्रवर्ती] और बाहुबली

jesim nāma-ggahaṇe, pāva-ppabandhā vilijjanti. 7.
 sulasā candanabālā, maṇoramā mayañarehā damayanti.
 namayā sundarī siyā, nandā bhaddā subhaddā ya. 8.
 rāimai risidattā, paumāvaī añjaṇā siridevī.
 jittṭha sujittṭha migāvaī, pabhāvaī cillaṇādevī. 9.
 bambhī sundarī ruppiṇī, revaī kuntī sivā jayanti ya.
 devaī dovaī dharaṇī, kalāvaī pupphacūlā ya. 10.
 paumāvaī ya gorī, gandhārī lakkhamaṇā susīmā ya.
 jambūvaī saccabhāmā, ruppiṇī kaṇhaṭṭha mahisīo. 11.
 jakkhā ya jakkhadinnā, bhūā taha ceva bhūadinnā ya.
 seṇā veṇā reṇā, bhaiṇīo thūlabhaddassa. 12.
 iccāi mahā-saīo, jayanti akalaṅka-sīla-kaliāo.
 ajja vi vajjai jāsim, jasa-paḍaho tihuaṇe sayale. 13.
 Literal meaning :-

1. bharaheṣara bāhubalī = emperor bharateśvara [bharata] and king

राजा

भरहेसर = भरतेश्वर, बाहुबली = बाहुबली

अभय कुमारो अ ढंढण कुमारो = राजकुमार अभय कुमार और
राजकुमार ढंढण कुमारअभय कुमारो = अभय कुमार, अ = और, ढंढण कुमारो =
ढंढण कुमारसिरिओ अण्णिआ उतो = मंत्री पुत्र श्रीयक कुमार और अर्णिका
पुत्र [वणिक पुत्र]

सिरिओ = श्रीयक, अण्णिआ = अर्णिका, उतो = पुत्र

अइमुत्तो नागदत्तो अ = अतिमुक्त [अइमुत्ता] मुनि और नागदत्त शेट
अइमुत्तो = अतिमुक्त, नागदत्तो = नागदत्त

२.मेअज्ज थूलभदो = मेतार्य मुनि और मंत्री पुत्र स्थूलभद्र

मेअज्ज = मेतार्य, थूलभदो = स्थूलभद्र

वयर रिसी नंदिसेण सीहगिरी = वज्र ऋषि [वज्र स्वामी], मुनि
नंदिषेण और सिंहगिरि आचार्यवयर रिसी = वज्र ऋषि, नंदिसेण = नंदिषेण, सीहगिरी =
सिंहगिरि

कयवन्नो अ सुकोसल = कयवन्ना शेट और सुकोशल मुनि

bāhubalī

bharaheśara = bharateśvara, bāhubalī = bāhubalī

abhaya kumāro a ḍhaṇḍhaṇa kumāro = prince abhaya kumāra and prince
ḍhaṇḍhaṇa kumāraabhaya kumāro = abhaya kumāra, a = and, ḍhaṇḍhaṇa kumāro =
ḍhaṇḍhaṇa kumārasirio aṇṇiāuto = minister's son śrīyaka kumāra and son of aṇṇikā [son of a
businessman]

sirio = śrīyaka, aṇṇiā = aṇṇikā, uto = son of

aimutto nāgadatto a = muni atimukta [aimuttā] and nāgadatta śeṭha
aimutto = atimukta, nāgadatto = nāgadatta2.meajja thūlabhaddo = metārya muni and minister's son sthūlabhadra
meajja = metārya, thūlabhaddo = sthūlabhadravayara risī nandiseṇa sīhagiri = vajra ṛṣi [vajra svāmī], muni nandiseṇa
and sīhagiri ācārya

vayara risī = vajra ṛṣi, nandiseṇa = nandiseṇa, sīhagiri = sīhagiri

kayavanno a sukosala = kayavannā śeṭha and sukośala muni

कयवन्नो = कयवन्ना, सुकोसल = सुकोशल
 पुंडरीओ केसी करकंडू = राजकुमार पुंडरीक, केशी गणधर और
 करकंडू राजर्षि
 पुंडरीओ = पुंडरीक, केसी = केशी, करकंडू = करकंडू
 ३. हल्ल विहल्ल सुदंसण = राजकुमार हल्ल, राजकुमार विहल्ल
 और सुदर्शन शेट
 हल्ल = हल्ल, विहल्ल = विहल्ल, सुदंसण = सुदर्शन
 साल महासाल सालिभदो अ = राजकुमार शाल, राजकुमार
 महाशाल और शालिभद्र शेट
 साल = शाल, महासाल = महाशाल, सालिभदो = शालिभद्र
 भदो दसन्नभदो = भद्र [भद्रबाहु स्वामी] और दशार्णभद्र राजा
 भदो = भद्र, दसन्नभदो = दशार्णभद्र
 पसन्नचंदो अ जसभदो = प्रसन्नचंद्र राजर्षि और यशोभद्र सूरि
 पसन्नचंदो = प्रसन्नचंद्र, जसभदो = यशोभद्र
 ४. जंबु पहु वंकचूलो = जंबु प्रभु [जंबु स्वामी] और राजकुमार
 वंकचूल
 जंबु पहु = जंबु प्रभु, वंकचूलो = वंकचूल
 गय-सुकुमालो अवन्ति-सुकुमालो = राजकुमार गज सुकुमाल और

kayavanno = kayavannā, sukosala = sukośala
 puṇḍarīo keśī karakaṇḍū = prince puṇḍarīka, keśī gaṇadhara and
 karakaṇḍū rājarṣi
 puṇḍarīo = puṇḍarīka, keśī = keśī, karakaṇḍū = karakaṇḍū
 3. halla vihallā sudansaṇa = prince halla, prince vihallā and sudarsāna
 śeṭha
 halla = halla, vihallā = vihallā, sudansaṇa = sudarsāna
 sāla mahāsāla sālibhaddo a = prince śāla, prince mahāsāla and śālibhadra
 śeṭha
 sāla = śāla, mahāsāla = mahāśāla, sālibhaddo = śālibhadra
 bhaddo dasannabhaddo = bhadda [bhadrabāhu svāmī] and king daśārṇabhadda
 bhaddo = bhadda, dasannabhaddo = daśārṇabhadda
 pasannacando a jasabhaddo = prasannacandra rājarṣi and yaśobhadra sūri
 pasannacando = prasannacandra, jasabhaddo = yaśobhadra
 4. jambu pahū vaṅkacūlo = jambu prabhu [jambu svāmī] and prince
 vaṅkacūla
 jambu pahū = jambu prabhu, vaṅkacūlo = vaṅkacūla
 gaya-sukumālo avanti-sukumālo = prince gaja sukumāla and avanti

अवंति सुकुमाल

गय-सुकुमालो = गज सुकुमाल, अवंति-सुकुमालो = अवंति सुकुमाल

धन्नो इलाइ पुत्तो = श्रेष्ठि पुत्र धन्य कुमार और श्रेष्ठी इलाची का पुत्र

धन्नो = धन्य, इलाइ = इलाची, पुत्तो = पुत्र

चिलाइ पुत्तो अ बाहुमुणी = दासी चिलाती का पुत्र और बाहु

[युगबाहु] मुनि

चिलाइ = चिलाती, बाहु = बाहु, मुणी = मुनि

५.अज्ज गिरि अज्ज रक्खिअ = आर्य गिरि [महागिरि] और आर्य रक्षित सूरि

अज्ज = आर्य, गिरि = गिरि, रक्खिअ = रक्षित

अज्ज सुहत्थी उदायगो मणगो = आर्य सुहस्ति सूरि, उदायन राजर्षि और मनक मुनि

सुहत्थी = सुहस्ति, उदायगो = उदायन, मणगो = मनक

कालय सूरि संबो = आचार्य कालक और राजकुमार शांब

कालय = कालक, सूरि = आचार्य, संबो = शांब

पज्जुन्नो मूलदेवो अ = राजकुमार प्रद्युम्न और राजकुमार मूलदेव

पज्जुन्नो = प्रद्युम्न, मूलदेवो = मूलदेव

sukumāla

gaya-sukumālo = gaja sukumāla, avanti-sukumālo = avanti sukumāla

dhanno ilāi putto = śreṣṭhī's son dhanya kumāra and śreṣṭhī ilācī's son

dhanno = dhanya, ilāi = ilācī's, putto = son

cilāi putto a bāhumuṇi = son of a female slave cilāti, and bāhu [yugabāhu] muni

cilāi = cilāti, bāhu = bāhu, muṇi = muni

5.ajja giri ajja rakkhia = ārya giri [mahāgiri] and ārya rakṣita sūri

ajja = ārya, giri = giri, rakkhia = rakṣita

ajja suhatthī udāyago maṇago = ārya suhasti sūri, udāyana rājarṣi and manaka muni

suhatthī = suhasti, udāyago = udāyana, maṇago = manaka

kālaya sūri sambo = ācārya kālaka and prince śāmba

kālaya = kālaka, sūri = ācārya, sambo = śāmba

pajjunno mūladevo a = prince pradyumna and prince mūladeva

pajjunno = pradyumna, mūladevo = mūladeva

६. पभवो विण्हु कुमारो = प्रभव स्वामी और विष्णु कुमार मुनि
 पभवो = प्रभव स्वामी, विण्हु कुमारो = विष्णु कुमार
 अद्द कुमारो ददप्पहारी अ = राजकुमार आर्द्र कुमार और ब्राह्मण
 पुत्र दृढप्रहारी
 अद्द कुमारो = आर्द्र कुमार, ददप्पहारी = दृढप्रहारी
 सिज्जंस कूरगड्ढु अ = राजकुमार श्रेयांस और कूरगड्ढु मुनि
 सिज्जंस = श्रेयांस, कूरगड्ढु = कूरगड्ढु
 सिज्जंभव मेह कुमारो अ = शय्यंभव सूरि और मुनि मेघ कुमार
 सिज्जंभव = शय्यंभव, मेह कुमारो = मेघ कुमार
 ७. एमाइ महा-सत्ता = इत्यादि महापुरुष
 एमाइ = इत्यादि, महा = महा, सत्ता = पुरुष
 दिंतु सुहं = सुख प्रदान करें
 दिंतु = प्रदान करें, सुहं = सुख
 गुण-गण्हेहिं संजुत्ता = गुणों के समूह से युक्त
 गुण = गुणों के, गण्हेहिं = समूह से, संजुत्ता = युक्त
 जेसिं नाम-ग्गहणे = जिनका नाम लेने से
 जेसिं = जिनका, नाम = नाम, ग्गहणे = लेने से
 पावप्पबंधा विलिज्जंति = पाप के बंधन नष्ट होते हैं

6. pabhavo viṇhu kumāro = prabhavasvāmī and viṣṇu kumāra muni
 pabhavo = prabhava, viṇhu kumāro = viṣṇu kumāra
 adda kumāro daḍhappahārī a = prince ārdra kumāra and brāhmaṇa's son
 dṛḍhaprahārī
 adda kumāro = ārdra kumāra, daḍhappahārī = dṛḍhaprahārī
 sijjaṇsa kūragaḍḍu a = prince śreyāṇsa and kūragaḍḍu muni
 sijjaṇsa = śreyāṇsa, kūragaḍḍu = kūragaḍḍu
 sijjaṇbhava meha kumāro a = śayyambhava sūri and muni megha kumāra
 sijjaṇbhava = śayyambhava, meha kumāro = megha kumāra
 7. emāi mahā-sattā = such great men
 emāi = such, mahā = great, sattā = men
 dintu suham = may confer happiness
 dintu = may confer, suham = happiness
 guṇa-gaṇehim sañjuttā = possessing the groups of virtues
 guṇa = of virtues, gaṇehim = the groups, sañjuttā = possessing
 jesim nāma-ggahaṇe = by reciting whose names
 jesim = whose, nāma = names, ggahaṇe = by reciting
 pāva-ppabandhā vilijjanti = fetter of sins are destroyed

पाव = पाप के, प्पबंधा = बंधन, विलिज्जति = नष्ट होते हैं
 ८. सुलसा चंदनबाला = श्राविका सुलसा और राजकुमारी चंदनबाला
 सुलसा = सुलसा, चंदनबाला = चंदनबाला
 मणोरमा मयणरेहा दमयंती = शेठाणी मनोरमा, राणी मदनरेखा
 और राणी दमयंती
 मणोरमा = मनोरमा, मयणरेहा = मदनरेखा, दमयंती =
 दमयंती
 नमया सुंदरी सीया = श्रेष्ठी पत्नी नर्मदा सुंदरी और राणी सीता
 नमया सुंदरी = नर्मदा सुंदरी, सीया = सीता
 नंदा भद्रा सुभद्रा य = राणी नंदा, श्रेष्ठी पत्नी भद्रा और श्रेष्ठी
 पत्नी सुभद्रा
 नंदा = नंदा, भद्रा = भद्रा, सुभद्रा = सुभद्रा, य = और
 ९. राइमई रिसिदत्ता = राजकुमारी राजीमती और राणी ऋषिदत्ता
 राइमई = राजीमती, रिसिदत्ता = ऋषिदत्ता
 पउमावई अंजणा सिरिदेवी = राणी पद्मावती, राणी अंजना सुंदरी
 और राणी श्रीदेवी
 पउमावई = पद्मावती, अंजणा = अंजना, सिरिदेवी = श्रीदेवी
 जिट्ठ सुजिट्ठ मिगावई = राणी ज्येष्ठा, राजकुमारी सुज्येष्ठा और

pāva = of sins, ppabandhā = fetter, vilijjanti = are destroyed
 8. sulasā candanabālā = śrāvikā sulasā and princess candanabālā
 sulasā = sulasā, candanabālā = candanabālā
 maṇoramā mayañarehā damayanti = śeṭha's wife manoramā, queen
 madanarekhā and queen damayanti
 maṇoramā = manoramā, mayañarehā = madanarekhā, damayanti =
 damayanti
 namayā sundarī siyā = śreṣṭhī's wife narmadā sundarī and queen sitā
 namayā sundarī = narmadā sundarī, siyā = sitā
 nandā bhaddā subhaddā ya = queen nandā, śreṣṭhī's wife bhadra and
 śreṣṭhī's wife subhadrā
 nandā = nandā, bhaddā = bhadra, subhaddā = subhadrā, ya = and
 9. rāimai risidattā = princess rājīmatī and queen ṛṣidattā
 rāimai = rājīmatī, risidattā = ṛṣidattā
 paumāvaī añjanā siridevī = queen padmāvatī, queen añjanā sundarī and
 queen śrīdevī
 paumāvaī = padmāvatī, añjanā = añjanā, siridevī = śrīdevī
 jitṭha sujittā migāvaī = queen jyēsthā, princess sujyēsthā and queen

राणी मृगावती

जिट्ठ = ज्येष्ठा, सुजिट्ठ = सुज्येष्ठा, मिगावई = मृगावती
पभावई चिल्लणा देवी = राणी प्रभावती और राणी चेल्लणा देवी

पभावई = प्रभावती, चिल्लणा देवी = चेल्लणा देवी

१०. बंभी सुंदरी रुपिणी = राजकुमारी ब्राह्मी, राजकुमारी सुंदरी
और सती स्त्री रुक्मिणी

बंभी = ब्राह्मी, सुंदरी = सुंदरी, रुपिणी = रुक्मिणी

रेवई कुंती सिवा जयंती य = श्राविका रेवती, राणी कुंती, राणी
शिवा और राजकुमारी जयंती

रेवई = रेवती, कुंती = कुंती, सिवा = शिवा, जयंती = जयंती

देवई दोवई धारणी = राणी देवकी, राणी द्रौपदी और राणी धारिणी

देवई = देवकी, दोवई = द्रौपदी, धारणी = धारिणी

कलावई पुष्पचूला य = राणी कलावती और वणिक् पत्नी पुष्पचूला

कलावई = कलावती, पुष्पचूला = पुष्पचूला

११. पउमावई य गोरी = राणी पद्मावती और राणी गोरी

गोरी = गोरी

गंधारी लक्खमणा सुसीमा य = राणी गंधारी, राणी लक्खमणा और

mrgāvati

jitt̥ha = jyēsthā, sujitt̥ha = sujyēsthā, migāvaī = mrgāvati
pabhāvaī cillaṇā devī = queen prabhāvati and queen cellaṇādevī

pabhāvaī = prabhāvati, cillaṇā devī = cellaṇā devī

10. bambhī sundarī ruppini = princess brāhmī, princess sundarī and chaste
woman rukmiṇī

bambhī = brāhmī, sundarī = sundarī, ruppini = rukmiṇī

revaī kuntī sivā jayanti ya = śrāvikā revati, queen kuntī, queen śivā and
princess jayanti

revaī = revati, kuntī = kuntī, sivā = śivā, jayanti = jayanti

devaī dovaī dharaṇī = queen devakī, queen draupadī and queen dhāriṇī

devaī = devakī, dovaī = draupadī, dharaṇī = dhāriṇī

kalāvaī pupphacūlā ya = queen kalāvati and business man's wife
puṣpacūlā

kalāvaī = kalāvati, pupphacūlā = puṣpacūlā

11. paumāvaī ya gorī = queen padmāvati and queen gaurī

gorī = gaurī

gandhārī lakkhamanā susimā ya = queen gandhārī, queen lakṣmanā and

राणी सुसीमा

गंधारी = गंधारी, लक्खमणा = लक्ष्मणा, सुसीमा = सुसीमा
जंबूवई सच्चभामा = राणी जंबूवती और राणी सत्यभामा

जंबूवई = जंबूवती, सच्चभामा = सत्यभामा

रुप्पिणी = राणी रुक्मिणी

कण्हट्ट महिसीओ = श्री कृष्ण की आठ पटरानियां हैं

कण्ह = श्री कृष्ण की, अट्ट = आठ, महिसीओ = पटरानियां हैं

१२. जक्खा य जक्खदिन्ना = कुमारी यक्षा और कुमारी यक्षदत्ता

जक्खा = यक्षा, जक्खदिन्ना = यक्षदत्ता

भूआ तह चेव भूअदिन्ना य = कुमारी भूता और इसी तरह कुमारी भूतदत्ता

भूआ = भूता, तह = और, चेव = इसी तरह, भूअदिन्ना = भूतदत्ता

सेणा वेणा रेणा = कुमारी सेना, कुमारी वेना और कुमारी रेणा

सेणा = सेना, वेणा = वेना, रेणा = रेणा

भइणीओ थूल-भदस्स = मंत्री पुत्र स्थूलभद्र की बहनें

भइणीओ = बहनें, थूलभदस्स = स्थूलभद्र की

१३. इच्चाइ महा-सईओ जयंति = इत्यादि महा सतियां जय को प्राप्त होती हैं

queen susimā

gandhārī = gandhārī, lakkhamanā = lakṣmanā, susimā = susimā
jambūvai saccabhāmā = queen jambūvatī and queen satyabhāmā

jambūvai = jambūvatī, saccabhāmā = satyabhāmā

ruppiṇī = queen rukmiṇī

kaṇhaṭṭha mahisīo = are eight chief queens of śrī kṛṣṇa

kaṇha = of śrī kṛṣṇa, aṭṭha = eight, mahisīo = are chief queens

12. jakkhā ya jakkhadinnā = kumārī yakṣā and kumārī yakṣadattā

jakkhā = yakṣā, jakkhadinnā = yakṣadattā

bhūā taha ceva bhūadinnā ya = kumārī bhūtā and similarly kumārī bhūadattā

bhūā = bhūtā, taha = and, ceva = similarly, bhūadinnā = bhūadattā

seṇā veṇā reṇā = kumārī senā, kumārī venā and kumārī reṇā

seṇā = senā, veṇā = venā, reṇā = reṇā

bhainīo thūla-bhaddassa = sisters of minister's son sthūlabhadra

bhainīo = sisters, thūlabhaddassa = of sthūlabhadra

13. iccāi mahā-saīo jayanti = such great chaste women attains victory

इच्चाइ = इत्यादि, सईओ = सतियां, जयंति = जय को प्राप्त होती हैं

अकलंक-सील-कलिआओ = निष्कलंक शीयल को धारण करने वाली
अकलंक = निष्कलंक, सील = शीयल को, कलिआओ = धारण करने वाली

अज्ज वि वज्जइ = आज तक [भी] बज रहा है

अज्ज = आज, वि = तक [भी], वज्जइ = बज रहा है

जासिं जस-पडहो = जिनके यश का पटह

जासिं = जिनके, जस = यश, पडहो = पटह

तिहुअणे सयले = समस्त तीनों भुवन [लोक] में

तिहुअणे = तीनों भुवन में, सयले = समस्त

गाथार्थ :-

भरत चक्रवर्ती, बाहुबली, अभय कुमार, ढंढण कुमार, श्रीयक, अर्णिका पुत्र, अतिमुक्त, नागदत्त और..... १.

...मेतार्य मुनि, स्थूलभद्र, वज्र ऋषि, नन्दिषेण, सिंहगिरि, कृतपुण्य [कयवन्ना], सुकोशल मुनि, पुंडरीक, केशी, करकंडू और..... २.

...हल्ल, विहल्ल, सुदर्शन शेठ, शाल, महाशाल मुनि, शालिभद्र,

iccāi = such, mahā = great, saīo = chaste women, jayanti = attains victory

akalaṅka-sīla-kaliāo = observing pure celibacy without blemish

akalaṅka = without blemish, sīla = pure celibacy, kaliāo = observing

ajja vi vajjai = reverberates even this day

ajja = this day, vi = even, vajjai = reverberates

jāsīm jasa-paḍaho = whose drums of glory

jāsīm = whose, jasa = of glory, paḍaho = drums

tihuaṇe sayale = in complete three worlds

tihuaṇe = three worlds, sayale = in complete

Stanzaic meaning :-

Emperor bharata, bāhubalī, abhaya kumāra, ḍhaṇḍhaṇa kumāra, śrīyaka, son of arṇikā, atimukta, nāgadatta and..... 1.

...muni metārya, sthūlabhadra, vajra ṛṣi, nandiṣeṇa, siḥagiri, kṛtapuṇya [kayavannā], muni sukośala, puṇḍarīka, keśī, karakandū and..... 2.

...halla, vihalla, śeṭha sudarśana, śāla, mahāśāla muni, śālibhadra,

भद्रबाहु स्वामी, दशार्णभद्र, प्रसन्नचंद्र राजर्षि, यशोभद्र सूरि और..... ३.
 ...जम्बू स्वामी, वंकचूल राजकुमार, गज सुकुमाल, अवन्ति सुकुमाल, धन्ना, इलाची पुत्र, चिलाती पुत्र, बाहु मुनि और..... ४.
 ...आर्य महागिरि, आर्य रक्षित, आर्य सुहस्ति सूरि, उदयन राजर्षि, मनक कुमार, कालक सूरि, शाम्ब कुमार, प्रद्युम्न कुमार, राजा मूलदेव और..... ५.
 ...प्रभव स्वामी, विष्णु कुमार, आर्द्र कुमार, दृढ प्रहारी, श्रेयांस, कूरगादु मुनि, शय्यंभव स्वामी और मेघ कुमार..... ६.
 ...गुणों के समूह से युक्त इत्यादि महापुरुष सुख को प्रदान करें; जिनका नाम लेने से पाप के बंधन नष्ट होते हैं..... ७.
 सुलसा, चंदनबाला, मनोरमा, मदनरेखा, दमयंती, नर्मदा सुंदरी, सीता, नंदा, भद्रा, सुभद्रा और..... ८.
 ...राजीमती, ऋषिदत्ता, पद्मावती, अंजना सुंदरी, श्रीदेवी, ज्येष्ठा, सुज्येष्ठा, मृगावती, प्रभावती, चेल्लणा देवी और..... ९.
 ...ब्राह्मी, सुंदरी, रुक्मिणी, रेवती, कुंती, शिवा, जयंती, देवकी, द्रौपदी, धारणी, कलावती, पुष्पचूला और..... १०.
 ...पद्मावती, गौरी, गांधारी, लक्ष्मणा, सुसीमा, जंबूवती, सत्यभामा

bhadrabāhu svāmī, daśārṇabhadra, prasannacandra rājarṣi, yaśobhadra sūri and..... 3.
 ...jambūsvāmī, prince vaṅkacūla, gaja sukumāla, avanti sukumāla, dhannā, son of ilācī, son of cilātī, muni bāhu and..... 4.
 ...ārya mahāgiri, ārya rakṣita, ārya suhasti sūri, rājarṣi udāyana, manaka kumāra, kālaka sūri, śāmba kumāra, pradyumna kumāra, king mūladeva and..... 5.
 ...prabhava svāmī, viṣṇu kumāra, ārdra kumāra, dṛḍha prahārī, śreyāṇsa, kūrugaḍu muni, śayyambhava svāmī and megha kumāra..... 6.
 ...such great persons possessing groups of virtues may confer happiness; by reciting whose names, the fetter of sins are destroyed..... 7.
 sulasā, candanabālā, manoramā, madanarekhā, damayantī, narmadā sundarī, sītā, nandā, bhadra, subhadra and..... 8.
 ...rājīmatī, ṛṣidattā, padmāvatī, aṅjanā sundarī, śrīdevī, jyēsthā, sujyēsthā, mṛgāvatī, prabhāvatī, cellaṇā devī and..... 9.
 ...brāhmī, sundarī, rukmiṇī, revatī, kuntī, śivā, jayantī, devakī, draupadī, dhārāṇī, kalāvatī, puṣpacūlā and..... 10.
 ...padmāvatī, gaurī, gāndhārī, lakṣmaṇā, susīmā, jambūvatī, satyabhāmā

और रुक्मिणी— ये आठ श्री कृष्ण की पटराणियाँ और..... ११.
 ...यक्षा, यक्षदत्ता, भूता, भूतदत्ता, सेना, वेना, और रेणा— स्थूलभद्र की
 [ये सात] बहनें,..... १२.
 ...निष्कलंक शीयल को धारण करने वाली इत्यादि महा सतियां जय
 पाती हैं, जिनके यश का पटह समस्त तीनों भुवन में आज भी बज
 रहा है. १३.

सूत्र परिचय :-

इस सज्जाय द्वारा प्रातः स्मरणीय ब्रह्मचारी, दानेश्वरी, तपस्वी आदि
 उत्तम पुरुषों तथा सती स्त्रियों का स्मरण किया जाता है.

and rukmiṇī— these eight chief queens of śrī kṛṣṇa and... 11.
 ...yakṣā, yakṣadattā, bhūtā, bhūtadattā, senā, venā, and reṇā— [these seven]
 sisters of sthūlabhadra,..... 12.
 ...such great chaste women observing pure celibacy without blemish attains
 victory, whose drums of glory reverberates even this day in complete
 three worlds..... 13.

Introduction of the sūtra :-

By this sajjhāya, the great men and chaste women like celibate, generous,
 ascetic persons memorable in the morning, are being remembered.

५१. सकल तीर्थ वन्दना

सकल तीर्थ वंदुं कर जोड, जिनवर नामे मंगल क्रोड.
 पहेले स्वर्गे लाख बत्रीश, जिनवर चैत्य नमुं निश-दिश..१.
 बीजे लाख अट्ठावीश कह्यां, त्रीजे बार लाख सदह्यां.
 चोथे स्वर्गे अड लख धार, पांचमे वंदुं लाख ज चार..२.
 छट्ठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चालीस सहस प्रासाद.
 आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दशमे वंदुं शत चार.....३.
 अगियार बारमे त्रणसें सार, नव ग्रैवेयके त्रणसें अढार.
 पांच अनुत्तर सर्वे मळी, लाख चोराशी अधिकां वळी..४.
 सहस सत्ताणुं त्रेवीस सार, जिनवर भवन तणो अधिकार.
 लांबां सो जोजन विस्तार, पचास कुंचां बहोतेर धार..५.
 एक सो एंशी बिंब प्रमाण, सभा सहित एक चैत्ये जाण.
 सो क्रोड बावन क्रोड संभाल,
 लाख चोराणुं सहस चौआल..६.

51. sakala tīrtha vandanā

sakala tīrtha vandu kara joḍa, jinavara nāme maṅgala kroḍa.
 pahele svarge lākha batriśa, jinavara caitya namu niśa-diśa.....1.
 bīje lākha atṭhāviśa kahyā, trije bāra lākha saddahyā.
 cothe svarge aḍa lakha dhāra, pāñcame vandu lākha ja cāra....2.
 chaṭṭhe svarge sahasa pacāsa, sātame cālīsa sahasa prāsāda.
 āṭhame svarge cha hajāra, nava daśame vandu śata cāra. .3.
 agiyāra bārame traṇase sāra, nava graiveyake traṇase adhāra.
 pāñca anuttara sarve maḷī, lākha corāśī adhikā valī.....4.
 sahasa sattāṇu trevīsa sāra, jinavara bhavana taṇo adhikāra.
 lāmbā so jojana vistāra, pacāsa uñcā baho tera dhāra.5.
 eka so eṅśī bimba pramāṇa, sabhā sahita eka caitye jāṇa.
 so kroḍa bāvana kroḍa sambhāla,
 lākha corāṇu sahasa cauāla..6.

सातसें उपर साठ विशाल, सवि बिंब प्रणमुं त्रण काल.
सात क्रोड ने बहोतेर लाख,

भवनपतिमां देवळ भाख..७.

एक सो एंशी बिंब प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण.
तेरसें क्रोड नेव्यासी क्रोड, साठ लाख वंदुं कर जोड..८.

बत्रीससें ने ओगणसाठ, तीर्छा लोकमां चैत्यनो पाठ.

त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणसें वीश ते बिंब जुहार..९.

व्यंतर ज्योतिषीमां वळी जेह, शाश्वता जिन वंदुं तेह.

ऋषभ, चंद्रानन, वारिषेण, वर्धमान नामे गुण-सेण..१०.

सम्मेट-शिखर वंदुं जिन वीश, अष्टापद वंदुं चोवीश.

विमलाचल ने गढ गिरनार, आबु उपर जिनवर जुहार..११.

शंखेश्वर केसरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार.

अंतरिक्ख वरकाणो पास, जीराउलो ने थंभण पास..१२.

गाम नगर पुर पाटण जेह,

जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह.

sātaseṁ upara sāṭha viśāla, savi bim̐ba praṇamuṁ traṇa kāla.
sāta kroḍa ne bahoṭera lākha,

bhavanapatimāṁ devala bhākha..7.

eka so eṁśī bim̐ba pramaṇa, eka eka caitye saṅkhyā jāṇa.
teraseṁ kroḍa nevyāsī kroḍa, sāṭha lākha vanduṁ kara joḍa..8.

batrīsaseṁ ne ogaṇasāṭha, tīrchā lokamāṁ caityano pāṭha.

traṇa lākha ekāṇuṁ hajāra, traṇaseṁ viśa te bim̐ba juhāra. ...9.

vyantara jyotiṣimāṁ vaḷī jeha, śāśvatā jina vanduṁ teha.

ṛṣabha, candrānana, vāriṣeṇa, vardhamāna nāme guṇa-seṇa. ...10.

sammeta-śikhara vanduṁ jina viśa, aṣṭāpada vanduṁ coviśa.

vimalācala ne gaḍha giranāra, ābu upara jinavara juhāra....11.

śaṅkheśvara kesariyo sāra, tāraṅge śrī ajita juhāra.

aṇṭarikkha varakāṇo pāsa, jīrāulo ne thambhaṇa pāsa.12.

gāma nagara pura pāṭaṇa jeha, j

inavara caitya namuṁ guṇageha.

विहरमान वंदुं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निश-दिश. . .१३.
 अढी द्वीपमां जे अणगार, अढार सहस शीलांगना धार.
 पंच महा-व्रत समिति सार, पाळे पळावे पंचाचार... .१४.
 बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदुं गुण-मणि-माल.
 नित नित ऊठी कीर्ति करुं, जीव कहे भव सायर तरुं... .१५.

शब्दार्थ :-

१.सकल तीर्थ वंदुं कर जोड = सब तीर्थों को हाथ जोड़ कर मैं
 वंदन करता हूँ

सकल = सब, तीर्थ = तीर्थों को, वंदुं = मैं वंदन करता हूँ,

कर = हाथ, जोड = जोड़कर

जिनवर नामे मंगल क्रोड = जिनेश्वर के नाम से क्रोड़ों [अनंत]
 मंगल होते हैं

जिनवर = जिनेश्वर के, नामे = नाम से, मंगल = मंगल होते
 हैं, क्रोड = क्रोड़ों

पहेले स्वर्गे लाख बत्तीस = पहले स्वर्ग में [स्थित] बत्तीस लाख
 पहेले = पहले, स्वर्गे = स्वर्ग में, लाख = लाख बत्तीस =

viharamāna vanduṃ jina vīśa, siddha ananta namuṃ niśa-diśa...13.
 aḍhī dvīpamāṃ je aṇagāra, aḍhāra sahasa śīlāṅganā dhāra.
 pañca mahā-vrata samiti sāra, pāḷe paḷāve pañcācāra.14.
 bāhya abhyantara tapa ujamāla, te muni vanduṃ guṇa-maṇi-māla.
 nita nita ūṭhī kīrti karuṃ, jīva kahe bhava sāyara taruṃ.15.

Literal meaning :-

1.sakala tīrtha vanduṃ kara joḍa = i obeisance to all the pilgrim centers with
 folded hands

sakala = all, tīrtha = to the pilgrim centers, vanduṃ = i obeisance, kara =
 hands, joḍa = with folded

jinavara nāme maṅgala kroḍa = crores of [infinite] auspicious [good] results
 occur by reciting the name of jineśvara

jinavara = of jineśvara, nāme = by the name, maṅgala = auspicious
 results occur, kroḍa = crores of

pahēle svarge lākha batrīśa = thirty two lac [present] in first heaven

pahēle = first, svarge = in heaven, lākha = lac, batrīśa = thirty two

बत्तीस

जिनवर चैत्य = जिनेश्वर के चैत्यों को

चैत्य = चैत्यों को

नमुं निश-दिश = रात-दिन मैं नमस्कार [वंदन] करता हूँ

नमुं = मैं नमस्कार करता हूँ, निश = रात, दिश = दिन

२.बीजे लाख अट्ठावीश कह्यां = दूसरे [स्वर्ग] में अट्ठाईस लाख [चैत्यों] कहे हैं

बीजे = दूसरे में, अट्ठावीश = अट्ठाईस, कह्यां = कहे हैं

त्रीजे बार लाख सदह्यां = तीसरे [स्वर्ग] में बारह लाख [चैत्यों] को माने हैं

त्रीजे = तीसरे में, बार = बारह, सदह्यां = माने हैं

चोथे स्वर्गे अड लख धार = चौथे स्वर्ग में [स्थित] आठ लाख [चैत्यों] को धारण कर

चोथे = चौथे, अड = आठ, लख = लाख, धार = धारण कर

पांचमे वंदुं लाख ज चार = पाँचवें [स्वर्ग] में [स्थित] चार लाख [चैत्यों] को मैं अवश्य वंदन करता हूँ

पांचमे = पाँचवें में, ज = अवश्य, चार = चार

jinavara caitya = to the temples of jineśvara

caitya = to the temples

namu_ niśa-diśa = i obeisance night and day

namu_ = i obeisance, niśa = night, diśa = day

2.bije lākha atthāviśa kahyā_ = twenty eight lac [temples] are said in second [heaven]

bije = in second, atthāviśa = twenty eight, kahyā_ = are said

triḷe bāra lākha saddahyā_ = twelve lac [temples] are trusted in third [heaven]

triḷe = in third, bāra = twelve, saddahyā_ = are trusted

cothe svarge aḍa lakha dhāra = memorize [remember] eight lac [temples present] in fourth heaven

cothe = in fourth, aḍa = eight, lakha = lac, dhāra = memorize

pāñcame vandu_ lākha ja cāra = i certainly obeisance to four lac [temples present] in fifth [heaven]

pāñcame = in fifth, ja = certainly, cāra = four

३. छट्ठे स्वर्गे सहस्र पचास = छट्ठे स्वर्ग में [स्थित] पचास हजार [चैत्यों] को

छट्ठे = छट्ठे, सहस्र = हजार, पचास = पचास

सातमे चालीस सहस्र प्रासाद = सातवें [स्वर्ग] में [स्थित] चालीस हजार प्रासाद [चैत्यों] को

सातमे = सातवें में, चालीस = चालीस, प्रासाद = प्रासाद

आठमे स्वर्गे छ हजार = आठवें स्वर्ग में [स्थित] छः हजार [चैत्यों] को

आठमे = आठवें, छ = छः, हजार = हजार

नव दशमे = नौवें और दशवें [स्वर्ग] में

नव = नौवें, दशमे = दशवें में

शत चार = [स्थित] चार सौ [चैत्यों] को

शत = सौ

४. अगियार बारमे त्रणसें सार = ग्यारहवें और बारहवें [स्वर्ग] में [स्थित] तीन सौ [चैत्य] सार रूप हैं

अगियार = ग्यारहवें, बारमे = बारहवें में, से = सौ, सार = सार रूप हैं

3. chaṭṭhe svaṛge sahasa pacāsa = to fifty thousand [temples present] in sixth heaven

chaṭṭhe = in sixth, sahasa = thousand, pacāsa = fifty

sātame cālīsa sahasa prāsāda = forty thousand temples [present] in seventh [heaven]

sātame = in seventh, cālīsa = forty, prāsāda = temples

āṭhame svaṛge cha hajāra = to six thousand [temples present] in eighth heaven

āṭhame = in eighth, cha = six, hajāra = thousand

nava daśame = in ninth and tenth [heavens]

nava = in ninth, daśame = in tenth

śata cāra = four hundred [temples present]

śata = hundred

4. agiyāra bārame traṇase sāra = three hundred [temples present] in eleventh and twelfth [heavens] are like essence

agiyāra = in eleventh, bārame = in twelfth, traṇa = three, se = hundred, sāra = are like essence

नव ग्रैवेयके त्रणसें अढार = नव ग्रैवेयक [विमानों] में [स्थित] तीन सौ अट्ठारह [चैत्य]

नव = नव, ग्रैवेयके = ग्रैवेयक में, अढार = अट्ठारह
पांच अनुत्तर = [पांच] अनुत्तर [विमानों] में [स्थित] पांच [चैत्य]
पांच = पांच, अनुत्तर = अनुत्तर में

सर्वे मली = सब मिलाकर

सर्वे = सब, मली = मिलाकर

लाख चोराशी अधिकां वली = चौरासी लाख और अधिक

चोराशी = चौरासी, अधिकां = अधिक, वली = और

५.सहस सत्ताणुं त्रेवीस = सत्तानवे हजार तेवीस [चैत्य]

सत्ताणुं = सत्तानवे, त्रेवीस = तेवीस

जिनवर भवन तणो अधिकार = जिनेश्वर के भवनों [चैत्यों] का [यह शास्त्रोक्त] अधिकार है

भवन = भवनों, तणो = का, अधिकार = अधिकार है

लांबां सो जोजन = एक सौ योजन लंबे

लांबां = लंबे, सो = एक सौ, जोजन = योजन

nava graiveyake traṇaseṁ aḍhāra = three hundred and eighteen [temples present] in nine graiveyaka [vimānas]

nava = nine, graiveyake = graiveyaka, aḍhāra = eighteen

pāñca anuttara = five [temples present] in [five] anuttara [vimānas]

pāñca = five, anuttara = in anuttara

sarve maḷī = altogether

sarve = all, maḷī = together

lākha corāśī adhikāṁ vaḷī = eighty four lac and more

corāśī = eighty four, adhikāṁ = more, vaḷī = and

5.sahasa sattāṇuṁ trevīsa = ninety seven thousand and twenty three [temples]

sattāṇuṁ = ninety seven, trevīsa = twenty three

jīnavara bhavana taṇo adhikāra = this is an ordain of temples of jīneśvaras [in scriptures]

bhavana = temples, taṇo = of, adhikāra = is an ordain

lāmbāṁ so jojana = one hundred yojana long

lāmbāṁ = long, so = one hundred, jojana = yojanas

विस्तार पचास = पचास [योजन] चौड़े

विस्तार = चौड़े

ऊंचा बहोतेर = बहोतेर [योजन] ऊंचे

ऊंचा = ऊंचे, बहोतेर = बहोतेर

६. एक सो एंशी बिंब प्रमाण = एक सौ अस्सी प्रतिमाओं का प्रमाण

एंशी = अस्सी, बिंब = प्रतिमाओं का, प्रमाण = प्रमाण

सभा सहित एक चैत्ये जाण = सभा सहित प्रत्येक चैत्य में जानना

सभा = सभा, सहित = सहित, एक = प्रत्येक, चैत्ये = चैत्य में, जाण = जानना

सो क्रोड बावन क्रोड संभाल = एक सौ क्रोड़ बावन क्रोड़ [एक सौ बावन क्रोड़] को याद कर

बावन = बावन, संभाल = याद कर

लाख चोराणु सहस चौआल = चौरानवे लाख चौवालीस हजार

चोराणु = चौरानवे, चौआल = चौवालीस

७. सातसें उपर साठ विशाल = सात सौ के उपर साठ विशाल [प्रतिमाओं]

सात = सात, उपर = के उपर, साठ = साठ, विशाल =

vistāra pacāsa = fifty [yojanas] broad

vistāra = broad

ūñcā bahoṭera = seventy two [yojanas] high

ūñcā = high, bahoṭera = seventy two

6. eka so eṇśī bim̐ba pramāṇa = at the rate of one hundred and eighty idols

eṇśī = eighty, bim̐ba = idols, pramāṇa = at the rate of

sabhā sahita eka caitye jāṇa = know in each temple including hall

sabhā = hall, sahita = including, eka = each, caitye = in temple, jāṇa = know

so kroḍa bāvana kroḍa sambhāla = remember one hundred crore and fifty two crore [one hundred and fifty two crore]

bāvana = fifty two, sambhāla = remember

lākha corāṇu sahāsa cauāla = ninety four lac forty four thousand

corāṇu = ninety four, cauāla = forty four

7. sātase upara sātha viśāla = sixty over seven hundred [seven hundred and sixty] grand [idols]

sāta = seven, upara = over, sātha = sixty, viśāla = grand

विशाल

सवि बिंब प्रणमुं त्रण काल = सर्व प्रतिमाओं को तीनों काल में
प्रणाम करता हूँ

सवि = सर्व, प्रणमुं = मैं प्रणाम करता हूँ, त्रण = तीनों, काल
= काल

सात क्रोड ने बहोतेर लाख = सात क्रोड़ और बहोत्तर लाख
ने = और

भवनपतिमां देवळ = मंदिर भवनपति [के आवासों] में
भवनपतिमां = भवनपति में, देवळ = मंदिर

भाख = [शास्त्रों के आधार से] बोल

८.प्रमाण = के प्रमाण से

एक एक चैत्ये = प्रत्येक चैत्य में

एक एक = प्रत्येक

संख्या जाण = संख्या जानना

संख्या = संख्या

तेरसें क्रोड नेव्यासी क्रोड साठ लाख = तेरह सौ क्रोड़ [और]
नव्यासी क्रोड़ [एक हजार तीन सौ नव्यासी क्रोड़] साठ लाख

savi bim̐ba praṇamuṃ traṇa kāla = i obeisance to all the idols all the three
times

savi = all, praṇamuṃ = i obeisance, traṇa = all the three, kāla = times

sāta kroḍa ne bahoṭera lākha = seven crore and seventy two lac
ne = and

bhavanapatimāṃ devala = temples in [the residences of] bhavanapatis
bhavanapatimāṃ = in bhavanapatis, devala = temples

bhākha = [on the basis of scriptures] say

8.eka eka caitye = in each temple

eka eka = each

saṅkhyā jāṇa = know the total number

saṅkhyā = the total number

teraseṃ kroḍa nevyāsī kroḍa sāṭha lākha = to thirteen hundred crore [and]
eighty nine crore [one thousand three hundred and eighty nine crore] sixty

[प्रतिमाओं] को
 तेर = तेर, नेव्यासी = नव्यासी, साठ = साठ
 कर जोड = अंजली जोड़कर
 कर = अंजली
 ९. बत्रीससैं ने ओगणसाठ = बत्तीस सौ [तीन हजार दो सौ] और
 उनसठ
 बत्रीस = बत्तीस, ओगणसाठ = उनसठ
 तीर्छा लोकमां = तिर्छा [तिर्यक् / मानव] लोक में हैं
 तीर्छा = तिर्छा, लोकमां = लोक में
 चैत्यनो पाठ = चैत्यों का [शास्त्र] पाठ है
 चैत्यनो = चैत्यों का, पाठ = पाठ है
 त्रण लाख एकाणुं हजार त्रणसैं वीश = तीन लाख इकानवे हजार
 तीन सौ बीस
 एकाणुं = इकानवे, वीश = बीस
 ते बिंब जुहार = उन प्रतिमाओं को तुं वंदन कर
 ते = उन, जुहार = वंदन कर
 १०. व्यंतर ज्योतिषीमां वळी = व्यंतर और ज्योतिष्क [लोक] में

lac [idols]

tera = thirteen, nevyāsī = eighty nine, sāṭha = sixty

9. batrīsase ne ogaṇasāṭha = thirty two hundred [three thousand two hundred] and fifty nine

batrīsa = thirty two, ogaṇasāṭha = fifty nine

tīrchā lokamā = in tīrchā [tīryak] loka / [human world]

tīrchā = tīrchā, lokamā = in loka

caityano pāṭha = [scriptural] ordain is of temples

caityano = of temples, pāṭha = ordain is

traṇa lākha ekāṇu hajāra traṇase vīśa = three lac ninety one thousand three hundred and twenty

ekāṇu = ninety one, vīśa = twenty

te bim̐ba juhāra = [you] obeisance to those idols

te = those, juhāra = obeisance

10. vyantara jyotiṣīmā valī = in vyantara and jyotiṣka [loka]

व्यंतर = व्यंतर, ज्योतिषीमां = ज्योतिष्क में
 जेह = जो
 शाश्वता जिन = शाश्वत [शाश्वत नाम वाले] जिनेश्वरों की
 [प्रतिमाएं] हैं
 शाश्वता = शाश्वत
 वंदुं तेह = उन्हें मैं वंदन करता हूँ
 तेह = उन्हें
 ऋषभ चंद्रानन वारिषेण वर्धमान नामे = श्री ऋषभदेव, श्री
 चंद्रानन, श्री वारिषेण और श्री वर्धमान नामक
 ऋषभ = श्री ऋषभदेव, चंद्रानन = श्री चंद्रानन, वारिषेण =
 श्री वारिषेण, वर्धमान = श्री वर्धमान, नामे = नामक
 गुण सेण = गुणों की श्रेणी रूप
 गुण = गुणों की, सेण = श्रेणी रूप
 ११.सम्मेत-शिखर वंदुं जिन वीश = सम्मेत शिखर पर्वत पर
 [स्थित] बीस जिनेश्वरों [की प्रतिमाओं] को मैं वंदन करता हूँ
 सम्मेत-शिखर = सम्मेत शिखर पर्वत पर
 अष्टापद वंदुं चोवीश = अष्टापद पर्वत पर [स्थित] चौबीस

vyantara = vyantara, jyotiṣīmāṃ = in jyotiṣka
 jeha = which
 śāśvatā jina = are [idols] of eternal jineśvaras [of eternal names]
 śāśvata = eternal
 vanduṃ teha = i obeisance to them
 teha = to them
 ṛṣabha caṇḍrānana vāriṣeṇa vardhamāna nāme = by name śrī
 ṛṣabhadeva, śrī caṇḍrānana, śrī vāriṣeṇa and śrī vardhamāna
 ṛṣabha = śrī ṛṣabhadeva, caṇḍrānana = śrī caṇḍrānana, vāriṣeṇa = śrī
 vāriṣeṇa, vardhamāna = śrī vardhamāna, nāme = by name
 guṇa seṇa = like the series of virtues
 guṇa = of virtues, seṇa = like the series
 11.sammeta-śikhara vanduṃ jina vīśa = i obeisance to twenty [idols of]
 jineśvaras [present] on sammeta śikhara mountain
 sammeta-śikhara = on sammeta-śikhara mountain
 aṣṭāpada vanduṃ covīśa = i obeisance to twenty four [idols of jineśvaras]

[जिनेश्वरों की प्रतिमाओं] को मैं वंदन करता हूँ

अष्टापद = अष्टापद पर्वत पर

विमलाचल ने गढ गिरनार आबु उपर = विमलाचल [शत्रुंजय],

गिरनार गढ और आबु पर्वत के उपर [स्थित]

विमलाचल = विमलाचल, गढ = गढ, गिरनार = गिरनार,

आबु = आबु पर्वत, उपर = के उपर

जिनवर जुहार = जिनेश्वरों [की प्रतिमाओं] को तु जुहार

१२. शंखेश्वर केसरियो सार = सार रूप श्री शंखेश्वर और श्री

केशरियाजी [तीर्थों] में [स्थित जिनेश्वरों की प्रतिमाओं] को

शंखेश्वर = श्री शंखेश्वर, केसरियो = श्री केशरियाजी में

तारंगे श्री अजित = तारंगा पहाड़ पर [स्थित] श्री अजितनाथ

[जिनेश्वर की प्रतिमा] को

तारंगे = तारंगा पहाड़ पर, श्री अजित = श्री अजितनाथ को

अंतरिक्ष वरकाणो पास = श्री अंतरिक्ष और श्री वरकाणा [तीर्थों]

में [स्थित] श्री पार्श्वनाथ [जिनेश्वर की प्रतिमाओं] को

अंतरिक्ष = श्री अंतरिक्ष, वरकाणो = श्री वरकाणा में, पास

present] on aṣṭāpada mountain

aṣṭāpada = on aṣṭāpada mountain

vimalācala ne gaḍha giranāra ābu upara = [present] on vimalācala

[śatruñjaya], giranāra gaḍha [hill-fort] and ābu mountain

vimalācala = vimalācala, gaḍha = gaḍha, giranāra = giranāra, ābu =

ābu mountain, upara = on

jīnavara juhāra = [you] obeisance to the [idols of] jīneśvaras

12. śaṅkheśvara kesariyo sāra = to the essence like [idols of] jīneśvaras

present] in [the pilgrimage centres of] śrī śaṅkheśvara and śrī keśariyājī

śaṅkheśvara = śrī śaṅkheśvara, kesariyo = in śrī keśariyājī

tāraṅge śrī ajita = [the idol of] śrī ajitanātha [jīneśvara present] on tāraṅgā

hill

tāraṅge = on tāraṅgā hill, śrī ajita = śrī ajitanātha

juhāra = i obeisance

antarikkha varakāṇo pāsa = to [the idols of] śrī pārśvanātha [jīneśvara

present] in [the pilgrimage centres] of śrī antarikṣa and śrī varakāṇā

antarikkha = śrī antarikṣa, varakāṇo = in śrī varakāṇā, pāsa = to śrī

= श्री पार्श्वनाथ को

जीराउलो ने थंभण पास = श्री जिरावला और श्री स्थंभन [खंभात तीर्थों] में [स्थित] श्री पार्श्वनाथ [जिनेश्वर की प्रतिमाओं] को

जीराउलो = श्री जिरावला, थंभण = श्री स्थंभन में

१३. गाम नगर पुर पाटण जेह = ग्राम, नगर, पुर और पत्तन में जो [हैं]

गाम = ग्राम, नगर = नगर, पुर = पुर, पाटण = पत्तन में

गुण गेह = गुणों के गृह रूप

गुण = गुणों के, गेह = गृह रूप

विहरमान = विहरमान

सिद्ध अनंत = अनंत सिद्ध भगवंतों को

सिद्ध = सिद्ध भगवंतों को, अनंत = अनंत

१४. अदी द्वीपमां जे अणगार = ढाई द्वीप में जो साधु

अदी = ढाई, द्वीपमां = द्वीप में, अणगार = साधु

अढार सहस शीलांगना धार = अठारह हजार शील के अंगों को धारण करते हैं

pārśvanātha

jīrāulo ne tham̐bhaṇa pāsa = to [the idols of] śrī pārśvanātha [jīneśvara present] in [the pilgrimage centres of] śrī jirāvalā and śrī stham̐bhana [kham̐bhāta]

jīrāulo = śrī jirāvalā, tham̐bhaṇa = in śrī stham̐bhana

13. gāma nagara pura pāṭaṇa jeha = which [are present] in villages, towns, cities, and great cities [metro polis]

gāma = villages, nagara = towns, pura = cities, pāṭaṇa = great cities

guṇa-geha = like an abode of virtues

guṇa = of virtues, geha = like an abode

viḥaramāna = viḥaramāna

siddha ananta = to infinite number of siddha bhagavantas

siddha = to siddha bhagavantas, ananta = infinite number of

14. adhī dvīpamāṇe je aṇagāra = sādhu in dhāī dvīpa who

adhī = dhāī, dvīpamāṇe = in dvīpa, aṇagāra = sādhu

aḍhāra sahasa śīlāṅganā dhāra = are practising eighteen thousand aspects of śīla

अढार = अठारह, शीलांगना = शील के अंगों को
 पंच महाव्रत समिति सार = सार रूप पाँच महाव्रत, [पाँच] समिति
 महाव्रत = महाव्रत, समिति = समिति
 पाळे पळावे = पालते हैं और पलाते हैं
 पाळे = पालते हैं, पळावे = पलाते हैं
 पंचाचार = पांच आचारों को
 आचार = आचारों को
 १५. बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल = बाह्य और अभ्यंतर तप से
 उज्ज्वल हैं
 बाह्य = बाह्य, अभ्यंतर = अभ्यंतर, तप = तप से, उजमाल
 = उज्ज्वल हैं
 ते मुनि वंदुं = उन मुनियों को मैं वंदन करता हूँ
 मुनि = मुनियों को
 गुण-मणि-माल = गुण रूपी रत्नों की माला जैसे
 गुण = गुण रूपी, मणि = रत्नों की, माल = माला जैसे
 नित नित ऊठी कीर्ति करुं = प्रतिदिन ऊठकर [उनका मैं] कीर्तन
 करता हूँ

adhāra = eighteen, śīlāṅga = aspects of śīla
 pañca mahāvratā samiti sāra = essence like five great vows, [five] samitis
 mahāvratā = great vows, samiti = samitis
 pāḷe paḷāve = are observing and making others to observe
 pāḷe = are observing, paḷāve = making others to observe
 pañcācāra = five types of ācāras [conducts]
 ācāra = ācāras
 15. bāhya abhyantara tapa ujamāla = are bright by external and internal
 penance
 bāhya = by external, abhyantara = internal, tapa = penance, ujamāla =
 are bright
 te muni vanduḥ = i obeisance to those munis
 muni = to munis
 guṇa-maṇi-māla = alike a garland of gem like virtues
 guṇa = like virtues, maṇi = of gem, māla = alike a garland
 nita nita ūthī kīrti karuḥ = [i] eulogize [them] after awakening every day

नित नित = प्रतिदिन, ऊठी = ऊठकर, कीर्ति = कीर्तन, करुं = करता हूँ

जीव कहे भव सायर तरुं = श्री जीव विजयजी कहते हैं [कि मैं]
भव सागर को तिर जाउंगा

जीव = श्री जीव विजयजी, कहे = कहते हैं, भव = भव,
सायर = सागर को, तरुं = तिर जाउंगा

गाथार्थ :-

सकल तीर्थों को हाथ जोड़कर मैं वंदन करता हूँ. जिनेश्वर के नाम से
क्रोड़ों मंगल होते हैं. पहिले स्वर्ग में [स्थित] बत्तीस लाख जिनेश्वर के
चैत्यों को रात दिन मैं नमस्कर करता हूँ. १.
दूसरे [स्वर्ग] में अट्ठावीस लाख [चैत्य] कहे हैं. तीसरे [स्वर्ग] में बारह
लाख [चैत्यों] को माने है. चौथे स्वर्ग में [स्थित] आठ लाख [चैत्यों] को
धारण कर, पांचवें [स्वर्ग] में [स्थित] चार लाख [चैत्यों] को मैं अवश्य
वंदन करता हूँ. २.
छठे स्वर्ग में [स्थित] पचास हजार [चैत्यों] को, सातवें [स्वर्ग] में [स्थित]
चालीस हजार चैत्यों को, आठवें स्वर्ग में [स्थित] छः हजार [चैत्यों] को

nita nita = every day, ūthī = after awakening, kīrti karuṃ = eulogize

jīva kahe bhava sāyara taruṃ = śrī jīva vijayajī says [that i] will tide over the
ocean of life

jīva = śrī jīva vijayajī, kahe = says, bhava = life, sāyara = the ocean of,
taruṃ = will tide over

Stanzaic meaning :-

I obeisance to all the pilgrim centers with folded hands. Crores of auspicious
results occur by the name of jineśvara. I obeisance day and night to thirty two
lac temples of jineśvara [present] in first heaven. 1
Twenty eight lac [temples] are said in second [heaven]. Twelve lac [temples] are
trusted in third [heaven]. Memorize eight lac [temples present] in fourth heaven.
I certainly obeisance to four lac [temples present] in fifth [heaven]. 2.

I obeisance to fifty thousand [temples present] in sixth heaven, to forty thousand
temples [present] in seventh [heaven], to six thousand [temples present] in eight

एवं नौवें और दसवें [स्वर्ग] में [स्थित] चार सौ [चैत्यों] को मैं वंदन करता हूँ. ३.
 ग्यारहवें और बारहवें [स्वर्ग] में स्थित तीन सौ [चैत्य] सार रूप हैं. नव **ग्रैवेयक [विमानों]** में [स्थित] तीन सौ अट्ठारह [चैत्य] और [पांच] **अनुत्तर [विमानों]** में [स्थित] पांच [चैत्य]— सब मिलाकर चौरासी लाख और अधिक... ४.
 ...सत्तानवे हजार तेवीस [चैत्य] सार रूप हैं. **जिनेश्वर** के भवनों का [यह शास्त्रोक्त] अधिकार है. प्रत्येक चैत्य एक सौ **योजन** लंबे, पचास [योजन] चौड़े और बहोतर [योजन] ऊँचे [चैत्यों को] धारण कर. ५.
 एक सौ अस्सी प्रतिमाओं का प्रमाण सभा सहित प्रत्येक चैत्य में जानना. एक सौ क्रोड़ बावन क्रोड़ [एक सौ बावन क्रोड़] चोरानवे लाख चौवालीस हजार...को याद कर. ६.
 ...सात सौ के उपर साठ [सात सौ साठ] विशाल [प्रतिमाओं] [को याद कर]. सर्व प्रतिमाओं को तीनों काल मैं वंदन करता हूँ. सात क्रोड़ और बहोतर लाख मंदिर **भवनपति** [के आवासों] में [शास्त्र के आधार से] बोल. ७.
 एक सौ अस्सी प्रतिमाओं के प्रमाण से प्रत्येक चैत्य में संख्या जानना.

heaven and to four hundred [temples present] in ninth and tenth [heavens]. 3.
 Three hundred [temples present] in eleventh and twelfth [heavens] are like essence. Three hundred and eighteen [temples present] in nine **graiveyaka [vimānas]** and five [temples present] in [five] **anuttara [vimānas]**-- altogether eighty four lac and more... 4.
 ...ninety seven thousand and twenty three [temples] are like essence. [This] is an ordain of temples of **jineśvara** [in scriptures]. Memorize one hundred **yojana** long, fifty [**yojanas**] broad and seventy two [**yojanas**] high [temples]. 5.
 Know in each temple including hall at the rate of one hundred and eighty idols. Remember one hundred crore fifty two crore [one hundred and fifty two crore] ninety four lac forty four thousand... 6.
 ...sixty over seven hundred [seven hundred and sixty] grand [idols]. I obeisance to all the idols all the there times. [On the basis of scriptures] say seven crore seventy two lac temples in [the residences of] **bhavanapatis**. 7.
 At the rate of one hundred and eighty idols in each temple, know the total

तेरह सौ क्रोड़ नव्यासी क्रोड़ [तेरह सौ नव्यासी क्रोड़] साठ लाख [प्रतिमाओं] को अंजली जोड़कर मैं वंदन करता हूँ. ८.
 तीर्च्छा लोक में बत्तीस सौ [तीन हजार दो सौ] और उनसाठ चैत्थों का [शास्त्र] पाठ है. तीन लाख इकानवे हजार तीन सौ बीस— उन प्रतिमाओं को वंदन कर. ९.
 व्यंतर और ज्योतिष्क लोक में गुणों की श्रेणी रूप श्री ऋषभदेव, श्री चंद्रानन, श्री वारिषेण और श्री वर्धमान नामक जो शाश्वत जिनेश्वरों की [प्रतिमाएँ] हैं, उन्हें मैं वंदन करता हूँ. १०.
 सम्मेट शिखर पर्वत पर [स्थित] बीस जिनेश्वरों [की प्रतिमाओं] को मैं वंदन करता हूँ. अष्टापद पर्वत पर [स्थित] चौबीस [जिनेश्वरों की प्रतिमाओं] को मैं वंदन करता हूँ. विमलाचल, गिरनार गढ़ और आबु पर्वत के उपर [स्थित] जिनेश्वरों की प्रतिमाओं को तुं वंदन कर. ११.
 सार रूप श्री शंखेश्वर और श्री केशरियाजी [तीर्थों] में [स्थित जिनेश्वरों की प्रतिमाओं] को, तारंगा पहाड़ पर [स्थित] श्री अजितनाथ [जिनेश्वर की प्रतिमा] को, श्री अंतरिक्ष और वरकाणा [तीर्थों] में [स्थित] श्री पार्श्वनाथ [जिनेश्वर की प्रतिमाओं] को, श्री जीरावला और श्री स्थंभन [खंभात तीर्थों] में [स्थित] श्री पार्श्वनाथ [जिनेश्वर की प्रतिमाओं] को

number. I obeisance to thirteen hundred crore, eighty nine crore [one thousand three hundred and eighty nine crore] sixty lac [idols] with folded hands. 8.
 [Scriptural] ordain is of thirty two hundred [three thousand two hundred] and fifty nine temples in human world. Obeisance to those-- three lac ninety one thousand three hundred twenty idols. 9.
 [Idols] of eternal jīneśvaras by name śrī ṛṣabhadeva, śrī candrānana, śrī vāriṣeṇa and śrī vardhamāna like the series of virtues which are in vyantara and jyotiṣka loka, I obeisance to them. 10.
 I obeisance to twenty [idols of] jīneśvaras [present] on sammeta śikhara mountain. I obeisance to twenty four [idols of jīneśvaras present] on aṣṭāpada mountain. You obeisance to the [idols of] jīneśvaras [present] on vimalācala, hill-fort of giranāra and ābu mountain. 11.
 You obeisance to the essence like [idols of jīneśvaras present] in [the pilgrimage centres of] śrī śaṅkheśvara and śrī kesariyājī, to [the idol of] śrī ajitanātha [jīneśvara present] on tāraṅgā hill, to [the idols of] śrī pārśvanātha [jīneśvara present] in [the pilgrimage centres of] śrī antarikṣa and śrī varakāṇā and to [the idols of] śrī pārśvanātha [jīneśvara present] in [the pilgrimage centres of] śrī

तुं जुहार. १२.
ग्राम, नगर, पुर और पत्तन में गुणों के गृह रूप जिनेश्वरों के जो चैत्य
[हैं, उन्हें] मैं नमस्कार करता हूँ. बीस विहरमान जिनेश्वरों को मैं वंदन
करता हूँ. मैं रातदिन अनंत सिद्ध भगवन्तों को वंदन करता हूँ. १३.

ढाई द्वीप में जो साधु अठारह हजार शीयल के अंगों को धारण करते
हैं, सार रूप पाँच महाव्रत और [पाँच] समिति और पांच आचार को पालते
हैं और पलाते हैं... १४.
...बाह्य और अभ्यंतर तप से उज्ज्वल हैं, गुण रूपी रत्नों की माला जैसे
उन मुनियों को मैं वंदन करता हूँ. प्रतिदिन ऊठकर [उनका मैं] कीर्तन
करता हूँ. श्री जीव विजयजी कहते हैं [कि मैं] भव सागर को
तिर जाऊंगा. १५.

विशेषार्थ :-

देव विमानों के प्रत्येक चैत्य में जिन प्रतिमाएं :- प्रत्येक देवलोक में
मज्जन सभा, अलंकार सभा, सुधर्म सभा, सिद्धायतन सभा और
व्यवसाय सभा- इन पांच सभाओं के तीन प्रवेश द्वारों पर चौमुख

jirāvalā and śrī sthambhana [khambhāta]. 12.
Temples of jineśvaras like an abode of virtues which [are present] in villages,
towns, cities and great cities, I obeisance [to them]. I obeisance to twenty
viharamāna jineśvaras. Night and day I obeisance to infinite number of siddha
bhagavantas. 13.
sādhus in dhāī dvīpa who are practising eighteen thousand aspects of śīyala,
are observing and inspiring others to observe the essence like five great vows,
[five] samitis and five ācāras... 14.
...are bright by external and internal penance, I obeisance to those munis alike
a garland of gem like virtues. I eulogize [them] after awakening everyday. śrī jīva
vijayajī says [that I] will tide over the ocean of life. 15.

Specific meaning :-

Jina idols in each temple of deva vimānas :- By the presence of idols facing four
directions [four idols in four directions] on three passages of five halls--
majjana sabhā, alaṅkāra sabhā, sudharma sabhā, siddhāyatana sabhā

प्रतिमाएं होने से $[4 \times 3 \times 5 = 60]$ साठ प्रतिमाएं होती हैं। तथा मंदिर के तीनों द्वारों में चौमुख प्रतिमाएं व मूल गभारा में एक सौ आठ प्रतिमाएँ होने से $[4 \times 3 = 12 + 908 = 920]$ एक सौ बीस प्रतिमाएं होती हैं। इस रहत भवनपति और देव विमानों के प्रत्येक जिन चैत्य में एक सौ अस्सी $[920+60]$ जिन प्रतिमाएँ— ६० सभा में और १२० मंदिर में होती हैं। लेकिन ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान में सभाएं न होने से मात्र एक सौ बीस प्रतिमाएं जिन मंदिर में होती हैं, तिर्छा लोक में चौमुख प्रतिमाओं से युक्त चार द्वार वाले साठ जिन चैत्य होते हैं, जिन में $[4 \times 4 = 16 + 908 = 924]$ एक सौ चौबीस जिन प्रतिमाएं होती हैं। शेष चैत्यों में एक सौ बीस प्रतिमाएं होती हैं।

विहरमान जिनेश्वरः— वर्तमान समय में सक्रिय रूप से विद्यमान तीर्थंकर भगवान्।

भारतीय और अंग्रेज गुणात्मक संख्या :-

१,००,००० [एक लाख] = १/१० [एक दशांश] मिलीयन [मिलियन]
 १०,००,००० [दस लाख] = १ [एक] मिलीयन

and **vyavasāya sabhā** in each heaven, there are sixty $[4 \times 3 \times 5 = 60]$ idols in total. And by the presence of idols facing four directions on all the three passages and one hundred and eight idols in main **gabhārā** [interior part] of the temple, there are one hundred and twenty $[4 \times 3 = 12 + 108 = 120]$ idols. In this manner, in every **jina** temple of **bhavanapati** and **deva vimānas**, there are one hundred and eighty **jina** idols-- sixty in hall and one hundred and twenty in temple. But due to the absence of halls in **grāiveyaka** and **anuttara vimānas**, only one hundred and twenty idols are present in each **jina** temple. In **tirchā loka** [human world], there are sixty **jina** temples with four passages having idols facing four directions, in which one hundred and twenty four $[4 \times 4 = 16 + 108 = 124]$ **jina** idols are present. In remaining temples, there are one hundred and twenty idols.

viḥaramāna jineśvara:— Active **tīrthaṅkara bhagavāna** existing at present period.

Indian and English cardinal numbers :-

1,00,000 [one lac].....= 1/10 [one-tenth] million
 10,00,000 [ten lac].....= 1 [one] million

१,००,००,००० [एक करोड़]..... = १० [दस] मिलीयन
 १०,००,००,००० [दस करोड़]..... = १०० [एक सौ] मिलीयन
 १००,००,००,००० [एक सौ करोड़ / एक अबज].... = १,००० [एक हजार] मिलीयन
 १०००,००,००,००० [एक हजार करोड़ / दस अबज] = १०,००० [दस हजार] मिलीयन

सूत्र परिचय :-

श्री जीव विजयजी द्वारा रचित इस स्तोत्र से तीनों लोक के शाश्वत एवं अशाश्वत चैत्यों में स्थित जिन प्रतिमाओं की संख्या बताकर सभी मुख्य तीर्थ, विहरमान तीर्थकर, सिद्ध भगवन्तों एवं सर्व साधुओं को नमस्कार किया गया है.

1,00,00,000 [one crore]..... = 10 [ten] million
 10,00,00,000 [ten crore]..... = 100 [one hundred] million
 100,00,00,000 [one hundred crore / one abaj]... = 1,000 [one thousand] million
 1000,00,00,000 [one thousand crore / ten abaj]. = 10,000 [ten thousand] million

Introduction of the sūtra :-

By this holy hymn composed by śrī jīva vijayajī, salutation is being offered to the jina idols mentioning their total number existing in the eternal and non-eternal temples of three worlds, to all important pilgrim-centres, wandering tīrthaṅkaras, the siddha bhagavantas and all sādhus.

प्रतिक्रमण सूत्र

सह विवेचन

भाग - २ [हिन्दी - अंग्रेजी]

काव्य विभाग

निर्वाण सागर

Pratikramaṇa Sūtra

With Explanation

Part - 2 [Hindī - English]

kāvya part

Nirvāṇa Sāgara

वर्तमान काल के २४ तीर्थंकरों के नामादि				Names etc. of the 24 tīrthaṅkaras of present era			
क्र. सं.	नाम	लाञ्छन	वर्ण	S. no.	Name	Mark	Colour
१.	ऋषभदेव	वृषभ [बैल]	काञ्चन [सुवर्ण]	1.	ṛṣabhadeva	Bullock	Golden
२.	अजितनाथ	हस्ती [हाथी]	काञ्चन	2.	ajitanātha	Elephant	Golden
३.	संभवनाथ	अश्व [घोड़ा]	काञ्चन	3.	sambhavanātha	Horse	Golden
४.	अभिनंदन स्वामी	वानर [बंदर]	काञ्चन	4.	abhinandana svāmī	Monkey	Golden
५.	सुमतिनाथ	क्रौञ्चपक्षी	काञ्चन	5.	sumatinātha	Crane	Golden
६.	पद्मप्रभ स्वामी	पद्म [कमल]	रक्त [लाल]	6.	padmaprabha svāmī	Lotus	Red
७.	सुपार्श्वनाथ	स्वस्तिक	काञ्चन	7.	supārśvanātha	Swastik	Golden
८.	चन्द्रप्रभ स्वामी	चन्द्र	श्वेत [उज्ज्वल]	8.	candraprabha svāmī	Moon	White
९.	सुविधिनाथ	मगरमच्छ	उज्ज्वल	9.	suvidhinātha	Crocodial	White
१०.	शीतलनाथ	श्रीवत्स	काञ्चन	10.	śītanātha	śrīvatsa	Golden
११.	श्रेयांसनाथ	गैंडा	काञ्चन	11.	śreyānsanātha	Rhinoceros	Golden
१२.	वासुपूज्य स्वामी	पाड़ा	लाल	12.	vāsupūjya svāmī	He-buffalo	Red
१३.	विमलनाथ	वराह	काञ्चन	13.	vimalanātha	Boar	Golden
१४.	अनन्तनाथ	बाज	काञ्चन	14.	anantanātha	Hawk	Golden

१५.	धर्मनाथ	वज्र	काञ्चन	15.	dharmanātha	Thunderbolt	Golden
१६.	शांतिनाथ	मृग [हिरण]	काञ्चन	16.	śāntinātha	Deer	Golden
१७.	कुन्थुनाथ	छाग [बकरा]	काञ्चन	17.	kunthunātha	Goat	Golden
१८.	अरनाथ	नंदावर्त	काञ्चन	18.	aranātha	nandāvarta	Golden
१९.	मल्लिनाथ	कुम्भ	नीला	19.	mallinātha	Pitcher	Blue
२०.	मुनिसुव्रत स्वामी	कछुआ	कृष्ण [श्याम]	20.	munisuvrata svāmī	Tortoise	Black
२१.	नमिनाथ	नीला-कमल	काञ्चन	21.	naminātha	Blue-lotus	Golden
२२.	नेमिनाथ	शंख	श्याम	22.	neminātha	Conch-shell	Black
२३.	पार्श्वनाथ	सर्प	नीला	23.	pārśvanātha	Snake	Blue
२४.	महावीर स्वामी	सिंह	काञ्चन	24.	mahāvīra svāmī	Lion	Golden
२० विहरमान जिनेश्वरों के नाम				Names of 20 viharamāna jineśvaras			
क्र. सं.	नाम			S. no.	Name		
१.	सीमंधर स्वामी			1.	śīmandhara svāmī		
२.	युगमंधर स्वामी			2.	yugamandhara svāmī		
३.	बाहु स्वामी			3.	bāhu svāmī		

४.	सुबाहु स्वामी	4.	subāhu svāmī
५.	सुजात स्वामी	5.	sujāta svāmī
६.	स्वयंप्रभ स्वामी	6.	svayamprabha svāmī
७.	ऋषभानन स्वामी	7.	ṛṣabhānana svāmī
८.	अनन्तवीर्य स्वामी	8.	anantavīrya svāmī
९.	सुरप्रभ स्वामी	9.	suraprabha svāmī
१०.	विशाल स्वामी	10.	viśāla svāmī
११.	वज्रधर स्वामी	11.	vajradhara svāmī
१२.	चंद्रानन स्वामी	12.	candrānana svāmī
१३.	चन्द्रबाहु स्वामी	13.	candrabāhu svāmī
१४.	भुजङ्ग स्वामी	14.	bhujaṅga svāmī
१५.	ईश्वर स्वामी	15.	īśvara svāmī
१६.	नेमिप्रभ स्वामी	16.	nemiprabha svāmī
१७.	वीरसेन स्वामी	17.	vīrasena svāmī
१८.	महाभद्र स्वामी	18.	mahābhadrā svāmī
१९.	देवयशा स्वामी	19.	devayaśā svāmī
२०.	अजितवीर्य स्वामी	20.	ajitavīrya svāmī

नवपद के नाम तथा वर्ण			Names and colours of navapada		
क्र. सं.	नाम	वर्ण	S. no.	Name	Colour
१.	अरिहंत	श्वेत [सफेद]	1.	arihanta	White
२.	सिद्ध	रक्त [लाल]	2.	siddha	Red
३.	आचार्य	पीला	3.	ācārya	Yellow
४.	उपाध्याय	हरा	4.	upādhyāya	Green
५.	साधु	श्याम [काला]	5.	sādhu	Black
६.	दर्शन	सफेद	6.	darśana	White
७.	ज्ञान	सफेद	7.	jñāna	White
८.	चारित्र	सफेद	8.	cāritra	White
९.	तप	सफेद	9.	tapa	White

दोहा संग्रह

अ. प्रदक्षिणा के दोहे

- काल अनादि अनंतथी, भव भ्रमणनो नहि पार;
ते भव भ्रमण निवारवा, प्रदक्षिणा दळुं त्रण वार.1.
भमतीमां भमतां थकां, भव भावठ दूर पलाय;
ज्ञान दर्शन चारित्र रूप, प्रदक्षिणा त्रण देवाय.2.
जन्म-मरणादि सवि भय टले, सीझे जो दर्शन काज;
रत्न-त्रयी प्राप्ति भणी, दर्शन करो जिन-राज.3.
ज्ञान वडुं संसारमां, ज्ञान परम सुख हेत;
ज्ञान विना जग जीवडा, न लहे तत्त्व संकेत.4.
चय ते संचय कर्मनो, रिक्त करे वली जेह;
चारित्र नामे निर्युक्ते कह्युं, वंदे ते गुणगेह.5.
ज्ञान दर्शन चारित्र ए, रत्न-त्रयी निरधार;
त्रण प्रदक्षिणा ते कारणे, भव-दुःख भंजनहार.6.

Collections of dohā [couplets]

A. Couplets of pradikṣaṇā [circumambulation]

- kāla anādi anantathī, bhava bhramaṇano nahi pāra;
te bhava bhramaṇa nivāravā, pradakṣiṇā daḷuṁ traṇa vāra.1.
bhamatīmāṁ bhamatāṁ thakāṁ, bhava bhāvaṭha dūra palāya;
jñāna darśana cāritra rūpa, pradakṣiṇā traṇa devāya.2.
janma-maraṇādi savi bhaya ṭale, sījhe jo darśana kāja;
ratna-trayī prāpti bhaṇī, darśana karo jina-rāja.3.
jñāna vaḍuṁ saṁsāramāṁ, jñāna parama sukha heta;
jñāna vinā jaga jīvaḍā, na lahe tattva saṅketa.4.
caya te sañcaya karmano, rikta kare valī jeha;
cāritra nāme niryukte kahyuṁ, vande te guṇageha.5.
jñāna darśana cāritra e, ratna-trayī niradhāra;
traṇa pradakṣiṇā te kāraṇe, bhava-duḥkha bhañjanahāra.6.

आ. प्रभु दर्शन के समय बोलने के दोहे

- प्रभु दरिशन सुख संपदा, प्रभु दरिशन नव-निध.
 प्रभु दरिशनथी पामीए, सकल पदारथ सिद्ध. १.
 भावे जिनवर पूजीए, भावे दीजे दान.
 भावे भावना भावीए, भावे केवल-ज्ञान. २.
 जीवडा! जिनवर पूजीए, पूजानां फल होय.
 राजा नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय. ३.
 फूलडां केरा बागमां, बेठा श्री जिनराय.
 जेम तारामां चन्द्रमा, तेम शोभे महाराय. ४.
 त्रि-भुवन नायक तुं धणी, मही मोटो महाराज.
 मोटे पुण्ये पामीयो, तुम दरिशन हुं आज. ५.
 आज मनोरथ सवि फल्या, प्रगट्या पुण्य कल्लोल.
 पाप करम दूरे टल्यां, नाठां दुःख दंदोल. ६.
 पंचम काले पामवो, दुलहो प्रभु देदार.
 तो पण तेना नामनो, छे मोटो आधार. ७.

B. Couplets to be uttered while viewing the lord

- prabhu dariśana sukha sampadā, prabhu dariśana nava-nidha.
 prabhu dariśanathī pāmīe, sakala padāratha siddha. 1.
 bhāve jinavara pūjīe, bhāve dīje dāna.
 bhāve bhāvanā bhāvīe, bhāve kevala-jñāna. 2.
 jīvaḍā! jinavara pūjīe, pūjānā phala hoya.
 rājā name prajā name, āṇa na lope koya. 3.
 phūlaḍā kerā bāgamā, beṭhā śrī jinarāya.
 jema tāramā candramā, tema śobhe mahārāya. 4.
 tri-bhuvana nāyaka tu dhaṇī, mahī moṭo mahārāja.
 moṭe puṇye pāmīyo, tuma dariśana hu āja. 5.
 āja manoratha savi phalyā, pragatya puṇya kallola.
 pāpa karama dūre ṭalyā, nāṭhā duḥkha dandola. 6.
 pañcama kāle pāmavo, dulaho prabhu dedāra.
 to paṇa tenā nāmāno, che moṭo ādhāra. 7.

प्रभु नामनी औषधि, खरा भावथी खाय.
 रोग शोक आवे नहीं, सवि संकट मिट जाय. ८.
 पांच कोडीने फूलडे, पाम्या देश अढार.
 राजा कुमारपालनो, वत्यो जय-जय-कार. ९.
 छे प्रतिमा मनोहारिणी, दुःखहरी श्री वीर जिणंदनी;
 भक्तोने छे सर्वदा सुखकरी, जाणे खीली चांदनी.
 आ प्रतिमाना गुण भाव धरीने, जे माणसो गाय छे;
 पामी सघलां सुख ते जगतनां, मुक्ति भणी जाय छे. १०.
 आव्यो शरणे तमारा जिनवर! करजो आश पूरी अमारी;
 नाव्यो भवपार मारो तुम विण जगमां सार ले कोण मारी?.
 गायो जिनराज! आजे हरख अधिकथी परम आनंदकारी;
 पायो तुम दर्श नासे भव-भय-भ्रमणा नाथ! सर्वे अमारी. ... ११.
 सरस-शांति-सुधारस-सागरं, शुचितरं गुण-रत्न-महागरम्.
 भविक-पंकज-बोध दिवाकरं,
 प्रति-दिनं प्रणमामि जिनेश्वरम्..१२.
 श्री आदीश्वर शांति नेमि जिनने, श्रीपार्श्व वीर प्रभु;
 ए पांचे जिनराज आज प्रणमुं, हेजे धरी ए विभु.

prabhu nāmanī auṣadhi, kharā bhāvathī khāya.
 roga śoka āve nahī, savi saṅkaṭa miṭa jāya. 8.
 pāñca koḍīne phūlade, pāmyā deśa adhāra.
 rājā kumārāpālano, vartyo jaya-jaya-kāra. 9.
 che pratimā manohāriṇī, duḥkhaharī śrī vīra jinaṇdanī;
 bhaktone che sarvadā sukhakarī, jāṇe khīlī cāndanī.
 ā pratimānā guṇa bhāva dharīne, je māṇaso gāya che;
 pāmī saghalā sukha te jagatanā, mukti bhaṇī jāya che. 10.
 āvyo śaraṇe tamārā jinavara! karajo āśa pūrī amārī;
 nāvyo bhavapāra māro tuma viṇa jagamā sāra le koṇa mārī?.
 gāyo jinarāja! āje harakha adhikathī parama ānandakārī;
 pāyo tuma darśa nāse bhava-bhaya-bhramaṇā nātha! sarve amārī. 11.
 sarasa-śānti-sudhārasa-sāgaram, śucitaram guṇa-ratna-mahāgaram.
 bhavika-paṅkaja-bodha divākaram,
 prati-dinam praṇamāmi jineśvaram.. 12.
 śrī ādīśvara śānti nemi jinane, śrīpārśva vīra prabhu;
 e pāñce jinarāja āja praṇamu, heje dhārī e vibhu.

कल्याणे कमला सदैव विमला, वृद्धि पमाडो अति;
 एहवा गौतम स्वामी लब्धि भरीआ, आपो सदा सन्मति. . . १३.
 जगदेव अनंत अभेद प्रभु, करुं सेव तजी अहमेव-पणुं;
 प्रतिमा तव रूप ग्रही चित्तमां, समरुं निज हुं धरी भाव घणुं.
 प्रतिमा तुज जन जे निंदशे, भमशे भव तेह अनंत सदा;
 प्रतिमा तुज जन जे वंदशे, करशे निज श्रेय बधां. १४.
 सुण्या हशे पूज्या हशे निरख्या हशे पण को क्षणे;
 हे जगत-बंधु! चित्तमां धार्या नहि भक्तिपणे.
 जन्म्यो प्रभु ते कारणे दुःखपात्र आ संसारमां;
 हा! भक्ति ते फलती नथी जे भाव शून्याचारमां. १५.
 जिनवर पद सेवा, सर्व-संपत्ति दाइ;
 निशदिन सुखदाइ, कल्पवल्ली सहाइ.
 नमि विनमि लही जे, सर्व-विद्या बडाइ;
 ऋषभ जिनह सेवा, साधतां तेह पाइ. १६.
 जे दृष्टि प्रभु दर्शन करे, ते दृष्टिने पण धन्य छे;
 जे जीभ जिनवरने स्तवे, ते जीभने पण धन्य छे.
 पीए मुदा वाणी सुधा, ते कर्ण-युगने धन्य छे;

kalyāṇe kamalā sadaiva vimalā, vṛddhi pamāḍo ati;
 ehavā gautama svāmī labdhi bhariā, āpo sadā sanmati. 13.
 jagadeva ananta abheda prabhu, karuṃ seva taji ahomeva-panuṃ;
 pratimā tava rūpa grahī cittamāṃ, samaruṃ nija huṃ dhari bhāva ghaṇuṃ.
 pratimā tuja jana je nindaśe, bhamaśe bhava teha ananta sadā;
 pratimā tuja jana je vandaśe, karaśe nija śreya badhāṃ. 14.
 sunyā haśe pūjyā haśe nirakhyā haśe paṇa ko kṣaṇe;
 he jagata-bandhu! cittamāṃ dhāryā nahi bhaktipaṇe.
 janmyo prabhu te kāraṇe duḥkhapātra ā saṁsāramāṃ;
 hā! bhakti te phalati nathī je bhāva śūnyācāramāṃ. 15.
 jinavara pada sevā, sarva-sampatti dāi;
 nīśadina sukhadāi, kalpavallī sahāi.
 nami vinami lahī je, sarva-vidyā baḍāi;
 ṛṣabha jinaha sevā, sādhatāṃ teha pāi. 16.
 je dṛṣṭi prabhu darśana kare, te dṛṣṭine paṇa dhanya che;
 je jībha jinavarane stave, te jībthane paṇa dhanya che.
 pīe mudā vāṇī sudhā, te karṇa-yugane dhanya che;

तुज नाम मंत्र विशद धरे, ते हृदयने नित धन्य छे. १७.	tuja nāma mantra viśada dhare, te hrdayane nita dhanya che.17.
अद्य मे कर्म-संघातं, विनष्टं चिर-संचितम्.	adya me karma-saṅghātam, vinaṣṭam cira-saṅcitam.
दुर्गत्यापि निवृत्तोहं, जिनेन्द्र! तव दर्शनात्. १८.	durgatyāpi nivṛttoham, jinendra! tava darśanāt.18.
दर्शनं देव-देवस्य, दर्शनं पाप-नाशनम्.	darśanam deva-devasya, darśanam pāpa-nāśanam.
दर्शनं स्वर्ग-सोपानं, दर्शनं मोक्ष-साधनम्. १९.	darśanam svarga-sopānam, darśanam mokṣa-sāadhanam.19.
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम.	anyathā śaraṇam nāsti, tvameva śaraṇam mama.
तस्मात् कारुण्य-भावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर! २०.	tasmāt kāruṇya-bhāvena, rakṣa rakṣa jineśvara!20.
मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभुः;	maṅgalam bhagavān vīro, maṅgalam gautamaḥ prabhuḥ;
मंगलं स्थूलभद्राद्या, जैनो धर्मोस्तु मंगलम्. २१.	maṅgalam sthūlabhadrādyā, jaino dharmostu maṅgalam.21.
नमो दुर्वार-रागादि, वैरि-वार-निवारिणे;	namo durvāra-rāgādi, vairi-vāra-nivāriṇe;
अर्हते योगि-नाथाय, महावीराय तायिने. २२.	arhate yogi-nāthāya, mahāvīrāya tāyine.22.
पन्नगे च सुरेन्द्रे च, कौशिके पाद-संस्पृशि;	pannage ca surendre ca, kauśike pāda-saṁspr̥ṣi;
निर्विशेष-मनस्काय, श्रीवीर-स्वामिने नमः. २३.	nirviśeṣa-manaskāya, śrīvīra-svāmine namaḥ.23.
पूर्णानन्द-मयं महोदय-मयं, कैवल्य-चिद्ब्रह्ममयम्;	pūrṇānanda-mayaṁ mahodaya-mayaṁ, kaivalya-ciddṛṇmayam;
रूपतीत-मयं स्वरूप-रमणं, स्वाभाविकी-श्रीमयम्.	rūpātīta-mayaṁ svarūpa-ramaṇam, svābhāviki-śrīmayam.
ज्ञानोद्द्योत-मयं कृपा-रस-मयं, स्याद्वाद-विद्यालयम्;	jñānodyota-mayaṁ kṛpā-rasa-mayaṁ, syādvāda-vidyālayam;
श्री सिद्धाचल-तीर्थराज-मनिशं, वन्देह-मादीश्वरम्. २४.	śrī siddhācala-tīrtharāja-maṇiśam, vandeha-mādīśvaram.24.

नेत्रानन्द-करी भवोदधि-तरी, श्रेयस्तरोर्मजरी;
 श्रीमद्धर्म-महा-नरेन्द्र-नगरी, व्यापल्लता-धूमरी.
 हर्षोत्कर्ष-शुभ-प्रभाव-लहरी, राग-द्विषां जित्वरी;
 मूर्तिः श्रीजिन-पुंगवस्य भवतु, श्रेयस्करी देहिनाम्. २५.
 अद्या-भवत् सफलता नयन-द्वयस्य;
 देव! त्वदीय-चरणांबुज-वीक्षणेन.
 अद्य त्रिलोक-तिलक! प्रति-भासते मे;
 संसार-वारिधि-रयं चुलुक-प्रमाणः..... २६.
 तुभ्यं नमस्त्रि-भुवनाति-हराय नाथ;
 तुभ्यं नमः क्षितितला-मल-भूषणाय.
 तुभ्यं नमस्त्रि-जगतः परमेश्वराय,
 तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय..... २७.
 प्रशम-रस-निमग्नं, दृष्टि-युग्मं प्रसन्नम्;
 वदन-कमल-मंकः, कामिनी-संग-शून्यः.
 कर-युगमपि यत्ते, शस्त्र-संबंध-बंधम्;
 तदसि जगति देवो, वीतराग-स्त्वमेव..... २८.
 अद्य मे सफलं जन्म, अद्य मे सफला क्रिया;

netrānanda-karī bhavodadhi-tarī, śreyastaror-mañjarī;
 śrīmad-dharma-mahā-narendra-nagarī, vyāpallatā-dhūmarī.
 harṣotkarṣa-śubha-prabhāva-laharī, rāga-dviṣāṃ jitvarī;
 mūrtiḥ śrījina-puṅgavasya bhavatu, śreyaskarī dehinām.....25.
 adyā-bhavat saphalatā nayana-dvayasya;
 deva! tvadīya-caraṇāmbuja-vīkṣaṇena.
 adya triloka-tilaka! prati-bhāsate me;
 saṁsāra-vāridhi-rayam culuka-pramāṇaḥ.....26.
 tubhyam namastri-bhuvanārti-harāya nātha;
 tubhyam namaḥ kṣititalā-mala-bhūṣaṇāya.
 tubhyam namastri-jagataḥ parameśvarāya,
 tubhyam namo jina! bhavodadhi-śoṣaṇāya.....27.
 praśama-rasa-nimagṇam, drṣṭi-yugmam prasannam;
 vadana-kamala-maṅkaḥ, kāmīnī-saṅga-sūnyaḥ.
 kara-yugamapi yatte, śastra-sambandha-vandhyam;
 tadasi jagati devo, vītarāga-stvameva.....28.
 adya me saphalam janma, adya me saphalā kriyā;

अद्य मे सफलं गात्रं, जिनेन्द्र! तव दर्शनात्..... २९.
 कल्याण-पाद-पारामं, श्रुत-गंगा-हिमाचलम्;
 विश्वांभोज-रविं देवं, वंदे श्री-ज्ञात-नन्दनम्..... ३०.
 दर्शनाद् दुरित-ध्वंसी, वंदनाद् वाञ्छित-प्रदः;
 पूजनात् पूरकः श्रीणां, जिनाः साक्षात् सुरद्रुमः..... ३१.

इ. अष्ट प्रकारी पूजा के दोहे

१. जल पूजा के दोहे

[अ]

ज्ञान कलश भरी आतमा, समता रस भरपूर.
 श्री जिनने नवरावतां, कर्म होये चकचूर..... १.

[आ]

जल पूजा जुगते करो, मेल अनादि विनाश.
 जल पूजा फल मुज होजो, मागो एम प्रभु पास..... १.

adya me saphalam gātram, jinendra! tava darśanāt.....29.
 kalyāṇa-pāda-pārāmam, śruta-gaṅgā-himācalam;
 viśvāmbhoja-raviṁ devam, vande śrī-jñāta-nandanam.....30.
 darśanād durita-dhvaṁsī, vandanād vāñchita-pradaḥ;
 pūjanāt pūraḥ śrīṇām, jinaḥ sāksāt suradrumaḥ.....31.

C. Couplets of eight types of worship

1. Couplets of worship with water

[a]

jñāna kalaśa bhari ātamā, samatā rasa bharapūra.
 śrī jinane navarāvatāṁ, karma hoye cakacūra.....1.

[ā]

jala pūjā jugate karo, mela anādi vināśa.
 jala pūjā phala muja hojo, māgo ema prabhu pāsa.....1.

[इ]

मेरु शिखर नवरावे हो सुरपति, मेरु शिखर नवरावे;
 जन्म काल जिनवरजी को जाणी, पंच-रूप करी आवे. . हो.१.
 रत्न प्रमुख अड जातिना कलशा, औषधि चूरण मिलावे;
 खीर समुद्र तीर्थोदक आणी, स्नात्र करी गुण गावे. हो.२.
 एणी पेरे जिन-प्रतिमा को न्हवण करी, बोधि-बीज मानुं वावे;
 अनुक्रमे गुण रत्नाकर फरसी, जिन उत्तम पद पावे. ... हो.३.

२.क. चंदन पूजा का दोहा

शीतल गुण जेहमां रह्यो, शीतल प्रभु मुख रंग.
 आत्म शीतल करवा भणी, पूजो अरिहा अंग.१.

२.ख. नवांग पूजा के दोहे

जल भरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत.

[i]

meru śikhara navarāve ho surapati, meru śikhara navarāve;
 janma kāla jinavarajī ko jāṇī, pañca-rūpa karī āve. ho.1.
 ratna pramukha aḍa jātinā kalaśā, auṣadhi cūraṇa milāve;
 khīra samudra tīrthodaka āṇī, snātra karī guṇa gāve. ho.2.
 eṇī pere jina-pratimā ko nhavaṇa karī, bodhi-bīja mānuṃ vāve;
 anukrame guṇa ratnākara pharāsī, jina uttama pada pāve. ho.3.

2.A. Couplets of worship with sandal

śīṭala guṇa jehamāṃ rahyo, śīṭala prabhu mukha raṅga.
 ātma śīṭala karavā bhaṇī, pūjo arihā aṅga.1.

2.B. Couplets of worship of navāṅga [nine organs]

jala bharī samputa patramāṃ, yugalika nara pūjanta.

ऋषभ चरण अंगूठडे, दायक भव-जल अंत. १.	ṛṣabha caraṇa aṅgūṭhaḍe, dāyaka bhava-jala anta. 1.
जानु-बले काउरसग रह्या, विचर्या देश-विदेश.	jānu-bale kāussagga rahyā, vicaryā deśa-vidēśa.
खडां खडां केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश. २.	khaḍā_ khaḍā_ kevala lahyu_, pūjo jānu nareśa. 2.
लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी-दान.	lokāntika vacane kari, varasyā varasī-dāna.
कर कांडे प्रभु-पूजना, पूजो भवि बहु-मान. ३.	kara kāṇḍe prabhu-pūjanā, pūjo bhavi bahu-māna. 3.
मान गयुं दोय अंसथी, देखी वीर्य अनन्त,	māna gayu_ doya aṁsathī, dekhi vīrya ananta.
भुजा-बले भव-जल तर्या, पूजो खंध महंत. ४.	bhujā-bale bhava-jala taryā, pūjo khaṇḍha mahanta. 4.
सिद्ध-शिला गुण ऊजली, लोकांते भगवंत.	siddha-śilā guṇa ūjalī, lokānte bhagavanta.
वसिया तिणे कारण भवि, शिर-शिखा पूजंत. ५.	vasiyā tiṇe kāraṇa bhavi, śira-śikhā pūjanta. 5.
तीर्थकर पद पुण्यथी, तिहुअण जन सेवंत.	tīrthaṅkara pada puṇyathī, tihuana jana sevanta.
त्रिभुवन-तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत. ६.	tribhuvana-tilaka samā prabhu, bhāla tilaka jayavanta. 6.
सोल पहोर प्रभु देशना, कंठे विवर वर्तुल.	sola pahora prabhu deśanā, kaṇṭhe vivara vartula.
मधुर ध्वनि सुर नर सुणे, तिणे गले तिलक अमूल. ७.	madhura dhvani sura nara suṇe, tiṇe gale tilaka amūla. 7.
हृदय कमल उपशम बले, बाल्यां राग ने रोष.	hṛdaya kamala upaśama bale, bālyā_ rāga ne roṣa.
हिम दहे वन-खंडने, हृदय तिलक संतोष. ८.	hima dahe vana-khaṇḍane, hṛdaya tilaka santōṣa. 8.
रत्न-त्रयी गुण ऊजली, सकल सुगुण विसराम.	ratna-trayī guṇa ūjalī, sakala suguṇa visarāma.

नाभि-कमलनी पूजना, करतां अविचल धाम. ९.
 उपदेशक नव तत्त्वना, तिणे नव अंग जिणंद.
 पूजो बहुविध रागथी, कहे शुभ-वीर मुणिंद. १०.

३. पुष्प पूजा का दोहा

सुरभि अखंड कुसुम ग्रही, पूजो गत संताप.
 सुमजंतु भव्य ज परे, करीये समकित छाप. १.

४. धूप पूजा का दोहा

[अ]
 ध्यान घटा प्रगटावीये, वाम नयन जिन धूप.
 मिच्छत दुर्गन्ध दूर टले, प्रगटे आत्म स्वरूप. १.

[आ]

अमे धूपनी पूजा करीए रे, ओ मन-मान्या मोहनजी;

nābhi-kamalanī pūjanā, karatā avicala dhāma. 9.
 upadeśaka nava tattvanā, tiṇe nava aṅga jinaṇḍa.
 pūjo bahuvīdha rāgathī, kahe śubha-vīra muṇiṇḍa. 10.

3. Couplets of worship with flowers

surabhi akhaṇḍa kusuma grahī, pūjo gata santāpa.
 sumajantu bhavya ja pare, kariye samakita chāpa. 1.

4. Couplets of worship with incense

[a]
 dhyāna ghaṭā pragaṭāviye, vāma nayana jina dhūpa.
 micchata durgandha dūra ṭale, pragaṭe ātma svarūpa. 1.

[ā]

ame dhūpanī pūjā kariē re, o mana-mānyā mohanajī;

अमे धूप-घटा अनुसरीए रे, ओ मन...
 नहीं कोइ तमारी तोले रे, ओ मन...
 प्रभु अंते छे शरण तमारुं रे, ओ मन...१.

५.क. दीपक पूजा का दोहा

द्रव्य दीप सु-विवेकथी, करतां दुःख होय फोक.
 भाव प्रदीप प्रगट हुए, भासित लोका-लोक.....१.

५.ख. चामर वींझने का दोहा

बे बाजु चामर ढाले, एक आगल यज्र उलाले;
 जइ मेरु धरी उत्संगे, इंद्र चोसठ मलीआ रंगे.
 प्रभुजीनुं मुखडुं जोवा, भवो भवनां पातिक खोवा.१.

ame dhūpa-ghaṭā anusarīe re, o mana...
 nahī_ koi tamārī tole re, o mana...
 prabhu ante che śaraṇa tamāru_ re, o mana...1.

5.A. Couplets of worship with lamp

dravya dīpa su-vivekathī, karatā_ duḥkha hoya phoka.
 bhāva pradīpa pragata hue, bhāsita lokā-loka.....1.

5.B. Couplets of swinging cāmara

be bāju cāmara ḍhāle, eka āgala vajra ulāle;
 jai meru dharī utsaṅge, indra cosaṭha malīā raṅge.
 prabhujīnu_ mukhaḍu_ jovā, bhavo bhavanā_ pātika khovā.....1.

५.ग. दर्पण पूजा का दोहा

प्रभु दर्शन करवा भणी, दर्पण पूजा विशाल.
आत्म दर्पणथी जुए, दर्शन होय ततकाल.....१.

६.क. अक्षत पूजा का दोहा

शुद्ध अखंड अक्षत ग्रही, नन्दावर्त विशाल.
पूरी प्रभु सन्मुख रहो, टाली सकल जंजाल.....१.

६.ख. स्वस्तिक [साथिये] के दोहे

दर्शन ज्ञान चारित्रना, आराधनथी सार.
सिद्धशिलानी उपरे, हो मुज वास श्री कार.....१.
अक्षत पूजा करतां थकां, सफल करूं अवतार.
फल मांगु प्रभु आगले, तार तार मुज तार.....२.

5.C. Couplet of worship with mirror

prabhu darśana karavā bhaṇī, darpaṇa pūjā viśāla.
ātma darpaṇathī jue, darśana hoya tatakāla.1.

6.A. Couplets of worship with akṣata [whole rice grain]

śuddha akhaṇḍa akṣata grahī, nandāvarta viśāla.
pūrī prabhu sanmukha raho, ṭālī sakala jaṅjāla.1.

6.B. Couplets of swastik

darśana jñāna cāritranā, ārādhanathī sāra.
siddhaśilānī upare, ho muja vāsa śrī kāra.1.
akṣata pūjā karatā_ thakā_, saphala karū_ avatāra.
phala māngu prabhu āgale, tāra tāra muja tāra.2.

सांसारिक फल मागीने, रडवड्यो बहु संसार.
 अष्ट कर्म निवारवा, मागुं मोक्ष फल सार. ३.
 चिहुं गति भ्रमण संसारमां, जन्म मरण जंजाल.
 पंचम-गति विण जीव ने, सुख नहीं त्रिहुं काल. ४.

७. नैवेद्य पूजा का दोहा

अणाहारी पद में कर्या, विग्गह गइय अनन्त.
 दूर करी ते दीजिये, अणाहारी शिव सन्त. १.

८. फल पूजा का दोहा

इन्द्रादिक पूजा भणी, फल लावे धरी राग.
 पुरुषोत्तम पूजी करी, मागे शिव-फल त्याग. १.

sānsārika phala māgīne, raḍavaḍyo bahu saṁsāra.
 aṣṭa karma nivāravā, māguṁ mokṣa phala sāra. 3.
 cihuṁ gati bhramaṇa saṁsāramāṁ, janma maraṇa jaṁjāla.
 pañcama-gati viṇa jīva ne, sukha nahīṁ trihuṁ kāla. 4.

7. Couplets of worship with naivedya

aṇāhārī pada meṁ karyā, viggaha gaiya ananta.
 dūra karī te dījiye, aṇāhārī śiva santa. 1.

8. Couplets of worship with fruits

indrādika pūjā bhaṇī, phala lāve dhari rāga.
 puruṣottama pūjī karī, māge śiva-phala tyāga. 1.

चैत्यवन्दनादि का संग्रह

सकल-कुशल-वल्ली

सकल-कुशल-वल्ली-पुष्करावर्त-मेघो,
 दुरित-तिमिर-भानुः कल्प-वृक्षोपमानः.
 भव-जल-निधि-पोतः सर्व संपत्ति-हेतुः,
 स भवतु सततं वा श्रेयसे शान्तिनाथः. १.

सामान्य जिन चैत्यवन्दन

तुज मूरति ने निरखवा, मुज नयणां तलसे;
 तुज गुण गणने बोलवा, रसना मुज हरखे. १.
 काया अति आनंद मुज, तुम युग पद फरसे;
 तो सेवक तार्या विना, कहो केम हवे सरशे?..... २.
 एम जाणी ने साहिबा ए, नेक नजर मोहे जोय;
 ज्ञान विमल प्रभु नजरथी, तेह शुं जे नवि होय. ३.

Collection of caityavandana etc.

sakala-kuśala-vallī

sakala-kuśala-vallī-puṣkarāvartta-megho,
 durita-timira-bhānuḥ kalpa-vṛkṣopamānaḥ.
 bhava-jala-nidhi-potaḥ sarva sampatti-hetuḥ,
 sa bhavatu satatam vaḥ śreyase śāntināthaḥ. 1.

sāmānya jina caityavandana

tuja mūrati ne nirakhavā, muja nayaṇāṁ talase;
 tuja guṇa gaṇane bolavā, rasanā muja harakhe. 1.
 kāyā ati ānanda muja, tuma yuga pada pharase;
 to sevaka tāryā vinā, kaho kema have saraśe?..... 2.
 ema jāṇī ne sāhibā e, neka najara mohe joya;
 jñāna vimala prabhu najarathī, teha śuṁ je navi hoyā..... 3.

चौबीस जिन वर्ण चैत्यवंदन

- पद्मप्रभु ने वासुपूज्य, दोय राता कहीए.
 चन्द्रप्रभु ने सुविधिनाथ, दोय उज्ज्वल लहीए. १.
 मल्लिनाथ ने पार्श्वनाथ, दो नीला निरख्या.
 मुनिसुव्रत ने नेमनाथ, दो अंजन सरिखा. २.
 सोले जिन कंचन समा ए, एहवा जिन चोवीश.
 धीर विमल पण्डित तणो, ज्ञान विमल कहे शिष्य. ३.

सीमंधर जिन दोहे

- अनंत चोवीशी जिन नमुं, सिद्ध अनंती कोड.
 केवल-धर मुगते गया, वंदुं बे कर जोड. १.
 जे चारित्रे निर्मला, जे पंचानन सिंह.
 विषय कषायने गंजिआ, ते प्रणमुं निश दिन. २.
 बे कोडी केवल-धरा, विहरमान जिन वीश.
 सहस कोडी युगल नमुं, साधु नमुं निश दिश. ३.

cauṽisa jina varṇa caityavandana

- padmaprabhu ne vāsupūjya, doya rātā kahīe.
 candraprabhu ne suvidhinātha, doya ujjala lahīe. 1.
 mallinātha ne pāśvanātha, do nīlā nirakhyā.
 munisuvrata ne nemanātha, do añjana sarikhā. 2.
 sole jina kañcana samā e, ehavā jina covīśa.
 dhīra vimala paṇḍita taṇo, jñāna vimala kahe śiṣya. 3.

Couplets of sīmandhara jina

- ananta covīśī jina namuṁ, siddha anantī koḍa.
 kevala-dhara mugate gayā, vanduṁ be kara joḍa. 1.
 je cāritre nirmalā, je pañcānana siṅha.
 viṣaya kaṣāyane gañjiā, te praṇamuṁ niśa dina. 2.
 be koḍī kevala-dharā, viharamāna jina vīśa.
 sahasa koḍī yugala namuṁ, sādhu namuṁ niśa diśa. 3.

रंक तणी परे रडवड्यो, नधणियो निरधार;
 श्री सीमंधर साहिबा, तुम विण इणे संसार. ४.
 वृषभ लंछन चरणमां, कंचन वरणी काय.
 चोत्रीश अतिशय शोभता, वंदुं सदा तुम पाय. ५.
 महाविदेहमां श्री सीमंधर स्वामी, नित्य वंदु प्रभात;
 त्रिकरण वली त्रियोगथी, जपुं अहर्निश जाप. ६.
 भरत क्षेत्रमां हुं रहूं, आप रहो छो विमुख;
 ध्यान लोह चुंबक परे, करी दृष्टि सन्मुख. ७.

सीमंधर जिन चैत्यवंदन

श्री सीमन्धर वीतराग!, त्रिभुवन तुमे उपकारी;
 श्री श्रेयांस पिता कुले, बहु शोभा तुमारी. १.
 धन्य धन्य माता सत्यकी, जेणे जायो जयकारी;
 वृषभ लंछने विराजमान, वंदे नर नारी. २.
 धनुष पांचसें देहडी ए, सोहीए सोवन वान;
 कीर्ति विजय उवज्झायानो, विनय धरे तुम ध्यान. ३.

raṅka taṇī pare raḍavaḍyo, nadhaṇiyo niradhāra;
 śrī sīmandhara sāhibā, tuma viṇa iṇe saṁsāra. 4.
 vṛṣabha lañchana caraṇamāṇ, kañcana varaṇī kāya.
 cotrīśa atīśaya śobhatā, vanduṃ sadā tuma pāya. 5.
 mahāvidehamāṇ śrī sīmandhara svāmī, nitya vandu prabhāt;
 trikaṇa valī triyogathī, japuṃ aharnīśa jāpa. 6.
 bharata kṣetramāṇ huṃ rahuṃ, āpa raho cho vimukha;
 dhyāna loha cumbaka pare, karī dṛṣṭi sanmukha. 7.

sīmandhara jina caityavandana

śrī sīmandhara vītarāga!, tribhuvana tume upakārī;
 śrī śreyāṁsa pitā kule, bahu śobhā tumārī. 1.
 dhanya dhanya mātā satyakī, jeṇe jāyo jayakārī;
 vṛṣabha lañchane virājamāna, vande nara nārī. 2.
 dhanuṣa pāñcaseṃ dehaḍī e, sohīe sovana vāna;
 kīrti vijaya uvajjhāyano, vinaya dhare tuma dhyāna. 3.

सीमंधर जिन चैत्यवन्दन

जयतु जिन जगदेक-भानु, काम कश्मल-तम-हरं;
 दुरित-ओघ विभाव-वर्जितं, नौमि श्री जिन-मंधरं..... १.
 प्रभु-पाद पद्मे चित्त-लयने, विषय-दोलित निर्भरं;
 संसार-राग असार-घातिकं, नौमि..... २.
 अति-रोष-वह्नि-मान महीधर, तृष्णा-जलधि-हितकरं;
 वचनोर्जित-जंतु-बोधकं, नौमि..... ३.
 अज्ञान-तर्जित-रहित-चरणं, परगुणो मे मत्सरं;
 अरति-अर्दित-चरण-शरणं, नौमि..... ४.
 गंभीर-वदनं भवतु दिन दिन, देहि मे प्रभु-दर्शनं;
 भावविजय श्री ददतु मंगलं, नौमि..... ५.

सीमंधर जिन स्तवन

पुक्खलवई विजये जयो रे, नयरी पुंडरीगिणी सार;
 श्री सीमन्धर साहिबा रे, राय श्रेयांस कुमार;

sīmandhara jina caityavandana

jayatu jina jagadeka-bhānu, kāma kaśmala-tama-haram;
 durita-ogha vibhāva-varjitam, naumi śrī jina-mandharam. 1.
 prabhu-pāda padme citta-layane, viṣaya-dolita nirbharam;
 saṁsāra-rāga asāra-ghātikam, naumi... 2.
 ati-roṣa-vahni-māna mahīdhara, tṛṣṇā-jaladhi-hitakaram;
 vacanorjita-jantu-bodhakam, naumi... 3.
 ajñāna-tarjita-rahita-caraṇam, para-guṇo me matsaram;
 arati-ardita-caraṇa-śaraṇam, naumi... 4.
 gambhīra-vadanam bhavatu dina dina, dehi me prabhu-darśanam;
 bhāva-vijaya śrī dadatu maṅgalam, naumi... 5.

sīmandhara jina stavana

pukkhalaṇaī vijaye jayo re, nayaṛī puṇḍarīgīṇī sāra;
 śrī sīmandhara sāhibā re, rāya śreyāṁsa kumāra;

जिणंद राय! धरजो धर्म सनेह. १.
 मोटा नाना आंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत;
 शशि दरिसण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत. जिणंद. २.
 ठाम कुठाम न लेखवे रे, जग वरसंत जलधार;
 कर दोय कुसुमे वासीए रे, छाया सवि आधार. जिणंद. ३.
 राय ने रंक सरिखा गणे रे, उद्योते शशि सूर;
 गंगाजल ते बिहुंतणा रे, ताप करे सवि दूर. जिणंद. ४.
 सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुमे छो महाराज;
 मुजशुं अंतर किम करो रे?, बांह्य ग्रह्यानी लाज. जिणंद. ५.
 मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण;
 मुजरो माने सवि तणो रे, साहिब तेह सुजाण. जिणंद. ६.
 वृषभ लंछन माता सत्यकी रे, नंदन रुक्मिणी कंत;
 वाचक जस इम विनवे रे, भय भंजन भगवंत. जिणंद. ७.

सीमंधर जिन स्तवन

विनति माहरी रे सुणजो साहिबा, सीमंधर जिनराज;

jiṇanda rāya! dharajo dharma saneha. 1.
 moṭā nānā āntaro re, giruā navi dākhanta;
 śaśi darisaṇa sāyara vadhe re, kairava vana vikasanta. jiṇanda. 2.
 ṭhāma kuṭhāma na lekhave re, jaga varasanta jaladhāra;
 kara doya kusume vāsīe re, chāyā savi ādhāra. jiṇanda. 3.
 rāya ne raṅka sarikhā gaṇe re, udyote śaśi sūra;
 gaṅgājala te bihuṭṭaṇā re, tāpa kare savi dūra. jiṇanda. 4.
 sarikhā sahune tāravā re, tima tume cho mahārāja;
 mujaśuṃ antara kima karo re?, bāhya grahyānī lāja. jiṇanda. 5.
 mukha dekhi ṭīluṃ kare re, te navi hoya pramāṇa;
 mujaro māne savi taṇo re, sāhiba teha sujāṇa. jiṇanda. 6.
 vṛṣabha lañchana mātā satyakī re, nandana rukmiṇī kanta;
 vācaka jasa ima vinave re, bhaya bhañjana bhagavanta. jiṇanda. 7.

sīmandhara jina stavana

vinati māharī re suṇajo sāhibā, sīmandhara jinarāja;

त्रिभुवन तारक अरज उरे धरो, देजो दरिशन आज.विनति.१.
 आप वस्या जइ क्षेत्र विदेहमां, हुं रहुं भरत मोझार;
 ए मेलो केम होये जगधणी, ए मुज सबल विचार.विनति.२.
 वचमां वन द्रह पर्वत अति घणा, वली नदी कारमा रे घाट;
 किण विध भेटुं रे आवी तुम कने, अति वसमी रे वाट. ...विनति.३.
 किहां मुज दाहिण भरत क्षेत्र रह्युं, किहां पुक्खलवइ राज;
 मनमां अलजो रे मलवानो अति घणो,

भव जल तरण जहाज.विनति.४.

निशदिन आलंबन मुज ताहरो, तुं मुझ हृदय मोझार;
 भव दुःख भंजन तुंहि निरंजनो, करुणा रस भंडार.विनति.५.
 मन-वांछित सुख संपद पूरजो, चूरजो कर्मनी रास;
 नित्य नित्य वंदन हुं भावे करुं, एहीज छे अरदास.विनति.६.
 तात श्रेयांस नरेसर जगतीलो, सत्यकी राणीनो जात;
 सीमंधर जिन विचरे महीतले, त्रण भुवनमां विख्यात.विनति.७.
 भवो-भव सेवा रे तुम पद कमलनी, देजो दीन दयाल;
 बे कर जोडी उदय रतन वदे, नेक नजरथी निहाल. ...विनति.८.

tribhuvana tāraṇa araja ure dharo, deḷo dariśana āja. vinati.1.
 āpa vasyā jai kṣetra videhamā, huṇ rahuṇ bharata mojhāra;
 e melo kema hoye jagadhaṇī, e muja sabala vicāra. vinati.2.
 vacamā vana draha parvata ati ghaṇā, valī nadī kāramā re ghāṭa;
 kiṇa vidha bheṭuṇ re āvī tuma kane, ati vasamī re vāṭa. vinati.3.
 kihā muja dāhiṇa bharata kṣetra rahyuṇ, kihā pukhalavai rāja;
 manamā alajo re malavāno ati ghaṇo,

bhava jala taraṇa jahāja. vinati.4.

niśadina ālambana muja tāharo, tuṇ mujha hṛdaya mojhāra;
 bhava duḥkha bhañjana tuṇhi nirañjano, karuṇā rasa bhaṇḍāra. ... vinati.5.
 mana-vāñchita sukha sampada pūrajo, cūrajo karmanī rāsa;
 nitya nitya vandana huṇ bhāve karuṇ, ehīja che aradāsa. vinati.6.
 tāta śreyāṇsa naresara jagatīlo, satyaki rāṇīno jāta;
 sīmāndhara jina vicare mahītale, traṇa bhuvanamā vikhyāta. vinati.7.
 bhavo-bhava sevā re tuma pada kamalanī, deḷo dīna dayāla;
 be kara joḍī udaya ratana vade, neka najarathī nihāla. vinati.8.

सीमंधर जिन स्तुति

महाविदेह क्षेत्रमां सीमंधर स्वामी, सोनानुं सिंहासन जी;
 रूपानुं त्यां छत्र विराजे, रत्न मणिना दीवा दीपे जी.
 कुमकुम वरणी त्यां गहुंली विराजे, मोतीना अक्षत सार जी;
 त्यां बेठा सीमंधर स्वामी, बोले मधुरी वाणी जी.
 केसर चन्दन भर्या कचोलां, कस्तूरी बरासो जी;
 पहेली पूजा अमारी होजो, उगमते प्रभाते जी.१.

सीमंधर जिन स्तुति

श्री सीमंधर मुजने व्हाला, आज सफल सुविहाणुं जी;
 त्रिगडे तेजे तपता जिनवर, मुज त्रुठ्या हुं जाणुं जी.
 केवल-कमला केलि करंता, कुल-मंडण कुल-दीवो जी;
 लाख चोराशी पूरव आयु, रुक्मिणी-वर घणुं जीवो जी.१.



sīmandhara jina stuti

mahāvideha kṣetramāṁ sīmandhara svāmī, sonānuṁ siṁhāsana jī;
 rūpānuṁ tyāṁ chatra virāje, ratna maṇinā dīvā dīpe jī.
 kumakuma varaṇī tyāṁ gahuṁlī virāje, motīnā akṣata sāra jī;
 tyāṁ bethā sīmandhara svāmī, bole madhurī vāṇī jī.
 kesara candana bharyā kacolāṁ, kastūrī barāso jī;
 pahelī pūjā amārī hojo, ūgamate prabhāte jī.1.

sīmandhara jina stuti

śrī sīmandhara mujane vhalā, āja saphala suvihāṇuṁ jī;
 trigade teje tapatā jinavara, muja trūṭhyā huṁ jāṇuṁ jī.
 kevala-kamalā keli karaṁtā, kula-maṇḍaṇa kula-dīvo jī;
 lākha corāśī pūrava āyu, rukmiṇī-vara ghaṇuṁ jīvo jī.1.



सिद्धाचल तीर्थ के दोहे

सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मोझार.
 मनुष्य जन्म पाभी करी, वंदुं वार हजार. १.
 जगमां तीरथ दोय वडा, शत्रुंजय गिरनार.
 एक गढ ऋषभ समोसर्या, एक गढ नेम-कुमार. २.
 शत्रुंजय समो तीरथ नहीं, ऋषभ समो नहीं देव.
 गौतम सरखा गुरु नहीं, वली वली वंदुं तेह. ३.
 एकेकुं डगलुं भरे, शत्रुंजय सामुं जेह.
 ऋषभ कहे भव कोडनां, कर्म खपावे तेह. ४.
 शत्रुंजी नदीए नाहीने, मुख बांधी मुख-कोश.
 देव युगादि पूजिए, आणी मन संतोष. ५.
 सोरठ देशमां संचर्यो, न चढ्यो गढ गिरनार.
 शत्रुंजी नदी नाह्यो नहीं, तेनो एले गयो अवतार. ६.
 सिद्धाचल सिद्धि वर्या, ग्रही मुनि-लिंग अनंत.
 आगे अनंता सिद्धासे, पूजो भवि भगवंत. ७.
 शत्रुंजय गिरि मंडणो, मरुदेवीनो नंद;

Couplets of siddhācala tīrtha

siddhācala samaruṁ sadā, sorathā deśa mojhāra.
 manuṣya janma pāmi karī, vanduṁ vāra hajāra. 1.
 jagamāṁ tīratha doya vaḍā, śatruñjaya giranāra.
 eka gaḍha ṛṣabha samosaryā, eka gaḍha nema-kumāra. 2.
 śatruñjaya samo tīratha nahīṁ, ṛṣabha samo nahīṁ deva.
 gautama sarakhā guru nahīṁ, valī valī vanduṁ teha. 3.
 ekekuṁ ḍagaluṁ bhare, śatruñjaya sāmūṁ jeha.
 ṛṣabha kahe bhava koḍanāṁ, karma khapāve teha. 4.
 śatruñjī nadīe nāhīne, mukha bāndhī mukha-kośa.
 deva yugādi pūjīe, āṇī mana santōṣa. 5.
 sorathā deśamāṁ sañcaryo, na caḍhyo gaḍha giranāra.
 śatruñjī nadī nāhyo nahīṁ, teno ele gayo avatāra. 6.
 siddhācala siddhi varyā, grahī muni-liṅga ananta.
 āge anantā siddhaśe, pūjo bhavi bhagavanta. 7.
 śatruñjaya giri maṇḍaṇo, marudevīno nanda;

युगला धर्म निवारको, नमो युगादि जिणंद. ८.
 नेम विना त्रेवीश प्रभु, आव्या विमल गिरिंद;
 भावि चोवीशी आवशे, पद्म-नाभादि जिणंद. ९.
 प्राये ए गिरि शाश्वतो, महिमानो नहि पार;
 ऋषभ जिणंद समोसया, पूर्व नवाणु वार. १०.
 दुंगर चढवा दोह्यला, ऊतरतां नहि वार;
 श्री आदीश्वर पूजतां, हड्डे हरख न माय. ११.

पुंडरीक स्वामि चैत्यवंदन

आदीश्वर जिन रायनो, गणधर गुणवंत;
 प्रगट नाम पुंडरीक जास, मही मांहे महंत. १.
 पंच कोडी मुनिराज साथे, अणसण तिहां कीधुं;
 शुक्ल-ध्यान ध्यातां अमूल, केवल वर लीधुं. २.
 चैत्री पूनमने दिने ए, पाम्या पद महानंद;
 ते दिनथी पुंडरीकगिरि, नाम दान सुखकंद. ३.

yugalā dharma nivārako, namo yugādi jīṇanda. 8.
 nema vinā trevīśa prabhu, āvyā vimala girīṇda;
 bhāvi covīśī āvaśe, padma-nābhādi jīṇanda. 9.
 prāye e giri śāśvato, mahimāno nahi pāra;
 ṛṣabha jīṇanda samosaryā, pūrva navāṇu vāra. 10.
 ḍuṅgara cadhavā dohyalā, ūtaratā nahi vāra;
 śrī ādīśvara pūjatā, haḍḍe harakha na māya. 11.

pundarika svāmi caityavandana

ādīśvara jina rāyano, gaṇadhara guṇavanta;
 pragata nāma puṇḍarika jāsa, mahī māṇhe mahanta. 1.
 pañca koḍī munirāja sāthe, aṇasaṇa tiḥā kīdhu;
 śukla-dhyāna dhyātā amūla, kevala vara līdhu. 2.
 caitrī pūnamane dine e, pāmyā pada mahānanda;
 te dinathī puṇḍarika-giri, nāma dāna sukh-akanda. 3.

सिद्धाचल तीर्थ चैत्यवन्दन

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, सिद्धाचल साचो.
 आदीसर जिनरायनो, जिहां महिमा जाचो..... १.
 इहां अनंत गुणवंत साधु, पाम्या शिव वास.
 एह गिरि सेवाथी अधिक, होय लील विलास..... २.
 दृष्कृत सवि दूरे हरे ए, बहु भव संचित जेह.
 सकल तीर्थ शिर सेहरो, दान नमे धरी नेह..... ३.

सिद्धाचल तीर्थ स्तवन

सिद्धाचल गिरि भेट्या रे, धन भाग्य हमारं.
 ए गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेतां न आवे पारा;
 रायण-रूख समोसया स्वामी, पूरव नवाणुं वारा रे..... धन.१.
 मूल नायक श्री आदि जिनेश्वर, चौमुख प्रतिमा चारा;
 अष्ट द्रव्यशुं पूजो भावे, समकित मूल आधार रे..... धन.२.
 भाव भक्तिशुं प्रभु गुण गावे, अपना जन्म सुधारा;

siddhācala tīrtha cait̥yavandana

śrī śatruñjaya siddhakṣetra, siddhācala sāco.
 ādisara jinarāyano, jihā mahimā jāco. 1.
 ihā ananta guṇavanta sādhu, pāmyā śiva vāsa.
 eha giri sevāthī adhika, hoya līla vilāsa. 2.
 dr̥ṣkṛta savi dūre hare e, bahu bhava sañcita jeha.
 sakala tīrtha śira seharo, dāna name dhari neha. 3.

siddhācala tīrtha stavana

siddhācala giri bhetyā re, dhana bhāgya hamārā.
 e girivarano mahimā moṭo, kahetā na āve pārā;
 rāyaṇa-rūkha samosaryā svāmī, pūrava navāṇu vārā re. dhana.1.
 mūla nāyaka śrī ādi jineśvara, caumukha pratimā cārā;
 aṣṭa dravyaśu pūjo bhāve, samakita mūla ādhārā re..... dhana.2.
 bhāva bhaktiśu prabhu guṇa gāve, apanā janma sudhārā;

यात्रा करी भवि जन शुभ भावे, नरक तिर्यच गति वारा रे. धन.३.
 दूर देशांतरथी हुं आव्यो, श्रवणे सुणी गुण तारा;
 पतित उद्धारण बिरुद तमारुं, ए तीरथ जग सारा रे. धन.४.
 संवत अढार त्यासी मास अषाढा, वदि आठम भोमवारा;
 प्रभुजी के चरण प्रताप के संघमें,
 खिमा रतन प्रभु प्यारा रे. धन.५.

रायण पगला स्तवन

नीलुडी रायण तरु तले सुण सुंदरी,
 पीलुडां प्रभुना पाय रे गुण मंजरी;
 उज्ज्वल ध्याने ध्याइए सुण., एहीज मुक्ति उपाय रे. गुण.१.
 शीतल छांयडे बेसीए सुण., रातडो करी मन रंग रे गुण.;
 पूजीए सोवन फूलडे सुण., जिम होय पावन अंग रे. गुण.२.
 खीर झरे जेह ऊपरे सुण., नेह धरीने एह रे गुण.;
 त्रीजे भवे ते शिव लहे सुण., थाये निर्मल देह रे. गुण.३.
 प्रीति धरी प्रदक्षिणा सुण., दीये एहने जे सार रे गुण.;

yātrā karī bhavi jana śubha bhāve, naraka tiryāṇca gati vārā re. .. dhana.3.
 dūra deśāntarathī huṁ āvyo, śravaṇe suṇī guṇa tāra;
 patita uddhāraṇa biruda tamāruṁ, e tīratha jaga sārā re. dhana.4.
 samvata adhāra tyāsī māsa aṣādhā, vadi āthama bhomavārā;
 prabhuṇī ke caraṇa pratāpa ke saṅghameṁ,
 khimā ratana prabhu pyārā re. dhana.5.

rāyaṇa pagalā stavana

nīluḍī rāyaṇa taru tale suṇa suṇdarī,
 pīluḍāṁ prabhunā pāya re guṇa maṇjarī;
 ujvala dhyāne dhyāie suṇa., ehīja mukti upāya re. guṇa.1.
 śītala chāyade besīe suṇa., rātaḍo karī mana raṅga re guṇa.;
 pūjīe sovaṇa phūlade suṇa., jima hoyā pāvana aṅga re. guṇa.2.
 khīra jhare jeha ūpare suṇa., neha dharīne eha re guṇa.;
 trīje bhavē te śiva lahe suṇa., thāye nirmala deha re. guṇa.3.
 prīti dhārī pradakṣiṇā suṇa., diye ehane jē sārā re guṇa.;

अभंग प्रीति होय तेहने सुण., भव भव तुम आधार रे. गुण.४.
 कुसुम पत्र फल मंजरी सुण., शाखा थड ने मूल रे., गुण.;
 देव तणा वासाय छे सुण., तीरथ ने अनुकूल रे. गुण.५.
 तीरथ ध्यान धरो मुदा सुण., सेवो एहनी छांय रे. गुण.;
 ज्ञान विमल गुण भाखीयो सुण., शत्रुंजय महातम मांय रे. गुण.६.

सिद्धाचल तीर्थ स्तुति

श्री शत्रुंजय मंडण, ऋषभ जिणेसर देव;
 सुर नर विद्याधर, सारे जेहनी सेव.
 सिद्धाचल शिखरे, सोहाकर शृंगार;
 श्री नाभि नरेसर, मरुदेवीनो मल्हार. १.

सिद्धाचल तीर्थ स्तुति

श्री शत्रुंजय मंडण, ऋषभ जिणंद दयाल;
 मरुदेवा नंदन, वंदन करुं त्रण काल.

abhaṅga prīti hoya tehane suṇa., bhava bhava tuma ādhāra re. guṇa.4.
 kusuma patra phala mañjari suṇa., śākhā thaḍa ne mūla re., guṇa.;
 deva taṇā vāsāya che suṇa., tīratha ne anukūla re. guṇa.5.
 tīratha dhyāna dharo mudā suṇa., sevo ehanī chāya re. guṇa.;
 jñāna vimala guṇa bhākhīyo suṇa., śatruñjaya mahātama māya re. guṇa.6.

siddhācala tīrtha stuti

śrī śatruñjaya maṇḍaṇa, ṛṣabha jīṇesara deva;
 sura nara vidyādhara, sāre jehaṇī seva.
 siddhācala śikhare, sohākara śṛṅgāra;
 śrī nābhi naresara, maru-devīno malhāra. 1.

siddhācala tīrtha stuti

śrī śatruñjaya maṇḍaṇa, ṛṣabha jīṇaṇḍa dayāla;
 marudevā nandana, vandana karuṇa traṇa kāla.

ए तीरथ जाणी, पूरव नवाणुं वार;
 आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार. १.
 त्रेवीश तीर्थकर, चडिया इण गिरिराय;
 ए तीरथनां गुण, सुर असुरादिक गाय.
 ए पावन तीरथ, त्रिभुवन नहीं तस तोले;
 ए तीरथना गुण, सीमंधर मुख बोले. २.
 पुंडरीक गिरि महिमा, आगममां परसिद्ध;
 विमलाचल भेटी, लहीए अविचल रिद्ध.
 पंचम गति पहीता, मुनिवर कोडा कोड;
 इणे तीरथे आवी, कर्म विपाक विछोड. ३.
 श्री शत्रुंजय केरी, अहोनिश रक्षाकारी;
 श्री आदि जिनेश्वर, आण हृदयमां धारी.
 श्री संघ विघनहर, कवड यक्ष गणभूर;
 श्री रवि बुध सागर, संघना संकट चूर. ४.



e tīratha jāṇī, pūrava navāṇuṃ vāra;
 ādīśvara āvyā, jāṇī lābha apāra. 1.
 trevīśa tīrthaṅkara, caḍiyā iṇa girirāya;
 e tīrathanāṃ guṇa, sura asurādika gāya.
 e pāvana tīratha, tribhuvana nahīṃ tasa tole;
 e tīrathanā guṇa, sīmaṇdhara mukha bole. 2.
 puṇḍarīka giri mahimā, āgamamāṃ parasiddha;
 vimalācala bheṭī, lahīe avicala riddha.
 pañcama gati pahoṭā, munivara koḍā koḍa;
 iṇe tīrathe āvī, karma vipāka vichōḍa. 3.
 śrī śatruñjaya kerī, ahoniśa rakṣākārī;
 śrī ādi jineśvara, āṇa hṛdayamāṃ dhārī.
 śrī saṅgha vighanahara, kavaḍa yakṣa gaṇabhūra;
 śrī ravi budha sāgara, saṅghanā saṅkaṭa cūra. 4.



ऋषभ जिन चैत्यवन्दन

सर्वार्थ सिद्धे थकी, चविया आदि जिणंद;
 प्रथम राय विनीता वसे, मानव गण सुखकंद १.
 जोनी नकुल जिणंदने, हायन एक हजार;
 मौनातीते केवली, वड हेठे निर्धार २.
 उत्तराषाढा जन्म छे ए, धन राशि अरिहंत;
 दश सहस परिवारशुं, वीर कहे शिव कंत ३.

ऋषभ जिन चैत्यवन्दन

आदिनाथ अरिहंत जिन, ऋषभ देव जयकारी;
 संघ चतुर्विध तीर्थने, स्थाप्युं जग सुखकारी १.
 परमेश्वर परमातमा, तनुयोगे साकार;
 अष्ट कर्म दूरे कर्या, निराकार निर्धार २.
 साकारी अरिहंतजी ए, निराकारथी सिद्ध;
 बुद्धि सागर ध्यावतां, प्रगटे आतम ऋद्धि ३.

ṛṣabha jina caityavandana

sarvāratha siddhe thakī, caviyā ādi jinaṇda;
 prathama rāya vinītā vase, mānava gaṇa sukhakaṇda 1.
 jonī nakula jinaṇdane, hāyana eka hajāra;
 maunātīte kevalī, vaḍa heṭhe nirdhāra. 2.
 uttarāṣāḍhā janma che e, dhana rāśi arihaṇta;
 daśa sahasa parivāraśuṃ, vīra kahe śiva kaṇta. 3.

ṛṣabha jina caityavandana

ādinātha arihaṇta jina, ṛṣabha deva jayakārī;
 saṅgha caturvidha tīrthane, sthāpyuṃ jaga sukhakārī. 1.
 parameśvara paramātamā, tanuyoge sākāra;
 aṣṭa karma dūre karyā, nirākāra nirdhāra. 2.
 sākārī arihaṇtajī e, nirākārathī siddha;
 buddhi sāgara dhyāvatāṃ, pragate ātama ṛddhi. 3.

ऋषभ जिन स्तवन

माता मरुदेवीना नन्द, देखी ताहरी मूरति.
 मारुं मन लोभाणुंजी, के मारुं चित्त-चोराणुं जी.
 करुणा-नागर करुणा-सागर, काया-कंचन-वान.
 धोरी-लंछन पाउले कांई, धनुष पांचसैं मान. माता.१.
 त्रिगडे बेसी धर्म कहंता, सुणे पर्षदा बार.
 योजन गामिनी वाणी मीठी, वरसन्ती जलधार. माता.२.
 ऊर्वशी रूडी अपसराने, रामा छे मनरंग.
 पाये नेपूर रणझणे कांई, करती नाटारम्भ. माता.३.
 तुंही ब्रह्मा, तुंही विधाता, तुं जग-तारणहार.
 तुज सरीखो नहि देव जगतमां, अडवडिया आधार. माता.४.
 तुंही भ्राता, तुंही त्राता, तुंही जगतनो देव.
 सुर-नर-किन्नर-वासुदेवा, करता तुज पद सेव. माता.५.
 श्री सिद्धाचल तीरथ केरो, राजा ऋषभ जिणंद.
 कीर्ति करे माणेक मुनि ताहरी, टालो भव-भय फंद. माता.६.

ṛṣabha jina stavana

mātā maru-devīnā nanda, dekhī tāharī mūrati.
 māruṃ mana lobhāṇuṃjī, ke māruṃ citta-corāṇuṃjī.
 karuṇā-nāgara karuṇā-sāgarā, kāyā-kañcana-vāna.
 dhorī-lañchana pāule kāṇī, dhanuṣa pāñcaseṃ māna. mātā.1.
 trigade besī dharma kahantā, suṇe parṣadā bāra.
 yojana gāminī vāṇī mīṭhī, varasantī jaladhāra. mātā.2.
 ūrvaśī rūḍī apasarāne, rāmā che manaraṅga.
 pāye nepūra raṇajhaṇe kāṇī, karatī nātārambha. mātā.3.
 tuṃhī brahmā, tuṃhī vidhātā, tuṃ jaga-tāraṇahāra.
 tuja sarīkho nahi deva jagatamāṃ, aḍavadiyā ādhāra. mātā.4.
 tuṃhī bhrātā, tuṃhī trātā, tuṃhī jagatano deva.
 sura-nara-kinnara-vāsudevā, karatā tuja pada seva. mātā.5.
 śrī siddhācala tīratha kero, rājā ṛṣabha jinaṇda.
 kīrti kare māṇeka muni tāharī, ṭālo bhava-bhaya phanda. mātā.6.

ऋषभ जिन स्तवन

ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे, ओर न चाहुं रे कन्त,
 रीझीयो साहेब संग न परिहरे रे, भांगे सादि-अनन्त. ऋषभ.१.
 प्रीत-सगाई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत-सगाई न कोय.
 प्रीत-सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय. ऋषभ.२.
 कोई कंत कारण काष्ठ भक्षण करे रे, मिलशुं कन्तने धाय.
 ए मेलो नवि कहीए संभवे रे, मेलो ठाम न ठाय. ऋषभ.३.
 कोई पति-रंजन अति घणुं तप करे रे, पति-रंजन तनु ताप.
 ए पति-रंजन में नवि चित धर्युं रे, रंजन धातु मिलाप. .. ऋषभ.४.
 कोई कहे लीला रे अलख-अलख तणी रे, लख पूरे मन आश.
 दोष-रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास. ऋषभ.५.
 चित्त प्रसन्ने रे पूजन फल कह्युं रे, पूजा अखण्डित एह.
 कपट रहित थई आतम अरपणा रे, आनन्दघन पद रेह. ऋषभ.६.



ṛṣabha jina stavana

ṛṣabha jineśvara prītaṃ māharo re, ora na cāhuṃ re kanta.
 rījhiyo sāheba saṅga na parihare re, bhāṅge sādi-ananta. ṛṣabha.1.
 prīta-sagāī re jagamāṃ sahu kare re, prīta-sagāī na koya.
 prīta-sagāī re nirupādhika kahī re, sopādhika dhana khoya. ṛṣabha.2.
 koī kanta kāraṇa kāṣṭha bhakṣaṇa kare re, milaśuṃ kantane dhāya.
 e melo navi kahīe sambhave re, melo ṭhāma na ṭhāya. ṛṣabha.3.
 koī pati-rañjana ati ghaṇuṃ tapa kare re, pati-rañjana tanu tāpa.
 e pati-rañjana meṃ navi cita dharyuṃ re, rañjana dhātu milāpa. ... ṛṣabha.4.
 koī kahe līlā re alakha-alakha taṇī re, lakha pūre mana āśa.
 doṣa-rahitane līlā navi ghaṭe re, līlā doṣa vilāsa. ṛṣabha.5.
 citta prasanne re pūjana phala kahyuṃ re, pūjā akhaṇḍita eha.
 kapata rahita thāī ātama arapaṇā re, ānandaghana pada reha. ... ṛṣabha.6.



ऋषभ जिन स्तुति

प्रह ऊठी वंदुं, ऋषभ देव गुणवंत;
 प्रभु बेठा सोहे, समवसरण भगवंत.
 त्रण छत्र विराजे, चामर ढाले इंद्र;
 जिनना गुण गावे, सुर नर नारीना वृंद. १.
 बार परषदा बेसे, इंद्र इंद्राणी राय;
 नव कमल रचे सुर, जिहां ठवता प्रभु पाय.
 देव दुंदुभि वाजे, कुसुम वृष्टि बहु हुंत;
 एवा जिन चोवीस, पूजो एकण चित्त. २.
 जिन जोजन भूमि, वाणीनो विस्तार;
 प्रभु अरथ प्रकाशे, रचना गणधर सार.
 सो आगम सुणतां, छेदीजे गति चार;
 जिन वचन वखाणी, लहीये भवनो पार. ३.
 यक्ष गोमुख गिरुओ, जिननी भक्ति करेव;
 तिहां देवी चक्केसरी, विघन कोडी हरेव.
 श्री तपगच्छ नायक, विजयसेन सूरिराय;
 तस केरो श्रावक, ऋषभदास गुण गाय. ४.

ṛṣabha jina stuti

praha ūṭhī vandu, ṛṣabha deva guṇavanta;
 prabhu beṭhā sohe, samavasaraṇa bhagavanta.
 traṇa chatra virāje, cāmara ḍhāle indra;
 jinanā guṇa gāve, sura nara nārīnā vṛnda. 1.
 bāra paraṣadā bese, indra indraṇī rāya;
 nava kamala race sura, jihā thavatā prabhu pāya.
 deva dundubhi vāje, kusuma vṛṣṭi bahu hunṭa;
 evā jina covīsa, pūjo ekaṇa citta. 2.
 jina jojana bhūmi, vāṇīno vistāra;
 prabhu aratha prakāṣe, racanā gaṇadhara sāra.
 so āgama suṇatā, chediṇe gati cāra;
 jina vacana vakhāṇī, lahiye bhavano pāra. 3.
 yakṣa gomukha giruo, jinani bhakti kareva;
 tihā devī cakkesari, vighana koḍī hareva.
 śrī tapa-gaccha nāyaka, vijaya-sena sūri-rāya;
 tasa kero śrāvaka, ṛṣabhadāsa guṇa gāya. 4.

भक्तामर पादपूर्ति ऋषभ जिन स्तुति

भक्तामर-प्रणत-मौलिमणि-प्रभाणा-

मुद्दीपकं जिन! पदाम्बुज-यामलं ते;

स्तोष्ये मुदाह-मनिशं किल मारुदेव,

दुष्टाष्ट-कर्मरिपु-मण्डलभित्! सुधीर!..१.

श्रीमज्जिनेश्वर-कलापमहं त्रिलोक्या-

मुद्द्योतकं दलित-पापतमो-वितानम्;

भव्याम्बु-जात-दिननाथ-निभं स्तवीमि,

भक्त्या नमस्कृत-ममर्त्य-नराधि-राजैः..२.

वर्या जिन-क्षितिपते-स्त्रिपदी-मवाप्य,

गच्छेःश्वरैः प्रकटिता किल वाङ्मुदा या;

सम्यक् प्रणम्य जिन-पादयुगं युगादा-

वाढ्या शुभार्थ-निकरै-र्भुवि सास्तु लक्ष्म्यै..३.

यक्षेश्वर-स्तव जिनेश्वर! गोमुखाह्वः,

सेवां व्यधत् कुशल-क्षिति-भृत्ययोदः;

त्वत्पाद-पंकज-मधुव्रततां दधानो-

वालबनं भवजले पततां जनानाम्..४.

bhaktāmara pādapūrti ṛṣabha jina stuti

bhaktāmara-praṇata-mauli-maṇi-prabhāṇā-

mud-dīpakam jina! padāmbuja-yāmalam te;

stoṣye mudāha-maṇiśam kila mārudeva,

duṣṭāṣṭa-karma-ripu-maṇḍalabhit! sudhīra!..1.

śrīmaj-jineśvara-kalāpa-maham trilokyā-

muddiyotakam dalita-pāpa-tamo-vitānam;

bhavyāmbu-jāta-dina-nātha-nibham stavīmi,

bhaktyā namaskṛta-mamartya-narādhi-rājaiḥ..2.

varyām jina-kṣitipate-stripadī-mavāpya,

gaccheśvaraiḥ prakṛitā kila vāṇmudā yā;

samyak praṇamya jina-pāda-yugam yugādā-

vādhyā śubhārtha-nikarair-bhuvi sāstu lakṣmyai..3.

yakṣeśvara-stava jineśvara! gomukhāhvaḥ,

sevām vyadhata kuśala-kṣiti-bhṛt-payodaḥ;

tvatpāda-paṅkaja-madhu-vratatām dadhāno-

vālabanam bhavajale patatām janānām..4.

शांति जिन चैत्यवन्दन

विपुल-निर्मल-कीर्ति-भरावितो, जयति-निर्जर-नाथ-नमस्कृतः;
 लघु-विनिर्जित-मोह-धराधिपो, जगति यः प्रभु-शान्ति-जिनाधिपः. .१.
 विहित शान्त-सुधारस-मज्जनं, निखिल-दुर्जय-दोष-विवर्जितम्;
 परम-पुण्यवतां भजनीयतां, गतमनन्त-गुणैः सहितं सताम्. २.
 तम-चिरात्मज-मीश-मधीश्वरं, भविक-पद्म-विबोध-दिनेश्वरम्;
 महिमधाम भजामि जगत्त्रये, वरमनुत्तर-सिद्धि-समृद्धये. ३.

शांति जिन स्तवन

म्हारो मुजरो ल्योने राज, साहिब शांति सलुणा.
 अचिराजीना नंदन तोरे, दर्शन हेते आव्यो;
 समकित रीझ करोने स्वामी, भगति भेटणुं लाव्यो.म्हारो.१.
 दुःख भंजन छे बिरुद तुमारुं, अमने आशा तुमारी;
 तुमे निरागी थाईने छूटो, शी गति होशे अमारी.म्हारो.२.
 कहेशे लोक न ताणी कहेवुं, एवडुं स्वामी आगे;

śānti jina caityavandana

vipula-nirmala-kīrti-bharānvito, jayati-nirjara-nātha-namaskṛtaḥ;
 laghu-vinirjita-moha-dharādhipo, jagati yaḥ prabhu-śānti-jinādhīpaḥ. 1.
 vihita śānta-sudhā-rasa-majjanam, nikhila-durjaya-doṣa-vivarjitam;
 parama-puṇyavatām bhajānīyatām, gata-mananta-guṇaiḥ sahitam satām..2.
 tama-çirātmaja-mīśa-madhīśvaram, bhavika-padma-vibodha-dineśvaram;
 mahi-madhāma bhajāmi jagattraye, vara-manuttara-siddhi-samṛddhaye. ...3.

śānti jina stavana

mhāro mujaro lyone rāja, sāhiba śānti saluṇā.
 acirājīnā nāndana tore, darśana hete āvyo;
 samakita rījha karone svāmī, bhagati bheṭaṇuṃ lāvyo.mhāro.1.
 duḥkha bhañjana che biruda tumāruṃ, amane āśā tumārī;
 tume nirāgī thaīne chūṭo, śī gati hośe amārī.mhāro.2.
 kaheśe loka na tāṇī kahevuṃ, evaḍuṃ svāmī āge;

पण बालक जो बोली न जाणे, तो केम व्हालो लागे.म्हारो.३.
 मारे तो तुं समरथ साहिब, तो केम ओछुं मानुं;
 चिंतामणि जेणे गांठे बांध्युं, तेहने काम किशानुं.म्हारो.४.
 अध्यातम रवि ऊग्यो मुज घट, मोह तिमिर हर्युं जुगते;
 विमल विजय वाचकनो सेवक, राम कहे शुभ भगते.म्हारो.५.

पार्श्व जिन चैत्यवन्दन

ॐ नमः पार्श्वनाथाय, विश्व-चिंतामणीयते;
 ह्रीं धरणेन्द्र वैरोट्या, पद्मादेवी-युताय ते. १.
 शांति-तुष्टि-महापुष्टिः, धृति-कीर्ति-विधायिने;
 ॐ ह्रीं द्विडव्याल वेताल, सर्वाधि-व्याधि-नाशिने. २.
 जया-जिताख्या-विजयाख्याः, पराजितयान्वितः;
 दिशां-पालैर्ग्रहैर्यक्षैः, विद्यादेवीभि-रन्वितः. ३.
 ॐ असिआउसा, नमस्तत्र त्रैलोक्य-नाथताम्;
 चतुष्पष्टिः सुरेन्द्रास्ते, भासंते छत्र-चामरैः. ४.
 श्री-शंखेश्वर मंडन-पार्श्वजिन, प्रणत कल्प-तरु-कल्प;
 चूरय दुष्ट-व्रातं, पूरय मे वाञ्छितं नाथ. ५.

paṇa bālaka jo bolī na jāṇe, to kema vhālo lāge. mhāro.3.
 māre to tuṃ samaratha sāhiba, to kema ochuṃ mānuṃ;
 cintāmaṇi jeṇe gāṇṭhe bāṇdhyuṃ, tehane kāma kiśānuṃ. mhāro.4.
 adhyātama ravi ūgyo muja ghaṭa, moha timira haryuṃ jugate;
 vimala vijaya vācakano sevaka, rāma kahe śubha bhagate. mhāro.5.

pārśva jina caityavandana

om̐ namaḥ pārśvanāthāya, viśva-cintāmaṇīyate;
 hrīm̐ dharanendra vairoṭyā, pādmādevī-yutāya te. 1.
 śānti-tuṣṭi-mahāpuṣṭiḥ, dhṛti-kīrti-vidhāyine;
 om̐ hrīm̐ dvidvyāla vetāla, sarvādhi-vyādhi-nāśine. 2.
 jayā-jitākhyā-vijayākhyā, parājītayānvitah;
 diśām-pālair-grahair-yakṣair, vidyā-devībhir-anvitah. 3.
 om̐ asiāusā, namas-tatra trailokya-nāthatām;
 catuṣ-ṣaṣṭiḥ surendrāste, bhāsan̐te chatra-cāmaraiḥ. 4.
 śrī-śaṅkheśvara maṇḍana-pārśva-jina, praṇata kalpa-taru-kalpa;
 cūraya duṣṭa-vrātaṃ, pūraya me vāñchitaṃ nātha. 5.

पार्श्व जिन स्तवन

कोयल टहुकी रही मधुवन में, पार्श्व शामलीया वसो मेरे दिलमें.

काशी देश वाणारसी नगरी,

जन्म लीयो प्रभु क्षत्रिय कुलमें. कोयल.१.

बालपणामां प्रभु अद्भुत ज्ञानी,

कमठको मान हर्यो एक पलमें. कोयल.२.

नाग निकाला काष्ठ चिराकर,

नागकुं सुरपति कीयो एक छीन में. कोयल.३.

संयम लई प्रभु विचरवा लाग्या,

संयममें भीज गयो एक रंग में. कोयल.४.

समेत-शिखर प्रभु मोक्षे सिधाव्या,

पार्श्वजी को महिमा तीन जगत में. कोयल.५.

उदय रतन की एही अरज है,

दिल अटको तोरा चरण कमल में. कोयल.६.



pārśva jina stavana

koyala ṭahukī rahī madhuvana meṁ, pārśva śāmalīyā vaso mere dilameṁ.

kāśī deśa vāṇārāsī nagarī,

janma liyo prabhu kṣatriya kulameṁ. koyala.1.

bālapanāmāṁ prabhu adbhuta jñānī,

kamathako māna haryo eka palameṁ. koyala.2.

nāga nikālā kāṣṭha cirākara,

nāgakuṁ surapati kiyo eka chīna meṁ. koyala.3.

sañyama lai prabhu vicaravā lāgyā,

sañyamameṁ bhīñja gayo eka raṅga meṁ. koyala.4.

sameta-śikhara prabhu mokṣe sidhāvyā,

pārśvajī ko mahimā tina jagata meṁ. koyala.5.

udaya ratana kī ehī araja hai,

dila aṭako torā caraṇa kamala meṁ. koyala.6.



श्रेयः श्रियां मंगल पादपूर्ति पार्श्व जिन स्तुति

श्रेयः श्रियां मंगल-केलिसदम्!, श्रीयुक्त-चिन्तामणि-पार्श्वनाथ!;
 दुर्वार-संसार-भयाच्च रक्ष, मोक्षस्य मार्गे वर-सार्थवाह!..... १.
 जिनेश्वराणां निकर! क्षमायां, नरेन्द्र-देवेन्द्र-नताङ्घ्रि-पद्म!;
 कुरुष्व निर्वाण-सुखं क्षमाभृत्!, सत्केवल-ज्ञानरमां दधान!..... २.
 कैवल्य-वामा-हृदयैकहार!, क्षमा-सरस्व-द्रजनीश-तुल्य!;
 सर्वज्ञ! सर्वातिशय-प्रधान!, तनोतु ते वाग् जिनराज! सौख्यम्... ३.
 श्री-पार्श्वनाथ-क्रमणाम्बु-जात-, सारंग-तुल्यः कलधौत-कान्तिः;
 श्री-यक्षराजो गरुडाभिधानः, चिरं जय ज्ञान-कलानिधान!..... ४.

वीर जिन तप चैत्यवन्दन

नव चोमासी तप कर्या, त्रणमासी दोय.
 दोय दोय अढीमासी कर्या, तेम दोढमासी होय..... १.
 बहोतेर पास खमण कर्या, मास खमण कर्या बार.
 षड बेमासी तप आदर्या, बार अड्डम तप सार..... २.

śreyah śriyām maṅgala pādapurti pārśva jina stuti

śreyah śriyām maṅgala-kelīsadma!, śriyukta-cintāmaṇi-pārśvanātha!;
 durvāra-saṁsāra-bhayācca rakṣa, mokṣasya mārge vara-sārthavāha!..... 1.
 jīnēśvarāṅghrī nikara! kṣamāyām, narendra-devendra-natāṅghrī-padma!;
 kuruṣva nirvāṇa-sukhaṁ kṣamābhṛt!, satkevala-jñānaramāṁ dadhāna!..... 2.
 kaivalya-vāmā-hṛdayaikahāra!, kṣamā-sarasva-drajanīśa-tulya!;
 sarvajña! sarvātīśaya-pradhāna!, tanotu te vāg jīnarāja! saukhyam..... 3.
 śrī-pārśvanātha-kramaṇāmbu-jāta-, sāraṅga-tulyaḥ kaladhautā-kāntiḥ;
 śrī-yakṣarāja garuḍābhīdhānaḥ, ciraṁ jaya jñāna-kalānidhāna!..... 4.

vīra jina tapa caityavandana

nava comāsī tapa karyā, traṇa-māsī doya.
 doya doya aḍhī-māsī karyā, tema doḍha-māsī hoyā..... 1.
 bahotera pāsa khamaṇa karyā, māsa khamaṇa karyā bāra.
 ṣaḍa bemāsī tapa ādaryā, bāra aṭṭhama tapa sāra..... 2.

षडमासी एक तप कर्यो, पंच दिण उण षड मास.
 बसो ओगणत्रीस छट्ठ भला, दीक्षा दिन एक खास. ३.
 भद्र प्रतिमा दोय भली, महाभद्र दिन चार.
 दश सर्वतो भद्रता, लागट निरधार. ४.
 विण पाणी तप आदर्या, पारणादिक जास.
 द्रव्याहारे पारणा कर्या, त्रणसो ओगणपचास. ५.
 छद्मस्थ एणी परे रह्या ए, सह्यां परिषह घोर.
 शुक्ल ध्यान अनले करी, बाल्यां कर्म कठोर. ६.
 शुक्ल ध्यान अंते रह्याए, पाम्या केवल नाण.
 पद्म विजय कहे प्रणमतां, लहिए नित्य कल्याण. ७.

वीर जिन स्तवन

सिद्धारथना रे नन्दन विनवुं, विनतडी अवधार.
 भव मण्डपमां रे नाटक नाचियो, हवे मुज पार उतार. ... सिद्धा.१.
 त्रण रतन मुज आपो तातजी, जेम नावेरे सन्ताप.
 दान दियंता रे प्रभु कोसर कीसी, आपो पदवी रे आप. . सिद्धा.२.
 चरण-अंगूठे रे मेरु कंपावियो, मोड्यां सुरनां रे मान.

ṣaḍa-māsī eka tapa karyo, pañca diṇa uṇa ṣaḍa māsā.
 baso ogaṇatrīsa chaṭṭha bhalā, dīkṣā dina eka khāsa. 3.
 bhadra pratimā doya bhalī, mahābhadra dina cāra.
 daśa sarvato bhadratā, lāgaṭa niradhāra. 4.
 viṇa pāṇī tapa ādaryā, pāraṇādika jāsa.
 dravyāhāre pāraṇā karyā, traṇaso ogaṇapacāsa. 5.
 chadmastha eṇī pare rahyā e, sahyāṇ pariṣaha ghora.
 śukla dhyāna anale karī, bālyāṇ karma kaṭhōra. 6.
 śukla dhyāna ante rahyāe, pāmyā kevala nāṇa.
 padma vijaya kahe praṇamatāṇ, lahīe nitya kalyāṇa. 7.

vīra jina stavana

siddhārathanā re nandana vinavuṇ, vinataḍī avadhāra.
 bhava maṇḍapamāṇ re nāṭaka nāciyo, have muja pāra utāra. siddhā.1.
 traṇa ratana muja āpo tātajī, jema nāvere santāpa.
 dāna diyaṇtā re prabhu kosara kīsī, āpo padavī re āpa. siddhā.2.
 caraṇa-aṅgūṭhe re meru kampaṇaviyo, moḍyāṇ suranāṇ re māna.

अष्ट करमना रे झगडा जीतवा, दीधां वरसी रे दान. ... सिद्धा.३.
 शासन नायक शिवसुख दायक, त्रिशला कूखे रतन.
 सिद्धारथनो रे वंश दीपावियो, प्रभुजी तुमे धन्य धन्य. ... सिद्धा.४.
 वाचक शेखर कीर्ति विजय गुरु, पामी तास पसाय.
 धरम तणा जिन चौवीसमा, विनय विजय गुण गाय. सिद्धा.५.

वीर जिन चौमासी पारणुं स्तवन

चउमासी पारणुं आवे, करी विनति निज घर जावे;
 पिया पुत्रने वात जणावे, पटकल जरी पथरावे;
 महावीर प्रभु घेर आवे, जीरण शेठजी भावना भावे रे. . महावीर.१.
 ऊभी शेरीए जल छंटकावे, जाइ केतकी फूल बिछावे;
 निज घर तोरण बंधावे, मेवा मिठाई थाल भरावे रे. ... महावीर.२.
 अरिहाने दान ज दीजे, देतां जे देखीने रीजे;
 षट् मासी रोग हरीजे, सीजे दायक भव त्रीजे रे. महावीर.३.
 ते जिनवरनी सनमुख जाउं, मुज मंदिरीये पधरावुं;
 पारणुं भली भाते करावुं, जुगते जिन पूजा रचावुं रे. . महावीर .४.
 पछी प्रभुने बलावा जईशुं, कर जोडीने सनमुख रहीशुं;

aṣṭa karamanā re jhagaḍā jītavā, dīdhāṃ varasī re dāna. siddhā.3.
 śāsana nāyaka śivasukha dāyaka, trīśalā kūkhe ratana.
 siddhārathano re vaṇśa dīpāviyo, prabhujiṃ tume dhanya dhanya. siddhā.4.
 vācaka śekhara kīrti vijaya guru, pāmī tāsa pasāya.
 dharama taṇā jina covīsamā, vinaya vijaya guṇa gāya. siddhā.5.

vīra jina caumāsī pāraṇuṃ stavana

caumāsī pāraṇuṃ āve, karī vinati nija ghara jāve;
 piyā putrane vāta jaṇāve, paṭakula jarī patharāve;
 mahāvīra prabhu ghera āve, jīraṇa śeṭhājī bhāvanā bhāve re. mahā.1.
 ūbhī śerīe jala chaṇṭakāve, jāi ketakī phūla bichāve;
 nija ghara toraṇa bandhāve, mevā mīṭhāī thāla bharāve re. mahā.2.
 arihāne dāna ja dīje, detāṃ je dekhīne rīje;
 ṣaṭ māśī roga harīje, sīje dāyaka bhava trīje re. mahā.3.
 te jinavaraniṃ sanamukha jāuṃ, muja mandirīye padharāvuṃ;
 pāraṇuṃ bhalī bhāte karāvuṃ, jugate jina pūjā racāvuṃ re. mahā.4.
 pachī prabhune valāvā jāīśuṃ, kara joḍīne sanamukha rahīśuṃ;

नमी वंदीने पावन थईशुं, विरति अति रंगे वरीशुं रे. .. महावीर.५.
 दया दान क्षमा शील धरशुं, उपदेश सज्जनने करशुं;
 सत्य ज्ञान दशा अनुसरशुं, अनुकंपा, लक्षण वरशुं रे. .. महावीर.६.
 एम जीरण शेट वदंता, परिणामनी धारे चढंता;
 श्रावकनी सीमे ठरंता, देवदुंदुभि नाद सुणंता रे. महावीर.७.
 करी आयु पूरण शुभ भावे, सुरलोक अच्युते जावे;
 शातावेदनी सुख पावे, शुभ वीर वचन रस गावे रे. महावीर.८.

वीर जिन स्तुति

ऊठी सवारे सामायिक लीधुं, पण बारणुं नवि दीधुंजी;
 कालो कूतरो घरमांहे पेठो, घी सघलुं तेणे पीधुंजी.
 ऊठो ने वहूअर आलस मुकी, ए घर आप संभालोजी;
 निज पति ने कहो वीर जिन पूजी, समकितने अजुआलोजी. .. १.
 बले बिलाडे झडप झडपावी, उत्रेड सर्वे फोडीजी;
 चंचल छैयां वार्यां न रहे, त्राग भांगी माल त्रोडीजी.
 तेह विणा रेंटियों नवि चाले, मौन भलुं कोने कहियेजी.
 ऋषभादिक चउवीस तीर्थकर, जपिये तो शिव सुख लहियेजी. .२.

namī vandīne pāvana thaīśuṃ, virati ati raṅge varīśuṃ re..... mahā.5.
 dayā dāna kṣamā śīla dharaśuṃ, upadeśa sajjanane karaśuṃ;
 satya jñāna dasā anusaraśuṃ, anukampā, lakṣaṇa varaśuṃ re. mahā.6.
 ema jīraṇa śeṭha vadantā, pariṇāmanī dhāre caḍhantā;
 śrāvakanī sīme ṭharantā, devadundubhi nāda suṇantā re. mahā.7.
 karī āyu pūraṇa śubha bhāve, suraloka acyute jāve;
 śātāvedanī sukha pāve, śubha vīra vacana rasa gāve re..... mahā.8.

vīra jina stuti

ūṭhī savāre sāmāyika līdhuṃ, paṇa bāraṇuṃ navi dīdhuṃjī;
 kālo kūtaro gharamāṃhe peṭho, ghī saghaluṃ teṇe pīdhuṃjī.
 ūṭho ne vahūara ālasa mūkī, e ghara āpa sambhālojī;
 nija pati ne kaho vīra jina pūjī, samakitane ajuālojī. 1.
 bale bilāḍe jhaḍapa jhaḍapāvī, utreḍa sarve phoḍījī;
 cañcala chaiyāṃ vāryāṃ na rahe, trāga bhāṅgī māla troḍījī.
 teha viṇā rentīyoṃ navi cāle, mauna bhaluṃ kone kahiyejī.
 ṛṣabhādika cauvisa tīrthaṅkara, japiye to śiva sukha lahiyejī. 2.

ઘર વાસીદું કરોને વહુઅર, ટાલો ઓજીસાલુંજી;
 ચોરટો એક ફરે છે હેરું, ઓરડે દ્યોને તાલુંજી.
 લપકે પ્રાહુણા ચાર આવે છે, તે ઊભા નવિ રાખોજી;
 શિવપદ સુખ અનંતુ લહિયે, જો જિન વાળી ચાખોજી. ૩.
 ઘરનો ખૂળો કોણ ખળે છે, વહુ તુમે મનમાં લાવોજી;
 પહોલે પલંગે પ્રીતમ પોદ્યો, પ્રેમ ધરીને જગાવોજી.
 ભાવપ્રભ સૂરિ કહે નહીં એ કથલો, અધ્યાતમ ઉપયોગીજી;
 સિદ્ધાયિકા દેવી સાંનિધ્ય કરેવી, સાધે તે શિવપદ ભોગીજી. ૪.

વીર જિન સ્તુતિ

વીરં દેવં નિત્યં વંદે. ૧.
 જૈનાઃ પાદા યુષ્માન્ પાન્તુ. ૨.
 જૈનં વાક્યં ભૂયાદ્ ભૂત્યૈ. ૩.
 સિદ્ધા દેવી દદ્યાત્ સૌખ્યમ્. ૪.



ghara vāsīduḥ karone vahuara, ṭālo oḷīsāluḅjī;
 coraṭo eka phare che heruḅ, oraḍe dyone tāluḅjī.
 lapake prāhuṇā cāra āve che, te ūbhā navi rākhojī;
 śivapada sukha anantu lahiye, jo jina vāṇī cākhojī. 3.
 gharano khūṇo koṇa khaṇe che, vahu tume manamāḅ lāvojī;
 pahole palaṅge prītama poḍhyo, prema dharīne jagāvojī.
 bhāvaprabha sūri kahe nahīḅ e kathalo, adhyātama upayogījī;
 siddhāyikā devī sānnidhya karevī, sādhe te śivapada bhogījī. 4.

vīra jina stuti

vīram devam nityam vande. 1.
 jaināḥ pādā yuṣmān pāntu. 2.
 jainam vākyaṁ bhūyād bhūtyai. 3.
 siddhā devī dadyāt saukhyam. 4.



दीपावली पर्व चैत्यवन्दन

श्री सिद्धारथ नृप कुल तिलो, त्रिशला जस मात.
हरि लंछन तनु सात हाथ, महिमा विख्यात. १.
त्रीस वरस गृहवास छंडी, लीए संयम भार.
बार वरस छद्मस्थ मान, लही केवल सार. २.
त्रीस वरस एम सवि मली ए, बहोतेर आयु प्रमाण.
दीवाली दिन शिव गया, कहे नय तेह गुण खाण. ३.

दीपावली पर्व स्तवन

मारे दीवाली थई आज, प्रभु-मुख जोवाने;
सर्या सर्या रे सेवकनां काज, भव दुःख खोवाने.
महावीर स्वामी मुगते पहीता, गौतम केवल ज्ञान रे;
धन्य अमावस्या धन्य दीवाली, महावीर प्रभु निरवाण. जिन.१.
चारित्र पाली निरमलुं रे, टाल्यां विषय-कषाय रे.
एवा मुनिने वन्दीए, जे उतारे भवपार. जिन.२.

dīpāvalī parva caityavandana

śrī siddhāratha nṛpa kula tilo, trīśalā jasa māta.
hari lañchana tanu sāta hātha, mahimā vikhyāta. 1.
trīsa varasa gr̥havāsa chaṇḍī, līe sañyama bhāra.
bāra varasa chadmastha māna, lahī kevala sāra. 2.
trīsa varasa ema savi malī e, bahoṭera āyu pramaṇa.
dīvālī dina śiva gayā, kahe naya teha guṇa khāṇa. 3.

dīpāvalī parva stavana

māre dīvālī thāī āja, prabhu-mukha jovāne;
saryāṁ saryāṁ re sevakanāṁ kāja, bhava duḥkha khovāne.
mahāvīra svāmī mugate pahoṭā, gautama kevala jñāna re;
dhanya amāvasyā dhanya dīvālī, mahāvīra prabhu niravāṇa. jina.1.
cāritra pālī niramaluṁ re, ṭālyāṁ viṣaya-kaṣāya re.
evā munine vandīe, je utāre bhavapāra. jina.2.

बाकुल वहोर्या वीरजिने, तारी चन्दनबाला रे.
 केवल लई प्रभु मुगते पहोच्या, पाम्या भवनो पार. जिन.३.
 एवा मुनिने वन्दीए, जे पंचज्ञान ने धरता रे.
 समवसरण दई देशना, प्रभु तार्या नर ने नार. जिन.४.
 चोवीसमा जिनेसरू रे, मुक्तितणा दातार रे.
 कर जोडी कवि एम भणे, प्रभु भवनो फेरो टाल. जिन.५.

पर्युषण पर्व चैत्यवंदन

वडा कल्प पूरव दिने, घरे कल्पने लावो.
 रात्रि जागरण प्रमुख करी, शासन सोहावो. १.
 हय गय शणगारी कुमर, लावो गुरु पासे.
 वडा कल्प दिन सांभलो, वीर चरित उल्लासे. २.
 छठ द्वादश तप कीजिये, धरीए शुभ परिणाम.
 साधर्मी वत्सल प्रभावना, पूजा अभिराम. ३.
 जिन उत्तम गौतम प्रत्ये ए, कहे जो एकवीस वार.
 गुरु मुख पद्मे भावशुं, सुणतां पामे पार. ४.

bākula vahoryā vīrajine, tāri candanabālā re.
 kevala lai prabhu mugate paho₂cyā, pāmyā bhavano pāra..... jina.3.
 evā munine vandīe, je pañcajñāna ne dharatā re.
 samavasaraṇa dai deśanā, prabhu taryā nara ne nāra. jina.4.
 covīsamā jīnesarū re, muktitaṇā dātāra re.
 kara joḍī kavi ema bhaṇe, prabhu bhavano phero ṭāla. jina.5.

paryuṣaṇa parva caityavandana

vaḍā kalpa pūrava dine, ghare kalpane lāvo.
 rātri jāgaraṇa pramukha karī, śāsana sohāvo..... 1.
 haya gaya śaṇagārī kumara, lāvo guru pāse.
 vaḍā kalpa dina sām̐bhalo, vīra carita ullāse. 2.
 chaṭha dvādaśa tapa kījiye, dharīe śubha pariṇāma.
 sādharmaī vatsala prabhāvanā, pūjā abhirāma. 3.
 jina uttama gautama pratyē e, kahe jo ekavīsa vāra.
 guru mukha padme bhāvaśu₂, suṇatā₂ pāme pāra..... 4.

दूज तिथि चैत्यवन्दन

दुविध बंधने टालीए, जे वली राग ने द्वेष;
आर्त रौद्र दोय अशुभ ध्यान, नवि करो लवलेश..... १.
बीज दिने वली बोधि बीज, चित ठाणे वावो;
जेम दुःख दुर्गति नवि लहो, जगमां जश चावो..... २.
भावो रूडी भावना ए, वाधो शुभ गुणठाण;
ज्ञान विमल तप तेज थी, होय कोडी कल्याण..... ३.

बीज तिथि स्तवन

दोहा

सरस वचन रस वरसती, सरसती कला भंडार;
बीज तणो महिमा कहुं, जिम कह्यो शास्त्र मोझार..... १.
जंबु द्वीपना भरतमां, राजगृही नगरी उद्यान;
वीर जिणंद समोसया, वांदवा आव्या राजन..... २.
श्रेणिक नामे भूपति, बेठा बेसण ठाय;

dūja tithi caityavandana

duvidha bandhane tālīe, je valī rāga ne dveṣa;
ārta raudra doya aśubha dhyāna, navi karo lavaleśa. 1.
bīja dine valī bodhi bīja, cita ṭhāṇe vāvo;
jema duḥkha durgati navi laho, jagamāṃ jaśa cāvo. 2.
bhāvo rūḍī bhāvanā e, vādho śubha guṇaṭhāṇa;
jñāna vimala tapa teja thī, hoya koḍī kalyāṇa. 3.

bīja tithi stavana

dohā

sarasa vacana rasa varasatī, sarasatī kalā bhaṇḍāra;
bīja taṇo mahimā kahuṃ, jima kahyo śāstra mojhāra. 1.
jambu dvīpanā bharatamāṃ, rājagṛhī nagarī udyāna;
vīra jiṇanda samosaryā, vāṇdavā āvyā rājana. 2.
śreṇika nāme bhūpati, beṭhā besaṇa ṭhāya;

पूछे श्री जिनरायने, द्यो उपदेश महाराय. 3.
 त्रिगडे बेठा त्रिभुवनपति, देशना दीये जिनराय;
 कमल सुकोमल पांखडी, एम जिन हृदय सोहाय. 4.
 शशि प्रगटे जेम ते दिने, धन्य ते दिन सुविहाण;
 एक मने आराधतां, पामे पद निर्वाण. 5.

ढाल-१

कल्याणक जिनना कहुं सुण प्राणी रे,
 अभिनंदन अरिहंत; ए भगवंत भवि प्राणी रे;
 माघ शुदि बीजने दिने सुण.,
 पाम्या शिवसुख सार; हरख अपार. भवि. .9.
 वासुपूज्य जिन बारमा सुण.,
 एहज तिथिए थयु नाण; सफल विहाण. भवि.;
 अष्ट कर्म चूरण करी सुण.,
 अवगाहन एक वार; मुक्ति मोझार. भवि. 2.
 अरनाथ जिनजी नमुं सुण.,
 अष्टादशमा अरिहंत; ए भगवंत. भवि.;
 उज्ज्वल तिथि फागणनी भली सुण.,
 वरीया शिववधु सार; सुंदर नार. भवि. 3.

pūche śrī jinarāyane, dyo upadeśa mahārāya. 3.
 trigade bethā tribhuvanapati, deśanā dīye jinarāya;
 kamala sukomala pāṅkhaḍī, ema jina hṛdaya sohāya. 4.
 śaśi pragate jema te dine, dhanya te dina suvihāṇa;
 eka mane ārādhatā, pāme pada nirvāṇa. 5.

dhāla-1

kalyāṇaka jinanā kahuṃ suṇa prāṇī re,
 abhinandana arihanta; e bhagavanta bhavi prāṇī re;
 māgha śudi bījane dine suṇa.,
 pāmyā śivasukha sāra; harakha apāra. bhavi..1.
 vāsupūjya jina bāramā suṇa.,
 ehaja tithie thayu nāṇa; saphala vihāṇa. bhavi.;
 aṣṭa karma cūraṇa karī suṇa.,
 avagāhana eka vāra; mukti mojhāra. bhavi.2.
 aranātha jinaḥī namuṃ suṇa.,
 aṣṭādaśamā arihanta; e bhagavanta. bhavi.;
 ujjala tithi phāgaṇanī bhalī suṇa.,
 varīyā śivavadhu sāra; sundara nāra. bhavi.3.

दशमा शीतल जिनेश्वर सुण.,
 परम पदनी ए वेल; गुणनी गेल. भवि.;
 वैशाख वदि बीजने दिने सुण.,
 मूक्यो सरवे ए साथ; सुरनर नाथ. भवि.४.
 श्रावण शुदनी बीज भली सुण.,
 सुमति नाथ जिन देव; सारे सेव. भवि.;
 एणि तिथिए जिनजी तणा सुण.,
 कल्याणक पंच सार; भवनो पार. भवि.५.

ढाल-२

जगपतिं जिन चोवीशमो रे लाल,
 ए भाख्यो अधिकार रे भविकजन;
 श्रेणिक आदे सहु मल्या रे लाल,
 शक्ति तणे अनुसार रे भविकजन भाव धरीने सांभलो रे लाल..१.
 दोय वरस दोय मासनी रे लाल, आराधो धरी खंत रे भविकजन;
 ऊजमणुं विधिशुं करो रे लाल,
 बीज ते मुक्ति महंत रे भविकजन. भाव.२.
 मार्ग मिथ्या दूरे तजो रे लाल, आराधो गुण थोक रे भविकजन;
 वीरनी वाणी सांभली रे लाल,

daśamā śīṭala jineśvaru suṇa.,
 parama padanī e vela; guṇanī gela. bhavi.;
 vaiśākha vadī bījane dine suṇa.,
 mūkyo sarave e sātha; suranara nātha. bhavi.4.
 śrāvaṇa śudanī bīja bhalī suṇa.,
 sumati nātha jina deva; sāre seva. bhavi.;
 eṇi tithie jinajī taṇā suṇa.,
 kalyāṇaka pañca sāra; bhavano pāra. bhavi.5.
 ḍhāla-2

jagapati jina covīśamo re lāla,
 e bhākhya adhikāra re bhavikajana;
 śreṇika āde sahu malyā re lāla,
 śakti taṇe anusāra re bhavikajana bhāva dharīne sām̐bhalo re lāla..1.
 doya varasa doya māsanī re lāla, ārādho dhārī khanta re bhavikajana;
 ūjamaṇuṃ vidhiśuṃ karo re lāla,
 bīja te mukti mahanta re bhavikajana. bhāva.2.
 mārga mithyā dūre tajo re lāla, ārādho guṇa thoka re bhavikajana;
 vīranī vāṇī sām̐bhalī re lāla,

उछरंग थया बहु लोक रे भविकजन. भाव.३.
एणी बीजे केई तया रे लाल, वली तरशे केई शेष रे भविकजन;
शशि निधि अनुमान थी रे लाल,

सईला नागधर एष रे भविकजन. भाव.४.
अषाढ शुदि दशमी दिने रे लाल,

ए गायो स्तवन रसाल रे भविकजन;
नवल विजय सुपसायथी रे लाल,

चतुरने मंगल माल रे भविकजन. भाव.५.

कलश

इम वीर जिनवर सयल सुखकर, गायो अति उलट भरे;
अषाढ उज्ज्वल दशमी दिवसे, संवत अढार अट्ठोतरे.
बीज महिमा एम वर्णव्यो, रही सिद्धपुर घोमास ए,
जेह भविक भावे सुणे गावे, तस घर लील विलास ए..... .१.

बीज तिथि स्तुति

अजुवाली ते बीज सोहावे रे, चंदा रूप अनुपम भावे रे;
चंदा विनतडी चित्त धरजो रे, सीमंधरने वंदणा कहेजो रे.१.

ucharaṅga thayā bahu loka re bhavikajana. bhāva.3.
eṇī bīje keī taryā re lāla, valī taraśe keī śeṣa re bhavikajana;
śaśi nidhi anumāna thī re lāla,

saīlā nāgadhara eṣa re bhavikajana. bhāva.4.
aṣāḍa śudi daśamī dine re lāla,

e gāyo stavana rasāla re bhavikajana;
navala vijaya supasāyathī re lāla,

caturane maṅgala māla re bhavikajana. bhāva.5.

kalaśa

ima vīra jinavara sayala sukhakāra, gāyo ati ulaṭa bhare;
aṣāḍa ujjala daśamī divase, samvata adhāra aṭṭhotare.
bīja mahimā ema varṇavyo, rahī siddhapura comāsa e,
jeha bhavika bhāve suṇe gāve, tasa ghara līla vilāsa e..... .1.

bīja tithi stuti

ajuvālī te bīja sohāve re, candā rūpa anupama bhāve re;
candā vinatadī citta dharajo re, sīmandharane vandanā kahejo re.1.

वीश विहरमाण जिनने वंदो रे, जिन शासन पूजी आणंदो रे;
 चंदा एटलुं काम मुज करजो रे, श्री सीमंधरने वंदणा कहेजो रे. .2.
 श्री सीमंधर जिननी वाणी रे, ते तो पीतां अमीय समाणी रे;
 चंदा तुमे सुणी अमने सुणावो रे, भव संचित पाप गमावो रे. .3.
 श्री सीमंधर जिननी सेवा रे, जिन शासन भासन मेवा रे;
 तुमे होजो संघना त्राता रे, मृग लंछन चंद्र विख्यातां रे. 4.

बीज तिथि सज्जाय

बीज कहे भव्य जीवने रे लो, निसुणो आणी उमंग रे सुगुण नर;
 सुकृत करणि खेतमां रे लो, वावो समकित बीज रे सुगुण नर.
 धरज्यो धर्मस्युं प्रितडी रे लो, करी निश्चे व्यवहार रे सुगुण नर.
 इहभवे परभवे भवोभवे रे लो,

होवे ज्युं जग जयकार रे सुगुण नर, धरज्यो.१.
 किरिया ते खातर नांखीये रे लो, समता दीजे खेड रे सुगुण नर;
 उपशम नीरे सिंचजो रे लो,
 ऊगे ज्युं समकित छोड रे सुगुण नर. धरज्यो.२.

vīśa viharamāṇa jinane vando re, jina śāsana pūjī āṇando re;
 candā eṭaluṃ kāma muja karajo re, śrī sīmandharane vandaṇā kahejo re. 2.
 śrī sīmandhara jinānī vāṇī re, te to pītāṃ amīya samāṇī re;
 candā tume suṇī amane suṇāvo re, bhava sañcita pāpa gamāvo re. 3.
 śrī sīmandhara jinānī sevā re, jina śāsana bhāsana mevā re;
 tume hojo saṅghanā trātā re, mṛga lañchana candra vikhyātāṃ re. 4.

bīja tithi sajjhāya

bīja kahe bhavya jīvane re lo, nisuṇo āṇī umaṅga re suguṇa nara;
 sukrta karaṇī khetamāṃ re lo, vāvo samakita bīja re suguṇa nara.
 dharajyo dharmasyuṃ pritaḍī re lo, karī niśce vyavahāra re suguṇa nara.
 ihabhave parabhave bhavobhave re lo,

hove jyuṃ jaga jayakāra re suguṇa nara. dharajyo.1.
 kiriyā te khātara nāṃkhiye re lo, samatā dije kheda re suguṇa nara;
 upaśama nīre siñcajo re lo,
 ūge jyuṃ samakita choḍa re suguṇa nara. dharajyo.2.

वाडी करो संतोषनी रे लो, तस पाविली चिहुं छोर रे सुगुण नर;
व्रत पच्चक्खाण चोकी ठवो रे लो,

वारे युं कर्मना चोर रे सुगुण नर. धरज्यो.३.

अनुभव केरे फुलडे रे लो, मोह हरे समकित वृक्ष रे सुगुण नर;
श्रुत चारित्र फल ऊतरे रे लो,

ते फल चाखो शिक्षरे सुगुण नर. धरज्यो.४.

ज्ञानामृत रस पीजिये रे लो, स्वाद ल्यो साम्भ तांबूल रे सुगुण नर;
इण रसे संतोष पामशो रे लो,

लहे ए भवनिधि फूल रे सुगुण नर. धरज्यो.५.

इण विध बीज तुमे सदहो रे लो, छांडी राग ने द्वेष रे सुगुण नर;
केवल कमला पामीये रे लो,

वरिये मुक्ति विवेक रे सुगुण नर. धरज्यो.६.

समकित बीज ते सद्दे रे लो, ते टाले नरक निगोद रे सुगुण नर;
विजय लब्धि सदा लहे रे लो,

नित नित विविध विनोद रे सुगुण नर. धरज्यो.७.

vāḍī karo santoṣanī re lo, tasa pāvīlī cihuṃ chora re suguṇa nara;
vrata paccakkhāṇa cokī ṭhavo re lo,

vāre yuṃ karmanā cora re suguṇa nara. dharajyo.3.

anubhava kere phulaḍe re lo, moha hare samakita vṛkṣa re suguṇa nara;
śruta cāritra phala ūtare re lo,

te phala cākho śikṣare suguṇa nara. dharajyo.4.

jñānāmṛta rasa pījiye re lo, svāda lya sāmbya tāmbūla re suguṇa nara;
iṇa rase santoṣa pāmaśo re lo,

lahe e bhavanidhi phūla re suguṇa nara. dharajyo.5.

iṇa vidha bīja tume saddaho re lo, chāṇḍī rāga ne dveṣa re suguṇa nara;
kevala kamalā pāmīye re lo,

variye mukti viveka re suguṇa nara. dharajyo.6.

samakita bīja te saddahe re lo, te ṭāle naraka nigoda re suguṇa nara;
vijaya labdhi sadā lahe re lo,

nita nita vividha vinoda re suguṇa nara. dharajyo.7.

पंचमी तिथि चैत्यवन्दन

श्यामल वान सोहामणु, श्री नेमि जिनेश्वर;
समवसरण बेठा कहे, उपदेश सोहंकर. १.
पंचमी तप आराधतां, लहे पंचम नाण;
पांच वरस पंच मासनो, ए छे तप परिमाण. २.
जिम वरदत्त गुणमंजरी ए, आराध्यो तप एह;
ज्ञान विमल गुरु एम कहे, धन धन जगमां तेह. ३.

पंचमी तिथि स्तवन

प्रणमो पंचमी दिवसे ज्ञानने, गाजे जगमां जेह सुज्ञानी;
शुभ उपयोगे क्षणमां निर्जरे, मिथ्या संचित खेह सुज्ञानी. प्रणमो. १.
संत पदादिक नव द्वारे करी, मति अनुयोग प्रकाश सुज्ञानी;
नव व्यवहारे आवरण क्षय करी,
अज्ञानी ज्ञान उल्लास सुज्ञानी. प्रणमो. २.
ज्ञानी ज्ञान लहे निश्चय कहे, दो नय प्रभुजीने सत्य सुज्ञानी;

pañcamī tithi caityavandana

śyāmala vāna sohāmaṇu, śrī nemi jīneśvara;
samavasaraṇa beṭhā kahe, upadeśa sohaṅkara. 1.
pañcamī tapa ārādhatā, lahe pañcama nāṇa;
pañca varasa pañca māsano, e che tapa parimāṇa. 2.
jima varadatta guṇamañjarī e, ārādhyo tapa eha;
jñāna vimala guru ema kahe, dhana dhana jagamā teha. 3.

pañcamī tithi stavana

praṇamo pañcamī divase jñānane, gāje jagamā jeha sujñānī;
śubha upayoge kṣaṇamā nirjare, mithyā sañcita kheha sujñānī. praṇamo. 1.
santa padādika nava dvāre karī, mati anuyoga prakāśa sujñānī;
nava vyavahāre āvaraṇa kṣaya karī,
ajñānī jñāna ullāsa sujñānī. praṇamo. 2.
jñānī jñāna lahe niścaya kahe, do naya prabhujīne satya sujñānī;

अंतर मूहूर्त रहे उपयोगथी, ए सर्व प्राणीने नित्य सुज्ञानी. प्रणमो.३.
लब्धि अंतर मुहूर्त लघु पणे, छासठ सागर जिद्ध सुज्ञानी;
अधिको नरभव बहु विध जीवने,

अंतर कदीए न दीठ सुज्ञानी. प्रणमो.४.
संप्रति समये एक बे पामता, होय अथवा नवि होय सुज्ञानी;
क्षेत्र पल्योपम भाग असंख्यमां,

प्रदेश माने बहु जोय सुज्ञानी. प्रणमो.५.
मतिज्ञान पाम्या जीव असंख्य छे, कह्या पडिवाइ अनंत सुज्ञानी;
सर्व आशातना वारजो ज्ञाननी,

विजय लक्ष्मी लहो संत सुज्ञानी. प्रणमो.६.

पंचमी तिथि स्तुति

श्रावण सुदि दिन पंचमी ए, जनमीया नेमि जिणंद तो;
श्याम वरण तनु शोभतुं ए, मुख शारदको चन्द तो.
सहस वरस प्रभु आउखुं ए, ब्रह्मचारी भगवंत तो;
अष्ट करम हेले हणी ए, पहाँता मुक्ति महंत तो.१.
अष्टापद पर आदि जिन ए, पहाँता मुक्ति मोझार तो;

antara mūhūrta rahe upayogathi, e sarva prāṇīne nitya sujñānī. praṇamo.3.
labdhi antara muhūrta laghu paṇe, chāsathā sāgara jitṛṭha sujñānī;
adhiko narabhava bahu vidha jīvane,

antara kadīe na dīṭha sujñānī. praṇamo.4.
samprati samaye eka be pāmata, hoya athavā navi hoya sujñānī;
kṣetra palyopama bhāga asaṅkhyamā,

pradeśa māne bahu joya sujñānī. praṇamo.5.
matijñāna pāmyā jīva asaṅkhyā che, kahyā paḍivāi ananta sujñānī;
sarva āsātanā vārajo jñānani,

vijaya lakṣmī laho santa sujñānī. praṇamo.6.

pañcamī tithi stuti

śrāvaṇa sudi dina pañcamī e, janamīyā nemi jiṇanda to;
śyāma varaṇa tanu śobhatu e, mukha śāradako canda to.
sahasa varasa prabhu āukhu e, brahmacārī bhagavanta to;
aṣṭa karama hele haṇī e, pahoṭā mukti mahanta to.1.
aṣṭāpada para ādi jina e, pahoṭā mukti mojhāra to;

वासुपूज्य चम्पापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार तो.
पावापुरी नगरीमां वली ए, श्री वीरतणुं निर्वाण तो;
समेत-शिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिर वहुं तेहनी आण तो. २.
नेमिनाथ ज्ञानी हुआ ए, भाखे सार वचन तो;
जीवदया गुण वेलडी ए, कीजे तास जतन तो.
मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो;
अनन्त तीर्थकर एम भणे ए, परिहरीए परनार तो. ३.
गोमेध नामे जक्ष भलो ए, देवी श्री अम्बिका नाम तो;
शासन सान्निध्य जे करे ए, करे वली धर्मनां काम तो.
तपगच्छ नायक गुणनीलो ए, श्री विजय सेन सूरिराय तो;
ऋषभदास पाय सेवतां ए, सफल करो अवतार तो. ४.

पंचमी तिथि सज्झाय

सद्गुरुना हुं प्रणमी पाय, सरस्वती स्वामिनी करो पसाय;
पंचमी तप फल महिमा तुमे सुणो, जे करतां जग शोभा घणो. १.
ज्ञान अथाग वधे वली जेह, पंचम ज्ञान लहे भवि तेह;
पंचम गति पामे सुखसार, एह संसारनो पामे पार. २.

vāsupūjya campāpurī e, nema mukti giranāra to.
pāvāpurī nagarīmā valī e, śrī vīrataṇuṃ nirvāṇa to;
sameta-śikhara vīśa siddha huā e, śira vahuṃ tehani āṇa to. 2.
neminātha jñānī huā e, bhākhe sāra vacana to;
jīvadayā guṇa velaḍī e, kīje tāsa jatana to.
mrṣā na bolo mānavī e, corī citta nivāra to;
ananta tīrthaṅkara ema bhaṇe e, pariharīe paranāra to. 3.
gomedha nāme jakṣa bhalo e, devī śrī ambikā nāma to;
śāsana sānnidhya je kare e, kare valī dharmanā kāma to.
tapagaccha nāyaka guṇanīlo e, śrī vijaya sena sūrīraya to;
ṛṣabhadāsa pāya sevataṃ e, saphala karo avatāra to. 4.

pañcamī tithi sajjhāya

sadgurunā huṃ praṇamī pāya, sarasvatī svāminī karo pasāya;
pañcamī tapa phala mahimā tume suṇo, je karatāṃ jaga śobhā ghaṇo. 1.
jñāna athāga vadhe valī jeha, pañcama jñāna lahe bhavi teha;
pañcama gati pāme sukhasāra, eha saṁsārano pāme pāra. 2.

सोल रोग तत्क्षण उपशमे, तेउकाय जिम शीतने दमे;
 तिम ए तप छे रोगनो काल, जुओ वरदत्त गुणमंजरी बाल. 3.
 पंच वर्ष ने पंच ज मास, करीए तप मनने उत्तास;
 अंते ऊजमणुं कीजिए, पोते तपनुं फल लीजिए. 4.
 ऊजमणा विण फल ते नहि, इम ए वाणी जिनवर कही;
 श्री विजय रत्न तणो ए शिष्य, वाचक देवनी पूरो जगीश. 5.

अष्टमी तिथि चैत्यवंदन

आठ त्रिगुण [२४] जिनवर तणी, नित्य कीजे सेवा;
 वहाली मुजमन अति घणी, जेम गज मनरेवा. 1.
 प्रातिहारज आठशुं, ठकुराइ छाजे;
 आठे मंगल आगले, जेहने वाली राजे. 2.
 भांजे भय आठ मोटका ए, आठ कर्म करे दूर;
 आठम दिन आराधतां, ज्ञान विमल भरपूर. 3.



sola roga tatksṇa upaśame, teukāya jima śītane dame;
 tima e tapa che roganō kāla, juo varadatta guṇamañjarī bāla. 3.
 pañca varṣa ne pañca ja māsa, kariē tapa manane ullāsa;
 ante ūjamaṇuṃ kījīe, pote tapanuṃ phala lījīe. 4.
 ūjamaṇā viṇa phala te nahi, ima e vāṇī jinavara kahī;
 śrī vijaya ratna taṇo e śiṣya, vācaka devanī pūro jagīśa. 5.

aṣṭamī tithi caityavandana

āṭha triguṇa [24] jinavara taṇī, nitya kīje sevā;
 vahālī mujamana ati ghaṇī, jema gaja manarevā. 1.
 prātihāraja āṭhaśuṃ, ṭhakurāi chāje;
 āṭhe maṅgala āgale, jehane valī rāje. 2.
 bhāñje bhaya āṭha moṭakā e, āṭha karma kare dūra;
 āṭhama dina ārādhatāṃ, jñāna vimala bharapūra. 3.



અષ્ટમી તિથિ સ્તવન

ઢાલ-૧

શ્રી રાજગૃહી શુભ ઠામ, અધિક દિવાજે રે;
 વિચરંતા વીર જિણંદ, અતિશય છાજે રે.
 ઘોત્રીશ અને પાંત્રીશ, વાળી ગુણ લાવે રે,
 પાલં ધાર્યા વધામણી જાય, શ્રેણિક આવે રે.૧.
 તિહાં ઘોસઠ સુરપતિ આવી, ત્રિગડું બનાવે રે;
 તેમાં બેસીને ઉપદેશ, પ્રભુજી સુણાવે રે.
 સુર નર ને તિર્યઘ, નિજ નિજ ભાષા રે;
 તિહાં સમજીને ભવતીર, પામે સુખ ઝાસા રે.૨.
 તિહાં ઇન્દ્રભૂતિ ગણધાર, શ્રીગુરુ વીરને રે;
 પૂછે અષ્ટમીનો મહિમાય, કહો પ્રભુ અમને રે.
 તવ ભાષે વીર જિણંદ, સુણો સહુ પ્રાણી રે;
 આઠમ દિન જિનનાં કલ્યાણ, ધરો ચિત્ત આળી રે.૩.

ઢાલ-૨

શ્રી ઋષભનું જન્મ-કલ્યાણ રે, વલી ચારિત્ર લહ્યું ભલે વાળ રે;
 ત્રીજા સમ્ભવનું ઘ્યવન કલ્યાણ.

aṣṭamī tithi stavana

dhāla-1

śrī rājagrhi śubha thāma, adhika divāje re;
 vicarantā vīra jīṇanda, atīśaya chāje re.
 cotrīśa ane pāntrīśa, vāṇī guṇa lāve re,
 pāu_ dhāryā vadhāmaṇī jāya, śreṇika āve re.1.
 tihā_ cosatha surapati āvī, trigadu_ banāve re;
 temā_ besīne upadeśa, prabhuji suṇāve re.
 sura nara ne tiryāṇca, nija nija bhāṣā re;
 tihā_ samajīne bhavatīra, pāme sukha khāsā re.2.
 tihā_ indrabhūti gaṇadhāra, śrīguru vīrane re;
 pūche aṣṭamīno mahimāya, kaho prabhu amane re.
 tava bhākhe vīra jīṇanda, suṇo sahu prāṇī re;
 āthama dina jinanā_ kalyāṇa, dharo citta āṇī re.3.

dhāla-2

śrī ṛṣabhanu_ janma-kalyāṇa re, valī cāritra lahyu_ bhale vāṇa re;
 trijā sambhavanu_ cyavana kalyāṇa.

भवि तुमे अष्टमी तिथि सेवो रे, ए छे शिव-वधू वरवानो मेवो. भवि.१.
 श्री अजित-सुमति नमि जन्म्या रे, अभिनंदन शिवपद पाम्या रे;
 जिन सातमा च्यवन दीपाव्या. भवि.२.
 वीशमा मुनिसुव्रत स्वामी रे, जेहनो जनम होय गुण धामी रे;
 बावीसमा शिव विसरामी. भवि.३.
 पारसनाथजी मोक्ष महंता रे, इत्यादिक जिन गुणवन्ता रे;
 कल्याणक मुख्य कहन्ता. भवि.४.
 श्री वीर जिणंदनी वाणी रे, निसुणी समज्या भवि प्राणी रे;
 आठम दिन अति गुण खाणी. भवि.५.
 अष्ट कर्म ते दूर पलाय रे, एथी अड-सिद्धि अड-बुद्धि थाय रे;
 ते कारण सेवो चित्त लाय. भवि.६.
 श्री उदय सागर सूरिराया रे, गुरु शिष्य विवेके ध्याया रे;
 तस न्याय सागर गुण गाया. भवि.७.

अष्टमी तिथि स्तुति

चोवीशे जिनवर हुं प्रणमुं नित्यमेव,
 आठम दिन करीए चंद्र प्रभुजीनी सेव;

bhavi tume aṣṭamī tithi sevo re, e che śiva-vadhū varavāno mevo. bhavi.1.
 śrī ajita-sumati nami janmyā re, abhinandana śivapada pāmyā re;
 jina sātama cyavana dīpāvyā. bhavi.2.
 vīśamā munisuvrata svāmī re, jehano janama hoyā guṇa dhāmī re;
 bāvisamā śiva visarāmī. bhavi.3.
 pārasanāthajī mokṣa mahantā re, ityādika jina guṇavantā re;
 kalyāṇaka mukhya kahantā. bhavi.4.
 śrī vīra jīṇandani vāṇī re, nisunī samajyā bhavi prāṇī re;
 āṭhama dina ati guṇa khāṇī. bhavi.5.
 aṣṭa karma te dūra palāya re, ethī aḍa-siddhi aḍa-buddhi thāya re;
 te kāraṇa sevo citta lāya. bhavi.6.
 śrī udaya sāgara sūrirāyā re, guru śiṣya viveke dhyāyā re;
 tasa nyāya sāgara guṇa gāyā. bhavi.7.

aṣṭamī tithi stuti

covīśe jinavara huṁ praṇamuṁ nityameva,
 āṭhama dina karīe candra prabhujīnī seva;

मूर्ति मनमोहन जाणे पूनम चंद,
 दीठे दुःख जाये पामे परमानंद..१.
 मली चोसठ इंद्र पूजे प्रभुजीना पाय,
 इंद्राणी अपच्छरा कर जोडी गुण गाय;
 नंदीसर द्वीपे मली सुरवरनी कोड,
 अट्ठाई महोत्सव करे ते होडाहोड..२.
 शेत्रुंजा शिखरे जाणी लाभ अपार,
 चोमासुं रहीया गणधर मुनि परिवार;
 भवियणने तारे देइ धर्म उपदेश,
 दूध साकरथी पण वाणी अधिक विशेष..३.
 पोसह पडिक्कमणुं करीए व्रत पच्चक्खाण,
 आठम दिन करीए अष्ट कर्मनी हाण;
 अष्ट मंगल थाये दिनदिन क्रोड कल्याण,
 एम सुख-सूरि कहे जीवित जन्म प्रमाण..४.



mūrti manamohana jāṇe pūnama caṇḍa,
 dīṭhe duḥkha jāye pāme paramānanda. .1.
 malī coṣaṭha indra pūje prabhujīnā pāya,
 indrāṇī apaccharā kara joḍī guṇa gāya;
 nandīsara dvīpe malī suravarānī koḍa,
 aṭṭhāi mahotsava kare te hoḍāhoḍa. .2.
 śetruñjā śikhare jāṇī lābha apāra,
 comāsuṃ rahiṃyā gaṇadhara muni parivāra;
 bhaviyaṇane tāre dei dharma upadeśa,
 dūdhā sākarathī paṇa vāṇī adhika viśeṣa. .3.
 posaha paḍikkamaṇuṃ kariē vrata paccakkhāṇa,
 āṭhama dina kariē aṣṭa karmanī hāṇa;
 aṣṭa maṅgala thāye dinadina kroḍa kalyāṇa,
 ema sukha-sūri kahe jīvita janma pramāṇa. .4.



अष्टमी तिथि सज्झाय

अष्टकर्म चूरण करी रे लाल, आठ गुणे प्रसिद्ध मेरे प्यारे रे;
क्षायिक समकितना धणी रे लाल,

वंदुं वंदुं एवा सिद्ध मेरे प्यारे रे. अष्ट.१.

अनंत ज्ञान दर्शन धरा रे लाल, चोथुं वीर्य अनंत मेरे प्यारे रे;
अगुरु लघु सुखमय कह्या रे लाल,

अव्याबाध महंत मेरे प्यारे रे. अष्ट.२.

जेहनी काया जेहवी रे लाल, उणी त्रीजे भाग मेरे प्यारे रे;

सिद्ध शिलाथी जेमणे रे लाल, अवगाहना वीतराग मेरे प्यारे. अष्ट.३.

सादि अनंता तिहां घणा रे लाल, समय समय तेह जाय मेरे प्यारे रे;
मंदिर मांहि दीपालिका रे लाल,

सघला तेज समाय मेरे प्यारे रे. अष्ट.४.

मानव भवथी पामिये रे लाल, सिद्धि तणां सुख संग मेरे प्यारे रे;
एहनुं ध्यान सदा धरो रे लाल,

एम बोले भगवति अंग मेरे प्यारे रे. अष्ट.५.

श्री विजय देव पट्टधरु रे लाल,

aṣṭamī tithi sajjhāya

aṣṭakarma cūraṇa karī re lāla, āṭha guṇe prasiddha mere pyāre re;
kṣāyika samakitanā dhaṇī re lāla,

vanduṃ vanduṃ evā siddha mere pyāre re. aṣṭa.1.

ananta jñāna darśana dharā re lāla, cothuṃ vīrya ananta mere pyāre re;
aguru laghu sukhamaya kahyā re lāla,

avyābādha mahanta mere pyāre re. aṣṭa.2.

jehani kāyā jehavī re lāla, uṇī trije bhāga mere pyāre re;

siddha śilāthī jemaṇe re lāla, avagāhanā vītarāga mere pyāre. aṣṭa.3.

sādi anantā tiḥāṃ ghaṇā re lāla, samaya samaya teha jāya mere pyāre re;
mandira māṇhi dīpālikā re lāla,

saghalā teja samāya mere pyāre re. aṣṭa.4.

mānava bhavathī pāmiye re lāla, siddhi taṇāṃ sukha saṅga mere pyāre re;
ēhanuṃ dhyāna sadā dharo re lāla,

ema bole bhagavati aṅga mere pyāre re. aṣṭa.5.

śrī vijaya deva paṭṭadharu re lāla,

श्री विजय सेन सूरीश मेरे प्यारे रे;
सिद्धतणा गुण ए कह्या रे लाल,
देव दीए आशिष मेरे प्यारे रे. अष्ट.६.

एकादशी तिथि चैत्यवंदन

आज ओच्छव थयो मुज घरे, एकादशी मंडाण;
श्री जिननां त्रणसे भलां, कल्याणक वर जाण. १.
सुरतरु सुरमणि सुरघट, कल्पवेली फली म्हारे;
एकादशी आराधतां, बोधि बीज चित्त ठारे. २.
नेमि जिनेश्वर पूजतां ए, पहोंचे मनना कोड;
ज्ञान विमल गुणथी लहो, प्रणमो बे करजोड. ३.

एकादशी तिथि स्तवन

पंचम सुर लोकना वासी रे, नव लोकांतिक सुविलासी रे;
करे विनति गुणनी राशि.

śrī vijaya sena sūrīśa mere pyāre re;
siddhataṇā guṇa e kahyā re lāla,
deva dīe āśiṣa mere pyāre re. aṣṭa.6.

ekādaśī tithi caityavandana

āja occhava thayo muja ghare, ekādaśī maṇḍāṇa;
śrī jinanāṁ traṇase bhalāṁ, kalyāṇaka vara jāṇa. 1.
surataru suramaṇi suraghaṭa, kalpavelī phalī mhāre;
ekādaśī ārādhatāṁ, bodhi bīja citta thāre. 2.
nemi jineśvara pūjatāṁ e, pahoṁce mananā koḍa;
jñāna vimala guṇathī laho, praṇamo be karajoḍa. 3.

ekādaśī tithi stavana

pañcama sura lokanā vāsī re, nava lokāntika suvilāsī re;
kare vinati guṇanī rāśi.

मल्लि जिन नाथजी व्रत लीजे रे, भवि जीवने शिवसुख दीजे. .१.
 तमे करुणा रस भंडार रे, पाम्या छो भवजल पार रे;
 सेवकनो करो उद्धार. मल्लि.२.
 प्रभु दान संवत्सरी आपे रे, जगनां दारिद्र दुःख कापे रे;
 भव्यत्व पणे तस स्थापे. मल्लि.३.
 सुरपति सघला मली आवे रे, मणि रयण सोवन वरसावे रे;
 प्रभु चरणे शीश नमावे. मल्लि.४.
 तीर्थोदक कुंभा लावे रे, प्रभुने सिंहासन ठावे रे;
 सुरपति भगते नवरावे. मल्लि.५.
 वस्त्राभरणे शणगारे रे, फूलमाला हृदय पर धारे रे;
 दुःखडां इंद्राणी उवारे. मल्लि.६.
 मल्या सुर नर कोडा कोडी रे, प्रभु आगे रह्या कर जोडी रे;
 करे भक्ति युक्ति मद मोडी. मल्लि.७.
 मृगशिर शुदिनी अजुआली रे, एकादशी गुणनी आली रे;
 वर्या संयम वधु लट्काली रे. मल्लि.८.
 दीक्षा कल्याणक एह रे, गातां दुःख न रहे रेह रे;
 लहे रूप विजय जस नेह. मल्लि.९.

malli jina nāthajī vrata lije re, bhavi jīvane śivasukha dīje. 1.
 tame karuṇā rasa bhaṇḍāra re, pāmyā cho bhavajala pāra re;
 sevakano karo uddhāra. malli.2.
 prabhu dāna samvatsarī āpe re, jaganā dāridra duḥkha kāpe re;
 bhavyatva paṇe tasa sthāpe. malli.3.
 surapati saghalā malī āve re, maṇi rayaṇa sovana varasāve re;
 prabhu caraṇe śīśa namāve. malli.4.
 tīrthodaka kumbhā lāve re, prabhune siṅhāsana thāve re;
 surapati bhagate navarāve. malli.5.
 vastrābharāṇe śaṇagāre re, phūlamālā hṛdaya para dhāre re;
 duḥkhaḍā īndrāṇī uvāre. malli.6.
 malyā sura nara koḍā koḍī re, prabhu āge rahyā kara joḍī re;
 kare bhakti yukti mada moḍī. malli.7.
 mṛgaśira śudini ajuālī re, ekādaśī guṇanī ālī re;
 varyā saṇyama vadhu laṭakālī re. malli.8.
 dīkṣā kalyāṇaka eha re, gātā duḥkha na rahe reha re;
 lahe rūpa vijaya jasa neha. malli.9.

एकादशी तिथि स्तुति

अरस्य प्रव्रज्या नमि-जिनपते-ज्ञान-मतुलं,
 तथा मल्ले-र्जन्म-व्रत-मपमलं केवलमलम्;
 वल-क्षैकादश्यां सहसिल-सदुद्दाम-महसि,
 क्षितौ कल्याणानां क्षपति विपदः पंचक-मदः १.
 सुपर्वेन्द्र श्रेण्याग-मनगमनै-भूमि-वलयं,
 सदा-स्वर्गत्या-वाहमह-मिकया-यत्र-सलयम्;
 जिनाना-मप्यापुः क्षणमति-सुखं नारक-सदः,
 क्षितौ कल्याणानां क्षपति विपदः पंचकमदः २.
 जिना-एवं यानि-प्रणिजग-दुरात्मीय समये,
 फलं-यत्कर्तृणा-मिति च विदितं शुद्ध-समये;
 अनिष्टा-रिष्टानां-क्षिति-रनुभवेयु-र्बहुमुदः,
 क्षितौ कल्याणानां क्षपति विपदः पंचकमदः ३.
 सुराः सेन्द्राः सर्वे सकल-जिनचन्द्र-प्रमुदिता-
 स्तथा च ज्योतिष्का-खिल भवननाथा-समुदिताः;
 तपो यत्कर्तृणां-विदधति सुखं विस्मित-हृदं,
 क्षितौ कल्याणानां क्षपति विपदः पंचकमदः ४.

ekādaśī tithi stuti

arasya pravrajyā nami-jinapater-jñāna-matulam,
 tathā maller-janma-vrata-mapamalam kevala-malam;
 vala-kṣaika-daśyām sahasila-saduddāma-mahasi,
 kṣitau kalyāṇānām kṣapati vipadaḥ pañcaka-madaḥ 1.
 suparvendra śreṇyāga-mana-gamanair-bhūmi-valayam,
 sadā-svargatyā-vāhamaha-mikayā-yatra-salayam;
 jīnānā-mapyāpuḥ kṣaṇa-mati-sukham nāraka-sadaḥ,
 kṣitau kalyāṇānām kṣapati vipadaḥ pañcaka-madaḥ 2.
 jīnā-evam yāni-praṇijaga-durātmiya samaye,
 phalam-yat-kartṛṇā-miti ca viditam śuddha-samaye;
 aniṣṭā-riṣṭānām-kṣiti-ranubhaveyur-bahumudaḥ,
 kṣitau kalyāṇānām kṣapati vipadaḥ pañcaka-madaḥ 3.
 surāḥ sendrāḥ sarve sakala-jina-candra-pramuditās-
 tathā ca jyotiṣkā-khila bhavana-nāthā-samuditāḥ;
 tapo yat-kartṛṇām-vidadhati sukham vismita-hṛdam,
 kṣitau kalyāṇānām kṣapati vipadaḥ pañcaka-madaḥ 4.

एकादशी तिथि सज्झाय

आज म्हारे एकादशी रे, नणदल मौन करी मुख रहीए;
 पूछ्यानो पडुत्तर पाछे, कोइने कांइ न कहीए. आज.१.
 म्हारो नणदोइ तुजने व्हालो, मुजने त्हारो वीरो;
 धुमाडाना बाचका भरतां, हाथ न आवे हीरो. आज.२.
 घरनो धंधो घणो कयो पण, एक न आव्यो आडो;
 परभव जातां पालव ज्ञाले, ते मुजने देखाडो. आज.३.
 मागसर सुदि अगीयारश म्होटी, नेवुं जिननां निरखो;
 दोढसो कल्याणक म्होटां, पोथी जोइ जोइने हरखो. आज.४.
 सुव्रत शेट थयो शुद्ध श्रावक, मौन धरी मुख रहीयो;
 पावक पुर सघलो परजात्यो, एहनो कांइ न दहीयो. आज.५.
 आठ पहर नो पोसह करीने, ध्यान प्रभुनुं धरीए;
 मन वच काया जो वश करीए, तो भव सागर तरीए. आज.६.
 इर्या-समिति भाषा न बोले, आडुं अवलुं पेखे;
 पडिकमणा शुं प्रेम न राखे, कहो किम लागे लेखे. आज.७.
 कर उपर तो माला फिरती, जीव फरे वन मांही;
 चित्तडुं तो चिहुं दिशिये दोढे, इण भजने सुख नांही. आज.८.

ekādaśī tithi sajjhāya

āja mhāre ekādaśī re, naṇadala mauna karī mukha rahīe;
 pūchyāno paḍuttara pācho, koine kāmī na kahīe. āja.1.
 mhāro naṇadoi tujane vhālo, mujane thāro vīro;
 dhumādānā bācakā bharatā, hātha na āve hīro. āja.2.
 gharano dhandho ghaṇo karyo paṇa, eka na āvyo āḍo;
 parabhava jātā pālava jhāle, te mujane dekhāḍo. āja.3.
 māgasara sudi agīyāraśa mhoṭī, nevu jinanā nirakho;
 doḍhaso kalyāṇaka mhoṭā, pothī joi joine harakho. āja.4.
 suvrata śeṭha thayo śuddha śrāvaka, mauna dhari mukha rahīyo;
 pāvaka pura saghalo parajālyo, ehano kāi na dahīyo. āja.5.
 āṭha pahora no posaha karīne, dhyāna prabhunu dharīe;
 mana vaca kāyā jo vaśa karīe, to bhava sāgara tarīe. āja.6.
 iryā-samiti bhāṣā na bole, āḍu avalu pekhe;
 paḍikamaṇā śu prema na rākhe, kaho kima lāge lekhe. āja.7.
 kara upara to mālā phirati, jīva phare vana māhī;
 cittaḍu to cihu diśīye doḍe, iṇa bhajane sukha nāhī. āja.8.

पौषधशाले भेगां थइने, चार कथा वली सांधे;
 कांडक पाप मिटावण आवे, बार गणुं वली बांधे. आज.९.
 एक ऊठंती आलस मरडी, बीजी ऊंचे बेठी;
 नदीओमांथी कांड निसरती, जइ दरीयामां पेठी.आज.१०.
 आइ बाइ नणंद भोजाइ, न्हानी मोटी वहुने;
 सासु ससरौ मा ने मासी, शिखामण छे सहुने.आज.११.
 उदय रतन वाचक उपदेशे, जे नर नारी रहेसे;
 पोसा मांहे प्रेम धरीने, अविचल लीला लहेशे.आज.१२.

मनोरमा सती सज्झाय

मोहनगारी मनोरमा, शेठ सुदर्शन नारी रे;
 शील प्रभावे शासन सुरी, थई जस सानिध्य कारी रे. ... मोहन.१.
 दधिवहन नृपनी प्रिया, अभया दीए कलंक रे;
 कोप्यो चंपापति कहे, शूली रोपण वंक रे. मोहन.२.
 ते निसुणीने मनोरमा, करे काउस्सग्ग धरी ध्याना रे;
 दंपती शील जो निर्मलुं, तो वधो शासन मान रे. मोहन.३.
 शूली सिंहासन थई, शासन देवी हजूर रे;

pausaḍhaśāle bhegāṁ thaine, cāra kathā valī sāndhe;
 kāṇḍika pāpa miṭavaṇa āve, bāra gaṇuṁ valī bāndhe. āja.9.
 eka ūthantī ālasa maraḍī, bījī ūṅhe beṭhī;
 nadīomāṁthī kāṇḍi nisarati, jai darīyāmāṁ pethī. āja.10.
 āi bāi naṇaṇda bhojāi, nhānī moṭī vahune;
 sāsū sasaro mā ne māśī, śikhāmaṇa che sahune. āja.11.
 udaya ratana vācaka upadeśe, je nara nārī rāheśe;
 posā māṁhe prema dharīne, avicala līlā laheśe. āja.12.

manoramā satī sajjhāya

mohanagārī manoramā, śeṭha sudarśana nārī re;
 śīla prabhāve śāsana surī, thāi jasa sānidhya kārī re. mohana.1.
 dadhivāhana nṛpanī priyā, abhayā diē kalaṅka re;
 kopyo campāpati kahe, śūlī ropaṇa vaṅka re. mohana.2.
 te nisūṇīne manoramā, kare kāussagga dharī dhyāna re;
 dampaṭī śīla jo nirmaluṁ, to vadho śāsana māna re. mohana.3.
 śūlī śiḥāsana thāi, śāsana devī hajūra re;

संयम ग्रही थयां केवली, दंपती दोय सनूर रे. मोहन.४.
 ज्ञान विमल गुण शीलथी, शासन शोभ चढावे रे;
 सुर नर तस किंकरा, शिव सुंदरी ते पावे रे. मोहन.५.

प्रसन्नचंद्र राजर्षि सज्ज्ञाय

प्रणमुं तुमारा पाय, प्रसन्नचंद्र प्रणमुं तुमारा पाय;
 राज छोडी रलीयामणुं रे, जाणी अथिर संसार.
 वैरागे मन वालीयुं रे, लीधो संयम भार.....प्रसन्न.१.
 समशाने काउस्सग्ग रही रे, पग उपर पग चढाय;
 बाहु बे ऊंचा करी रे, सूरज सामी दृष्टि लगाय.प्रसन्न.२.
 दुर्मुख दूत वचन सुणी रे, कोप चड्यो तत्काल;
 मनशुं संग्राम मांडीओ रे, जीव पड्यो जंजाल.प्रसन्न.३.
 श्रेणिक प्रश्न पूछे ते समे रे, स्वामी एहनी कुण गति थाय;
 भगवंत कहे हमाणां मरे रे, तो सातमी नरके जाय.प्रसन्न.४.
 क्षण एक आंतरे पूछीयुं रे, सर्वार्थ सिद्ध विमान;
 वागी देवनी दुंदुभि रे, ऋषि पाम्या केवलज्ञान.....प्रसन्न.५.
 प्रसन्नचंद्र ऋषि मुगते गया रे, श्री महावीरना शिष्य;

saṇyama grahī thayā kevalī, dampaṭī doya sanūra re. mohana.4.
 jñāna vimala guṇa śīlathī, śāsana śobha caḍhāve re;
 sura nara tsa kiṅkarā, śiva sundarī te pāve re. mohana.5.

prasannacandra rājarṣi sajjhāya

praṇamuṁ tumārā pāya, prasanna-candra praṇamuṁ tumārā pāya;
 rāja choḍī raliyāmaṇuṁ re, jāṇī athira sansāra.
 vairāge mana vāliyuṁ re, līdho saṇyama bhāra. prasanna.1.
 samaśāne kāussagga rahī re, paga upara paga caḍhāya;
 bāhu be ūñcā karī re, sūraja sāmī ḍṛṣṭi lagāya. prasanna.2.
 durmukha dūta vacana suṇī re, kopa caḍyo tatkāla;
 manaśuṁ saṅgrāma māṇḍiō re, jīva paḍyo jaṇjāla. prasanna.3.
 śreṇika praśna pūche te same re, svāmī ehanī kuṇa gati thāya;
 bhagavanta kahe hamaṇā māre re, to sātāmī narake jāya. prasanna.4.
 kṣaṇa eka āntare pūchīyuṁ re, sarvāratha siddha vimāna;
 vāgī devanī dundubhi re, ṛṣi pāmyā kevala-jñāna. prasanna.5.
 prasanna-candra ṛṣi mugate gayā re, śrī mahāvīranā śiṣya;

રૂપ વિજય કહે ધન્ય ધન્ય રે, દીઠા જે પ્રત્યક્ષ.પ્રસન્ન.૬.

ધોબીડા સજ્જાયા

ધોબીડા તું ધોજે મનનું ધોતીયું રે, રખે રાખતો મેલ લગાર રે;
 એ રે મેલે જગ મેલો કાર્યો રે, અણધોયું ન રાખ લગાર રે. ધોબીડા.૧.
 જિનશાસન સરોવર સોહામણું રે, સમકિત તળી રૂઢી પાલ રે;
 દાનાદિક ચારે બારણાં રે, માંહી નવતત્ત્વ કમલ વિશાલ રે. ધોબીડા.૨.
 તિહાં ઝીલે મુનિવર હંસલા રે, પીયે છે તપ જપ નીર રે;
 શમ દમ આદે જે શિલા રે, તિહાં પચાલે આતમ ચીર રે. ધોબીડા.૩.
 તપવજે તપ તડકે કરી રે, જાલવજે નવ બ્રહ્મ વાઢ રે;
 છાંટા ઉઢાડે પાપ અઢારના રે,

એમ ઝૂજલું હોશે તતકાલ રે. ધોબીડા.૪.

આલોચણ સાબુડો સુધો કરે રે, રખે આવે માયા સેવાલ રે;
 નિશ્ચે પવિત્ર પણું રાખજે રે, પછે આપણા નિયમ સંભાલ રે. ધોબીડા.૫.
 રખે મૂકતો મન મોકલું રે, પડ મેલીને સંકેલ રે;
 સમય સુંદરની શીખડી રે, સુખડી અમૃતવેલ રે.ધોબીડા.૬.

rūpa vijaya kahe dhanya dhanya re, dīṭhā je pratyakṣa. prasanna.6.

dhobīdā sajjhāya

dhobīdā tu_ dhoje mananu_ dhotīyu_ re, rakhe rākhato mela lagāra re;
 eṇe re mele jaga melo karyo re, aṇadhoyu_ na rākha lagāra re. dhobīdā.1.
 jinaśāsana sarovara sohāmaṇu_ re, samakita taṇī rūḍī pāla re;
 dānādika cāre bāraṇā_ re, mā_ḥī navatattva kamala viśāla re. . dhobīdā.2.
 tiḥā_ jhīle munivara haṇsalā re, pīye che tapa japa nīra re;
 śama dama āde je śilā re, tiḥā_ pakḥāle ātama cīra re. dhobīdā.3.
 tapavaje tapa taḍake karī re, jālavaje nava brahma vāḍa re;
 chā_ṭā uḍāde pāpa adhāraṇā re,

ema ūjalu_ hośe tatakāla re. dhobīdā.4.

āloyaṇa sābuḍo sudho kare re, rakhe āve māyā sevāla re;
 niśce pavitra paṇu_ rākhaḥje re, pache āpaṇā niyama sambhāla re. .. dhobīdā.5.
 rakhe mūkato mana mokalu_ re, paḍa melīne saṅkela re;
 samaya suṇḍaraṇī śīkhaḍī re, sukhaḍī amṛtavela re. dhobīdā.6.

जग सपना सज्झाय

जग सपनेकी माया, रे नर! जग सपनेकी माया.
 सपने राज पाय कोउ रंक ज्युं, करत काज मन भाया;
 उघरत नयन हाथ लख खप्पर, मन हुं मन पछताया... रे नर! १.
 चपला चमकार जिम चंचल, नर भव सूत्र बताया;
 अंजलि जल सम जगपति जिनवर, आयु अथिर दरशाया. रे नर! २.
 यौवन संध्या राग रूप फुनि, मल मलिन अति काया;
 विणसत जास विलंब न रंचक, जिम तरुवरकी छाया... रे नर! ३.
 सरिता वेग समान ज्युं संपत्ति, स्वारथ सुत मित जाया;
 आभिष लुब्ध मीन जिम तिन संग, मोह जाल बंधाया... रे नर! ४.
 ए संसार असार सार पिण, यामे इतना पाया;
 चिदानंद प्रभु सुमरन सेति, धरीए नेह सवाया... रे नर! ५.

शीयल व्रत सज्झाय

शीयल समुं व्रत को नहीं, श्री जिनवर एम भाखे रे.

jaga sapanā sajjhāya

jaga sapanekī māyā, re nara! jaga sapanekī māyā.
 sapane rāja pāya kou raṅka jyuṃ, karata kāja mana bhāyā;
 ugharata nayana hātha lakha khappara, mana huṃ mana pachatāyā. re nara! 1.
 capalā camakāra jima cañcala, nara bhava sūtra batāyā;
 añjali jala sama jagapati jinavara, āyu athira daraśāyā. re nara! 2.
 yauvana sandhyā rāga rūpa phuni, mala malina ati kāyā;
 viṇasata jāsa vilamba na rañcaka, jima taruvarakī chāyā. re nara! 3.
 saritā vega samāna jyuṃ sampatti, svāratha suta mita jāyā;
 āmiṣa lubdha mīna jima tina saṅga, moha jāla bandhāyā. re nara! 4.
 e sansāra asāra sara piṇa, yāmeṃ itanā pāyā;
 cidānanda prabhu sumarana seṭi, dharīe neha savāyā. re nara! 5.

śīyala vrata sajjhāya

śīyala samuṃ vrata ko nahīṃ, śrī jinavara ema bhākhe re.

सुख आपे जे शाश्वतां, दुर्गति पडता राखे रे. शीयल.१.
 व्रत पच्चक्खाण विना जुओ, नव नारद जेह रे.
 एक ज शीयल तणे बले, गया मुक्ते तेह रे. शीयल.२.
 साधु अने श्रावक तणां, व्रत छे सुख-दायी रे.
 शीयल विना व्रत जाणजो, कुशका सम भाई रे. शीयल.३.
 तरुवर मूल विना जिस्सो, गुण विण लाल कमान रे.
 शीयल विना व्रत एहवुं, कहे वीर भगवान रे. शीयल.४.
 नववाडे करी निर्मलुं, पहेलुं शीयल ज धरजो रे.
 उदय रत्न कहे ते पछी, व्रतनो खप करजो रे. शीयल.५.

अध्यात्म सज्जाय

आशा औरनकी क्या कीजे, ग्यान सुधारस पीजे; आशा...
 भटके द्वार द्वार लोकन के, कूकर आशाधारी;
 आत्म अनुभव रसके रसीया, ऊतरे न कबहुं खुमारी.... आशा.१.
 आशा दासीके जे जाये, ते जन जगके दासा;
 आशा दासी करे जे नायक, लायक अनुभव प्यासा..... आशा.२.
 मनसा प्याला प्रेम मसाला, ब्रह्म अग्नि परजाली;

sukha āpe je śāśvatā, durgati paḍatā rākhe re. śīyala.1.
 vrata paccakkhāṇa vinā juo, nava nārada jeha re.
 eka ja śīyala taṇe bale, gayā mukte teha re. śīyala.2.
 sādhu ane śrāvaka taṇā, vrata che sukha-dāyī re.
 śīyala vinā vrata jāṇajo, kuśakā sama bhāī re. śīyala.3.
 taruvara mūla vinā jisyo, guṇa viṇa lāla kamāna re.
 śīyala vinā vrata ehavu, kahe vīra bhagavāna re. śīyala.4.
 navavāḍe karī nirmalu, pahelu śīyala ja dharajo re.
 udaya ratna kahe te pachī, vratano khapa karajo re. śīyala.5.

adhyātma sajjhāya

āsā auranakī kyā kīje, gyāna sudhārāsa pīje; āsā...
 bhatake dvāra dvāra lokana ke, kūkara āsādhārī;
 ātama anubhava rasake rasīyā, ūtare na kabahu khumārī..... āsā.1.
 āsā dāsīke je jāye, te jana jagake dāsā;
 āsā dāsī kare je nāyaka, lāyaka anubhava pyāsā. āsā.2.
 manasā pyālā prema masālā, brahma agni parajāī;

तन भाठी अवटाइ पिये कस, जागे अनुभव लाली. आशा.३.
 अगम पीयाला पियो मतवाला, चीन्ने अध्यात्म वासा;
 आनंद घन चेतन व्है खेले, देखे लोक तमासा. आशा.४.

अध्यात्म सज्जाय

अवधू क्या मागुं गुनहीना, वे गुन गनि न प्रवीना अवधू.;
 गाय न जानुं बजाय न जानुं, न जानुं सुर सेवा;
 रीझ न जानुं रीझाय न जानुं, न जानुं पद सेवा.अवधू.१.
 वेद न जानुं किताब न जानुं, न लक्षन छंदा;
 तरकवाद विवाद न जानुं, न जानुं कवि फंदा.अवधू.२.
 जाप न जानुं जुवाब न जानुं, न जानुं कथा वाता;
 भाव न जानुं भगति न जानुं, जानुं न सीरा ताता.अवधू.३.
 ग्यान न जानुं विग्यान न जानुं, न जानुं भजनामां;
 आनंद घन प्रभु के घर द्वारे, रटन करुं गुण धामा.अवधू.४.



tana bhāṭhī avatāi piye kasa, jāge anubhava lālī. āśā.3.
 agama pīyālā piyo matavālā, cīnne adhyātama vāsā;
 ānanda ghana cetana vhai khele, dekhe loka tamāsā. āśā.4.

adhyātma sajjhāya

avadhū kyā māguṃ gunahīnā, ve guna gani na pravīnā avadhū.;
 gāya na jānuṃ bajāya na jānuṃ, na jānuṃ sura sevā;
 rījha na jānuṃ rījhāya na jānuṃ, na jānuṃ pada sevā. avadhū.1.
 veda na jānuṃ kitāba na jānuṃ, na lakṣana chandā;
 tarakavāda vivāda na jānuṃ, na jānuṃ kavi phandā. avadhū.2.
 jāpa na jānuṃ juvāba na jānuṃ, na jānuṃ kathā vātā;
 bhāva na jānuṃ bhagati na jānuṃ, jānuṃ na sīrā tātā. avadhū.3.
 gyāna na jānuṃ vigyāna na jānuṃ, na jānuṃ bhajanāmāṃ;
 ānanda ghana prabhu ke ghara dvāre, raṭana karuṃ guṇa dhāmā. avadhū.4.



અધ્યાત્મ સજ્જાયા

જગતના खेल છે खोटा, कदी नहीं थाय मन मोटा. जग.
 सदा છે दुःख मायामां, सदा सुख ध्यान छायामां;
 પ્રભુનું નામ સુખ આપે, પ્રભુનું નામ દુઃખ કાપે. જગ.૧.
 પ્રભુ ભક્તિ ન જો થાશે, તદા દિન દિન દુઃખ થાશે;
 जीभलडी गा जिनेश्वरने, हृदय तुं देवने स्मरने. जग.२.
 મુવા જે મોજમાં માતા, તર્યા જે દેવને ગાતા;
 जगतमां जन्म धार्यो तें, भजन विण जन्म हार्यो तें. जग.३.
 છેવટની આંખ મીંચાશે, તદા તું ખૂબ પસ્તાશે;
 हजी છે हाथमां बाजी, करी ले आत्मने राजी. जग.४.
 રમત ઘોડા ગમત ગાડી, સુંદર શય્યા અને લાડી;
 मलेलो भोग पण जाशे, पाछलथी कोई ते खाशे. जग.५.
 ગણી તું ફોક દુનિયાને, પ્રભુના ભવ્ય ગુણ ગાને;
 बुद्ध्यब्धि संतनो संगी, ग्रहे ते सुख गुणरंगी. जग.६.



adhyātma sajjhāya

jagatanā khela che khoṭā, kadī nahī_ thāya mana moṭā. jaga.
 sadā che duḥkha māyāmā_, sadā sukha dhyāna chāyāmā_;
 prabhunu_ nāma sukha āpe, prabhunu_ nāma duḥkha kāpe. jaga.1.
 prabhu bhakti na jo thāše, tadā dina dina duḥkha thāše;
 jībhaladī gā jineśvarane, hṛdaya tu_ devane smarane. jaga.2.
 muvā je mojamā_ mātā, taryā je devane gātā;
 jagatamā_ janma dhāryo te_, bhajana viṇa janma hāryo te_. jaga.3.
 chevaṭanī āṅkha mīncāše, tadā tu_ khūba pastāše;
 hajī che hāthamā_ bājī, karī le ātamane rājī. jaga.4.
 ramata ghoḍā gamata gādī, sundara śayyā ane lādī;
 malelo bhoga paṇa jāše, pāchalathī koī te khāše. jaga.5.
 gaṇī tu_ phoka duniyāne, prabhunā bhavya guṇa gāne;
 buddhyabdhi santano saṅgī, grahe te sukha guṇaraṅgī. jaga.6.



अध्यात्म सज्ज्ञाय

स्वप्ना जेवी दुनियादारी, कदी न तारी थनारी;
 दृष्टि खोलकर देखो हंसा, मिथ्या सब जगकी यारी. ... स्वप्ना.१.
 दर्पणमां प्रतिबिंब निहाली, श्वान भ्रांतिथी बहु भस्यो;
 जूठी माया जूठी काया, चेतन तेमां बहु धस्यो. स्वप्ना.२.
 निज छाया कूप-जलमां देखी, कूदी कूपे सिंह पड्यो;
 पर पोतानुं मानी चेतन, चार गतिमां रडवड्यो. स्वप्ना.३.
 छीपोमां रूपानी बुद्धि, मानी मूरख पस्तायो;
 जडमां सुखनी बुद्धि धारी, ज्यां त्यां चेतन बहु धायो. ... स्वप्ना.४.
 कुटुंब कबीलो मारो मानी, कीधां कर्मो बहु भारी;
 अंते तारुं थशे न कोई, समज समज मन संसारी. स्वप्ना.५.
 जन्म्या ते तो जरूर जाशे, अहींथी अंते परवारी;
 समज समज चेतन मन मेरा, बुद्धि सागर निर्धारि. स्वप्ना.६.



adhyātma sajjhāya

svapnā jevī duniyādārī, kadī na tāri thanārī;
 dr̥ṣṭi kholakara dekho haṁsā, mithyā saba jagakī yārī. svapnā.1.
 darpaṇamāṁ pratibimba nihālī, śvāna bhrāntithī bahu bhasyo;
 jūṭhī māyā jūṭhī kāyā, cetana temāṁ bahu dhasyo. svapnā.2.
 nija chāyā kūpa-jalamāṁ dekhi, kūdī kūpe siṁha paḍyo;
 para potānuṁ mānī cetana, cāra gatimāṁ raḍavaḍyo. svapnā.3.
 chīpomāṁ rūpānī buddhi, mānī mūrakha pastāyo;
 jaḍamāṁ sukhānī buddhi dhārī, jyāṁ tyāṁ cetana bahu dhāyo. svapnā.4.
 kuṭumba kabīlo māro mānī, kīdhāṁ karmo bahu bhārī;
 ante tāruṁ thaśe na koī, samaja samaja mana sansārī. svapnā.5.
 janmyā te to jarūra jāśe, ahiṁthī ante paravārī;
 samaja samaja cetana mana merā, buddhi sāgara nirdhārī. svapnā.6.



प्रतिक्रमण सूत्र

सह विवेचन

भाग - २ [हिन्दी - अंग्रेजी]



निर्वाण सागर

Pratikramaṇa Sūtra

With Explanation

Part - 2 [Hindī - English]



Nirvāna Sāgara

***पच्चक्खाण के सूत्र**

[सूचना :- १. पच्चक्खाण लेने वाला व्यक्ति पच्चक्खाण लेते समय पच्चक्खाइ / वोसिरइ के स्थान पर पच्चक्खामि / वोसिरामि बोले.

२. * जो पच्चक्खाण हो, वही बोलें.]

अ. प्रभात के पच्चक्खाण**१. नमुक्कारसहिअं-मुट्ठिसहिअं**

उग्गए सूरे नमुक्कार-सहिअं, मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं- असणं, पाणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिआ-गारेणं वोसिरइ.

***sūtras of the paccakkhāṇa**

[Note :-- 1. The person taking paccakkhāṇa should say paccakkhāmi / vosirāmi in place of paccakkhāi / vosirai while taking the paccakkhāṇa.

2. * Say only that, which the paccakkhāṇa is.]

A. Morning paccakkhāṇas**1. namukkārasahiam-muṭṭhisahiam**

uggae sūre namukkāra-sahiam, muṭṭhi-sahiam paccakkhāi cauvihampi āhāram- asaṇam, pāṇam, khāimam, sāimam annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam, mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiā-gāreṇam vosirai.

२. पोरिसी / साङ्ढ-पोरिसी

उग्गए सूरु *पोरिसिं / साङ्ढ-पोरिसिं, मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ,
उग्गए सूरु चउव्विहंपि आहारं- असणं, पाणं, खाइमं, साइमं
अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, पच्छन्न-कालेणं, दिसा-मोहेणं,
साहु-वयणेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

३. पुरिमड्ढ / अवड्ढ

सूरु उग्गए *पुरिमड्ढ / अवड्ढ मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ
चउव्विहंपि आहारं- असणं, पाणं, खाइमं, साइमं
अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, पच्छन्न-कालेणं,
दिसा-मोहेणं, साहु-वयणेणं, महत्तरा-गारेणं,
सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

2. porisī / sāḍḍha-porisī

uggae sūre *porisim / sāḍḍha-porisim, mutṭhi-sahiam paccakkhāi,
uggae sūre cauvvihampi āhāram- asanam, paṇam, khāimam, sāimam
annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam, pacchanna-kāleṇam, disā-moheṇam,
sāhu-vayaṇeṇam, mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiya-gāreṇam vosirai.

3. purimaḍḍha / avadḍha

sūre uggae *purimaḍḍha / avadḍha mutṭhi-sahiam paccakkhāi
cauvvihampi āhāram- asanam, paṇam, khāimam, sāimam
annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam, pacchanna-kāleṇam,
disā-moheṇam, sāhu-vayaṇeṇam, mahattarā-gāreṇam,
savva-samāhi-vattiya-gāreṇam vosirai.

४. एगासणा / बियासणा

उग्गाए सूरे *नमुक्कार-सहिअं / पोरिसिं / साड्ढ-पोरिसिं /
 सूरे उग्गाए पुरिमड्ढ / अवड्ढ मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ उग्गाए सूरे
 चउव्विहंपि आहारं- असणं, पाणं, खाइमं, साइमं
 अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, पच्चन्न-कालेणं,
 दिसा-मोहेणं, साहु-वयणेणं, महत्तरा-गारेणं,
 सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं विगाईओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणा-भोगेणं,
 सहसा-गारेणं, लेवा-लेवेणं, गिहत्थ-संसट्ठेणं,
 उक्खित्त-विवेगेणं, पडुच्च-मक्खिएणं, पारिट्ठावणिया-गारेणं,
 महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं *एगासणं /
 बियासणं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं- असणं, खाइमं, साइमं
 अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, सागारिया-गारेणं,
 आउंटण-पसारेणं, गुरु-अब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणिया-गारेणं,
 महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं, पाणस्स लेवेण वा,
 अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहलेण वा, ससित्थेण वा असित्थेण वा
 वोसिरइ.

4. egāsaṇā / biyāsaṇā

uggae sūre *namukkāra-sahiam / porisim / sādḍha-porisim /
 sūre uggae purimaḍḍha / avaddha mutṭhi-sahiam paccakkhāi uggae sūre
 cauvihampi āhāram- asañam, pāṇam, khāimam, sāimam
 annatthaṇā-bhogaṇam, sahasā-gāreṇam, pacchanna-kāleṇam,
 disā-mohēṇam, sāhu-vayaṇeṇam, mahattarā-gāreṇam,
 savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam vigaīo paccakkhāi annatthaṇā-bhogaṇam,
 sahasā-gāreṇam, levā-leveṇam, gihattha-sansatṭheṇam,
 ukkhitta-vivegaṇam, paḍucca-makkhiēṇam, pāritṭhāvaṇiyā-gāreṇam,
 mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam *egāsaṇam /
 biyāsaṇam paccakkhāi tivihampi āhāram- asañam, khāimam, sāimam
 annatthaṇā-bhogaṇam, sahasā-gāreṇam, sāgāriyā-gāreṇam,
 āuntāṇa-pasāreṇam, guru-abbhutṭhāṇeṇam, pāritṭhāvaṇiyā-gāreṇam,
 mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam, pāṇassa leveṇa vā,
 aleveṇa vā, accheṇa vā, bahaleṇa vā, sasitṭheṇa vā asitṭheṇa vā
 vosirai.

५. आयंबिल / नीवी

उग्गए सूरे *नमुक्कार-सहिअं / पोरिसिं / साड्ड-पोरिसिं /
 सूरे उग्गए पुरिमड्ड / अवड्ड मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ उग्गए सूरे
 चउव्विहंपि आहारं- असणं, पाणं, खाइमं, साइमं,
 अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा गारेणं, पच्छन्न-कालेणं,
 दिसा-मोहेणं, साहु-वयणेणं, महत्तरा-गारेणं,
 सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं, *आयंबिलं / निव्वि विगईओ पच्चक्खाइ
 अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, लेवा-लेवेणं,
 गिहत्थ-संसट्ठेणं, उक्खित्त-विवेगेणं, पारिट्ठावणिआ-गारेणं,
 महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिआ-गारेणं, एगासणं पच्चक्खाइ
 तिविहंपि आहारं- असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणा-भोगेणं,
 सहसा-गारेणं, सागरिया-गारेणं, आउंण-पसारें,
 गुरु-अब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणिआ-गारेणं, महत्तरा-गारेणं,
 सव्व-समाहि-वत्तिआ-गारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा,
 अच्छेण वा, बहलेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ.

5. āyambila / nīvī

uggae sūre *namukkāra-sahiam / porisim / sādḍha-porisim /
 sūre uggae purimaddha / avaddha mutṭhi-sahiam paccakkhāi uggae sūre
 cauvvihampi āhāram- asañam, pāṇam, khāimam, sāimam,
 annatthaṇā-bhogaṇam, sahasā gāreṇam, pacchanna-kāleṇam,
 disā-mohaṇam, sāhu-vayaṇeṇam, mahattarā-gāreṇam,
 savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam, *āyambilaṃ / nivvi vigaīo paccakkhāi
 annatthaṇā-bhogaṇam, sahasā-gāreṇam, levā-leveṇam,
 gihattha-sansatṭheṇam, ukkhitta-vivegaṇam, pāritṭhāvaṇiyā-gāreṇam,
 mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam, egāsaṇam paccakkhāi
 tivihampi āhāram- asañam, khāimam, sāimam annatthaṇā-bhogaṇam,
 sahasā-gāreṇam, sāgariyā-gāreṇam, āuntāna-pasāreṇam,
 guru-abbhuttāṇeṇam, pāritṭhāvaṇiyā-gāreṇam, mahattarā-gāreṇam,
 savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam, pāṇassa leveṇa vā, aleveṇa vā,
 accheṇa vā, bahaleṇa vā, sasittheṇa vā, asittheṇa vā vosirai.

६. तिविहार उपवास / **पाणहार

सूरे उग्गाए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं-
 असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं,
 पारिट्ठावणिया-गारेणं, महत्तरा-गारेणं,
 सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं, **पाणहार *पोरिसिं / साड्ढ-पोरिसिं
 सूरे उग्गाए पुरिमड्ढ / अवड्ढ मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ,
 अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, पच्छन्न-कालेणं,
 दिसा-मोहेणं, साहु-वयणेणं, महत्तरा-गारेणं,
 सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा,
 अच्छेण वा, बहलेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ.
 [** पाणाहार का पच्चक्खाण यहां से लें.]

७. चउविहार उपवास

सूरे उग्गाए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं-
 असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा-भोगेणं,

6. tividhāra upavāsa / **pāṇahāra

sūre uggae abbhattatṭham paccakkhāi tividhampi āhāram-
 asaṇam, khāimam, sāimam annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam,
 pāritṭhāvaṇiyā-gāreṇam, mahattarā-gāreṇam,
 savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam, **pāṇahāra *porisim / sādḍha-porisim /
 sūre uggae purimaḍḍha / avaḍḍha muṭṭhi-sahiam paccakkhāi,
 annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam, pacchanna-kāleṇam,
 disā-mohēṇam, sāhu-vayaṇeṇam, mahattarā-gāreṇam,
 savva-samāhi-vattiyā-gāreṇam, pāṇassa leveṇa vā, aleveṇa vā,
 accheṇa vā, bahaleṇa vā, sasittheṇa vā, asittheṇa vā vosirai.
 [** Take the paccakkhāṇa of pāṇahāra from here.]

7. cauvihāra upavāsa

sūre uggae abbhattatṭham paccakkhāi cauvvihampi āhāram-
 asaṇam, pāṇam, khāimam, sāimam, annatthaṇā-bhogeṇam,

सहसा-गारेणं, पारिट्ठावणिया-गारेणं, महत्तरा-गारेणं,
सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

आ. शाम के पच्चक्खाण

१. पाणहार

पाणहार दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ अन्नत्थणा-भोगेणं,
सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं
वोसिरइ.

२. चउविहार उपवास

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं-
असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा-भोगेणं,
सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं
वोसिरइ.

sahasā-gāreṇaṃ, pāritṭhāvaṇiyā-gāreṇaṃ, mahattarā-gāreṇaṃ,
savva-samāhi-vattiyā-gāreṇaṃ vosirai.

B. Evening paccakkhāṇas

1. pāṇahāra

pāṇahāra divasa-carimam paccakkhāi annatthaṇā-bhogeṇaṃ,
sahasā-gāreṇaṃ, mahattarā-gāreṇaṃ, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇaṃ
vosirai.

2. cauvihāra upavāsa

sūre uggae abbhataṭṭhaṃ paccakkhāi cauvvihampi āhāraṃ-
asaṇaṃ, pāṇaṃ, khāimaṃ, sāimaṃ, annatthaṇā-bhogeṇaṃ,
sahasā-gāreṇaṃ, mahattarā-gāreṇaṃ, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇaṃ
vosirai.

३. चउव्विहार

दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं-
असणं, पाणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणा- भोगेणं,
सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं
वोसिरइ.

४. तिविहार

दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं-
असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं,
महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

५. दुविहार

दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ दुविहंपि आहारं-
असणं, खाइमं अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं,

3. cauvvihāra

divasa-carimam paccakkhāi cauvvihampi āhāram-
asaṇam, pāṇam, khāimam, sāimam annatthaṇā- bhogeṇam,
sahasā-gāreṇam, mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiya-gāreṇam
vosirai.

4. tivihāra

divasa-carimam paccakkhāi tivihampi āhāram-
asaṇam, khāimam, sāimam annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam,
mahattarā-gāreṇam, savva-samāhi-vattiya-gāreṇam vosirai.

5. duvihāra

divasa-carimam paccakkhāi duvihampi āhāram-
asaṇam, khāimam annatthaṇā-bhogeṇam, sahasā-gāreṇam,

महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

इ. देसावगासिक

देसावगासिअं उवभोगं परिभोगं पच्चक्खाइ अन्नत्थणा-भोगेणं,
सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं
वोसिरइ.

ई. पच्चक्खाण पारने के सूत्र

१. एगासणादि

उग्गए सूरे *नमुक्कार-सहिअं / पोरिसीं / साड्ढ-पोरिसीं / सूरे
उग्गए पुरिमड्ढ / अवड्ढ मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाण किया
चउविहार *आयंबिल / नीवी / एगासणा / बियासणा
पच्चक्खाण किया तिविहार, पच्चक्खाण फासिअं, पालिअं, सोहिअं,
तीरियं, किट्ठिअं, आराहिअं, जं च न आराहिअं

mahattarā-gāreṇaṃ, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇaṃ vosirai.

C. desāvagāsika

desāvagāsiam uvabhogam paribhogam paccakkhāi annatthanā-bhogeṇaṃ,
sahasā-gāreṇaṃ, mahattarā-gāreṇaṃ, savva-samāhi-vattiyā-gāreṇaṃ
vosirai.

D. sūtras for completing the paccakkhāṇa

1. egāsaṇā etc.

uggae sūre *namukkāra-sahiam / porisim / sādḍha-porisim /
sūre uggae purimaḍḍha / avaḍḍha mutṭhi-sahiam paccakkhāṇa kiyā
cauvihāra *āyambila / nīvī / egāsaṇā / biyāsaṇā
paccakkhāṇa kiyā tivihāra, paccakkhāṇa phāsiam, pāliam, sohiam,
tīriyam, kiṭṭiam, ārahiam, jam ca na ārahiam

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.

२. तिविहार उपवास

सूरे उग्गए उपवास किया तिविहार *पोरिसीं / साङ्ढ-पोरिसीं /
पुरिमड्ढ / अवड्ढ मुट्ठि- सहिअं पच्चक्खाण किया पाणहार,
पच्चक्खाण फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तीरिअं, किट्ठिअं,
आराहिअं जं च न आराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.

tassa micchā mi dukkaḍaṃ.

2. tivihāra upavāsa

sūre uggae upavāsa kiya tivihāra *porisīm / sāḍḍha-porisīm /
purimaḍḍha / avaddha mutṭhi- sahiam paccakkhāṇa kiya pāṇahāra,
paccakkhāṇa phāsiam, pāliam, sohiam, tīriam, kittīam,
ārāhiām jam ca na ārāhiām, tassa micchā mi dukkaḍaṃ.

मुहपति के पडिलेहण के ५० बोल

सूत्र अर्थ तत्त्व करी सदहं;
 सम्यक्त्व मोहनीय, मिश्र मोहनीय, मिथ्यात्व मोहनीय परिहरुं;
 काम राग, स्नेह राग, दृष्टि राग परिहरुं;
 सुदेव, सुगुरु, सुधर्म आदरुं;
 कुदेव, कुगुरु, कुधर्म परिहरुं;
 ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदरुं;
 ज्ञान-विराधना, दर्शन-विराधना, चारित्र-विराधना परिहरुं;
 मनो-गुप्ति, वचन-गुप्ति काय-गुप्ति आदरुं;
 मनो-दण्ड, वचन-दण्ड, काय-दण्ड परिहरुं;
 हास्य, रति, अरति परिहरुं;
 भय, शोक, जुगुप्सा परिहरुं;
 कृष्ण-लेश्या, नील-लेश्या, कापोत-लेश्या परिहरुं;
 रस-गारव, ऋद्धि-गारव, शाता-गारव परिहरुं;
 माया-शल्य, नियाण-शल्य, मिथ्यात्व-शल्य परिहरुं;
 क्रोध, मान परिहरुं;
 माया, लोभ परिहरुं;

50 Words for the paḍilehaṇa of the muhapatti

sūtra artha tattva karī saddahūṃ;
 samyaktva mohaniya, miśra mohaniya, mithyātva mohaniya pariharūṃ;
 kāma rāga, sneha rāga, dṛṣṭi rāga pariharūṃ;
 sudeva, suguru, sudharma ādarūṃ;
 kudeva, kuguru, kudharma pariharūṃ;
 jñāna, darśana, cāritra ādarūṃ;
 jñāna-virāadhanā, darśana-virāadhanā, cāritra-virāadhanā pariharūṃ;
 mano-gupti, vacana-gupti kāya-gupti ādarūṃ;
 mano-daṇḍa, vacana-daṇḍa, kāya-daṇḍa pariharūṃ;
 hāsyā, rati, arati pariharūṃ;
 bhaya, śoka, jugupsā pariharūṃ;
 kṛṣṇa-leśyā, nīla-leśyā, kāpota-leśyā pariharūṃ;
 rasa-gārava, ṛddhi-gārava, śātā-gārava pariharūṃ;
 māyā-śalya, niyāṇa-śalya, mithyātva-śalya pariharūṃ;
 krodha, māna pariharūṃ;
 māyā, lobha pariharūṃ;

पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय की रक्षा करुं;
वायु काय, वनस्पति काय, त्रस काय की जयणा करुं.

pr̥thvīkāya, apkāya, teukāya kī rakṣā karū;
vāyu kāya, vanaspati kāya, trasa kāya kī jayaṇā karū.

विधियाँ

१. सांकेतिक शब्द एवं सूचनाएँ

- [१] खमा... = पंचांग प्रणिपात [वि. नं. ५] करते हुए खमासमण सूत्र [सूत्र नं.३] कहें.
- [२] इच्छा... = इच्छाकारेण संदिसह भगवन्.
- [३] इरियावहियं प्रतिक्रमण = खमा..., इरियावहियं [सूत्र नं.५], तस्स उत्तरी [सूत्र नं.६], अन्नत्थ सूत्र [सूत्र नं.७] कहकर एक लोगस्स [सूत्र नं.८] का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, लोगस्स सूत्र कहें.
- [४] इच्छकारि... = इच्छकारि भगवन् पसाय करी.
- [५] लोगस्स का काउस्सग्ग = लोगस्स सूत्र का काउस्सग्ग [अन्य कुछ न लिखा हो तो चंदेसु निम्मलयरा तक] करें. लोगस्स सूत्र न आता हो तो चार नवकार का काउस्सग्ग करें.
- [६] मुहपति का पडिलेहण ५० बोल से करें. [सूत्र नं. ६४]
- [७] नमोर्हत् सूत्र [सूत्र नं.१६] पुरुष ही बोलें; स्त्रियां न बोलें.

Procedures

1. Notes and key words

- [1] khamā... = Say khamāsamaṇa sūtra [sūtra no. 3] performing pañcāṅga praṇipāta [Pic. no. 5].
- [2] icchā... = icchākāreṇa sandisaha bhagavan.
- [3] iriyāvahiyaṃ pratikramaṇa = saying khamā..., iriyāvahiyaṃ [sūtra no. 5], tassa uttari [sūtra no. 6], annattha sūtra [sūtra no. 7], performing the kāussagga of one logassa [sūtra no. 8], completing the kāussagga, say logassa sūtra.
- [4] icchakāri... = icchakāri bhagavan pasāya karī.
- [5] kāussagga of logassa = Perform the kāussagga of logassa sūtra [upto candesu nimmalayarā if not mentioned otherwise]. Perform the kāussagga of four navakāra if logassa sūtra is not coming.
- [6] Perform the paḍilehaṇa of the muhapatti with 50 words [sūtra no. 64].
- [7] Only men shall say namorhat sūtra [sūtra no. 16]; women shall not say it.

[८] मांडली में **प्रतिक्रमण** आदि क्रिया करते हो तो **गुरु भगवंत** से [उनकी अनुपस्थिति में वडील से] आदेश ले कर विधि के **सूत्र** आदि बोलें. **सूत्र** बोलने का आदेश मिलने पर **तहति** कह कर आदेश को स्वीकार करें.

[९] **गुरु भगवंत** के साथ **प्रतिक्रमण** आदि क्रिया करते वक्त, **गुरु भगवंत** के **काउस्सग्ग** पारने के बाद शेष सभी **काउस्सग्ग** पारे.

[१०] प्रत्येक विधि पूरी करने के बाद, **खमा...** देकर दायां हाथ **चरवले** या **कटासणे** पर रखकर, विधि करते जो कोई अविधि हुई हो, उन सबका **मिच्छा मि दुक्कडं** कहें.

[११] जहाँ १] देवसिअ २] देवसिओ ३] देवसिअं / देसिअं ४] देवसिआए या ५] दिवसो वइक्कंतो शब्द हो, वहाँ राइअ / पाक्षिक / चउमासी / संवच्छरी **प्रतिक्रमण** में क्रमशः

१] राइअ / पक्खिअ / चउमासिअ / संवच्छरिअ;

२] राइओ / पक्खिओ / चउमासिओ / संवच्छरिओ;

३] राइअं / पक्खिअं / चउमासिअं / संवच्छरिअं;

४] राइआए / पक्खिआए / चउमासिआए / संवच्छरिआए एवं

५] राइ वइक्कंता / पक्खो वइक्कंतो / चउमासी वइक्कंता /

[8] Say the **sūtras** of the procedure after taking the permission from **guru bhagavanta** [from elder in their absence] if the rites like **pratikramaṇa** is being performed in group. On obtaining the permission to say the **sūtra**, accept the permission by saying **tahatti**.

[9] Rest of all should complete the **kāussagga** after completion of **kāussagga** by **guru bhagavanta** while performing the rites like **pratikramaṇa** with **guru bhagavanta**.

[10] After completing every procedure, offering **khamā...**, keeping the right hand over the **caravalā / kaṭāsaṇā**, say **vidhi karate jo koī avidhi huī ho, una sabakā micchā mi dukkaḍam**.

[11] Where the word 1] **devasia**; 2] **devasio**; 3] **devasiam / desiam**; 4] **devasiāe** or 5] **divaso vaikkanto** is present; there say the word

1] **rāia / pakkhia / caumāsia / samvaccharia**;

2] **rāio / pakkhio / caumāsio / samvacchario**;

3] **rāiam / pakkhiam / caumāsiam / samvacchariam**;

4] **rāiāe / pakkhiāe / caumāsīāe / samvacchariāe** and

5] **rāi vaikkantā / pakkho vaikkanto / caumāsī vaikkantā** /

संवच्छरो वड्वकंतो

शब्द कहें.

- [१२] १] सकल-कुशल वल्ली, चैत्य-वन्दन, जं किंचि [सूत्र नं.१२], नमुत्थु णं [सूत्र नं.१३] योग मुद्रा में [चि. नं. ८,९,१०]; जावंति चेइ [सूत्र नं.१४], जावंत के वि [सूत्र नं.१५] मुक्ता-शुक्ति मुद्रा में [चि. नं. ११,१२,१३]; नमोर्हत् [सूत्र नं.१६], स्तवन एवं उवसग्ग-हरं स्तोत्र [सूत्र नं.१७] योग मुद्रा में [चि. नं. ८,९,१०];
- २] जय वीयराय सूत्र [सूत्र नं.१८] की गाथा नं. १ और २ मुक्ता-शुक्ति मुद्रा में [चि. नं. ११,१२,१३] और गाथा नं. ३,४ और ५ योग मुद्रा में [चि. नं. ८,९,१०];
- ३] वंदितु सूत्र [सूत्र नं.३५] [गाथा नं. ४३ तक] [नवकार, करेमि भंते, इच्छामि पडिक्कमिउं? सूत्र के साथ] वीरासन में [चि. नं. १४,१५];
- ४] काउस्सग्ग कायोत्सर्ग मुद्रा में [चि. नं. ७];
- ५] सज्झाय [नवकार के साथ] बैठकर [चि. नं. ३];
- ६] एवं शेष सभी सूत्र [अन्य कुछ न कहा हो तो] खड़े होकर [चि. नं. ४] कहें.

[१३] सभी आदेश खड़े होकर लें एवं सभी क्रियाएं योग्य मुद्राओं में आदर

samvaccharo vaikkanto

respectively in rāia / pākṣika / caumāsī / samvaccharī pratikramaṇa.

- [12] Say 1] sakala-kuśala valli, caitya-vandana, jam kiñci [sūtra no. 12], namutthu ṇam [sūtra no. 13] in yoga mudrā; [Pic. no. 8,9,10]; jāvanti cei [sūtra no.14], jāvanta ke vi [sūtra no.15] in muktā-śukti mudrā [Pic. no. 11,12,13]; namorhat [sūtra no. 16], stavana and uvasagga-haram stotra [sūtra no. 17] in yoga mudrā; [Pic. no. 8,9,10]
- 2] Stanza no. 1 and 2 of jaya vīyarāya sūtra [sūtra no.18] in muktā-śukti mudrā [Pic. no. 11,12,13] and stanza no. 3, 4 and 5 in yoga mudrā [Pic. no. 8,9,10];
- 3] vandittu sūtra [sūtra no. 35] [upto stanza no. 43] [with navakāra, karemi bhante, icchāmi paḍikkamiu? sūtra] in vīrāsana [Pic. no. 14,15];
- 4] kāussagga in kāyotsarga mudrā [Pic. no. 7];
- 5] sajjhāya [with navakāra] in sitting posture [Pic. no. 3] and
- 6] All other sūtras [if not mentioned other wise] in the standing posture [Pic. no. 4].
- [13] Standing up, take all the commands and perform all the rites with respect

पूर्वक करें.

[१४] विधियों की विशेष जानकारी गुरु महाराज या अन्य किसी जानकार से लें.

२. गुरु-वन्दन की विधि

[१] प्रथम दो खमा... देकर, इच्छकार सुह राइ सूत्र कहें.

[२] फिर [पदस्थ साधु हो तो, एक खमा... देकर,] अब्भुट्ठिओ मि सूत्र कहें.

[३] फिर यदि पच्चक्खाण लेना हो तो, एक खमा... देकर इच्छकारि... पच्चक्खाण देनाजी कहकर, पच्चक्खाण लें.

३. चैत्य-वन्दन की विधि

[१] प्रथम इरियावहियं प्रतिक्रमण करें.

[२] फिर तीन खमा... देकर, इच्छा... चैत्य-वन्दन करुं? इच्छं कहकर, सकल-कुशल-वल्ली, चैत्य-वन्दन, जं किंचि, नमुत्थु णं,

in proper posture.

[14] Have more knowledge about the procedures from **guru mahārāja** or any other who knows.

2. Procedure of guru-vandana

[1] First offering two **khamā...**, say **icchakāra suha rāi sūtra**.

[2] Then [if the saint is a **padastha** (an epithet holder), offering **khamā...**] Say **abbhuttthio mi sūtra**.

[3] Then if **paccakkhāṇa** is to be taken, offering one **khamā...**, saying **icchakāri... paccakkhāṇa denājī**, take the **paccakkhāṇa** [vow] .

3. Procedure of caitya-vandana

[1] First perform **iriyāvahiyaṃ pratikramaṇa**.

[2] Then offering three **khamā...**, saying, **icchā... caitya-vandana karu?** **iccham**, say **sakala-kuśala-vallī**, **caitya-vandana**, **jaṃ kiñci**, **namutthu**

जावंति-चेइ, खमा... जावंत के वि, नमोर्हत्, स्तवन एवं जय वीयराय सूत्र कहें.

- [३] फिर खड़े होकर, अरिहंत-चेइआणं सूत्र कहकर, एक नवकार का काउस्सग्ग करके, काउस्सग्ग पारकर, नमोर्हत् कहकर, एक स्तुति कहें.

४. सामायिक लेने की विधि

- [१] स्थापनाचार्यजी न हों तो, स्थापनाचार्यजी को स्थापित करने के लिये, प्रथम ऊंचे आसन पर पुस्तकादि रत्न-त्रयी का उपकरण रखकर; कटासणा, मुहपत्ति, चरवला लेकर; शुद्ध वस्त्र पहनकर; स्थान का प्रमार्जन कर; कटासणे पर बैठ कर; मुहपत्ति को बायें हाथ में मुख के सन्मुख रखकर एवं दायें हाथ को स्थापनाचार्यजी के सन्मुख रखकर [चि. नं. १], एक नवकार एवं पंचिंदिय सूत्र कहें.

- [२] फिर इरियावहियं प्रतिक्रमण करें.

- [३] फिर खमा... इच्छा... सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं कहकर, मुहपत्ति का पडिलेहण करें [चि. नं. २०-४०].

ṇam, jāvaṇti-cei, khamā... jāvaṇta ke vi, namorhat, stavana and jaya vīyarāya sūtra.

- [3] Then standing up, saying arihanta-ceiāṇam sūtra, performing the kāussagga of one navakāra, completing the kāussagga, saying namorhat, say a stuti.

4. Procedure of taking the sāmāyika

- [1] If there are no sthāpanā-cāryajī, to consecrate the sthāpanā-cāryajī, first keeping an article of three gems like book on a high place, taking kaṭāsaṇā, muhapatti, caravalā; wearing washed cloths; cleaning the place, sitting on the kaṭāsaṇā; keeping the muhapatti in left hand before the mouth and right hand before the sthāpanā-cāryajī [Pic. no. 1], say one navakāra and pañcīndiya sūtra.

- [2] Then perform iriyāvahiyam pratikramaṇa.

- [3] Then saying khamā... icchā... sāmāyika muhapatti paḍilehu? iccham, perform the paḍilahēṇa of the muhapatti [Pic. no. 20-40].

- [४] फिर खमा... इच्छा... सामायिक संदिसाहुं? इच्छं कहें.
 [५] फिर खमा... इच्छा... सामायिक ठाउं? इच्छं कहकर, हाथ जोड़कर, एक नवकार गिनकर, इच्छकारि... सामायिक दंडक उच्चरावोजी कहें.
 [६] गुरु-महाराज [न हों तो सामायिक में स्थित बडील गृहस्थ या स्वयं] करेमि भंते सूत्र कहें.
 [७] फिर खमा... इच्छा... बेसणे संदिसाहुं? इच्छं कहें.
 [८] फिर खमा... इच्छा... बेसणे ठाउं? इच्छं कहें.
 [९] फिर खमा... इच्छा... सज्झाय संदिसाहुं? इच्छं कहें.
 [१०] फिर खमा... इच्छा... सज्झाय करुं? इच्छं कहकर, पावों पर बैठकर, हाथ जोड़कर, तीन नवकार गिनें.
 [११] फिर दो घड़ी [४८ मिनट] तक स्वाध्याय आदि करें.

५. सामायिक पारने की विधि

- [१] प्रथम इरियावहियं प्रतिक्रमण करें.
 [२] फिर खमा... इच्छा... मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं कहकर, मुहपत्ति

- [4] Then say khamā... icchā... sāmāyika sandisāhuṃ? iccham.
 [5] Then saying khamā... icchā... sāmāyika ṭhāuṃ? iccham; folding the hands, counting one navakāra, say icchakāri... sāmāyika daṇḍaka uccarāvoḥī.
 [6] guru-mahārāja [if not present, elder house holder present in the sāmāyika or himself] shall say karemi bhante sūtra.
 [7] Then say khamā... icchā... besaṇe sandisāhuṃ? iccham.
 [8] Then say khamā... icchā... besaṇe ṭhāuṃ? iccham.
 [9] Then say khamā... icchā... sajjhāya sandisāhuṃ? iccham.
 [10] Then saying khamā... icchā... sajjhāya karuṃ? iccham, sitting on the feet, folding hands, count three navakāra.
 [11] Then carry on self-recitation etc. for two ghaṭī [48 minutes] .

5. Procedure of completing the sāmāyika

- [1] First perform iriyāvahiyaṃ pratikramaṇa.
 [2] Then saying khamā... icchā... muhapatti paḍilehuṃ? iccham, perform the

का पडिलेहण करें.

[३] फिर खमा... इच्छा... सामायिक पारुं? यथाशक्ति कहें.

[४] फिर खमा... इच्छा... सामायिक पार्युं? तहत्ति कहकर, दायां हाथ चरवले / कटासणे पर रखकर, नवकार एवं सामाइय-वय-जुत्तो सूत्र कहें.

[५] फिर स्थापनाचार्यजी को स्थापित किया हो तो, दायां हाथ को स्वयं के सन्मुख रखकर एक नवकार गिनें और पुस्तकादि का उत्थापन करें [मद्रा नं. २].

६. देव-वन्दन की विधि

[१] प्रथम इरियावहियं प्रतिक्रमण करें.

[२] फिर खमा... इच्छा... चैत्य-वन्दन करुं? इच्छं कहकर, सकल-कुशल-वल्ली, चैत्य-वन्दन, जं किंचि, नमुत्थु णं तथा जय-वीराराय सूत्र [आभव-मखंडा तक] कहें.

[३] फिर खमा... इच्छा... चैत्य-वन्दन करुं? इच्छं कहकर, दूसरा चैत्य-वन्दन, जं किंचि, नमुत्थु णं सूत्र कहकर—

padilehaṇa of the muhapatti.

[3] Then say khamā... icchā... sāmāyika pāruṃ? yathāśakti.

[4] Then saying khamā... icchā... sāmāyika pāryuṃ? tahatti, keeping the right hand on caravalā / kaṭāsaṇā, say navakāra and sāmāiya-vaya-jutto sūtra.

[5] Then if the sthāpanācāryajī are consecrated one, keeping the right hand before himself, say one navakāra and take the book etc. [Pic. no. 2].

6. Procedure of deva-vandana

[1] First perform iriyāvahiyaṃ pratikramaṇa.

[2] Then saying khamā... icchā... caitya-vandana karuṃ? iccham, say sakala-kuśala-vallī, caitya-vandana, jaṃ kiñci, namutthu ṇaṃ, jaya-vīrārāya sūtra [upto ābhava-makhaṇḍā].

[3] Then saying khamā... icchā... caitya-vandana karuṃ? iccham, saying second caitya-vandana, jaṃ kiñci, namutthu ṇaṃ sūtra—

[४] अरिहंत-चेइआणं सूत्र कहकर, एक नवकार का काउस्सग कर, काउस्सग पारकर, नमोर्हत् एवं पहली स्तुति कहकर, लोगस्स सूत्र कहें.

[५] फिर सव्व-लोए अरिहंत-चेइआणं सूत्र [शुरुआत में सव्व-लोए शब्द के साथ अरिहंत-चेइआणं सूत्र] [सूत्र नं. १९] कहकर, एक नवकार का काउस्सग कर, काउस्सग पारकर, दूसरी स्तुति कहकर—

[६] पुक्खर-वर सूत्र कहकर, एक नवकार का काउस्सग कर, काउस्सग पारकर, तीसरी स्तुति कहकर, सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र कहें.

[७] फिर वेयावच्च-गराणं सूत्र कहकर, एक नवकार का काउस्सग कर, काउस्सग पारकर, नमोर्हत् एवं चौथी स्तुति कहें.

[८] फिर नमुत्थु णं सूत्र कहें.

[९] फिर अरिहंत-चेइआणं आदि सूत्र कहकर पूर्व के अनुसार दूसरी बार चार स्तुतियां कहें [क्रम संख्या ४ से ७].

[१०] फिर नमुत्थु णं, जावंति चेइ, खमा..., जावंत के वि, नमोर्हत्, स्तवन एवं जय वीयराय सूत्र [आभव-मखंडा तक] कहें.

[११] फिर खमा... इच्छा... चैत्यवन्दन करुं? इच्छं कहकर, तीसरा

[4] Saying arihanta-ceiāṇam sūtra, performing the kāussagga of one navakāra, completing the kāussagga, saying namorhat and first eulogy, say logassa.

[5] Then saying savva-loe arihanta-ceiāṇam sūtra [arihanta-ceiāṇam sūtra along with the word savva-loe in the begining] [sūtra no. 19], performing the kāussagga of one navakāra, completing the kāussagga, saying the second eulogy--

[6] Saying pukkara-vaṇa sūtra, performing the kāussagga of one navakāra, completing the kāussagga, saying the third eulogy, say siddhāṇam buddhāṇam sūtra.

[7] Then saying veyāvacca-garāṇam sūtra, performing the kāussagga of one navakāra, completing the kāussagga, say namorhat and the fourth eulogy.

[8] Then say namutthu ṇam sūtra.

[9] Then saying arihanta-ceiāṇam sūtra etc. say four eulogies for second time as before [serial no. 4 to 7] .

[10] Then say namutthu ṇam, jāvaṇti cei, khamā..., jāvaṇta ke vi, namorhat, stavana and jaya vīyārāya sūtra [upto ābhava-makhaṇḍā] .

[11] Then saying khamā... icchā... caitya-vandana karuṃ? iccham, say third

चैत्यवन्दन, जं किंचि, नमुत्थु णं एवं जय वीयराय सूत्र [संपूर्ण] कहें.

७. देवसिअ प्रतिक्रमण की विधि

caitya-vandana, jam kiñci, namutthu ṇam and jaya viyarāya sūtra [complete] .

7. Procedure of devasia pratikramaṇa

- [१] प्रथम सामायिक लें.
- [२] फिर [दिन में पानी पिया हो तो] खमा... इच्छा... मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं कहकर, मुहपत्ति का पडिलेहण करें.
- [३] फिर [आहार किया हो तो] दो बार वांदना दें.
- [४] फिर इच्छाकारि... पच्चक्खाण का आदेश देनाजी कहकर, गुरु महाराज से [न हो तो सामायिक में स्थित वडील गृहस्थ से या स्वयं] पच्चक्खाण लें.
- [५] फिर खमा... इच्छा... चैत्य-वन्दन करुं? इच्छं, कहकर, गुरु महाराज [न हो तो सामायिक में स्थित वडील गृहस्थ या स्वयं] सकल-कुशल-वल्ली, चैत्य-वन्दन और जं किंचि कहें.
- [६] फिर नमुत्थु णं, अरिहंत-चेइआणं सूत्र [सूत्र नं. १९] कहकर, एक नवकार का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर नमोर्हत् कहकर

- [1] First take the sāmāyika.
- [2] Then saying khamā... icchā... muhapatti paḍilehu? iccham, perform the paḍilehaṇa of the muhapatti [if water is drunk during the day].
- [3] Then offer vāndanā twice [if food is taken].
- [4] Then saying icchakāri... paccakkhāṇa kā ādeśa denāji, take the paccakkhāṇa from the guru mahārāja [from an elder house holder present in the sāmāyika or himself if not present].
- [5] Then saying khamā... icchā... caitya-vandana karu? iccham, guru mahārāja [elder house holder present in the sāmāyika or himself if not present] shall tell sakala-kuśala vallī, caitya-vandana, jam kiñci sūtra [sūtra no. 19].
- [6] Then saying namutthu ṇam, arihanta-ceiāṇam, performing the kāussagga of one navakāra, completing the kāussagga, saying namorhat, say the first

पहली स्तुति कहें.

[७] फिर लोगस्स, सव्व-लोए अरिहंत-चेइआणं सूत्र [शुरुआत में सव्व-लोए शब्द पूर्वक अरिहंत-चेइआणं सूत्र] [सूत्र नं. १९] कहकर, एक नवकार का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, दूसरी स्तुति कहें.

[८] फिर पुक्खर-वर सूत्र कहकर, एक नवकार का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, तीसरी स्तुति कहें.

[९] फिर सिद्धाणं बुद्धाणं, वेयावच्च-गराणं सूत्र कहकर, एक नवकार का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, नमोर्हत्तु कहकर, चौथी स्तुति कहें.

[१०] फिर नमुत्थु णं सूत्र कहें.

[११] फिर खमा... पूर्वक भगवान्हं आदि कहें.

[१२] फिर इच्छा... देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं? इच्छं कहकर, दायां हाथ चरवले / कटासणे पर रखकर, सव्वस्स-वि... [सूत्र नं. २६] कहें.

[१३] फिर करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ सूत्र कहकर, पंचाचार के अतिचार [न आता हो तो आठ नवकार] का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पार कर, लोगस्स सूत्र कहें.

[१४] फिर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति का पडिलेहण कर, दो बार

eulogy.

[7] Then saying logassa, savva-loe-arihanta-ceiāṇaṃ sūtra [arihanta-ceiāṇaṃ sūtra along with the word savva-loe in the begining] [sūtra no. 19], performing the kāussagga of one navakāra, completing the kāussagga, say the second eulogy.

[8] Then saying pukkhara-vara sūtra, performing the kāussagga of one navakāra, completing the kāussagga, say the third eulogy.

[9] Then saying siddhāṇaṃ buddhāṇaṃ, veyāvacca-garāṇaṃ sūtra, performing the kāussagga of one navakāra, completing the kāussagga, saying namorhat, say the fourth eulogy.

[10] Then say namutthu ṇaṃ sūtra.

[11] Then say bhagavāṇhaṃ etc. along with khamā...

[12] Then saying icchā... devasia paḍikkamaṇe thāu...? iccham, keeping the right hand on the caravālā / kaṭasaṇā, say savvassa-vi... [sūtra no. 26]

[13] Then saying karemi bhaṇte, icchāmi thāmi, tassa uttarī, annattha sūtra, performing the kāussagga of pañcācāra ke aticāra [or eight navakāra if not coming], completing the kāussagga, say logassa sūtra.

[14] Then performing paḍilehaṇa of the muhapatti of third necessity, offer

वांदना दें. [१५] फिर देवसिअं आलोउं?, सात लाख, अठारह पापस्थानक, एवं सव्वस्स वि सूत्र कहें. [१६] फिर नवकार, करेमि भंते, इच्छामि पडिक्कमिउं? एवं वंदित्तु सूत्र कहें. [जावन्ति-चेइ... (गाथा ४४ वीं) से खड़े होकर कहें.] [१७] फिर दो बार वांदना देकर, अब्भुट्ठिओमि खमाकर, फिर से दो बार वांदना दें. [१८] फिर हाथ जोड़कर, आयरिय उवज्झाय सूत्र कहें. [१९] फिर करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्स उत्तरी एवं अन्नत्थ सूत्र कहकर, दो लोगस्स का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, लोगस्स सूत्र कहें. [२०] फिर सव्व-लोए अरिहंत-चेइआणं सूत्र [शुरुआत में सव्व-लोए शब्द पूर्वक अरिहंत-चेइआणं सूत्र] [सूत्र नं. १९] कहकर, एक लोगस्स का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर— [२१] पुक्खर-वर सूत्र कहकर, एक लोगस्स का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र कहें. [२२] फिर सुअ-देवयाए करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ सूत्र कहकर, एक नवकार का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, पुरुष नमोर्हत्	vāndanā twice. [15] Then say devasiam ālou?, sāta lākha, athāraha pāpasthānaka, and savvassa vi sūtra. [16] Then say navakāra, karemi bhante, icchāmi paḍikkamiu? and vandittu sūtra. [standing up, say from jāvanti-cei... (the 44th stanza)]. [17] Then offering vāndanā twice, bowing abbhutthiomi, again offer vāndanā twice. [18] Then folding hands, say āyariya-uvajjhāya sūtra. [19] Then saying karemi bhante, icchāmi thāmi, tassa uttarī, and annattha sūtra, performing the kāussagga of two logassa, completing the kāussagga, say logassa sūtra. [20] Then saying savva-loe arihanta-ceiāṇam sūtra [arihanta-ceiāṇam sūtra along with the word savva-loe in the begining] [sūtra no. 19], performing the kāussagga of one logassa, completing the kāussagga— [21] Saying pukkharavara sūtra, performing the kāussagga of one logassa, completing the kāussagga, say siddhāṇam buddhāṇam sūtra. [22] Then saying sua-devayāe karemi kāussaggam, annattha sūtra, performing kāussagga of one navakāra, completing the kāussagga, men
---	---

और सुअ-देवया की स्तुति कहें एवं स्त्रियां मात्र कमल-दल की स्तुति कहें.

[२३] फिर खित्त-देवयाए करेमि काउस्सगं, अन्नत्थ सूत्र कहकर, एक नवकार का काउस्सग कर, काउस्सग पारकर, पुरुष नमोर्हत् और जीसे खित्ते की स्तुति कहें एवं स्त्रियां मात्र यस्याः क्षेत्रं की स्तुति कहें.

[२४] फिर एक नवकार कहकर, छट्ठे आवश्यक की मुहपत्ति का पडिलेहण करके, दो बार वांदना दें.

[२५] फिर सामायिक, चउव्वीसत्थो, वंदन, पडिक्कमण, काउस्सग, पच्चक्खाण किया है कहें.

[२६] फिर बैठकर, इच्छामो अणुसट्ठिं, नमो खमासमणाणं कहकर, पुरुष नमोर्हत् और नमोस्तु वर्धमानाय स्तुति कहें एवं स्त्रियां संसार-दावा स्तुति की तीन गाथाएं कहें.

[२७] फिर नमुत्थु णं, नमोर्हत्, स्तवन कहें. [फिर सिर्फ पुरुष ही वरकनक बोलें.]

[२८] फिर खमा... पूर्वक भगवान्हं आदि कहें.

[२९] फिर दायां हाथ चरवत्ते / कटासणे पर रखकर, अड्ढाइज्जेसु सूत्र कहें.

shall say **namorhat** and the eulogy of **sua-devayā** and women shall say only the eulogy of **kamala-dala**.

[23] Then saying **khitta-devayāe karemi kāussaggam**, **annattha sūtra**, performing the **kāussagga** of one **navakāra**, completing the **kāussagga**, men shall say **namorhat** and the eulogy of **jīse khitte** and women shall say only the eulogy of **yasyāḥ kṣetram**.

[24] Then saying one **navakāra**, performing **paḍilehaṇa** of **muḥapatti** of the sixth necessity, offer **vāndanā** twice.

[25] Then say **sāmāyika**, **cauvvīsatto**, **vandana**, **paḍikkamaṇa**, **kāussagga**, **paccakkhāṇa** **kiyā hai**.

[26] Then sitting, saying **icchāmo aṇusattḥim**, **namo khamāsamaṇāṇam**, men shall say **namorhat** and **namostu vardhamānāya stuti** and women shall say three stanzas of **sansāra-dāvā stuti**.

[27] Then say **namutthu ṇam**, **namorhat**, **stavana**. [Then only men shall say **varakanaka**.]

[28] Then say **bhagavānham** etc. with **khamā**...

[29] Then keeping right hand on **caravalā** / **kaṭāsaṇā**, say **aḍḍhāijjesu sūtra**.

[३०] फिर इच्छा... देवसिअ-पायच्छित्त-विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं? इच्छं, देवसिअ-पायच्छित्त-विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ सूत्र कहकर, चार लोगस्स का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, लोगस्स कहें.

[३१] फिर खमा... इच्छा... सज्झाय संदिसाहुं? इच्छं कहें.

[३२] फिर खमा... इच्छा... सज्झाय करुं? इच्छं कहकर, नवकार, सज्झाय एवं नवकार कहें.

[३३] फिर खमा... इच्छा... दुक्ख-क्खय कम्म-क्खय निमित्तं काउस्सग्ग करुं? इच्छं, दुक्ख-क्खय कम्म-क्खय निमित्तं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ सूत्र कहकर, संपूर्ण चार लोगस्स का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, नमोर्हत् एवं लघु-शान्ति बोलकर, लोगस्स कहें. [यदि समूह में प्रतिक्रमण करते हो तो प्रथम एक व्यक्ति काउस्सग्ग पार कर लघु-शान्ति बोले व अन्य कायोत्सर्ग मुद्रा में ही रहकर संपूर्ण लघु-शान्ति सुन लेने के बाद ही काउस्सग्ग पारें.]

[यहां पर देवसिअ प्रतिक्रमण समाप्त होता है. आगे सामायिक पारने के लिए विधि शुरू होती है.]

[30] Then saying icchā... devasia-pāyacchitta-visohaṇattham kāussagga karuṃ? iccham, devasia-pāyacchitta-visohaṇattham karemi kāussaggaṃ, annattha sūtra, performing the kāussagga of four logassa, completing the kāussagga, say logassa.

[31] Then say khamā... icchā... sajjhāya sandisāhuṃ? iccham.

[32] Then saying khamā... icchā... sajjhāya karuṃ? iccham, say navakāra, sajjhāya and navakāra.

[33] Then saying khamā... icchā... dukkha-kkhaya kamma-kkhaya nimittam kāussagga karuṃ? iccham, dukkha-kkhaya kamma-kkhaya nimittam karemi kāussaggaṃ, annattha sūtra, performing the kāussagga of four complete logassa, completing the kāussagga, saying namorhat and laghu-sānti, say logassa sūtra. [If the pratikramaṇa is done in group, then, first one person shall say laghu-sānti after completing the kāusagga and others shall complete the kāusagga after hearing laghu-sānti completely in the posture of kāyotsarga.]

[Here devasia pratikramaṇa completes. Further, the procedure for completing the sāmāyika starts.]

[३४] फिर इरियावहियं प्रतिक्रमण करें.

[३५] फिर चउक्कसाय, नमुत्थु णं, जावंति चेइ, खमा..., जावंत के वि, नमोर्हत्, उवसग्ग-हरं एवं जय वीयरया सूत्र कहें.

[३६] फिर सामायिक पारने की विधि के अनुसार आदेश मांगकर, सामायिक पारें.

८. राइअ प्रतिक्रमण की विधि

[१] प्रथम सामायिक लें.

[२] फिर खमा... इच्छा... कुसुमिण-दुसुमिण-ओहड्डावणी राइअ-पायच्छित्त-विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं? इच्छं, कुसुमिण-दुसुमिण-ओहड्डावणी राइअ-पायच्छित्त-विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ सूत्र कहकर, चार लोगस्स [काम-भोगादि का स्वप्न आया हो तो सागर-वर-गंभीरा तक] का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, लोगस्स सूत्र कहें.

[३] फिर खमा..., जग-चिंतामणि, जं किंचि, नमुत्थु णं, जावंति चेइ, खमा..., जावंत के वि, नमोर्हत्, उवसग्ग-हरं एवं जय वीयरया

[34] Then perform iriyāvahiyaṃ pratikramaṇa.

[35] Then say caukkasāya, namutthu ṇaṃ jāvaṇti cei, khamā..., jāvaṇta ke vi, namorhat, uvasagga-haraṃ and jaya vīyārāya sūtra.

[36] Then according to the procedure of completing the sāmāyika, complete the sāmāyika obtaining the commands.

8. Procedure of rāia pratikramaṇa

[1] First take the sāmāyika.

[2] Then saying khamā... icchā... kusumiṇa - dusumiṇa - ohaddāvaṇi rāia - pāyacchitta - visohaṇattham kausagga karuṃ? iccham, kusumiṇa - dusumiṇa - ohaddāvaṇi rāia - pāyacchitta - visohaṇattham karemi kausaggaṃ, annattha sūtra, performing the kausagga of four logassa [upto sāgara-vara-gambhīrā if dreams such as sexual enjoyments are occurred], completing the kausagga, say logassa sūtra.

[3] Then say khamā..., jaga-cintāmaṇi, jaṃ kiñci, namutthu ṇaṃ, jāvaṇti cei, khamā... jāvaṇta ke vi, namorhat, uvasagga-haraṃ and jaya vīyārāya

सूत्र कहें. [४] फिर खमा... पूर्वक भगवान्हं आदि कहें. [५] फिर खमा... इच्छा... सज्झाय संदिसाहुं? इच्छं कहें. [६] फिर खमा... इच्छा... सज्झाय करुं? इच्छं कहकर नवकार, भरहेसर सज्झाय एवं नवकार कहें. [७] फिर इच्छकार सूत्र कहें. [८] फिर इच्छा... राइअ पडिक्कमणे ठाउं? इच्छं कहकर, दायां हाथ चरवले / कटासणे के उपर रखकर, सव्वस्स वि राइअ... [सूत्र नं. २६] कहें. [९] फिर नमुत्थु णं, करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्स-उत्तरी, अन्नत्थ सूत्र कहकर, एक लोगस्स का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, लोगस्स सूत्र कहें. [१०] फिर सव्व-लोए अरिहंत-चेइआणं सूत्र [शुरुआत में सव्व-लोए शब्द के साथ अरिहंत-चेइआणं सूत्र] [सूत्र नं. १९] कहकर, एक लोगस्स का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर— [११] पुक्खर-वर सूत्र कहकर, पंचाचार के अतिचार [न आता हो तो आठ नवकार] का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र कहें.	sūtra. [4] Then say bhagavānham etc. with khamā... [5] Then say khamā... icchā... sajjhāya sandisāhu? iccham. [6] Then saying khamā... icchā... sajjhāya karu? iccham, say navakāra, bharahe Sara sajjhāya and navakāra. [7] Then say icchakāra sūtra. [8] Then saying icchā... rāia paḍikkamaṇe thāu? iccham, keeping the right hand on the caravālā / kaṭāsaṇā, say savvassa vi rāia... [sūtra no.26] [9] Then saying namutthu ṇam, karēmi bhante, icchāmi thāmi, tassa-uttarī, annattha sūtra, performing the kāussagga of one logassa, completing the kāussagga, say logassa sūtra. [10] Then saying savva-loe arihanta-ceiāṇam sūtra [arihanta-ceiāṇam sūtra along with the word savva-loe in the begining] [sūtra no. 19], performing the kāussagga of one logassa, completing the kāussagga— [11] Saying pukkara-vaṇa sūtra, performing the kāussagga of pañcācāra ke aticāra [eight navakāra if not coming], completing the kāussagga, say siddhāṇam buddhāṇam sūtra.
---	--

- [१२] फिर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति का पडिलेहण करें.
- [१३] फिर दो बार वांदना दें.
- [१४] फिर राइअं आलोउं, सात लाख, अठारह पापस्थानक, सव्वस्स वि सूत्र कहकर—
- [१५] नवकार, करेमि भंते, इच्छामि पडिक्कमिउं? एवं वंदितु सूत्र कहें.
[जावन्ति चेइआई... (गाथा ४४ वीं) से खड़े होकर बोलें.]
- [१६] फिर दो बार वांदना देकर, अब्भुट्ठिओमि खमाकर, फिर से दो बार वांदना दें.
- [१७] फिर आयरिय-उवज्झाए, करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ सूत्र कहकर, तप-चिन्तन [न आता हो तो सोलह नवकार] का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, लोगस्स सूत्र कहें.
- [१८] फिर छट्ठे आवश्यक की मुहपत्ति का पडिलेहण करें.
- [१९] फिर दो बार वांदना देकर, सकल तीर्थ सूत्र कहें.
- [२०] फिर इच्छकारि... पच्चक्खाण का आदेश दो जी कहकर, यथाशक्ति पच्चक्खाण लें.
- [२१] फिर सामायिक, चउव्वीसत्थो, वंदण, पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण किया है; इच्छामो अणुसट्ठिं, नमो खमासमणाणं कहकर, पुरुष नमोर्हत् और विशाल-लोचन कहें एवं स्त्रियां संसार-

- [12] Then perform paḍilehaṇa of the muḥapatti of third necessity.
- [13] Then offer vāndanā twice.
- [14] Then saying rāiam ālou?, sāta lākha, aṭhāraha pāpasthānaka, savvassa vi sūtra—
- [15] Say navakāra, karemi bhante, icchāmi paḍikkamiu? and vandittu sūtra [standing up, say from jāvanti ceīāim... (44th stanza)].
- [16] Then offering vāndanā twice, bowing abbhuttihiomi, again offer vāndanā twice.
- [17] Then saying āyariya-uvajjhāe, karemi bhante, icchāmi ṭhāmi, tassa uttarī, annattha sūtra, performing the kāussagga of tapa-cintana [sixteen navakāra if not coming], completing the kāussagga, say logassa sūtra.
- [18] Then perform paḍilehaṇa of the muḥapatti of sixth necessity.
- [19] Then offering vāndanā twice, say sakala tīrtha sūtra.
- [20] Then saying icchakāri... paccakkhāṇa kā ādeṣa do jī, take paccakkhāṇa according to the ability.
- [21] Then saying sāmāyika, cauvvīsatto, vandana, paḍikkamaṇa, kāussagga paccakkhāṇa kiyā hai; icchāmo aṇusattiṃ, namo khamāsamaṇāṇaṃ; men shall say namorhat and viśāla-locana and

- दावा की तीन गाथाएं कहें.
- [२२] फिर नमुत्थु णं, अरिहंत-चेइआणं सूत्र कहकर, एक नवकार का काउस्सग कर, काउस्सग पारकर, नमोर्हत् एवं कल्लाण-कंदं की प्रथम स्तुति कहें.
- [२३] फिर लोगस्स, सब्बलोए अरिहंत चेइआणं सूत्र [शुरुआत में सब्ब-लोए शब्द के साथ अरिहंत-चेइआणं सूत्र] [सूत्र नं. १९] कहकर, एक नवकार का काउस्सग कर, काउस्सग पारकर, द्वितीय स्तुति कहें.
- [२४] फिर पुक्खर-वर सूत्र कहकर, एक नवकार का काउस्सग कर, काउस्सग पारकर, तृतीय स्तुति कहें.
- [२५] फिर सिद्धाणं बुद्धाणं, वेयावच्च-गराणं सूत्र कहकर, एक नवकार का काउस्सग कर, काउस्सग पारकर, नमोर्हत् एवं चतुर्थ स्तुति कहें.
- [२६] फिर नमुत्थु णं सूत्र कहकर—
- [२७] खमा... पूर्वक भगवान्हं आदि कहें.
- [२८] फिर दायां हाथ चरवले / कटासणे पर रखकर, अड्ढाइज्जेसु सूत्र कहें.
- [२९] फिर खमा... पूर्वक दोहे कहकर, चैत्य-वन्दन की विधि के अनुसार

- women shall say three stanzas of sansāra-dāvā.
- [22] Then saying namutthu ṇam, arihanta-ceiāṇam sūtra, performing the kāussagga of one navakāra, completing the kāussagga, say namorhat and the first eulogy of kallāṇa-kandam.
- [23] Then saying logassa, savvaloe arihanta-ceiāṇam sūtra [arihanta-ceiāṇam sūtra along with the word savva-loe in the begining] [sūtra no. 19], performing the kāussagga of one navakāra, completing the kāussagga, say the second eulogy.
- [24] Then saying pukkhara-vara sūtra, performing the kāussagga of one navakāra, completing the kāussagga, say the third eulogy.
- [25] Then saying siddhāṇam buddhāṇam, veyāvacca-garāṇam sūtra, performing the kāussagga of one navakāra, completing the kāussagga, say namorhat and the fourth eulogy.
- [26] Then saying namutthu ṇam sūtra—
- [27] Say bhagavāṇham etc. along with khamā...
- [28] Then placing the right hand on the caravalā / kaṭāsaṇā, say aḍḍhāijjesu sūtra.
- [29] Then saying the couplets with khamā..., perform the caitya-vandana of śrī

श्री सीमंधर स्वामी का चैत्य-वन्दन करें.

[३०] फिर खमा... पूर्वक दोहे कहकर, चैत्य-वन्दन की विधि के अनुसार

श्री सिद्धाचल तीर्थ का चैत्य-वन्दन करें.

[यहां पर राइअ प्रतिक्रमण समाप्त होता है.]

[३१] फिर विधि पूर्वक सामायिक पारें.

९. पच्चक्खाण पारने की विधि

[१] प्रथम इरियावहियं प्रतिक्रमण करें.

[२] फिर खमा... इच्छा... चैत्य-वन्दन करुं? इच्छं कहकर, जग-
चित्तमणि, जं किंचि, नमुत्थु णं, जावंति चेइ, खमा..., जावंत के
वि, नमोर्हत्, उवसग्ग-हरं, एवं जय वीयरया सूत्र कहें.

[३] फिर खमा... इच्छा... सज्जाय करुं? इच्छं कहकर, नवकार,
मन्नह जिणाणं एवं नवकार कहें.

[४] फिर खमा... इच्छा... मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं कहकर, मुहपत्ति
का पडिलेहण करें.

[५] फिर खमा... इच्छा... पच्चक्खाण पारुं? यथा-शक्ति एवं खमा...

sīmandhara svāmī according to the procedure of caitya-vandana.

[30] Then saying the couplets along with khamā..., perform the caitya-vandana
of śrī siddhācala tīrtha according to the procedure of caitya-vandana.

[Here rāia pratikramaṇa completes.]

[31] Then complete the sāmāyika according to the procedure.

9. Procedure of completing the paccakkhāṇa

[1] First perform iriyāvahiyaṃ pratikramaṇa.

[2] Then saying khamā... icchā... caitya-vandana karuṃ? iccham, say jaga-
cintāmaṇi, jaṃ kiñci, namuttha ṇaṃ, jāvaṃti cei, khamā..., jāvaṃta ke vi,
namorhat, uvasagga-haraṃ and jaya vīyarāya sūtra.

[3] Then saying khamā... icchā... sajjhāya karuṃ? iccham, say navakāra,
mannaha jīṇāṇaṃ and navakāra.

[4] Then saying khamā... icchā... muhapatti paḍilehuṃ? iccham, perform the
paḍilehaṇa of the muhapatti.

[5] Then saying khamā... icchā... paccakkhāṇa pāruṃ? yathāsakti and

इच्छा... पच्चक्खाण पारा? तहत्ति कहकर-

[६] दायां हाथ चरवले / कटासणे पर रखकर नवकार, पच्चक्खाण पारने का सूत्र एवं नवकार कहें.

नमस्कार-महा-मन्त्र का छन्द

समरो मन्त्र भलो नवकार, ए छे चौद पुरवन्तो सार.
 एना महिमानो नहि पार, एनो अर्थ अनन्त अपार.
 सुखमां समरो दुखमां समरो, समरो दिवस ने रात.
 जीवतां समरो, मरतां समरो, समरो सौ संघात.
 जोगी समरे भोगी समरे, समरे राजा-रंक.
 देवो समरे दानव समरे, समरे सौ निःशंक.
 अङ्गसठ अक्षर एना जाणो, अङ्गसठ तीरथ सार.
 आठ संपदाथी परमाणो, अङ्गसिद्धि दातार.
 नव-पद एनां नव निधि आपे, भव भवनां दुःख कापे.
 वीर वचनथी हृदये व्यापे, परमात्म पद आपे.

समरो.१.

समरो.२.

समरो.३.

समरो.४.

समरो.५.

khamā... icchā... paccakkhāṇa pāra? tahatti-

[6] Keeping the right hand on caravalā / kaṭāsaṇā, say navakāra, sūtra for completing the paccakkhāṇa and navakāra.

namaskāra-mahā-mantra kā chanda

samaro mantra bhalo navakāra, e che cauda pūravano sāra.

enā mahimāno nahi pāra, eno artha ananta apāra.

sukhamāṇ samaro dukhamāṇ samaro, samaro divasa ne rāta.

jīvatāṇ samaro, maratāṇ samaro, samaro sau saṅghāta.

jogī samare bhogī samare, samare rājā-raṅka.

devo samare dānava samare, samare sau niḥśaṅka.

aṅgasaṭha akṣara enā jāṇo, aṅgasaṭha tīratha sāra.

āṭha sampadāthī paramāṇo, aṅgasiddhi dātāra.

nava-pada enāṇ nava nidhi āpe, bhava bhavanāṇ duḥkha kāpe.

vīra vacanathī hrdaye vyāpe, paramātama pada āpe.

samaro.1.

samaro.2.

samaro.3.

samaro.4.

samaro.5.

શ્રી અરુણોદય ફાઉન્ડેશન દ્વારા પ્રકાશિત પુસ્તકોની સૂચિ

હિન્દી વિભાગ				ગુજરાતી વિભાગ			
ક્રમ	પુસ્તક નામ	કિંમત	લેખક	ક્રમ	પુસ્તક નામ	કિંમત	લેખક
૧.	કર્મયોગ	૧૧.૦૦	આ. બુદ્ધિસાગરસૂરિજી	૧.	અલખ પંથમાં અજબ તમાસા	૦૫.૦૦	આ. બુદ્ધિસાગરસૂરિજી
૨.	પથ કે ફુલ	૨૫.૦૦	"	૨.	જીવન વિકાસના વીસ સોપાન	૨૦.૦૦	આ. પદ્મસાગરસૂરિજી
૩.	મારગ મેરા સબ સે ન્યારા	૦૫.૦૦	"	૩.	આતમ પામ્યો અજવાળુ	૨૦.૦૦	"
૪.	भीमसेन चरित्र	अप्राप्य	आ. अजीतसागरसूरिजी	૪.	પ્રવચન-પરાગ	૨૦.૦૦	"
૫.	सचित्र जैन कथासागर भाग - १	૩૦.૦૦	આ. कैलाससागरसूरिजी	૫.	ચિંતનની કેડી	૧૫.૦૦	"
૬.	सचित्र जैन कथासागर भाग - २	૩૦.૦૦	"	૬.	પ્રેરણા	અપ્રાપ્ય	"
૭.	मोक्ष मार्ग में बीस कदम	૨૫.૦૦	આ. पद्मसागरसूरिजी	૭.	પાથેય	અપ્રાપ્ય	"
૮.	जीवन-दृष्टि	૨૫.૦૦	"	૮.	જીવનનો અરુણોદય	અપ્રાપ્ય	"
૯.	संवाद की खोज	૨૦.૦૦	"	English Section			
૧૦.	प्रतिबोध	૨૦.૦૦	"				
૧૧.	मिति में सब भूलसु	૧૫.૦૦	"	S.No.	Names of the book	Price	Author
૧૨.	हे नवकार महान	૧૦.૦૦	"	1.	Golden steps to Salvation	30.00	Ach. Padmasagarsuri
૧૩.	संशय सब दूर भये	૨૦.૦૦	"	2.	Beyond Doubt	20.00	"
૧૪.	यात्रा नवाणु करीए विमलगिरि	૦૫.૦૦	गणिवर्य अरुणोदयसागरजी	3.	A wakening	15.00	"
૧૫.	आई बसो भगवान	(પ્રેસ મેં)		4.	The Light of Life	Not. Avai.	"
૧૬.	प्रतिक्रमण सूत्र सह विवेचन			5.	Pratikramaṇa Sūtra With Explanation		
	(हिन्दी-अंग्रेजी) भाग - १,२	૧૨૫.૦૦	मुनि निर्वाणसागरजी		(Hindi-English) - Part - 1,2	125.00	Muni Nirvansagarji
૧૭.	कोबा डाइजेस्ट (हिन्दी-गुजराती)						

યોગ્ય સમયે યોગ્ય દિશાનો તમારો સરસ પ્રયત્ન છે, અને અનેકાનેક જીવોને ઉપકારક પ્રયત્ન પુરવાર થશે તેવી મને શ્રદ્ધા છે.

આચાર્ય શ્રી શીલચંદ્રસૂરિજી

ભાષા અંગ્રેજી-હિંદી બંને રાખી છે એટલે વિશેષ ઉપયોગી બનશે. તમારું આ કાર્ય, તેના માટેનો પ્રયત્ન જૈન શાસન માટે ખૂબ જ લાભદાયી થશે...

આચાર્ય શ્રી વિજય હેમચંદ્રસૂરિજી

વર્તમાન યુગકી यह खास मांग है. अतः आपका प्रयास समयोचित एवं सराहनीय है. अंग्रेजी माध्यममें

पढ़नेवाले अनेक विद्यार्थीओंको धार्मिक सूत्र एवं उनके अर्थ समझने के लिए यह पुस्तक आशीर्वाद रूप होगा. आपके प्रयासकी पुनः पुनः हार्दिक अनुमोदना...

- गणिवर्य श्री महोदयसागरजी

બે પ્રતિક્રમણ સૂત્ર વિવેચન હિન્દી અને અંગ્રેજી પુસ્તકનું મેટર મળ્યું. જોયું. વાંચ્યું. વીસમી સદીના અંતે અને એકવીસમી સદીના પ્રારંભે જૈન સંઘની નવી પેઢીને આપના તરફથી નજરાણું પ્રાપ્ત થશે. આ બાબત જાણીને મને રોમ હર્ષ થયો છે. હિન્દી અંગ્રેજી ભાષાના મહત્વના અને ઉપયોગી પ્રકાશન માટેનો

આપનો કામ ખરેખર સ્તુત્ય છે. આપના દ્વારા તૈયાર થનાર આ પુસ્તક અમોને અમારા હિન્દી ભાષી લેખકોની શિબિરો માટે પણ ઉપયોગી બનશે...

શ્રી કુમારપાલ વિ. શાહ, ધોળકા

આપનો પત્ર, ગ્રંથ, પરિપત્ર મળ્યું. અતિ સુંદર, સ્પષ્ટતા બહુજ સુંદર રીતે થઇ છે. બાલભોગ્ય પણ છે અને વિદ્વદ્ભોગ્ય પણ છે. જેની આજ સુધી ત્રુટિ જણાતી હતી તે આપશ્રી દ્વારા પૂર્તિ થાય છે તે બહુજ અનુમોદનીય છે...

પંડિતવર્ય શ્રી છબીલદાસ કે. સંઘવી, સુરત

મૂલ અર્ધમાગધી પ્રતિક્રમણના સૂત્રોનું આંગલભાષામાં કરાયેલ રૂપાન્તરથી આંગલભાષા ભાષીઓ શ્રી ગણધર ભગવંત વિરચિત પ્રતિક્રમણના સૂત્રો કંઠસ્થ કરીને શ્રી જિનઆજ્ઞા અનુસાર ઉભયટંક પ્રતિક્રમણ કરવારૂપ પ્રાયશ્ચિત કરીને આત્મશુદ્ધિના પરમ અધિકારી બનો...

આચાર્ય શ્રી કલ્યાણસાગરસૂરિજી

તમારો પ્રયાસ પ્રશંસનીય છે. જિજ્ઞાસુઓને અને નવા જીવોને સારો લાભ થાય એવી શક્યતા છે. અનેકને બોધપ્રદ બની શકે એ રીતે આ પ્રકાશન શીઘ્ર નિર્વિઘ્નતયા થાય એવી પરમકૃપાળુ પરમાત્માને પ્રાર્થના પૂર્વક શુભાશિષ છે...

આચાર્ય શ્રી વિજય જયધોષસૂરિજી

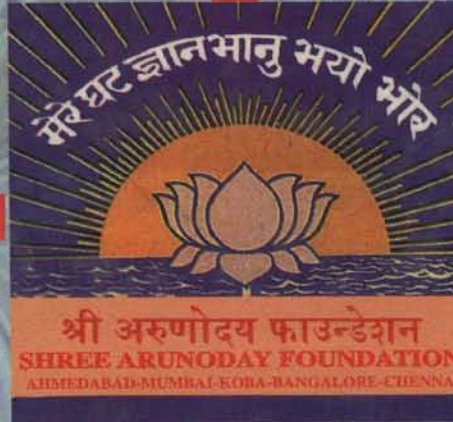
વર્તમાનમાં પાશ્ચાત્ય સંસ્કૃતિનું શિક્ષણ મેળવતાં બાળકોની ધર્મભાવના જાળવવાં તમોએ કરેલો પુરુષાર્થ દાદ માંગીલે એવો છે. આધુનિક ભાષામાં રૂપાંતરણની સાથે-સાથે ભાવાંતરણમાં પણ પૂર્ણ સાવધાનિ રાખી છે. શાસ્ત્રને સાપેક્ષ રાખીને જ ચાલ્યા છો, તમારા દ્વારા થયેલો આ પ્રયત્ન જીવોને ધર્મમાર્ગે આગળ વધારી સ્થિર કરી પરંપરાએ મોક્ષમાર્ગ ને આપનારો બને...

આચાર્ય શ્રી નવરત્નસાગરસૂરિજી

નમસ્કાર મહામંત્ર का हिन्दी-English विवेचन मिला. आपने बहुत परिश्रम किया है. विदेश वासीयों को इससे बहुत लाभ होगा. प्रभु की कृपा से आपका कार्य सुंदर रूप से सिद्ध हो यही प्रभु से प्रार्थना... आगमदिवाकर प्रवर्तक श्री जंबूविजयजी

સાહિત્ય જગતમાં સર્વ ગ્રાહ્ય અજોડ પ્રકાશન માટેનો આપનો પ્રયત્ન સદાય ધન્યતા ને પ્રાપ્ત બનશે. નમસ્કાર મંત્રથી પ્રારંભ થતાં પ્રતિક્રમણ સૂત્રના અર્થ, ભાવાર્થ, વિશેષાર્થ અને હિન્દી-અંગ્રેજીમાં પ્રકાશન બહુજ લાભકારી બનશે...

આચાર્ય શ્રી વારિષેણસૂરિજી



વર્તમાનયુગમાં આપણી લિપિ અને ભાષા પ્રત્યે આપણામાં ઉદાસીનતા વધી રહી છે, તેથી બાળકોને સૂત્રો ભણવા / ભણાવવા તથા સમજવા / સમજાવવામાં પણ ખૂબ જ મુશ્કેલી પડે છે. આ સમસ્યાના ઉકેલ માટે પંચ પ્રતિક્રમણનાં મૂળ સૂત્રો અંગ્રેજી લિપિમાં તથા તેનો અંગ્રેજી ભાષામાં સરળ અનુવાદ પ્રકાશિત થઈ રહ્યો છે તે આનંદની વાત છે. પૂ. નિર્વાણસાગરજી મ. સા. દ્વારા સંપાદિત,

અનુવાદિત આ ગ્રંથ દેશ-વિદેશમાં વસતાં બાળકો અને જિજ્ઞાસુઓને ખૂબ જ ઉપયોગી થશે તે નિર્વિવાદ વાત છે...

પંડિતવર્ય ડૉ. શ્રી જિતેન્દ્ર બી. શાહ, અમદાવાદ